

सिद्धांत पंचाव्यायी

$\frac{d}{dt} \left(\frac{1}{r^2} \right) = -\frac{2}{r^3} \frac{dr}{dt}$

$\frac{d}{dt} \left(\frac{1}{r^2} \right) = -\frac{2}{r^3} \frac{dr}{dt}$

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

$$1. \quad \frac{1}{x^2} = x^{-2} \quad \frac{d}{dx} x^{-2} = -2x^{-3} = -\frac{2}{x^3}$$

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुदेवे नमः ॥ २०

$\frac{d}{dt} \left(\frac{1}{r^2} \right) = -\frac{2}{r^3} \frac{dr}{dt}$

$\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$

$\frac{1}{x^2} = x^{-2}$, $\frac{d}{dx} x^{-2} = -2x^{-3} = -\frac{2}{x^3}$

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ७५

$$\frac{1}{V} \frac{dV}{dt} = \frac{1}{V} \frac{d}{dt} \left(\frac{1}{\rho} \right) = - \frac{1}{\rho} \frac{d\rho}{dt} = - \frac{1}{\rho} \frac{d}{dt} \left(\frac{1}{V} \right) = \frac{1}{V} \frac{dV}{dt}$$

$\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

100

[illegible]

$\frac{1}{2} \frac{d}{dt} \left(\frac{1}{2} \frac{d^2}{dt^2} \right) = \frac{1}{2} \frac{d^3}{dt^3}$

$\frac{1}{n} \sum_{i=1}^n x_i = \bar{x}$

$\frac{d}{dt} \left(\frac{\partial L}{\partial \dot{x}} \right) = \frac{\partial L}{\partial x}$

[illegible]
$$\begin{aligned} \frac{\partial}{\partial t} \left(\frac{\partial \phi}{\partial x} \right) &= - \frac{\partial}{\partial x} \left(\frac{\partial \phi}{\partial t} \right) \\ \frac{\partial}{\partial t} \left(\frac{\partial \phi}{\partial y} \right) &= - \frac{\partial}{\partial y} \left(\frac{\partial \phi}{\partial t} \right) \\ \frac{\partial}{\partial t} \left(\frac{\partial \phi}{\partial z} \right) &= - \frac{\partial}{\partial z} \left(\frac{\partial \phi}{\partial t} \right) \end{aligned}$$

कह सब जो उम्माह हो- यदि प्रेम-विपुलक ।

मोह मोह पर मिमिह, मोहमूल-केवि - उत्तमक ॥

मोह कन् उन्मिगामो, कामो कामिन के वन ।

१६५

मोह मोह संतन्यामी न्यामी परम गुण नम ॥

मिहम आत्मानं, नमर नमर नमर ।

मिहम प्रेम मुगम, प्रमम प्रमर परमम ॥

मोह मिह ही माहि पुन्यो, परि हुरि न भार्यो ।

मो बाग अति मिलि, प्रममि प्रेम मिमारी ॥

१६०

मोहो मुगम मुगम, मिहम उदारा ।

मोहो उज्जल रम अमर मिह करि पन्ध्याय ॥

मोह - उदारा - वारन, गुण ही मग दिव्यगर्भ ।

कामो कामिनि नमभार्य, ज्यो जिनि उहि गार्भ ॥

मो नम मिह हं देवी, दाही मोहनि मेरी ।

१६७

मो अदभ तं मग ही, मिहरी मिहरी जैमी ॥

मोहो, मिहो, वन मे, नम मे, अमरज भारी ।

मिह हीनी चद तं चार चंद्रिया न्यामी(?) ॥

मोह भुवन भनि तं वन मिह, वनमानद वार ।

मोह - वन - मादम, मु नम, मीन की वार ॥

मोहो प्रेमभुवा-मिहो उहि मर अमर कयोम ।

मिहम हं मर नम, नम मो मादम दोम ॥

मोह मोहो नममंम, मगर नम-म-मंम ।

मोहो - नम - मिहो, मो हं मोहिय नम ॥

अथ सद्यो उद्यमानं हीनं यदि प्रेम-विभूषणम् ।
 मन्दं मोक्षं परं निवेद्य, मोक्षकृत-केचि-उत्तमम् ॥
 तत्रां कथं उद्यमानासी, कामी कामिन के वस । १७५
 अथ यत् चेतस्वामी न्यासी परम एक स ॥
 विना आत्मानं, अथ नमः उद्यमान ।
 केवलं प्रेम मुगध, प्रमथ प्रवर परकाय ॥
 माते विन ही माति पुन्यो, परि इति न भार्या ।
 मो यागा अति श्रिति, प्रसजित प्रेम निवार्या ॥ १८०
 जैमैः कृणु कण्ठ-म्, निदरः उद्यमान ।
 मंगैः उज्ज्वल रस अथ निन करि परिवार ॥
 जगत - उद्यमान - वारत, गुरु ह्य नम निवर्गाय ।
 कामी कामिनि गनभार्य, ज्यां जिति इति गार्द ॥
 मो यत् निन हं देवी, दाही मोक्षति मेरी । १८५
 नय अद्य ते यत् ही, श्रितरी श्रितरी जैमी ॥
 मोर्न, विन्दे, वन मे, नम मे, अन्तरज भारी ।
 विन हीनी चद ते चार चन्द्रिया न्यानी(?) ॥
 यत् भुङ्क्ते भक्ति ते पन् निद्रि, जमनान्द उद्यमान ।
 यत्न - प्रम - मादर, मु तर्ग, मीन ही माते ॥ १९०
 यत्नैः प्रेम-मुद्रा-निद्रि इति गार् अथिग कयोर्न ।
 विद्वान् ही गार् जगत, मात मो मादर दोर्न ॥
 नय अद्य ते नय-मन्द, नय नय-मन्द-मन्द ।
 मोर्न - नय - निवेद्य, मो हं मोक्षित नयन ॥

$\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । श्रीकृष्णाय नमः ॥

420

मन्ना डैम चर्च महा मुक्त, निम्नमान भयो जव ।

॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

श्रीः, नमः, वन्द्यः, जगत्-साधनं अविनाशं ।

मंगल जात, गुरु पात, दहरि सो तिन नन देय ॥

जोगी शक्ति चटोप-भावना ह नागव ते ।

128

ॐ नमः शिवाय ॥ अहिक वदहिक वदहिक ॥

तैत्तिरीय ब्रह्म की शान्ति, तान-ग्न उत्पत्ति करि कै ।

गुरुः शिष्यं गच्छति । न गच्छति । न गच्छति । न गच्छति ॥

सन्निविन्तं सन्निविन्तं सन्निविन्तं सन्निविन्तं सन्निविन्तं सन्निविन्तं ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

220

अथ एकस्मिन् समनिष्पन्नं वा अस्ति तदिदं द्वितीयं च ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

१५. श्री. बलदेव, ज्ञान प्रदीप की नारे ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

मन्त्रः न च न तपो, तपो नो ब्रह्म-भामिनि ॥

$\frac{d}{dt} \left(\frac{\partial L}{\partial \dot{x}} \right) = \frac{\partial L}{\partial x}$, जैडिफन जौटि मरी रनि ।

विंशं तस्य सगिरी-रस्य, गर्भान् भेदं गति ॥

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

$$\frac{1}{\sqrt{\pi}} \int_{-\infty}^{\infty} f(x) e^{-x^2} dx = \frac{1}{\sqrt{\pi}} \int_{-\infty}^{\infty} f(x) e^{-x^2} dx$$

ॐ नमः शिवाय, नमो न निजये नाथन गत ॥

मत्ता देव मर्ति महा मुनि, गिरुमान भयो जय ।

मल्लो नो यः कुत्रापि, तद् गेहं न गम्यते ॥

अग्नि, मरुता, रुद्रा, जल-साधन ययिर्गता ।

मम ज्ञान, मम पाद, वदरि सो तिन तन देय ॥

जोगी शिष्टि पादंग-नायका न नायक ते ।

पञ्च. पञ्चम. पञ्चमस्तु. अष्टमिका अष्टमिका ॥

गैः नमो नै चाम्, तान्मन उरुह करि कै ।

गुरुः शिष्यं ब्रूयति, तदा शिष्यः उच्यते ॥

संविन सन संविन सन, सन्नुन दुनाम जने ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

अथ पञ्चमोऽध्यायः ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

१०१. १०२. १०३. १०४. १०५. १०६. १०७. १०८. १०९. ११०.

[illegible][illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

252

250

251

महेश्वरः सदा सदा सदा सदा सदा सदा सदा ।

महेश्वरः सदा सदा सदा सदा सदा सदा सदा ॥

महेश्वरः सदा सदा सदा सदा सदा सदा सदा ।

महेश्वरः सदा सदा सदा सदा सदा सदा सदा ॥

महेश्वरः सदा सदा सदा सदा सदा सदा सदा ।

२६५

महेश्वरः सदा सदा सदा सदा सदा सदा सदा ॥

महेश्वरः सदा सदा सदा सदा सदा सदा सदा ।

महेश्वरः सदा सदा सदा सदा सदा सदा सदा ॥

महेश्वरः सदा सदा सदा सदा सदा सदा सदा ।

महेश्वरः सदा सदा सदा सदा सदा सदा सदा ॥

२६६

महेश्वरः सदा सदा सदा सदा सदा सदा सदा ।

महेश्वरः सदा सदा सदा सदा सदा सदा सदा ॥

महेश्वरः सदा सदा सदा सदा सदा सदा सदा ।

महेश्वरः सदा सदा सदा सदा सदा सदा सदा ॥

महेश्वरः सदा सदा सदा सदा सदा सदा सदा ।

२६७

महेश्वरः सदा सदा सदा सदा सदा सदा सदा ॥



1. What is the purpose of the study?
 2. What are the research questions?
 3. What is the significance of the study?
 4. What are the limitations of the study?
 5. What are the conclusions of the study?

$\frac{d}{dt} \left(\frac{\partial L}{\partial \dot{x}} \right) = \frac{\partial L}{\partial x}$

२०

$$1 \quad 2 \quad 3 \quad 4 \quad 5 \quad 6 \quad 7 \quad 8 \quad 9 \quad 10 \quad 11 \quad 12 \quad 13 \quad 14 \quad 15 \quad 16 \quad 17 \quad 18 \quad 19 \quad 20 \quad 21 \quad 22 \quad 23 \quad 24 \quad 25 \quad 26 \quad 27 \quad 28 \quad 29 \quad 30 \quad 31 \quad 32 \quad 33 \quad 34 \quad 35 \quad 36 \quad 37 \quad 38 \quad 39 \quad 40 \quad 41 \quad 42 \quad 43 \quad 44 \quad 45 \quad 46 \quad 47 \quad 48 \quad 49 \quad 50 \quad 51 \quad 52 \quad 53 \quad 54 \quad 55 \quad 56 \quad 57 \quad 58 \quad 59 \quad 60 \quad 61 \quad 62 \quad 63 \quad 64 \quad 65 \quad 66 \quad 67 \quad 68 \quad 69 \quad 70 \quad 71 \quad 72 \quad 73 \quad 74 \quad 75 \quad 76 \quad 77 \quad 78 \quad 79 \quad 80 \quad 81 \quad 82 \quad 83 \quad 84 \quad 85 \quad 86 \quad 87 \quad 88 \quad 89 \quad 90 \quad 91 \quad 92 \quad 93 \quad 94 \quad 95 \quad 96 \quad 97 \quad 98 \quad 99 \quad 100$$
[illegible]
$$x^2 + \frac{1}{x^2} = \left(x + \frac{1}{x}\right)^2 - 2 = 4^2 - 2 = 14$$

$\frac{1}{2} \log \frac{1}{2} = -0.5$ $\frac{1}{4} \log \frac{1}{4} = -0.5$ $\frac{1}{8} \log \frac{1}{8} = -0.5$ $\frac{1}{16} \log \frac{1}{16} = -0.5$ $\frac{1}{32} \log \frac{1}{32} = -0.5$ $\frac{1}{64} \log \frac{1}{64} = -0.5$ $\frac{1}{128} \log \frac{1}{128} = -0.5$ $\frac{1}{256} \log \frac{1}{256} = -0.5$ $\frac{1}{512} \log \frac{1}{512} = -0.5$ $\frac{1}{1024} \log \frac{1}{1024} = -0.5$ $\frac{1}{2048} \log \frac{1}{2048} = -0.5$ $\frac{1}{4096} \log \frac{1}{4096} = -0.5$ $\frac{1}{8192} \log \frac{1}{8192} = -0.5$ $\frac{1}{16384} \log \frac{1}{16384} = -0.5$ $\frac{1}{32768} \log \frac{1}{32768} = -0.5$ $\frac{1}{65536} \log \frac{1}{65536} = -0.5$ $\frac{1}{131072} \log \frac{1}{131072} = -0.5$ $\frac{1}{262144} \log \frac{1}{262144} = -0.5$ $\frac{1}{524288} \log \frac{1}{524288} = -0.5$ $\frac{1}{1048576} \log \frac{1}{1048576} = -0.5$ $\frac{1}{2097152} \log \frac{1}{2097152} = -0.5$ $\frac{1}{4194304} \log \frac{1}{4194304} = -0.5$ $\frac{1}{8388608} \log \frac{1}{8388608} = -0.5$ $\frac{1}{16777216} \log \frac{1}{16777216} = -0.5$ $\frac{1}{33554432} \log \frac{1}{33554432} = -0.5$ $\frac{1}{67108864} \log \frac{1}{67108864} = -0.5$ $\frac{1}{134217728} \log \frac{1}{134217728} = -0.5$ $\frac{1}{268435456} \log \frac{1}{268435456} = -0.5$ $\frac{1}{536870912} \log \frac{1}{536870912} = -0.5$ $\frac{1}{1073741824} \log \frac{1}{1073741824} = -0.5$ $\frac{1}{2147483648} \log \frac{1}{2147483648} = -0.5$ $\frac{1}{4294967296} \log \frac{1}{4294967296} = -0.5$ $\frac{1}{8589934592} \log \frac{1}{8589934592} = -0.5$ $\frac{1}{17179869184} \log \frac{1}{17179869184} = -0.5$ $\frac{1}{34359738368} \log \frac{1}{34359738368} = -0.5$ $\frac{1}{68719476736} \log \frac{1}{68719476736} = -0.5$ $\frac{1}{137438953472} \log \frac{1}{137438953472} = -0.5$ $\frac{1}{274877906944} \log \frac{1}{274877906944} = -0.5$ $\frac{1}{549755813888} \log \frac{1}{549755813888} = -0.5$ $\frac{1}{1099511627776} \log \frac{1}{1099511627776} = -0.5$ $\frac{1}{2199023255552} \log \frac{1}{2199023255552} = -0.5$ $\frac{1}{4398046511104} \log \frac{1}{4398046511104} = -0.5$ $\frac{1}{8796093022208} \log \frac{1}{8796093022208} = -0.5$ $\frac{1}{17592186044416} \log \frac{1}{17592186044416} = -0.5$ $\frac{1}{35184372088832} \log \frac{1}{35184372088832} = -0.5$ $\frac{1}{70368744177664} \log \frac{1}{70368744177664} = -0.5$ $\frac{1}{140737488355328} \log \frac{1}{140737488355328} = -0.5$ $\frac{1}{281474976710656} \log \frac{1}{281474976710656} = -0.5$ $\frac{1}{562949953421312} \log \frac{1}{562949953421312} = -0.5$ $\frac{1}{1125899906842624} \log \frac{1}{1125899906842624} = -0.5$ $\frac{1}{2251799813685248} \log \frac{1}{2251799813685248} = -0.5$ $\frac{1}{4503599627370496} \log \frac{1}{4503599627370496} = -0.5$ $\frac{1}{9007199254740992} \log \frac{1}{9007199254740992} = -0.5$ $\frac{1}{18014398509481984} \log \frac{1}{18014398509481984} = -0.5$ $\frac{1}{36028797018963968} \log \frac{1}{36028797018963968} = -0.5$ $\frac{1}{72057594037927936} \log \frac{1}{72057594037927936} = -0.5$ $\frac{1}{144115188075855872} \log \frac{1}{144115188075855872} = -0.5$ $\frac{1}{288230376151711744} \log \frac{1}{288230376151711744} = -0.5$ $\frac{1}{576460752303423488} \log \frac{1}{576460752303423488} = -0.5$ $\frac{1}{1152921504606846976} \log \frac{1}{1152921504606846976} = -0.5$ $\frac{1}{2305843009213693952} \log \frac{1}{2305843009213693952} = -0.5$ $\frac{1}{4611686018427387904} \log \frac{1}{4611686018427387904} = -0.5$ $\frac{1}{9223372036854775808} \log \frac{1}{9223372036854775808} = -0.5$ $\frac{1}{18446744073709551616} \log \frac{1}{18446744073709551616} = -0.5$ $\frac{1}{36893488147419103232} \log \frac{1}{36893488147419103232} = -0.5$ $\frac{1}{73786976294838206464} \log \frac{1}{73786976294838206464} = -0.5$ $\frac{1}{147573952589676412928} \log \frac{1}{147573952589676412928} = -0.5$ $\frac{1}{295147905179352825856} \log \frac{1}{295147905179352825856} = -0.5$ $\frac{1}{590295810358705651712} \log \frac{1}{590295810358705651712} = -0.5$ $\frac{1}{1180591620717411303424} \log \frac{1}{1180591620717411303424} = -0.5$ $\frac{1}{2361183241434822606848} \log \frac{1}{2361183241434822606848} = -0.5$ $\frac{1}{4722366482869645213696} \log \frac{1}{4722366482869645213696} = -0.5$ $\frac{1}{9444732965739290427392} \log \frac{1}{9444732965739290427392} = -0.5$ $\frac{1}{18889465931478580854784} \log \frac{1}{18889465931478580854784} = -0.5$ $\frac{1}{37778931862957161709568} \log \frac{1}{37778931862957161709568} = -0.5$ $\frac{1}{75557863725914323419136} \log \frac{1}{75557863725914323419136} = -0.5$ $\frac{1}{151115727451828646838272} \log \frac{1}{151115727451828646838272} = -0.5$ $\frac{1}{302231454903657293676544} \log \frac{1}{302231454903657293676544} = -0.5$ $\frac{1}{604462909807314587353088} \log \frac{1}{604462909807314587353088} = -0.5$ $\frac{1}{1208925819614629174706176} \log \frac{1}{12089258196146291$

[illegible]

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

महोदय, आपका पत्र मिला। मैंने देखा कि आपने 'पीपल' में

[illegible]

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

$\frac{d}{dt} \left(\frac{\partial L}{\partial \dot{x}} \right) = \frac{\partial L}{\partial x}$

[illegible]

$\frac{1}{n} \sum_{j=1}^n \left(\frac{\partial f_j}{\partial x_i} - \lambda \frac{\partial g}{\partial x_i} \right) = 0$

$$\frac{d}{dt} \left(\frac{\partial L}{\partial \dot{x}} \right) = \frac{\partial L}{\partial x}, \quad \frac{d}{dt} \left(\frac{\partial L}{\partial \dot{y}} \right) = \frac{\partial L}{\partial y}, \quad \frac{d}{dt} \left(\frac{\partial L}{\partial \dot{z}} \right) = \frac{\partial L}{\partial z}$$
$$x^2 - 2x + 1 = (x-1)^2 \quad x^2 - 4x + 4 = (x-2)^2 \quad x^2 - 6x + 9 = (x-3)^2 \quad x^2 - 8x + 16 = (x-4)^2 \quad x^2 - 10x + 25 = (x-5)^2$$
[illegible]
$$\frac{1}{x^2} = x^{-2} \Rightarrow -2x^{-3} = -\frac{2}{x^3}$$
[illegible]

लयी लपेटि सु पट वर बाल, वसुदेव चले तुरत तिहि काल ।
 आपुहि उघरे कुटिल किवार, भोर भये ज्यौ भजत अँध्यार ।
 पीगिनि परे पहूवा ऐसै, अति मादक मद पीये जैसै ।
 घुरि ग्राये घन करि अँधियारी, जान्यौ परै न ज्यौ रवि वारी ।
 फुही फूल से परत मुदेस, ते सहि सक्थी न सेवक सेस ।
 प्रेम-मगन सु गगन में आइ, लयी फनन को छत्र बनाइ ।
 वसुदेव मुत-मुख के उजियारे, चली जाइ आनंद भरि भारे ।
 जम-अनुजा की ढिँग जाँ जाइ, वाट न घाट, रही जल छाड़ ।
 उठहि जु लहरि मुधि न कछु परै, चढ़ी गगन सौ बातें करै ।
 दृष्टि गरि गये मोहन जब ही, मधि तै इत-उत ह्वै गई तव ही ।
 दीनी प्रभु कौ मारग ऐसै, सीतापति कौ सागर जैसै ।
 इन सोचति देवकि महतारी, ह्वै मेरी ललन दुखारी ।
 भरि भारी की रैन अँध्यारी, लहलहाति बिजुरी वजमारी ।
 बहुरची बीच कलिंदी कारी, भरि रही नीर भयानक भारी ।
 चंद नी वदन दुरची नहि रहिहै, दैया कोऊ दूरि तै लहिहै ।
 डोलत बहुत कंस के दूत, दैव कुसर सौ जैहै मूत ।
 यौ बिललाइ देवकी माइ, कहति कि हो हरि तुमहि सहाइ ।
 निरख्यौ जदपि पूत-परभाउ, तदपि प्रेम कौ यहै सुभाउ ।
 वसुदेव जद गोकुल में गये, देखे सब निद्रा-वस भये ।
 नुन जनुमनि की ढिँग पीढाउ, गुता परी तहँ तै इक पाइ ।
 न आये फिरि ताही वाट, तैसेँ जुरि गये कुटिल कपाट ।
 बैठे बहुरि पहिरि पग बेरी, ज्यौ कोउ गाड़ि धरं धन ठेरी ।

लयी लपेटि सु पट वर बाल, वसुदेव चले तुरत तिहि काल ।
 आपुहि उघरे कुटिल किवार, भोर भये ज्यौ भजत अँध्यार ।
 पीग्नि परे पह्रुवा ऐसै, अति मादक मद पीये जैसे ।
 घुरि आये घन करि अँधियारी, जान्यौ परै न ज्यौ रवि वारी ।
 फुही फूल से परत मुदेस, ते सहि सक्यौ न सेवक सेस ।
 प्रेम-मगन सु गगन में आइ, लयी फनन को छत्र बनाइ ।
 वसुदेव मुत-मुख के उजियारे, चलयौ जाइ आनँद भरि भारे ।
 जम-अनुजा की ढिँग जाँ जाइ, वाट न घाट, रही जल छाइ ।
 उठहि जु लहरि मुधि न कछु परै, चढ़ी गगन सी बातें करै ।
 दृष्टि गरि गये मोहन जब ही, मधि तै इत-उत ह्वै गई तव ही ।
 दीनी प्रभु की मारग ऐसै, सीतापति की सागर जैसे ।
 इन सोचति देवकि महतारी, ह्वै मेरी ललन दुखारी ।
 भरि भादी की रँनि अँध्यारी, लहलहाति विजुरी वजमारी ।
 बहुर्या बीच कलिंदी कारी, भरि रही नीर भयानक भारी ।
 चंद नी वदन दुर्या नहि रहिहै, दैया कोऊ दूरि तै लहिहै ।
 डोलन बहुत कंस के दूत, दैव कुसर सी जैहे मूत ।
 री बिललाइ देवकी माइ, कहति कि हो हरि तुमहि सहाइ ।
 निरख्यौ जदपि पूत-परभाउ, तदपि प्रेम की यहै सुभाउ ।
 वसुदेव जव गोकुल में गये, देखे सब निद्रा-वस भये ।
 नुन जन्मुमनि की ढिँग पीटाउ, गुना परी तहँ तै इक पाइ ।
 न आये फिरि ताही वाट, तैसेई जुरि गये कुटिल कपाट ।
 बैठे ब्रह्मनि पहिरि पग बेरी, ज्यौ कोउ गाड़ि वरै घन ढेरी ।

ताके वचन सुनत ही कंस, विस्मय भयी, परची जिय संस ।
 कहत कि देवी बानी महा, भूठ परी सो कारन कहा ।
 देवकि वनुदेव दीने छोरि, बिनती करत कंस कर जोरि । २०
 अहो भगिनि ! अहो भगिनीभर्ता ! मो सम नहिन पाप की कर्ता ।
 राच्छत ज्या अपने सुत खाइ, सो मै कीनी नीच सुभाइ ।
 ज्या ब्रह्महा जीवत ही मरचो, ऐसी हौ हूँ विधना करचो ।
 नर तो जनी अनृत ही पगे, अमरौ अनृत वकन पुनि लगे ।
 जिहि विस्वास सुसा के तात, सीनक ज्या मै कीनी घात । २५
 जिनि सांचहु उन के अनुराग, जातै तुम समभक्त बड़ भाग ।
 निज प्रारब्ध कर्म करि वीरे, रहत न सदा जत इक ठीरे ।
 तातै सोक तजहु दुखमई, कर्म-विवस जु भई सो भई ।
 छिमा करहु मेरी अपराध, जातै दीनबंधु तुम साध ।
 ऐसे कहि लोचन जल भरचो, दीरि मुसा के पाइनि परचो । ३०
 सांत भयो देवकि की रोष, वनुदेव बहु पुनि कीनी तोष ।
 आग्या पाइ जाइ घर कंस, कन्या-वचन मुनि परी संस ।
 रजनी गये भयी परभात, मंत्रिन सी बरनी सब बात ।
 मुनि नृप-वचन अमुर भहराने, अमरन पर निपट ही रिसाने ।
 कहन लगे जी ऐसे आहि, महाराज तौ डरी न ताहि । ३५
 दस दस दिन के बालक जिते, हम सब मारि डारिहैं तिते ।
 को उद्दिम करिहैं सब देव, जानत हैं हम उन के भेव ।
 अभय ठीर तो बल्लन करै, भीर परे तैं थर थर डरें ।
 पुरानि कवन अल्प बल जाहि, ब्रह्मा वपुरी तपसी आहि ।

ताके वचन सुनत ही कंस, विस्मय भयी, परची जिय संस ।
 कहत कि देवी वानी महा, भूठ परी सो कारन कहा ।
 देवकि वनुदेव दीने छोरि, विनती करत कंस कर जोरि ।
 अहो भगिनि ! अहो भगिनीभर्ता ! मो सम नहिन पाप की कर्ता ।
 राच्छस ज्यों अपने सुत खाइ, सो मैं कीनी नीच सुभाइ ।
 ज्यों ब्रह्महा जीवत ही मरची, ऐसी हौ हूँ विधना करची ।
 नर तो जनी अनृत ही पगे, अमरौ अनृत वकन पुनि लगे ।
 जिहि विस्वास सुसा के तात, सौनक ज्यों मैं कीनी घात ।
 जिनि सोचहु उन के अनुराग, जातै तुम समभक्त बड़ भाग ।
 निज प्रारब्ध कर्म करि वीरे, रहत न सदा जत इक ठीरे ।
 तातैं सोक तजहु दुखमई, कर्म-विदस जु भई सो भई ।
 छिमा करहु मेरी अपराध, जातै दीनबंधु तुम साध ।
 ऐसे कहि लोचन जल भरची, दीरि मुसा के पाइनि परची ।
 सांत भयो देवकि की रोष, वनुदेव बहु पुनि कीनी तोष ।
 आग्या पाइ जाइ घर कंस, कन्या-वचन सुनि परी संस ।
 रजनी गये भयी परभात, मंत्रिन सी बरनी सब बात ।
 सुनि नृप-वचन अमुर भहराने, अमरन पर निपट ही रिसाने ।
 कहन लगे जी ऐमै आहि, महाराज तो डरी न ताहि ।
 दस दस दिन के बालक जिते, हम सब मारि डारिहैं तिते ।
 को उद्दिम करिहैं सब देव, जानत है हम उन के भेव ।
 अभय ठीर ती वल्गन करै, भीर परे तैं थर थर डरैं ।
 नुरसनि कवन अल्प बल जाहि, ब्रह्मा वपुरी तपसी आहि ।

यों मुत्त-उदै-पयोनिधि पेन्नि, बढ़ति है रग-नरंग विसेखि । ५
 दोले बज के द्विज वड़भागी, जिन के हुती यहै लो लागी ।
 स्वच्छ मुगंध सलिल अन्हवाये, विप्रन चदन तिलक वनाये ।
 नंद के भूपन दिखि मन भूल्यो, जनु आनद महीरुह फूल्यो ।
 विधिदत्त जातकरम करवाइ, लागे दान दैन ब्रजराइ ।
 द्वै लख धेनु सवछ बहु दूधी, प्रथम प्रसूता, सुदर, सूधी । १०
 कंचन सींग मढ़ी सोहनी, कंचन की वड्डी दोहनी ।
 बहुरी तिल अरु रतन मिलाइ, कीने वड्डे सैल बनाइ ।
 ऊपर कंचन छादन छाइ, दीने ब्रज के द्विजन बुलाइ ।
 अवर बहुत दीनो ब्रजराज, अपने कुल-मंडन के काज ।
 तिहि छिन नंद-सदन की सोभा, नहि कहि परत लगत जिय लोभा । १५
 इत जु वेद-धुनि की छवि वढ़ी, मंगल वेलि मी त्रिभुवन चढ़ी ।
 इत मागध सु वंस जस पढ़ै, इत वंदीजन गुनगन रढ़ै ।
 गावत इत जु रागिनी राग, चुये परत जिन के अनुराग ।
 आनँदघन जिमि दुंदुभि वजै, जिन मुनि सकल अमंगल भजै ।
 मुनि कै गोप महा मुद भरे, चले महरि-घर रंगनि ररे । २०
 पहिरे अंबर सुदर सुदर, जे कव हूँ निरखे न पुरंदर ।
 मंगल भेट करन मैं लिये, मैं से नरिकन आगे किये ।
 गोपी मृदित, भयो मन भायो, महरि जसोदा ढोटा जायो ।
 प्रफुलित ही सो लागनि भली, को है प्रात कमल की कली ।
 कुंकुम-रस रंजित मुख लीने, कनक-कमल अस नहि न हाने । २५
 चर्चा तुल्य सजि सहज निंगार, छिनियन उछरत मोतियन हार ।

यों नुत-उदै-पयोनिधि पेखि, बढ़ति है रग-तरंग विसेखि ।
 दोने वज के द्विज वड़भागी, जिन के हुती यहै लो लागी ।
 स्वच्छ मुगंध सलिल ग्रन्हाये, विप्रन चदन तिलक बनाये ।
 नंद के भूपन दिखि मन भूल्यो, जनु आनद महीरह फूल्यो ।
 विधिवत जातकरम करवाइ, लागे दान दैन ब्रजराइ ।
 द्वै लख धेनु सवछ बहु दूधी, प्रथम प्रसूता, सुदर, सूधी ।
 कंचन सींग मढ़ी सोहनी, कंचन की वड्डी दोहनी ।
 बहुरी तिल अर रतन मिलाइ, कीने वड्डे सैल बनाइ ।
 ऊपर कंचन छादन छाइ, दीने ब्रज के द्विजन बुलाइ ।
 अवर बहुत दीनों ब्रजराज, अपने कुल-मंडन के काज ।
 तिहि छिन नंद-सदन की सोभा, नहिकहि परत लगत जिय लोभा ।
 इत जु वेद-धुनि की छवि वढ़ी, मंगल वेलि मी त्रिभुवन चढ़ी ।
 इत मागध सु बंस जस पढ़ै, इत बंदीजन गुनगन रहैं ।
 गावत इत जु रागिनी राग, चुये परत जिन के अनुराग ।
 आनंदवन जिमि दुंदुभि वजै, जिन मुनि सकल अमंगल भजैं ।
 मुनि कै गोप महा मुद भरे, चले महरि-घर रंगनि ररे ।
 पहिरे अंबर सुदर मुदर, जे कव हूँ निरखे न पुरंदर ।
 मंगल भेट करन मै लिये, मैत से लरिकन आगे किये ।
 गोपी मुदित, भयो मन भायो, महरि जसोदा ढोटा जायो ।
 प्रफुलित ही सो लागनि भली, को है प्रात कमल की कली ।
 कुंकुम-रम रंजित मुख लीने, कनक-कमल अस नाहि न हाने ।
 चर्चा तुरत सजि सहज निंगार, छनियन उछरत मोतियन हार ।

पष्ठ अध्याय

मुनि लै छठी अध्याइ अत्र, अहो मित्र अति चित्र ।

जहाँ सकल मल की हरन, वकी चरित्र पवित्र ॥

सोचत चले नद मग माही वसुदेव वचन मृपा तो नाहीं ।

हो हरि ईश्वर, सरन तुम्हारी, वा सिंसु की कीजहु रखवारी ।

इक तो सहजहि हुती नृसंस, पुनि चेरी करि प्रेरी कंस । ५

ग्राम, नगर, पुर, पट्टन जिते, मास बीच के बालक तिते ।

चली पूतना सिमुन सँघारति, केउ पटकति केउ खाइहि डारति ।

इहि विधि विचरति विचरति वकी, इक दिन ब्रज आई तक तकी ।

श्री सुक यो जव कही मुभाइ, राजा मुनत विकल ह्वै जाइ ।

ताकी समाधान सुक करै, हे राजन ! इहि डर जिनि डरै । १०

नाममात्र जिहि प्रभु कौ जहाँ, ऐसन कौ प्रभाउ नहि तहाँ ।

सो साच्छान नंद को वाम, भै-संका की इहाँ न काम ।

अद्भुत वनिता-वेष वनाइ, अँग अँग रूप अनूप चुचाइ ।

ललित गु भूपन, ललित दुकूल, खसि खसि परत सीस तै फूल ।

कंठ मै हीरा, आनन बीरा, पाइनि वाजत मंजु मँजीरा । १५

लटकि चलत तव को छवि गनी, पगिहै टूटि लटी कटि मनी ।

कमल फिरावत नयन डुरावति, मधुर-मधुर मुसकति, छवि पावति ।

गोप रहे सब जोहे मोहे, जानहि नहिन कछु हम को हे ।

गोपी चकित चाहि कैं ताहि, कहन लगी कि रमा यह आहि ।

अपने पिय काँ देखति डोलनि, यातै नहि काहू सो बोलति । २०

पष्ठ अध्याय

मुनि लै छठी अध्याइ अत्र, अहो मित्र अति चित्र ।

जहाँ सकल मल की हरन, वकी चरित्र पवित्र ॥

सोचत चले नद सग माही वमुदेव वचन मृपा ती नाहीं ।
 हो हरि ईस्वर, सरन तुम्हारी, वा सिसु की कीजहु रखवारी ।
 इक ती सहजहि हुती नृसंस, पुनि चेरी करि प्रेरी कंस ।
 ग्राम, नगर, पुर, पट्टन जिते, मास बीच के बालक तिते ।
 चली पूतना सिमुन सँधारति, केउ पटकति केउ खाइहि डारति ।
 इहि विधि विचरति विचरति वकी, इक दिन ब्रज आई तक तकी ।
 श्री सुक यो जव कही मुभाइ, राजा मुनत विकल ह्वै जाइ ।
 ताकी समाधान सुक करै, हे राजन ! इहि डर जिनि डरै ।
 नाममात्र जिहि प्रभु कौ जहाँ, ऐसन कौ प्रभाउ नहि तहाँ ।
 सो साच्छान नंद को धाम, भै-संका कौ इहाँ न काम ।
 अद्भुत वनिता-वेष वनाइ, अँग अँग रूप अनूप चुचाइ ।
 ललित गु भूपन, ललित दुकूल, खसि खसि परत सीस तै फूल ।
 कंठ मै हीरा, आनन वीरा, पाइनि वाजत मंजु मँजीरा ।
 लटकि चलत तव को छवि गनी, परिहै टूटि लटी कटि मनी ।
 कमल फिरावत नयन डुरावति, मधुर-मधुर मुसकति, छवि पावति ।
 गोग रहे सब जोहे मोहे, जानहि नहिन कछु हम को हे ।
 गोपी चकिन चाहि कै ताहि, कहन लगी कि रमा यह आहि ।
 अपने पिय काँ देखति डोलनि, यात नहि काहू सो बोलति ।

मृगं रसातल, भूतल जेतौ, सब कलमल्यौ, हलमल्यौ तेतौ ।
 दोउ कुच पकरि उचकि वह नारी, लै डारी गोकुल तै न्यारी ।
 पट कोस के लता-द्रुम जिते, चूरन ह्वै गये तिहि-तर तिते । ४५
 जे द्रुम-लता निपट प्रतिकूल, हुते न गोकुल के अनुकूल ।
 ते तिहि तन-तर चूरन करे, उवरे जे ब्रज-हित करि भरे ।
 प्रथमहि ताके नाद जु डरे, ब्रज-जन जहाँ तहाँ गिरि परे ।
 पाछे उठि उठि देखन धाये, देखि रूप अति त्रासहि पाये ।
 मुंह-वाये जु परी विकरार, तपत ताम्र से वगरे वार । ५०
 हल-दंड से बड़े बड़े दंत, गिरि-कंदर-सम नासा-दंत ।
 अथ कूप से नैन गँभीर, वैठि जु गये प्रान की पीर ।
 उदर भयंकर लागत ऐसी, विनु जल महा सरोवर जैसी ।
 जघन सघन जु भयानक भारे, महानदी के जनु कि किनारे ।
 ताके उर पर सुंदर बाल, खेलत अभय, सु नैन विसाल । ५५
 जे पद रहत भगत-जन हिये, लालति ललित भौति श्री लिये ।
 मुनि-मन जिनिहि पत्यात न रती, ते पद विलुठत ताकी छती ।
 गोपी परम प्रेम-रस-बोरी, फिरति पूतना तन पर दोरी ।
 ललहि उठाइ छती लपटाइ, लै आई जहँ जगुमति माइ ।
 ब्रजरानी अनेक धन वारति, पुनि पुनि राई लीन उत्तारति । ६०
 गोमूत्र लै ललहि अन्हवाइ, गोरज, गोमय अंग लगाइ ।
 हरि के द्वादश नामन करि कै, रच्छा करी ब्रज तियन डरि कै ।
 नाकी भयी, पयोवर प्यायी, जननी-जठर जीउ तव आयी ।
 वदन चूमि जलुमति थीं भाख्यौ, आज पत परमेमुर राख्यौ ।

मुगं रसातल, भूतल जेतौ, सब कलमल्यी, हलमल्यी तेतौ ।
 दोउ कुच पकरि उचकि बह नारी, लै डारी गोकुल तै न्यारी ।
 पट कोस के लता-द्रुम जिते, चूरन ह्वै गये तिहि-तर तिते ।
 जे द्रुम-लता निपट प्रतिकूल, हुते न गोकुल के अनुकूल ।
 तै तिहि तन-तर चूरन करे, उवरे जे ब्रज-हित करि भरे ।
 प्रथमहि ताके नाद जु डरे, ब्रज-जन जहाँ तहाँ गिरि परे ।
 पाछे उठि उठि देखन धाये, देखि रूप अति वासहि पाये ।
 मुँह-वाये जु परी विकरार, तपत ताम्र से वगरे वार ।
 हल-दंड से बड़े बड़े दंत, गिरि-कंदर-सम नासा-दंत ।
 अथ कूप से नैन गँभीर, वैठि जु गये प्रान की पीर ।
 उदर भयंकर लागत ऐसी, विनु जल महा सरोवर जैसी ।
 जघन सघन जु भयानक भारे, महानदी के जनु कि किनारे ।
 ताके डर पर सुंदर बाल, खेलत अभय, सु नैन विसाल ।
 जे पद रहत भगत-जन हिये, लालति ललित भाँति श्री लिये ।
 मुनि-मन जिनिहि पत्यात न रती, ते पद विलुठत ताकी छती ।
 गोपी परम प्रेम-रस-बोरी, फिरति पूतना तन पर दौरी ।
 ललहि उठाइ छती लपटाइ, लै आई जहँ जन्मुमति माइ ।
 ब्रजरानी अनेक धन वारति, पुनि पुनि राई लौन उतारति ।
 गोमूत्र लै ललहि अन्हवाइ, गोरज, गोमय अंग लगाइ ।
 हरि के द्वादस नामन करि कै, रच्छा करी ब्रज तियन डरि कै ।
 नाँकी भयी, पयोवर प्यायी, जननी-जठर जीउ तव आयी ।
 बदन चूमि जलुमति यीं भाख्यौ, आज पूत परमेमुर राख्यौ ।

सप्तम अध्याय

अब सप्तम अध्याइ सुनि, सुंदर श्रुति की सार ।

जामैं लाल रसाल की, बालचरित-मधुवार ॥

सुनि सप्तम अध्याइ उदार, जामैं बालचरित-मधुवार ।

जिहि रस-सिंधु मगन भयो राजा, फिरि पूछै सुक अति सुख काजा ।

हो प्रभु ! हरि की बालचरित, अति विचित्र अरु परम पवित्र । ५

जदपि अवर हरि के अवतार, मंगलरूप सकल श्रुति-सार ।

पैं यह बालचरित-मधुवार, या सम कछु न अवर संसार ।

पियत तृपति मानत नहि कान, औरी कही जानमनि जान ।

फुरे जु बालचरित-रस-रंग, कहन लगे सुक पुलकित अंग ।

इक दिन आपुहि करवट लई, जननी निरखि मुदित अति भई । १०

बोली सब गोकुल की बाला, उत्सव किये महा तिहि काला ।

सकट के अध धरि कंचन-पलना, सुतहि सुबाइ नंद की ललना ।

विदा करन लोगन कहूँ लगी, डोलत सुत-सनेह रँगमगी ।

रतन मिलै तिल-चावल कीनी, भरि भरि गोद सवन की दीनी ।

पूत उदै के हित ललचाइ, मति कोउ मन मैली करि जाइ । १५

लगी जु भूख ललन जब जगे, मधुर मधुर तब रोवन लगे ।

पनना टिंग बालक जब आई, निरखे हरि बालक के भाइ ।

चच्छे किन्कि किलकि कल केलत, चरन-अंगूठा मुख में मेलत ।

जमुनति लदन सुनति नहि भई, अति आनंद मगन ह्वै गई ।

बग्नै चरन फिरत ज्यों गाइ, सब मन रहत वच्छ में आई । २०

सप्तम अध्याय

अब सप्तम अध्याय सुनि, सुंदर श्रुति कौ सार ।

जामै लाल रसाल की, बालचरित-मधुवार ॥

सुनि सप्तम अध्याय उदार, जामै बालचरित-मधुवार ।

जिहि रस-सिंधु मगन भयो राजा, फिरि पूछै सुक अति सुख काजा ।

हो प्रभु ! हरि की बालचरित, अति विचित्र अरु परम पवित्र । ५

जदपि अवर हरि के अवतार, मंगलरूप सकल श्रुति-सार ।

पै यह बालचरित-मधुवार, या सम कछु न अवर संसार ।

पियत तृपति मानत नहि कान, औरी कही जानमनि जान ।

फुरे जु बालचरित-रस-रंग, कहन लगे सुक पुलकित अंग ।

इक दिन आपुहि करवट लई, जननी निरखि मुदित अति भई । १०

बोली सब गोकुल की बाला, उत्सव किये महा तिहि काला ।

सकट के अघ धरि कंचन-पलना, सुतहि सुबाइ नंद की ललना ।

विद्या करन लोगन कहूँ लगी, डोलत मुत-सनेह रँगमगी ।

रतन मिलै तिल-चावल कीनी, भरि भरि गोद सबन की दीनी ।

पूत उई के हित ललचाइ, मति कोउ मन मैली करि जाइ । १५

लगी जु भूख ललन जब जगे, मधुर मधुर तब रोवन लगे ।

पगना टिंग बालक जब आई, निरखे हरि बालक के भाइ ।

बचहँ किनकि किलकि कल केलत, चरन-अँगूठा मुख में मेलत ।

जमुनि रदन मुनि नहि भई, अति आनंद मगन हूँ गई ।

बन्हँ चरन फिरत ज्यों गाइ, मव मन रहत बच्छ मैं आई । २०

परी धरनि वृकि यौ विललाड, ज्यौ मृत वच्छ गाड डिडियाइ ।
 जगुननि-धुनि मुनि धाई गोपी, आई महा धिरह-रम-ओपी ।
 गिरि गई जमुमनि ढिँग-ढिँग ऐसी, कचन-वेलि पवन-बस जैसी । ४५
 त्रिभुवन कौ जु भार हो जितौ, श्री हरि उदर धरचौ हो तितो ।
 वदियै तृनावर्त बल जुड़चौ, ऐसैं लरिकहि लै नभ उड़चौ ।
 शौगिक दूरि गयी रंगमग्यो, पुनि अति भार भरचौ डगमग्यो ।
 कहत कि वह सिसु हाथ न आयौ, यह कोउ गिरिवर जाइ उठायौ ।
 लरिकहि डारन कौं अरबरे, लरिका डरपि घुरि गयी गरे । ५०
 गर के गहत निचष्टित भयी, दृगन की बाट निकसि जिउ गयी ।
 तब वह महा अमुर खरहरचौ, ब्रज के बीच सिला पर परचौ ।
 किरच किरच टुटि-फुटि गयी ऐसैं, हर सर हत्यो तिपुर रिपु जैसैं ।
 ताके उर पर मोहननाल, खेलत अभै, सु नैन विसाल ।
 गोपिन धाड जाड सिनु लयी, आनि जसोदा गोद मै दयी । ५५
 मुनि कै सब जन धाये आये, निरखि रूप अति विस्मय पाये ।
 चूमत वदन नंद बड़भागी, पीछत रेनु तनय-नन लागी ।
 कहत कि कवन पुन्य हम कियो, हरि अरचे कि दान बहु दियो ।
 काल के मुख मै बालक गयी, तहँ तै बहुरि विद्याना दयी ।
 पापी अपने पापहि मरै, साधु की रच्छा ईस्वर करै । ६०

दीपक प्रगटचौ नंद-धर, निर्मल जोति अभंग ।

उड़ि उड़ि परन लगे जहाँ, वानव द्रुष्ट पतंग ॥

तृनावर्त आवन मै बाल, भयी जु अति भारी निहि काल ।

जननी के जिय संका रहै, हरि वह भार जनायो चहै ।

परी धग्नि धुकि यां विललाड, ज्यौ मृत वच्छ गाड डिडियाइ ।
 जग्मुनि-धुनि मुनि धाई गोपी, आई महा विरह-रम-ओपी ।
 गिरि गई जग्मुनि ढिँग-ढिँग ऐसी, कचन-वेलि पवन-बस जैसी । ४५
 त्रिभुवन की जु भार हो जिती, श्री हरि उदर धरची हो तितो ।
 बद्रिय तृनावर्त बल जुड़ची, ऐसैं लरिकहि लै नभ उड़ची ।
 श्रौंगिक द्वारि गयी रंगमग्यो, पुनि अति भार भरची डगमग्यी ।
 कहत कि वह सिसु हाथ न आयी, यह कोउ गिरिवर जाइ उठायी ।
 लरिकहि डारन कीं अरबरे, लरिका डरपि घुरि गयी गरे । ५०
 गर के गहत निचष्टित भयी, दृगन की वाट निकसि जिउ गयी ।
 तब वह महा अमुर खरहरची, ब्रज के बीच सिला पर परची ।
 किरच किरच टुटि-फुटि गयी ऐनैं, हर सर हत्यो तिपुर रिपु जैसैं ।
 ताके उर पर मोहननाल, खेलत अभै, सु नैन विसाल ।
 गोपिन धाड जाड सिनु लयी, आनि जसोदा गोद में दयी । ५५
 मुनि कै सब जन धाये आये, निरखि रूप अति विस्मय पाये ।
 नूमत वदन नंद बड़भागी, पौछत रेनु तनय-नन लागी ।
 कहत कि कवन पुन्य हम कियो, हरि अरचे कि दान बहु दयी ।
 काल के मुन्य में बालक गयी, तहँ तै बहुरि विद्याना दयी ।
 पापी अपने पापहि मरै, साधु की रच्छा ईस्वर करै । ६०

दीपक प्रगटची नंद-धर, निर्मल जोति अभंग ।

उड़ि उड़ि परन लगे जहाँ, दानव दुष्ट पतंग ॥

तृनावर्त आवन में बाल, भयी जु अति भारी तिहि काल ।

जननी के जिय संका रहै, हरि वह भार जनायो चाहै ।

कहौ कि तुम परितूग्न नाथ ! रिधि-सिधि-निधि सब तुम्हरे हाथ ।
 कवन वस्तु करि पूजा कीजै, ज्यौं दिनमनि की दीपक दीजै ।
 महापुन्य जो चलत ठौर तैं, नहि कछु चाहत काहु और तैं ।
 कृपन जु गृह-ममता करि बँधे, चलि न सकत दृढ़ फंदन फँधे । १०
 केवल तिन को करन कल्याण, दिखियत नहि न प्रयोजन आन ।
 ज्योतिषास्त्र जु अतीन्द्रिय ग्यान, ताके तुम ही बीज निदान ।
 पूर्व-जन्म जु सुभानुभ करे, जा करि जंतु जगत संचरै ।
 आगे होतहार पुनि जोई, प्रभु तुम सम्यक जानत सोई ।
 नामकरन लरिकन की कीजै, कवन मु विधि मोहि आयसु दीजै । १५
 गर्ग कहत अहो गुनि ब्रजराज ! यातैं अवर न उत्तम काज ।
 ऐ परि हाँ गुर जडु-वंस की, मोहि बड़ी डर वा कंस की ।
 सुनि पावै नीचन की राइ, ती ती हीइ बड़ी अन्याइ ।
 नंद कहत ती ऐसैं करौ, गृह-मधि गुप्त ठौर अनुसरी ।
 तनक स्वस्ति-वाचन करि लीजै, लरिकन कछु नाँउ धरि दीजै । २०
 गर्गहि अरुण गये लैं नंद, अग्निहोत्र करि मंदहि मंद ।
 प्रयन रोहिनी-सुत के नाम, धरन लग्यौ द्विज सब गुन-धाम ।
 याकी एक नाम मंकर्पन, जन-हर्षन, सब के मन-कर्पन ।
 बहुग्रीव रान परम अभिराम, अति बल तैं कहिहैं बलराम ।
 अथ नुनि अयने गुन के नाम, अद्भुत अद्भुत गुन के धाम । २५
 एक श्री कृष्ण नाम अस हैहै, मसि-सम गुधा सवन पर चरैहै ।
 कबहूँ पूर्व-जन्म नुन तेरी, पूत भवी हे वसुदेव केरी ।
 तातैं नानुदेव एक नाम, पूरन करिहैं सद्र के वाम ।

कही कि तुम परिपूर्ण नाथ ! रिधि-सिधि-निधि सब तुम्हरे हाथ ।
 कवन वस्तु करि पूजा कीजै, ज्यौं दिनमनि कां दीपक दीजै ।
 महापुन्य जो चलत ठौर तैं, नहि कछु चाहत काहु और तैं ।
 दृष्टन जु गृह-ममता करि बँधे, चलि न सकत दृढ़ फंदन फँधे । १०
 केवन तिन कां करन कल्याण, दिखियत नहिंन प्रयोजन आन ।
 ज्योतिषास्त्र जु अतीन्द्रिय ग्यान, ताके तुम ही बीज निदान ।
 पूर्व-जन्म जु सुभानुभ करे, जा करि जंतु जगत संचरै ।
 आगे होनहार पुनि जोई, प्रभु तुम सम्यक जानत सोई ।
 नामकरन लरिकन की कीजै, कवन मु बिधि मोहिं आयसु दीजै । १५
 गर्ग कहत अहो सुनि ब्रजराज ! यातैं अवर न उत्तम काज ।
 ऐं परि हीं गुर जडु-वंस की, मोहिं बड़ी डर वा कंस की ।
 सुनि पावै नीचन की राइ, ती ती हीइ बड़ी अन्याइ ।
 नंद कहत ती ऐसैं करौ, गृह-मधि गुप्त ठौर अनुसरी ।
 तनक स्वस्ति-वाचन करि लीजै, लरिकन कछु नाँउ धरि दीजै । २०
 गर्गहि अरुण गये लैं नंद, अग्निहोत्र करि मंदिहि मंद ।
 प्रयन रोहिनी-नुत के नाम, धरन लग्यी द्विज सब गुन-धाम ।
 याकों एक नाम संकर्षन, जन-हर्षन, सब के मन-कर्षन ।
 बहुन्धी रान परम अभिराम, अनि बल तैं कहिहैं बलराम ।
 अब सुनि अपने गुन के नाम, अद्भुत अद्भुत गुन के धाम । २५
 एक श्री कृष्ण नाम अस हैहै, मसि-सम गुवा सवन पर च्वहै ।
 कबहूँ पूर्व-जन्म नुन तेरी, पूत भवीं हे दसुदेव केरी ।
 तातैं नानुदेव एक नाम, पूरत करिहैं सब के वाम ।

भुनुक मुनुक वह पगन की डोलनि, मधुर तै मधुर तोतरी बोलनि ।
 आपुहि ललन चलन अनुरागे, दीरि पीरि लागि आवन लागे ।
 अपने रंगन खेलत मोहन, जमुमति डोलति गोहन गोहन ।
 अगन तै, खगन तै, नगन तै डरै, जमुमति भाखति राखति फिरै ।
 दिगि दिखि बालचरित अभिराम, विसरे सवन धाम के काम । ५५
 लं ब्रज-बालक अपनी वयस के, दधि माखन की चोरी चसके ।
 मोहन मंत्र सी घर घर डोरत, दधि-माखन चोरत, चित चोरत ।
 जब घर आवहि मोहनलाल, अंतर सहि न सकत ब्रज-वाल ।
 उरहन मिस मिलि नंद-निकेन, आवति मुख-छवि देखन हेत ।
 अहो महरि ! यह तुम्हरी तात, कहा कहै हम याकी बात । ६०
 असमय देइ बछरवन छोरि, ठाढ़ी हँसै खरिक की खोरि ।
 चोरि चोरि दधि-माखन खाइ, जो हम देहि ती देइ बगाइ ।
 धाम काँ काम करची ही चाहियै, कब लागि धाम धसे ही रहियै ।
 जब कोउ रचक उत उत जाइ, अरग अरग गृह-अंतर आइ ।
 नूपुर, किकिनि लेइ छिपाइ, सखन खवावै आपुन खाइ । ६५
 अल बड़ चोर कहि न कछु आवै, चपरि कै चखन तै मसिहि चुरावै ।
 यह मुनि आनंद भरि नंद-रानी, तिन सी कहति मुसकि मधु बानी ।
 बलि बलि ती तुम ऐसं करी, दिन दस भाजन ऊँचे धरी ।
 जब लागि याकी बुद्धि अयानी, तब लागि तुम ही हीहु सयानी ।
 हो जनु ! जो कोउ ऊँचे धरै, तहँ तुम मुनहु जु जनन करै । ७०
 तान्तर आनि उलूखन नावै, ऊखन पर डक सग्वहि चढ़ावै ।
 ता पर आपुन चढ़ि कै खाइ, चोर नी इन उन चितवत जाइ ।

भुनुक भुनुक वह पगन की डोलनि, मधुर तै मधुर तोतरी बोलनि ।
 आपुहि ललन चलन अनुरागे, दोरि पोरि लागि आवन लागे ।
 आपने रंगन खेलत मोहन, जमुमति डोलति गोहन गोहन ।
 अगन तै, खगन तै, नगन तै डरै, जमुमति भाखति राखति फिरै ।
 दिगि दिखि बालचरित अभिराम, विसरे सवन धाम के काम । ५५
 लै ब्रज-बालक अपनी वयस के, दधि माखन की चोरी चसके ।
 मोहन मंत्र सो घर घर डोरत, दधि-माखन चोरत, चित चोरत ।
 जब घर आवहि मोहनलाल, अंतर सहि न सकत ब्रज-बाल ।
 उरहन मिस मिलि नंद-निकेत, आवति मुख-छवि देखन हेत ।
 अहां महिर ! यह तुम्हरी तात, कहा कहै हम याकी बात । ६०
 असमय देइ बछरवन छोरि, ठाढ़ी हँसै खरिक की खोरि ।
 चोरि चोरि दधि-माखन खाइ, जाँ हम देहि ती देइ बगाइ ।
 धाम काँ काम करचाँ ही चाहियै, कब लागि धाम धसे ही रहियै ।
 जब कोउ रचक उत उत जाइ, अरग अरग गृह-अंतर आइ ।
 नूपुर, किकिनि लेइ छिपाइ, सखन खबावै आपुन खाइ । ६५
 अत बड़ चोर कहि न कछु आवै, चपरि कै चखन तै मसिहि चुरावै ।
 यह मुनि आनंद भरि नंद-रानी, तिन सी कहति मुसकि मधु बानी ।
 बलि बलि ताँ तुम ऐसँ करी, दिन दस भाजन ऊँचे धरी ।
 जब लागि याकी बुद्धि अयानी, तब लागि तुम ही हीहु सयानी ।
 हो जमु ! जी कोउ ऊँचे धरै, तहँ तुम मुनहु जु जनन करै । ७०
 ता-तर आनि उलूखन नावै, ऊखन पर डक सग्वहि चढ़ावै ।
 ता पर आपुन चढ़ि कै खाइ, चोर नी डन डन चितवत जाइ ।

अद्भुत गिनु कछु समझि न परं, सब विधि सब ही के मन हरै । ६५
 कवहुं कहि दिखिये माखन चोर, कवहुं भलक नवल किसोर ।
 ऐसे सब बज कहूँ मधु प्यावत, मधि नधि ईस्वरता दिखरावत ।
 गधुर वस्तु ज्यों खात है कोई, बीच अमल रस रुचिकर होई ।
 सिसुन की कहि राख्यौ जसु माड, दिखियहु बलि यह चपल कन्हाइ ।
 माटी खाइ सलिल में जाइ, बलि बलि मो सौ कहियहु आइ । १००
 इक दिन तनक कहूँ हरि वारे, मुख मेली माखन मो हारे ।
 धाइ गये सिसु जहँ जमु माई, तेरे कान्हूर माटी खाई ।
 सुनि सहि सकी न इतनी बात, हित-ईपनी जसोमति मात ।
 धाड़ जाइ गहि कै विधि पानि, डाटन लागी आँगन आनि ।
 रे रे चपल-गात, अनियाई, क्याँ तैं दुरि कै माटी खाई । १०५
 ये सिसु सबै कहत यह बात, अरु यह तेरौ अग्रज भात ।
 भैं भरी अँखियन कहत कन्हैया, मैं माटी नहि खाई मैया ।
 ये सब मिथ्यावादी आहि, इन के कहै न तनक पत्याहि ।
 जमुननि कहति कि अग्रज तेरौ, यह तौ भूँठ न बोलत मेरी ।
 नव हरि कहत कि जी न पत्याहि, मैया तौ मेरी मुख चाहि । ११०
 जननी कहति तौ वदन दिखाइ, डरपे कुवर दियो मुख बाइ ।
 वदन मध्य जो जमुमति चहै, सगरी विस्व चराचर अहै ।
 प्रथम चह्यौ भूगोलक तहाँ, दीप, समुद्र, सरित, गिरि जहाँ ।
 जोति-चक्र, जल, तेज, समीर, अग्नि, अरक, ससि, तारक भीर ।
 इंद्रि अरु इंद्रिन के देव, मतगुन, रजगुन, तमगुन भेव । ११५
 बल, कर्म, सुभाउ अरु जंत, बुद्धि, चित्त, मन मूरतिवत ।

अद्भुत गिनु कछु समझि न परं, सब विधि सब ही के मन हरै । ६५
 कवहुँक दिखिये माखन चोर, कवहुँ भलक नवल किसोर ।
 ऐसे सब ब्रज वहुँ मधु प्यावत, मधि नधि ईस्वरता दिखरावत ।
 गधुर वस्तु ज्यों खात है कोई, बीच अमल रस रुचिकर होई ।
 सिसुन की कहि राख्यौ जसु माइ, दिखियहु बलि यह चपल कन्हाइ ।
 माटी खाइ सलिल में जाइ, बलि बलि मो सौ कहियहु आइ । १००
 एक दिन तनक कहूँ हरि वारे, मुख मेली माखन मो हारे ।
 वाइ गये सिसु जहूँ जमु माई, तेरे कान्हूर माटी खाई ।
 सुनि सहि सकी न इतनी बात, हित-ईपनी जसोमति मात ।
 धाड़ जाइ गहि कै विवि पानि, डाटन लागी आँगन आनि ।
 रे रे चपल-गात, अनियाई, क्याँ तै दुरि कै माटी खाई । १०५
 ये सिनु सबै कहत यह बात, अरु यह तेरी अग्रज आत ।
 भै भरी अँगियन कहत कन्हैया, में माटी नहि खाई मैया ।
 ये सब मिथ्यावादी आहि, इन के कहै न तनक पत्याहि ।
 जमुसनि कहति कि अग्रज तेरी, यह ती भूँठ न बोलत मेरी ।
 नव हरि कहत कि जी न पत्याहि, मैया ती मेरी मुख चाहि । ११०
 जननी कहति ती वदन दिखाइ, डरपे कुवर दियो मुख वाइ ।
 वदन मध्य जो जमुमति चहै, सगरी विस्व चराचर अहै ।
 प्रथम चह्यौ भूगोलक तहाँ, दीप, समुद्र, सरित, गिरि जहाँ ।
 जोति-चक्र, जल, तेज, समीर, अग्नि, अरक, ससि, तारक भीर ।
 इंद्रा अरु इंद्रिन के देव, मतगुन, रजगुन, तमगुन भेव । ११५
 कल, कर्म, सुमाउ अरु जंत, बुद्धि, चित्त, मन मूरतिवंत ।

उरं जु जननी डाट तैं, साट निरखि पुनि हाथ ।

मृग मै विस्व दिखाइ कै, वचे नाथ इहि साथ ॥

१४०

‘नद’ न उरि भव-व्याल तैं, बालचरित-मनु पाइ ।

श्रवन-पुटन करि पान करि, इहि अष्टमी अध्याइ ॥

नवम अध्याय

अब मुनि मित्र नवम अध्याइ, जामैं अद्भुत अद्भुत भाइ ।

जोगीजन मन हूँइत जाकी, बौधगी हठि जसुमति ताकी ।

इक दिन भोरहि उठि नंदरानी, आपुहि मजु मयानी आनी ।

धोरोई दूध पूत के हित ही, राखनि जमु जमाइ नित नित ही ।

और जु नंदमहर घर दह्या, कितक आहि कछु परत न कह्यी ।

५

प्रेरी तहाँ अनेक जु दासी, मंथन करै सबै कमला सी ।

ठाँ ठाँ मधुर मयानी बजै, जनु नव आनंद-अंबुद गजै ।

मयत जु आप जहाँ नंदरानी, सोभा नहि कछु परत बखानी ।

सुंदर गौर बरन तन सोहै, ओटे कंचन की रँग को है ।

मृदुल उजल गंगाजल पहिरै, उठति जु तन तैं छवि की लहरैं ।

१०

पृथु तटि कल किकिनि की बाजनि, त्रिलुलित बर कवरी की राजनि ।

नैन की करखनि, बदन की हरखनि, तैसिय सिर तैं मुमन मु बरखनि ।

आनन पर शनकन अस बनी, कनक-कमल जनु ओस की कनी ।

किर्या चंद मदि प्रगटे मोती, आये जानि आपनी गोती ।

नान के बालचरित कछु गावनि, भाग-भरी सब राग रिभावति ।

१५

उरें जु जननी डाट तैं, साट निरखि पुनि हाथ ।

मुग मँ विस्व दिखाइ कै, बचे नाथ इहि साथ ॥

१४०

‘नद’ न उरि भव-व्याल तैं, बालचरित-मनु पाइ ।

श्रवन-पुटन करि पान करि, इहि अष्टमी अध्याइ ॥

नवम अध्याय

अब मुनि मित्र नवम अध्याइ, जामैं अद्भुत अद्भुत भाइ ।

जोगीजन मन हूँहत जाकी, बार्धगी हठि जसुमति ताकी ।

इक दिन भोरहि उठि नँदरानी. आपुहि मजु मयानी आनी ।

धोराई दूध पूत के हित ही, राखनि जमु जमाइ नित नित ही ।

और जु नंदमहर घर दह्याँ, कितक आहि कछु परत न कह्यी ।

५

प्रेरी तहाँ अनेक जु दासी, मंथन करै सबै कमला सी ।

ठाँ ठाँ मधुर मयानी बजै, जनु नव आनँद-अंबुद गर्जै ।

मयत जु आप जहाँ नँदरानी, मोभा नहि कछु परत बखानी ।

सुंदर गौर वरन तन सोहै, ओटे कंचन कौ रँग को है ।

नृदुल उजल गंगाजल पहिरै, उठति जु तन तैं छवि की लहरैं ।

१०

पृथु लटि कल किकिनि की बाजनि, बिलुलित बर कवरी की राजनि ।

नैन की करखनि, बदन की हरखनि, तैसिय सिर तैं मुमन मु बरखनि ।

आनन पर अनकन अस बनी, कनक-कमल जनु ओस की कनी ।

किर्या चंद मदि प्रगटे मोती, आयै जानि आपनी गोती ।

नान के बालचरित कछु गावनि, भाग-भरी सब राग रिभावति ।

१५

गसत जु सिर तँ मुमन सुदेस, जनु चरनन पर रीके केस ।
 आगे फल की वरपा करै, तिन पर ब्रजगनी पग धरै ।
 जोगीजन-मन जहाँ न जाही, डत सब वेद परे विललाही । ४०
 ताहि जनोमति पकरति भई, रहपट एक वदन पर दई ।
 पानि पकरि जव आंगन आने, जिन तँ डर डरपै सु डराने ।
 डर तँ नैन नजल हूँ आयें, जनु अरविद अलिद हलाये ।
 परत दृगन तँ जलकन जोती, डारत ससि जनु मंजुल मोती ।
 मीजत चव्र, मसि प्रसरित ऐसै, निर्गल विधु कलंककन जैसै । ४५
 नै भरे सुतहि निरखि नैदनारी, दीनी लकुट हाथ तँ डारी ।
 कहत कि रचक वांवाो याहि, जैसै सिख लागै लरिकाहि ।
 मृदुल पाट की नौई लई, लाल के पेट लंपेटति भई ।
 ऊजल सी जव वने न गाँठि, तामी अवर लई तव साँठि ।
 सो पुनि परिपूरन नहि भई, तव डक बड़ी जेवरी लई । ५०
 उहँ न तनक उदर फिरि आई, तव जमुमनि अति विस्मय पाई ।
 तिहि छिन गोप-बधू बिरि आई, हँसति परस्पर लगति सुहाई ।
 भै भरे लाल के लोइन लसै, दिखि दिखि गोप-बधू सब हसै ।
 हँनि हँसि कहनि, मु लगति सुहाई, ये न हौंहि बलि वस्तु पराई ।
 धाम की दाम-दावरी जिनी, वजनिय लै लै आवति तिता । ५५
 जनुमति अंघि दैन जव चहै, द्वै अंगुल तव ऊनी रहै ।
 आदि अंत कछु पँय जाकाँ, वयन अवसि पूछियै नाकी ।
 आदि अंत जो कोऊ न पावै, तनक जिवरिया कित फिरि आवै ।
 निपट अमित जननी कहुं जानी, निरवधि वत्सल रस पहिचानी ।

गन्तव्य जू सिर तै मुमन सुदेस, जनु चरनन पर रीभे केस ।
 आगे फूल की वरपा करै, तिन पर ब्रजगर्ना पग धरै ।
 जोगीजन-मन जहाँ न जाही, इत सब वेद परे विललाही । ४०
 ताहि जसोमति पकरति भई, रहपट एक वदन पर दई ।
 पानि पकरि जव आंगन आने, जिन तै डर डरपै सु डराने ।
 डर तै नैन नजल ह्वै आये, जनु अरविद अलिद हलाये ।
 परत वृगन तै जलकन जोती, डारत ससि जनु मंजुल मोती ।
 मीजत चख, मसि प्रसरित ऐसै, निर्गल विधु कलंककन जैसै । ४५
 भै भरे सुतहि निरखि नैदनारी, दीनी लकुट हाथ तै डारी ।
 कहत कि रचक वाँवो याहि, जैसै सिख लागै लरिकाहि ।
 मृदुल पाट की नोई लई, लाल के पेट लंपेटति भई ।
 ऊलल साँ जव वनै न गाँठि, तामाँ अवर लई तव साँठि ।
 सो पुनि परिपूरन नहि भई, तव डक बड़ी जेवरी लई । ५०
 उहै न तनक उदर फिरि आई, तव जमुमति अति विस्मय पाई ।
 तिहि छिन गोप-बबू धिरि आई, हँसति परस्पर लगति सुहाई ।
 भै भरे लाल के लोइन लसै, दिखि दिखि गोप-बबू सब हसै ।
 हँनि हँसि कहनि, मुलगति सुहाई, ये न हीहि बनि वस्तु पराई ।
 धाम की दाम-दावरी जिनी, वजनिय लै लै आवति तिती । ५५
 जनुमति अंघि दैन जव चहै, द्वै अंगुल तव ऊनी रहै ।
 आदि अंत कछु पैयै जाकाँ, बधन अवसि पूछियै ताकी ।
 आदि अंत जो कोऊ न पावै, तनक जिवरिया कित फिरि आवै ।
 निरुद अमित जननी कहुं जानी, निरवधि वत्सल रस पहिचानी ।

भक्ति विना श्री भागवत, कहहि सुनहिं जे 'नंद' ।
 दरबी ज्यौ विजयन मै, स्वाद न जानै मंद ॥
 'नंद' नवम अध्याइ यह, वरन्यौ कापै जाइ ।
 चातक चंचु-पुटी लटी, सब घन कितहि समाइ ॥

दशम अध्याय

अब मुनि दशम की दशम अध्याइ, सुन कुवेर के गहि कै पाइ ।
 स्तुति करि हरि पै आग्या पैहै, भक्ति-पात्र ह्वै निज घर जैहै ।
 मुक मुनि सी पुनि राजा कहै, नारद परम भागवत रहै ।
 तिन करि कवन कर्म अस करची, जा करि जिनहि क्रोध संचरची ।
 बोले विहंसि व्यास के तात, हो नृप सत्तम ! मुनि यह बात । ५
 मुन कुवेर के अति अभिगम, नलकूवर, मनिग्रीव सु नाम ।
 गंगा मधि ललनागन लिये, विहरत हुते वारुनी पिये ।
 तहें ह्वै नारद निकसे आइ, बीता कर आपने मुभाइ ।
 तिहिं दिवि तिय सब लज्जित भई, चटपट अपने पट गहि गई ।
 ये दौड नगन मगन अस भये, मद वाढ़े, ठाढ़े रहि गये । १०
 कहन लगै मुनि तिन तन चाहि, जग मै अवर बहुत मद आहि ।
 ऐ परि यह श्री-मद है जैमी, वड़ अनरथ कर अवर न ऐसी ।
 मनि-भ्रंनक, सब धर्म-विधुंसक, निर्दय महा विरथ पमु-हिंसक ।
 नन्द्यर देह सबै कोड जानै, ता कहुँ अजर अमर करि मानै ।
 रन्यौ रांचभांतिक कौ देह, अंत ममै कृमि त्रिष्टा खेह । १५

भक्ति विना श्री भागवत, कहाँहि सुनहिं जे 'नंद' ।
 दरवी ज्यो विजयन मै, स्वाद न जानै मंद ॥
 'नंद' तबम अध्याइ यह, वरन्धी कापै जाइ ।
 चातक चंचु-पुटी लटी, सब घन कितहि समाइ ॥

दशम अध्याय

अब मुनि दशम की दशम अध्याइ, सुन कुवेर के गहि कै पाइ ।
 स्तुति करि हरि पै आग्या पैहै, भक्ति-पात्र ह्वै निज घर जैहै ।
 मुक मुनि सी पुनि राजा कहै, नारद परम भागवत रहै ।
 तिन करि कवन कर्म अस करची, जा करि जिनहि क्रोध संचरची ।
 दोनो विहँसि व्यास के तात, हो नृप सत्तम ! मुनि यह बात । ५
 मुन कुवेर के अनि अभिराम, नलकूबर, मनिग्रीव सु नाम ।
 गंगा मधि ललनागन लिये, विहरत हुते वारुनी पिये ।
 तहँ ह्वै नारद निकसे आइ, वीना कर आपने मुभाइ ।
 तिहिं दिग्वि तिय सब लज्जित भई, चटपट अपने पट गहि गई ।
 ये नौउ नगन मगन अस भये, मद वाढ़े, ठाढ़े रहि गये । १०
 कहत लगे मुनि तिन तन चाहि, जग मै अवर बहुत मद आहि ।
 ऐ परि यह श्री-मद है जैमी, बड़ अनरथ कर अवर न ऐसी ।
 मति-भ्रंनक, सब धर्म-विबुंसक, निर्दय महा विरथ पमु-हिंसक ।
 नन्द्य देह सब कोउ जानै, ता कहँ अजर अमर करि मानै ।
 रन्धी रांचभीतिक को देह, अंत ममै कृमि विष्टा खेह । १५

तब बोले अलका भीन के, हो प्रभु ! तुम बालक कौन के ।
 पद्म पुरुष सब ही के काग्न, प्रतिपारन, तारन, संघाग्न ।
 व्यक्त-अव्यक्त जु त्रिस्व अनूप, वेद वदत प्रभु तुम्हरी रूप । ४०
 तुम सब भूतन की विस्तार, देह. प्रात, इंद्रि, अहंकार ।
 काल तुम्हारी लीला श्रीधर, तुम व्यापी, तुम अव्यय ईश्वर ।
 तुम ही प्रवृत्ति, पुरुष, महत्त्व, धर, अंबर, आडंबर, सत्व ।
 तुम ही जीवन, तुम ही जीय, सब ठाँ तुम, कोउ अवर न वीय ।

पूर्व पक्ष

घट-पट-न्यान त्रिसेखै सब ही, हमरी ग्यान हौइ किन अव हीं । ४५
 दुर्लभ ब्रह्म मुलभ ही वनै, तहाँ कहत कुबेर के तनै ।
 इंद्रिन करि तुम जात न गहे, प्रगट ग्राहि पै परत न चहे ।
 जैसे दिष्टि कुंभ कहूँ देखै, कुभ तौ नाहिन दिष्टि की पेखै ।
 कुंभ के दिष्टि हींज जब कब ही, सो तुम दिष्टिहि देखै तब हीं ।
 ताते तुन कहूँ वंदन करे, जानि न परहु परे तै परै । ५०
 इहि विधि स्तुति करि हरिदेव की, प्रार्थित पद-मंकज-मेव की ।
 हे करुनानिधि करना कीजै, अपनी भाउ-भगति-रति दीजै ।
 बानी तुमरे गुन गन गनै, श्रवन परम पावन जस मुनै ।
 ये करि अवर कर्म जिति करे, प्रभु की परिचर्या अनुसरें ।
 मत्त-अग्नि चरन-कमल-रस रसी, त्रिव-कमल-जग भूलि न वसी । ५५
 हो जगदीश ! जसोदा-नंदन, सीस रही नित तुव-पद-वंदन ।
 तुमरी मूर्ति भवन तुम्हारे, नित ही निरखहु नैन हमारे ।

तब बोलें अलका भीन के, हो प्रभु ! तुम बालक कौन के ।
 पद्म पुरुष सब ही के कारन, प्रतिपारन, तारन, संघारन ।
 व्यक्त-अव्यक्त जु त्रिस्व अनूप, वेद ब्रह्म प्रभु तुम्हारी रूप । ४०
 तुम सब भूतन की विस्तार, देह, प्राण, इंद्रि, अहंकार ।
 काल तुम्हारी लीला श्रीधर, तुम व्यापी, तुम अव्यय ईश्वर ।
 तुम ही प्रकृति, पुरुष, महत्त्व, धर, अंबर, आडंबर, सत्त्व ।
 तुम ही जीवन, तुम ही जीय, सब ठाँ तुम, कोउ अवर न वीय ।

पूर्व पक्ष

घट-पट-नयान विसेखै सब ही, हमरी ग्यान हौइ किन अब हीं । ४५
 दुर्लभ ब्रह्म मुलभ ही बनै, तहाँ कहत कुबेर के तनै ।
 इंद्रिन करि तुम जात न गहे, प्रगट ग्राहि पै परत न चहे ।
 जैसे दिष्टि कुंभ कहूँ देखै, कुंभ ती नाहिं दिष्टि की पेखै ।
 कुंभ के दिष्टि हीं जव कब ही, सो तुम दिष्टिहि देखै तब हीं ।
 तातै तुन कहूँ बंदन करै, जानि न परहु परे तै परै । ५०
 इहि विधि स्तुति करि हरिदेव की, प्रार्थित पद-पंकज-सेव की ।
 हे करुनानिधि करुना कीजै, अपनी भाउ-भगति-रति दीजै ।
 बानी तुमरे गुन गन गनै, श्रवन परम पावन जस सुनै ।
 ये करि अवर कर्म जिनि करै, प्रभु की परिचर्या अनुसरै ।
 मन-अनि चरन-कमल-रस रसी, त्रिच-कमल-जग भूलि न वसी । ५५
 हो जगदीश ! जसोदा-नंदन, सीस रही नित तुव-पद-बंदन ।
 तुमरो भूति भवन तुम्हारे, नित ही निरखहु नैन हमारे ।

पतन लीं लान्त लगे विचारन, प्रबल पवन नहिं, नहिं बड़ बारन । ५
 जगन कवन जु ये नर परे, दिखि सब लोग अचंभे भरे ।
 निन ना कहन लगे सिनु बात, अहो महरि यह तुम्हरो नात ।
 आपन रन के अंतर परची, ऊखल तनक निरीछो करची ।
 द्रव्य उलानि बोज़ द्रुम भारे, ये हम सिगरं देखनहारे ।
 निचने उभय पुरुष दुति भरे, या डोटा के पाइनि परे । १०
 ऐनं जब उन लन्कन कह्यो, किन्हूँ गह्यो, किन्हूँ नहिं गह्यो ।
 तिन विन हरि बैठे छवि-ऐना, डरपे मृग-सिनु के से नैना ।
 अति बन्धन रम भरि ब्रजराइ, द्रुसन मध्य तै लिये उठाइ ।
 बंधन छोरि छनी खपटाइ, पाँछन सुंदर अंग मुहाइ ।
 जमुमनि परि ब्रजराज रिनाइ, ऐसै सिनु काँउ बाँधनि माइ । १५
 पुनि बिहगन लागे बज महियाँ, दैन लगे मुख अयनन कहियाँ ।
 कहें ब्रज नवय दध नंदलालहि, पकरि नचावहि तेन विसालहि ।
 जे जे विकट मान उपजावहि, ते ते सहज नाचि दिवरावहि ।
 रीति रीति ब्रज की बर बाला, बारहि भूपन कंचन-माला ।
 चुंदन करहि वतैया लेहि, बहुरि नचावहि माखन देहि । २०
 कवहुँक बहुरि टहल अनुसरै ब्रज की बहू कहें सो करे ।
 कोउ कहें अहो अहो मोहनलाल ! नुहिं गुहि दें यह फूल की माल ।
 कोउ कहें लाल लाउ दोहनी, कोउ कहें मोहि गहाउ मोहनी ।
 कोउ कहें बलि वे पाँवरि लार्वा, बलि बलि मोहि पिढ़ी पकरावै ।
 अब लार्वा मुख चुंदन करे, इहि विधि ब्रज निय मुख विम्बरै । २५
 निच की नवंस, श्रुति की हियाँ, नो ब्रजनियन बिर्लाना कियो ।

पनन लीं लानन लगे विचारन, प्रबल पवन नहिं, नहिं बड़ बारन । ५
 लानन लवन जु ये नर परे, दिखि सब लोग अचंभे भरे ।
 तिन ना कहन लगे सिंगु बात, अहो महारि यह तुम्हरो नात ।
 आगुन लो के अंतर परची, ऊबल लनक निरीछो करची ।
 द्यो उलारि दीऊ ड्रम भारे, ये हम सिंगरे देखनहारे ।
 निचने उभय पुरुष दुति भरे, या ढोटा के पाइनि परे । १०
 ऐनं जउ उन लखिन कह्यो, किनहुँ गह्यो, किनहुँ नहिं गह्यो ।
 तिन विच हरि बैठे छवि-ऐना, डरपे मृग-सिंगु के से नैना ।
 अति बल्लल रस भरि ब्रजराइ, द्रुमन मध्य तै लिये उठाइ ।
 बंधन छोरि छनी लपटाइ, पाँछन मुदर अंग सुहाइ ।
 जगुमति परि ब्रजराज रिनाइ, ऐसै सिंगु कोउ बांधनि माइ । १५
 पुनि बिहग्न लागे बज महियाँ, दैन लगे मुख अपनन कहियाँ ।
 कहैं ब्रज नवल दध नंदलालहि, पकरि नचावहि नैन बिसालहि ।
 जे जे विकट मान उपजावहि, ते ते सहज नाचि दिखरावहि ।
 रीकि रीकि ब्रज की बर वाला, वारहि भूपन कंचन-माला ।
 चुवन करहि वलैया लेहि, बहुरि नचावहि माखन देहि । २०
 कवहुँक बहुरि टहल अनुसरै ब्रज की बहू कहै सो करे ।
 कोउ कहै अहो अहो मोहनलाल ! नुहिं गुहि दे यह फूल की माल ।
 कोउ कहै लाल लाउ दोहनी, कोउ कहै मोहिं गहाउ मोहनी ।
 कोउ कहै बलि वे पाँचरि लार्वा, बलि बलि मोहिं पिढी पकरावा ।
 अथ लार्वा मुख चुवन करे, इहि विधि ब्रज निय मुख विनर । २५
 मिथ की नर्वस, श्रुति की हियाँ, सो ब्रजनियन बिलीना बियाँ ।

इत लरिजन की रच्छा करी, ह्याँ तै बेगि अनत अनुसरी ।
 तहँ उपनंद नाम इक कोई, ग्यान-वृद्ध, वय-वृद्ध है सोई । ५०
 कहत लखी कि कुमर है परी, इत तै चलहु अर्वाहि इहि घरी ।
 आई प्रथम बकी घर-पालक, काल के मुख तै उबरची बालक ।
 अर वह सकट विकट भर भरची, या सिमु के ऊपर नहि परची ।
 पुनि वह वात-चक्र है आई, लं गयी लरिकहि गगन उड़ाई ।
 ब्रह्मरची आनि सिला पर नाखी, तव वह सिसु परमेसुर राखी । ५५
 जे द्रुम तभ सौ वातै करे, ते तर अकस्मात भुवि परे ।
 जाँ जगदीस महाइ न होई, तिन तर आयी बचै न कोई ।
 चाहत हीं जी ब्रज कौ भली, ती तुम ह्याँ ते अब ही चली ।
 सुंदर वृंदावन इक नाम, सब गुन-धाम, परम अभिराम ।
 जामै गिरि गोवर्द्धन आहि, सब रितु संतन सेवत जाहि । ६०
 गोपी-गोप गाइ-बछ लाडक, सुखदाइक, मुभकरन, मुभाइक ।
 एकै वृद्धि सबै जन मुठे, मुनतहि 'साधु साधु' कहि उठे ।
 अने नकट तुरत ही जोरे, बड़े मंदल कंदल घारे ।
 गोधन वृंद धरि लये आगे, धरे सरासन तीके लागे ।
 गंचन नकटहि चढ़ि चढ़ि गोपी, चली जु नंदमुवन-रस-ओपी । ६५
 कंठनि पडिक जगमगत जोनी, लटकै ललित मु बेसर-मोती ।
 केनरि आइ ललाटन, लनी, चंद मै चंद-कला-दुति जसी ।
 चंचल दृग प्रंजन छवि बड़े, ससिन मै जनु नव खंजन चढ़े ।
 लाल के बालचरित जु पुनीत, लये है बनाड बनाड मु गीत ।
 ठा ठा गोपी गान जु करे, नीतन कंठ सब की हिय हरें । ७०

इन लरितन की रच्छा करी, ह्याँ तै बेगि अनत अनुसरी ।
 तहँ उपनंद नाम इक कोई, ग्यान-वृद्ध, वय-वृद्ध है सोई । ५०
 कहन लग्यो कि कुमर है परी, उत तै चलहु अर्वाहि इहि घरी ।
 आई प्रथम बकी घर-पालक, काल के मुख तै उबरची बालक ।
 अर वह सकट विकट भर भरची, या सिमु के ऊपर नहि परची ।
 पुनि वह वात-चक्र ह्वै आई, लँ गयी लरिकहि गगन उड़ाई ।
 बहुरची आनि सिला पर नाख्यी, तब यह सिसु परमेसुर राख्यी । ५५
 जे द्रुम नभ सौं वातै करे, ते तर अकस्मात भुवि परे ।
 जी जगदीस महाइ न होई, तिन तर आयी बचै न कोई ।
 चाहन हीं जौ ब्रज कौ भली, ती तुम ह्याँ ते अब ही चली ।
 सुंदर वृंशवन इक नाम, सब गुन-धाम, परम अभिराम ।
 जामे गिरि गोवर्द्धन आहि, सब रितु संतन सेवत जाहि । ६०
 गोपी-नोप गाइ-बछ लाइक, सुखदाइक, मुभकरन, मुभाइक ।
 एकै दुद्धि सबै जन मुठे, मुनतहि 'साधु साधु' कहि उठे ।
 अने सकट तुरन ही जोरे, बड़े मंदल कंदल घोरे ।
 गंधन वृंद बरि लये आगे, धरे सरासन नीके लागे ।
 कंचन सकटहि चढ़ि चढ़ि गोपी, चली जु नंदमुवन-रस-ओपी । ६५
 कंठनि पढिक जगमगत जोती, लटकै ललित मु बेसर-मोती ।
 केसरि आइ ललाटन लनी, चंद मै चंद-कला-दुति जसी ।
 चंचल दृग प्रंजन छवि बड़े, ससिन मै जनु नव खंजन चड़े ।
 लाल के बालचरित जु पुनीत, लये हँ बनाइ बनाइ मु गीत ।
 ठा ठा गोपी गान जु करे, मीनल कंठ सब कौ हिय हरें । ७०

इहि परकार कुमार वयन के, कर्न बिहार, उदार सु रस के । १३५
 कोउ होउ मंग, कोऊ होइ पालक, आपुन चोर हीहि हरि बालक ।
 एकादश अध्याइ यह, अगदराज की धार ।
 पान करी नर चित्त दै, मिटै रोग संसार ॥

द्वादश अध्याय

अब नुनि लै द्वादसा अध्याइ, महा सर्प-वपु धरि अघ याइ ।
 गिलिहँ बछ-वानक दह नीच, हनिहँ हरि तिहि बड़ि गल बीच ।
 एक दिन वन भोजन मन आनि, सोये सुंदर सारंगपानि ।
 वेनु बजाइ जगाये ग्वाल, मुनत उठे सब ताही काल ।
 जैसे कमल अमोदहि पाइ, ठाँ ठाँ उठत मधुप अकुलाइ । ५
 वन भोजन जु कान्ह मन आनी, वेनु बजावन ही मै जानी ।
 सुंदर विजन सुंदर छीके, कनक लकुटियन लटकत नीके ।
 अपने बछरन लँ लँ आये, कान्ह के बछरन आनि मिलाये ।
 नंद-मुयन सीं मिनि कै चले, लागत सब मँन मे भले ।
 तिन मधि मोहन अति मुखदाइक, नग जराइ मधि ज्यौ मधि नाइक । १०
 छौवन तै विजनन चुगवत, ते ती इत कछु श्रीर वनावत ।
 हँसि हँसि कहन कि देवि कन्हैया, कहा दियाँ इहि याकी मैया ।
 खेलन खेलन खेल नुहाये, सुंदर श्री वृंदावन आये ।
 श्रीर खेल खेलत छवि पावत, महुवरि वेनु बजावत-गावत ।
 बगन विजावत, बगन विजावत, केई बग की छाया रहि धावत । १५

इहि परकार कुमार वयस कै, कर्न बिहार, उदार सु रस के । १३५
 कोउ होउ मंग, कोऊ होइ पालक, आपुन चोर हीहि हरि बालक ।
 एकादश अध्याइ यह, अगदराज की धार ।
 पान करी नर चित्त दै, मिटै रोग संसार ॥

द्वादश अध्याय

अब नुनि लै द्वादसौ अध्याइ, महा सर्प-वपु धरि अब आइ ।
 गिलिहँ बछ-वानक वह नीच, हनिहँ हरि तिहि बड़ि गल बीच ।
 एक दिन वन भोजन मन आनि, सोये सुंदर सारँगपानि ।
 वेनु बजाइ जगाये ग्वाल, मुनत उठे सब ताही काल ।
 जैसै कमल अमोढहि पाइ, ठाँ ठाँ उठत मधुप अकुलाइ । ५
 वन भोजन जु कान्ह मन आनी, वेनु बजावन ही मै जानी ।
 सुंदर विजन सुंदर छीके, कनक लकुटियन लटकत नीके ।
 अपने बछरन लै लै आये, कान्ह के बछरन आनि मिलाये ।
 नंद-मुयन सीं मिनि कै चले, लागत सबै मन मे भले ।
 तिन मधि मोहन अति मुखदाइक, नग जराइ मधि ज्यौ मधि नाइक । १०
 छौवन तै विजनन चुगवत, ते ती इन कछु श्रीर बनावत ।
 हँसि हँसि कहन कि देवि कहँया, कहा दियौ इहि याकी मैया ।
 खेलन खेलन खेल नुहाये, सुंदर श्री वृंदावन आये ।
 श्रीर खेल खेलत छवि पावन, महुवरि वेनु बजावत-गावत ।
 बगन विजावत, बगन विजावत, केई बग की छाया रहि धावत । १५

दिग्वि महिमा जगुमति-तात की, मुनि-वृद्धि गई कमल-जात की ।
 मो वह अजगर परम पवित्र, सूखी वृंदावन मधि भिन ।
 अनि गह्वर तहें ब्रज के बाल, डुका-डुकी खेले बहु काल ।
 यह कौमार वयस की कर्म, पायी नहिं किन हूँ कछु मर्म । ८५
 छठी वरस जब सब निरबह्यी, तब उन सबन आनि ब्रज कह्यी ।
 आजु जु एक नंद के लाल, मारची व्याल सु केवल काल ।
 हम सब ताके मुख मधि गये, आये बहुनि जन्म धरि नये ।
 ताके नन तँ उठी जु जोति, नखत तँ टूटि ज्यी ज्वाला होति ।
 जाड गगन में थिर हूँ रही, हम देखी अरु सबहिन चही । ९०
 कान्हहि निरसि बहुरि उलटानी, आनि कँ इन ही माँझ समानी ।
 ऐनै जब उन लरिकन कह्यी, मुनि सब लोग अचंभे रह्यी ।
 अहो मित्र मुनि चित्र न कीजै, हरि की महिमा में मन दीजै ।
 उन की जो कोउ प्रतिमा करै, एक बार बल करि हिय धरै ।
 प्रह्लादादिक की गति जोई, सु पुरुष सहजहि पावै मोई । ९५
 मो साच्छान अवामुर हिये, आये अपने भक्तन लिये ।
 भूत कहत है हो भृगुनंदन, मुनि हरिमुचरित दुग्ति-निकदन ।
 पुनि पुनि मुनि के गहि कँ पाड, पूछत यहै परीच्छिन राड ।
 हो नवग्य व्यास के तात !, यह कौमार वयस की बात ।
 पीगंडमय चरित सब कहे, अब ली ये मिमु कहँ है रहे । १००
 यह कछु हरि की माया आहि, हो प्रभु ! नीके बरनहु नाहि ।
 हम नम धन्य न डहि ससार, जातै कृष्णकथामृत-धार ।
 निगम सार ताकी पुनि मार, पियत है हम तिहि वारंवार ।

दिशि महिमा जगुमति-तात की, मुधि-नुधि गई कमल-जात की ।
 मो वह अजगर परम पवित्र, सूखी वृदावन मधि मित्र ।
 अनि गह्वर तहें ब्रज के बाल, डुका-डुकी खेलें बहु काल ।
 यह कोमार वयस की कर्म, पायीं नहिं किन हूँ कछु मर्म । ८५
 छड़ी बरस जब सब निरबह्यौ, तब उन सबन आनि ब्रज कह्यौ ।
 आजु जु एक नंद के लाल, मार्यौ व्याल सु केवल काल ।
 हम सब ताके मुख मधि गये, आये बहुरि जन्म धरि नये ।
 ताके तन तूं उठी जु जोति, नखत तैं टूटि ज्यौ ज्वाला होति ।
 जाइ गगन में थिर हूँ रही, हम देखी अरु सबहित चही । ९०
 कान्हहि निरखि बहुरि उलटानी, आनि कैं इन ही माँझ समानी ।
 ऐनै जब उन लरिकन कह्यौ, मुनि सब लोग अचंभे रह्यौ ।
 अहो मित्र मुनि चित्र न कीजै, हरि की महिमा में मन दीजै ।
 उन की जो कोउ प्रतिमा करैं, एक बार बल करि हिय धरै ।
 प्रह्लादादिक की गति जोई, सु पुरुष सहजहि पावै सोई । ९५
 मो साच्छात अवामुर हिये, आये अपने भक्तन लिये ।
 भूत कहत हैं हो भृगुनंदन, मुनि हरि मुचरित दुग्ति-निकदन ।
 पुनि पुनि मुनि के गहि कैं पाइ, पूछत यहै परीच्छित राइ ।
 हो नवंग्य व्यास के तात !, यह कोमार वयस की बात ।
 पींगंडमय चरित सब कहे, अब ली ये मिमु कहैं हैं रहे । १००
 यह कछु हरि की माया आहि, हो प्रभु ! नीके बरतहु नाहि ।
 हम मन धन्य न इहि ससार, जातै कृष्णकथामृत-धार ।
 निगम सार ताका पुनि नार, पियत हैं हम तिहि बारंवार ।

श्रव-श्रव नं जिह्वाड बद्ध-बाल, तं गये जमुन-पुलिन नंदनाल ।
 भोजन विर्या चहत् निहि काल, करत स्तुति पुलिन की गोपाल ।
 कहत कि भिया भली यह थीर, ऐसी नहिं पाइहीं थीर ।
 नीतल मृदुल दालुका स्वच्छ, इत ये हरे हरे तून कच्छ ।
 इत ये सुंदर सरसिज फूले, तरवर फूल फूलि जल भूले । १५
 जगल की धुनि-प्रतिधुनि हिय हरै, मंद नुगव पवन अनुसरै ।
 तब दिसि नं ये परिमल लपटै, आवति सहज मुखन की दपटै ।
 भूय लगी है भोजन करै, इत ये वच्छ वच्छ मै चरै ।
 मडल करि बैठे बज्राल, मध्य बने तहूँ मोहनलाल ।
 मोहन मद तं नन्मुख ऐसै, कमल के बीच करनिका जैमै । २०
 चहै दिनि दाल मंडली वैसी, नखत विसाखा होति है जैसी ।
 तिन मधि स्याम नुमग सांहत यों, राका-निसि राकेस लसै ज्यों ।
 पुनि नुनि मित्र श्रवण उपाइ डक, अज हूँ ध्यान बरत ब्रह्मादिक ।
 जनु चहै दिनि मुखना-मनि रची, मधि गुपाल मरकत मनि खची ।
 रविजा कर मुद्रिका दिखार्ई, यह ताकी जगमगत जराई । २५
 ऐनं नुक राजा प्रति कही, नृप नुनि कं कमनीय नु गही ।
 भोजन करत कुंवर सांवरे, छवि दिनि अमर भये बावरे ।
 भाजन विविधि गुयान्त बने, फल दल मिल बलबल अनि घने ।
 अपने व्यंजन तिन में बरे, चखन चखावत अनि मुद भरे ।
 तिन के मध्य बने नंदनंद, उड़-मंडल जस पूरन चंद । ३०
 पट अर जठर बीच ती देनु, काख बने, कच लपटे रेनु ।
 दधि-प्रांदन की कदल नु बिये, छवि सौ दाम हस्त हरि लिये ।

श्रव-श्रव नं त्रिधाड बद्ध-बाल, तं गये जमुन-पुलिन नंदलाल ।
 भोजन विर्या चहत् तिहि काल, करत स्तुति पुलिन को गोपाल ।
 कहत कि भिया भली यह ठीर, ऐसी नहिं पाइहीं श्रीर ।
 नीतल मृदुल बालुका स्वच्छ, इत ये हरे हरे तून कच्छ ।
 इत ये सुंदर सरसिज फूले, तरवर फूल फूलि जल भूले । १५
 जगन की धुनि-प्रतिधुनि हिय हरै, मंद नुगव पवन अनुसरै ।
 सद विसि तं ये परिमल लपटै, आवति सहज मुखन की दपटै ।
 भूस लगी है भोजन करै, इत ये वच्छ वच्छ मै चरै ।
 मडल करि बैठे बजबाल, मध्य बने तहँ मोहनलाल ।
 मोहन सद तै नन्मुख ऐसै, कमल के बीच करनिका जैमै । २०
 चहँ दिनि बाल मंडली वैसी, नखत बिसावा होनि है जैसी ।
 तिन भवि स्यान नुभग सांहत यीं, राका-निसि राकेस लसै ज्यीं ।
 पुनि नुनि मित्र अवग उपाइ डक, अज हूँ ध्यान बरत ब्रह्मादिक ।
 जनु चहँ दिनि मुखना-मनि रची, मधि गुपाल मरकत मनि खची ।
 रविजा कर नुट्रिका दिखाई, यह ताका जगमगत जराई । २५
 ऐनं नुक राजा प्रति कही, नृप नुनि कं कमनीय नु गही ।
 भोजन करत कुंवर सांवरे, छवि दिनि अमर भये बावरे ।
 भोजन विविधि गुद्यादन बने, फल दल मिल बलबल अनि बने ।
 अपने व्यंजन तिन में बरे, चखन चखावत अनि मुद भरे ।
 तिन के मध्य बने नंद-नंद, उड़-मंडल जस पूरन चंद्र । ३०
 पट अर जठर बीच तीं देनु, काख बेत, कच लपटे रेनु ।
 दधि-प्रांदन की कदल नु बिये, छवि सां बाम हस्त हरि लिये ।

दैसियै हर्मनि, चहनि पुनि बोलनि, वैसियै लटकनि, मटकनि, डोलनि । ५५
 नृत्तर, कंकन, किंकिनि माल, सर्व भये ईस्वर नँदलाल ।
 वेढ जु विदित विस्व बह जिते, सब विपुनमय भारत तिते ।
 जो यह बानी निगमन गाई, सो प्रभु मूर्तिवंत दिखराई ।
 गंगाजल ज्यां हिमकन पाइ, ठाँ ठाँ सहज जाइ ठहराइ ।
 आपुहि आप घेरि बछ-बाल, लै आये ब्रज मोहनलाल । ६०
 वेनु की धुनि मुनि गोपी धाई, अपने कंठनि लै लपटाई ।
 घूरि भारि पुनि पुनि मुख चूमनि, नहि कहि परै प्रेम की घूमनि ।
 उबटन उबटि सलिल अन्हवाये, मनभाये भोजन करवाये ।
 उपज्यो प्रेम तिन विपै ऐसी, पाछे नंदमुवन सीं जैसी ।
 अन्न नुनि लै गाइन की पेम, विसरत जिहि दिखि मुनि मन नेम । ६५
 खरिक निकट जब बछरा बोलै, सुनतहि गोधनवृंद कलोलै ।
 हूँकि हूँकि आतुर गति आवनि, इत तँ इन बछरन की धावनि ।
 चुरनि, चूपावनि, चाटनि, चूबनि, बार बार हित की वह हूँसनि ।
 आपुहि बछरा, आपुहि बाल, दिहरत ब्रज बन मोहनलाल ।
 एताकी जस खेलत कोई, खेलत ताहि कछु न मुख होई । ७०
 मेनै बरन दिवस निरवह्यी, संकर्षन हू नाहिन लह्यी ।
 इय दिन गिरि गोधन पर गाइ, चरति ही चढ़ी आपने चाइ ।
 ब्रज-नमीप बछरन अबहेरि, चली जु ग्वाल सके नहि फेरि ।
 रदच्छ पृच्छ ऊँची करि लटै, मानहुँ दुरत चँवर छविछई ।
 गनि गनि पग डारनि, हुंकारनि, माँचति धन की धारनि । ७५
 अपने बछरन पै चलि आई, मिली आइ, कछु नहि कहि जाई ।

वैसियै हर्मनि, चहनि पुनि बोलनि, वैसियै लटकनि, मटकनि, डोलनि । ५५
 नृत्तर, कंकन, किंकिनि माल, सब भये ईस्वर नंदलाल ।
 बेश जु विदित विस्व वह जिते, रावै विष्णुमय भारत तिते ।
 जो यह बानी निगमन गाई, सो प्रभु मूर्तिवंत दिखराई ।
 गंगाजल ज्याँ हिमकन पाइ, ठाँ ठाँ सहज जाइ ठहराइ ।
 आपुहि आप घेरि बछ-बाल, लै आये ब्रज मोहनलाल । ६०
 वेनु की धुनि मुनि गोपी धाई, अपने कंठनि लै लपटाई ।
 घूरि भारि पुनि पुनि मुख चूमनि, नहि कहि परै प्रेम की घूमनि ।
 उबटन उबटि सलिल अन्हवाये, मनभाये भोजन करवाये ।
 उपज्यो प्रेम तिन विपै ऐसी, पाछे नंदमुवन सीं जैसी ।
 अन्न मुनि लै गाइन की पेम, विसरत जिहिं दिखि मुनि मन नेम । ६५
 खरिक निकट जब बछरा बोलै, सुनतहि गोधनवंद कलोलै ।
 हूँकि हूँकि आतुर गति आवनि, इत तँ इन बछरन की धावनि ।
 चुरनि, चूपावनि, चाटनि, चूबनि, बार बार हित की वह हूँसनि ।
 आपुहि बछरा, आपुहि बाल, दिहरत ब्रज बन मोहनलाल ।
 एककी जस खेलत कोई, खेलन ताहि कछु न मुख होई । ७०
 गेनै बरन दिवस निरवह्यो, संकर्षन हू नाहिन लह्यो ।
 इस दिन गिरि गोधन पर गाइ, चरति ही चढ़ी आपने चाइ ।
 ब्रज-नमीष बछरन अबहेरि, चली जु ग्वाल सके नहि फेरि ।
 रदच्छ पृच्छ ऊँची करि लटै, मानहुँ दुरत चँवर छविछई ।
 गति गति पग उरनि, हुंकारनि, मीचति धननि दूध की धारनि । ७५
 अपने बछरन पै चलि आई, मिली आई, कछु नहि कहि जाई ।

दयन दयन मुनिकान छवि नसी, चंदन मध्य चद्रिना जसी ।
 भित भित ब्रह्मांड विनर्ज, नित मधि इक इक मूरति भ्राजै । १००
 ब्रह्महि प्रादि नराचर जिते, मूरति धरे उपासत तिते ।
 अनिमा, नहिमादिक मिधि जिते, सहदादिन विभूति है तिते ।
 काल-शरग-गुन अवर न अंत, सेवन हैं तहें मूरतिवंत ।
 मुधि गर्द विधिहि अचेनन भयी, हस्त को अस पकरि रहि गयी ।
 निहि छित ताहि फवी छवि ऐसी, चतुर्मुखी कोउ पुतरी जैसी । १०५
 नगस्वनि पति विचार इमि करै, कहा आहि यह मुधि नहि परै ।
 तब श्री हरि निज हिये विचारि, अज पर अजा जवनिका डारि ।
 अही कि ये अभिमानि लोग, मो नहिमा नहि चाहन जोग ।
 तब श्री हरि बह माया जिते, अतरध्यान करी तहें तिते ।
 बड़ा बेग निधि मुधि भई ऐनं, मरि कै बहुरि उठत कोउ जैसै । ११०
 दूग उधारि जो विवना चहै, तौ बह श्री बृंदावन अहै ।
 जामे नर मुदर, तर मुदर, जे कबहूँ निरखे न पुरंदर ।
 अर हरि-मृग जहें इक सँग चरै, अतपियाम नैक न संचरै ।
 मृद भरि श्री हरि को नित चहै, काके काम-क्रोध-भय रहै ।
 तहें निगने ब्रजराजकुमार, अटं ब्रह्म अतत अपार । ११५
 कटि प्रगाव बांध अति बानै, मो बछ-बालक हूँवन डोलै ।
 पर्या अरति चरन पर जाउ, नव मुकटन करि परसत पाड ।
 ज्यो ज्यो बह नहिमा उर फुरै, उठि उठि पद-पंकज मो घुरै ।
 श्री गुरु न कहत गिन मोये, हमरे खेन प्राति उन बाये ।
 उठयो मुद्रि-महिमा हरि दोरयो, बृंदावन की रज मै चोरयो । १२०

वदन वदन मुनिकान छवि नसी, चंदन मध्य चद्रिका जसी ।
 भित्त भित्त ब्रह्मांड विगर्ज, नित मधि इक डक मूरति भ्राज । १००
 ब्रह्महि प्रादि नराचर जिते, मूरति धरे उपासत तिते ।
 अनिमा, नहिमादिक मिधि जिते, महदादिक विभूति है तिते ।
 कान-शरग-गुन अवर न अंत, सेवन हैं तहें मूरतिवंत ।
 मुधि गई विधिहि अचेनन भयी, हस्त कौ अस पकरि रहि गयी ।
 निहि छिन ताहि फवी छवि ऐसी, चतुर्मुखी कोउ पुतरी जैसी । १०५
 नगस्त्वनि पति विचार डमि करै, कहा आहि यह मुधि नहि परै ।
 तब श्री हरि निज हिये विचारि, अज पर अजा जवनिका डारि ।
 अही कि वे अभिमाने लोग, मो नहिमा तहि चाहन जोग ।
 तब श्री हरि वह माया जिते, अतरध्यान करी तहें तिते ।
 बड़ा वेग निधि मुधि भई ऐंग, भरि कै बहुरि उठत कोउ जैंग । ११०
 दृग उधारि जी विधना चहै, तौ वह श्री वृंदावन अहै ।
 जामे नर मुदर, तर मुदर, जे कबहूँ निरखे न पुरंदर ।
 अर हरि-मृग जहें इक सँग चरै, अतपियाम नैक न संचरै ।
 मृग भरि श्री हरि कौ नित चहै, काके काम-क्रोध-भय रहै ।
 तहें निगले अजगजकुमार, अहं ब्रह्म अनत अपार । ११५
 बहुरि जगाव बोव श्रुति बोलै, नो बछ-बालक हूँन डोलै ।
 परधी अरति अग्नत पर जाऊ, नव मुकटन करि परसत पाड ।
 जग जग वह गहिना उर फुरै, उठि उठि पद-गंकज मो धुरै ।
 श्री हरि छन कहत गिन बोये, हमरे खेन प्राति उन बोये ।
 उठगी मुनि-गहिना हरि-बोरधी, वृंदावन की रज मे बोरधी । १२०

पूर्व पक्ष

जो कहतु कि हूँ जन दुर्गो, पायो परे न जाको रोय ।
 तो पै स्तर दुस्तर नगार, कैने तरिहँ, परिहँ पार ।
 तथा कहत विधि माय नवाद, सुनहु नाथ निज प्राप्ति उपाइ । १५
 ग्यान त्रिप प्रयास परिहरै, तुम्हरी कथा विपै मन धरै ।
 जैन सुंदर मंत तुम्हारे, कथा-अमृत के वरपनहारे ।
 तिन पै सुनै, श्रवण नस भरै, मन-वच-कर्म बंदन पुनि करै ।
 बैठे ठीन कथा-रस पीवै, जे इहि भांति जगत में जीवै ।
 अत्रो अजित ! तिन करि तुम जीते, ग्यानी डोलत भटकत रीते । २०
 अथ विधि कहत ग्यान है जोई, भक्ति विना सोइ सिद्ध न होई ।
 तुम्हरी भगति अमीरस-सग्वर, मोच्छादिक जाके बस निर्भर ।
 निहि तजि जे केवल बोध की, करत कलेन चित्त सोध को ।
 तिन कहँ छिन ही छिन श्रम दई, और कछू न तनक कर चढ़ै ।
 जैन कनविहीन लै धान, धमकि धमकि कूटन अग्यान । २५
 फल तहँ निग्य यहें दुस्त भरै, खांटक हाथनि फोटक परै ।
 अथ विधि नमोचार-विधि लिये, करत प्रनाम भक्ति दृढ हिये ।
 हो प्रभु ! पाछे बहुतक भोगी, तजि तजि भोग भये भल जोगी ।
 दिट्ठ अष्टांग जोग प्रनुसरै, ग्यान हेतु बहुतै तप करै ।
 अति श्रम जानि नदी तें फिरै, तुम कहँ कर्म समर्पन करै । ३०
 तिन करि मुट्ठ भयो मन मर्न, तद कोने प्रभु तुम्हरे कर्म ।
 ग्या श्रवण करि पाई भक्ति, जाके मग किन्तु सद मुक्ति ।
 ता करि प्रान्तमन्त्र को पाइ, बैठे सहज परमगति पाइ (जाइ ?) ।

पूर्व पक्ष

जी कहतु कि हम जन दुगैय, पायो परे न जाको रोय ।
 ना पै स्तर दुस्तर नमार, कैन तरिहै, परिहै पार ।
 दहां कहतु विधि माय नवाइ, मुनहु नाथ निज प्राप्ति उपाइ । १५
 ग्यान द्विष प्रयास परिहरै, तुम्हरी कथा विषै मन धरै ।
 जैन सुंदर मंत तुम्हारे, कथा-अमृत के वरपनहारे ।
 तिन पै तुनै, श्रवण रस भरै, मन-वच-कर्म बंदन पुनि करै ।
 बंटे ठीग कथा-रस पीवै, जे इहि भांति जगत में जीवै ।
 अज्ञे अजिन! तिन करि तुम जीते, ग्यानी डोलन भटकत रीते । २०
 अथ विधि कहतु ग्यान है जाई, भक्ति विना सोइ सिद्ध न होई ।
 तुम्हरी भगति अमीरस-सग्वर, मोच्छादिक जाके बस निर्भर ।
 निहि तजि जे केवल बोध की, करत कलेन चित्त सोध को ।
 तिन कहैं छित ही छित श्रम दई, श्रीर कछू न तनक कर चई ।
 जैन कनविहीन लै धान, धमकि धमकि कूटन अग्यान । २५
 फात तहैं विन्य यहें दुस्त भरै, खांढक हाथनि फोटक परै ।
 अथ विधि सदाचार-विधि लिये, करत प्रमान भक्ति दृढ हिये ।
 तो प्रभु ! पाछे बहुतक भोगी, तजि तजि भोग भये भल जोगी ।
 विट् प्रष्टांग जोग प्रनुसरै, ग्यान हेनु बहुतै तप करै ।
 धनि श्रम जानि तहां तं फिरै, तुम कहैं कर्म समयेन करै । ३०
 तिन करि नुद्ध भयी मन मन, तद कीने प्रभु तुम्हरे कर्म ।
 ग्या श्रवण परि पाई भक्ति, जाके सग फिन्न सब मुक्ति ।
 ता परि प्राप्तिमन्त्र कीं पाउ, बंटेमहज परमगति पाइ(जाइ?) ।

रज गुन तैं उपज्यो अग्यानी, तुम तैं भिन्न ईस अभिमानी ।
 मायामद उनमद ह्वैं गयी, सूभैं न कछू, अंध तम छयी ।
 यातैं अनुकंपाही करी, भृत्य जानि कछू जीय न धरो ।
 चारघी फुटी जु जन जानियो, ताकी नाथ न बुरी मानियो ।

पूर्व पक्ष

जो कहहु कि क्या इनी लिलाहि, तुम हूँ ती इक ईसुर आहि । ६०
 तहां कहत विधि जोरे हाथ, वातैं समुझि कहो ब्रजनाथ ।
 कित ही कित महिमा नाथ की, कहत ही चीटी हथी साथ की ।
 प्रकृति, महद, हंकार, अकास, वायु, वारि, वसुमती, हुतास ।
 सप्तावरन जु यह इक भीन, तुम ही कहौ तहां ही कौन ।
 सप्त दितस्ति काइ कौं करघी, रहत बहुत कहाँ धी परघी । ६५
 ऐनी कोटि कोटि ब्रह्मंड, तुमरी एक रोम के खड ।
 उपजत भ्रमत फिरत नहि चैन, जैसे जालरंध्र तिसरैन ।
 निपटहि तुच्छ, न काहू लाइक, कृपा करी, न लरो ब्रजनाइक ।
 हो प्रभु जैसे जननी-गर्भ, रहत है निपट अवुध वह अर्भ ।
 कुवि विपै कर-चरनन तानै, ती कहा मात बुरी है मानै । ७०
 तंगें हीं तब कूवि के माही, करत कलोल कछू मुधि नाही ।
 अब कहत कि हीं तुम्हरी चेरी, तुम तैं प्रगट जनम यह मेरी ।
 जय नव लोग चराचर जिनी, प्रलय-उदधि मधि मज्जत तिनी ।
 नय हीं तुम्हरी नाभि-कमल तैं, निकस्यो नहि डहि उदर अमल तैं ।
 'कमलज कमलज' मेरी नाम, मृपा आहि जानै नव ग्राम । ७५

रज गुन तैं उपज्यो अग्यानी, तुम तैं भिन्न ईस अभिमानी ।
 मायामद उनमद ह्वैं गयी, सूझै न कछू, अंध तम छयी ।
 यातैं अनुकंपाही करी, भृत्य जानि कछु जीय न धरो ।
 चारघी फुटी जु जन जानियो, ताकी नाथ न बुरी मानियो ।

पूर्व पक्ष

जी कहहु कि क्या इती लिलाहि, तुम हूँ तो इक ईसुर आहि । ६०
 तहाँ कहत बिधि जोरे हाथ. बातैं समुझि कहो ब्रजनाथ ।
 कित ही बित्त महिमा नाथ की, कहत हौं चीटी हथी साथ की ।
 प्रकृति, महद, हंकार, अकास, वायु, बारि, वसुमती, हुतास ।
 सप्तावरन जु यह इक भीन, तुम ही कहौ तहाँ ही कीन ।
 सप्त दितस्ति काइ कीं करघी, रहत बहुत कहाँ धी परघी । ६५
 ऐनी कोटि कोटि ब्रह्मंड, तुमरी एक रोम के खड ।
 उपजत भ्रमत फिरत नहि चैन, जैसे जालरंध्र तिसरैन ।
 निपटहि तुच्छ, न काहू लाइक, कृपा करी, न लरो ब्रजनाइक ।
 हो प्रभु जैसे जननी-गर्भ, रहत है निपट अवुध वह अर्भ ।
 कूनि विपै कर-चरनन तानै, ती कहा मात बुरी है मानै । ७०
 तैंमें हौं नव कूनि के माही, करत कलोल कछू मुवि नाही ।
 अब कहत कि हौं तुम्हरी चेरी, तुम तैं प्रगट जनम यह मेरी ।
 जय नव लोग चराचर जिनी, प्रलय-उदधि मधि मज्जत तिनी ।
 नय हौं तुम्हरी नाभि-कमल तैं, निवस्यो नहि इहि उदर अमल तैं ।
 'कमलज कमलज' मेरी नाम, मृषा आहि जानै नव ग्राम । ७५

विषय मध्य प्रतिविषय नो होइ, जाकी कहै-चहै सब कोइ । ६५
 प्रतिविषय में विषय दिखरावै, माया बिन यह क्यों बनि आवै ।
 जानैं थर थर कपत हियी, अजहूँ सुधि न कहा है कियी ।
 प्रथमहि मैं तुम देखे एक, दहुरची बालक-बच्छ जितेक ।
 बेन, विपान, बेन दल जिते, हूँ रहे चारु चनुर्भुज तिते ।
 पुनि इक इक ब्रह्मांड के नाइक, सेवत मो समेत सब लाइक । १००
 पुनि अति एक एक छवि बाढ़े, देखे मैं मनमोहन ठाढ़े ।
 तब महिमा कीतुक जी आहि, को समरथ जानै जो ताहि ।
 हो प्रभु तब-पद-कमल सुदेस, ताके रस प्रसाद की लेस ।
 कवहूँ काहूँ पै दुरि आवै, तब भल महिमा तत्वहि पावै ।
 ऐंगे अस्तुति बहु विधि कीनी, निर्गुन-सगुन रूप रँग भीनी । १०५
 पुनि प्रार्थत सब सुरन की रानी, भवित-विभी जु देखि ललचानी ।
 अहो नाथ ! मो कहूँ यो करी, जी तरुना करुना रस ढरी ।
 इति जनम मैं, और जनम मैं, नर जनम मैं, तृजग जनम मैं ।
 तुमरे भक्तन मैं कछु हूँ कै, सोऊ चरन-सरोजन छत्रे कै ।
 अत्र विधि भक्तानंद जु पर्या, बज को भाग सराहन लग्या । ११०
 हो प्रभु धन्य धन्य ये गोपी, धनि ये धेनु परम रस ओपी ।
 बालक हूँ, बछ हूँ प्रभु जिन के, पीवत भये पयोधर तिन के ।
 दहुरची तनक स्तन-भय पाड, बार बार तुम रहत अघाड ।
 कय के जय-भाग हो त्वान, तहँ तुम तनकी नहिंन अघात ।
 उह दजजन की भाग दड़ाई, हो प्रभु, मो पै नहि कहि जाई । ११५
 जो प्रभु के जानैंद को लेस, वतन अज, सिव, नैस, महेस ।

विष मध्य प्रतिविष नी होइ, जाकी कहै-चहै सब कोइ । ६५
 प्रतिविष में विष दिव्यरावै, माया विन यह क्यों वनि आवै ।
 जानै धर धर कपत हिर्यो, अजहूँ सुधि न कहा है कियो ।
 प्रथमहि मैं तुम देखे एक, दहुरची बालक-बच्छ जितेक ।
 बेन, विपान, बेन दल जिते, हूँ रहे चारु चतुर्भुज तिते ।
 पुनि इक इक ब्रह्मांड के नाइक, सेवत मो समेत सब लाइक । १००
 पुनि अति एक एक छवि बाढ़े, देखे मैं मनमोहन ठाढ़े ।
 तब महिमा कीतुक जी आहि, को समरथ जानै जो ताहि ।
 हो प्रभु तब-पद-कमल सुदेस, ताके रस प्रसाद की लेस ।
 कबहूँ काहूँ पै डुरि आवै, तब भल महिमा तत्वहि पावै ।
 ऐसै अस्तुति बहु विधि कीनी, निर्गुन-सगुन रूप रँग भीनी । १०५
 पुनि प्रार्थत सब सुरन की रानी, भवित-विभौ जु देखि ललचानी ।
 अहो नाथ ! मो कहूँ याँ करी, जी तरुना करुना रस ढरी ।
 इति जनम मैं, और जनम मैं, नर जनम मैं, तृजग जनम मैं ।
 तुमरे भक्तन मैं कछु हूँ कै, सोऊ चरन-सरोजन छूँ कै ।
 अब विधि भक्तातद जु पर्या, बज को भाग सराहन लग्या । ११०
 हो प्रभु धन्य धन्य ये गोपी, धनि ये धेनु परम रस ओपी ।
 बालक हूँ, बछ हूँ प्रभु जिन के, पीवन भये पयोधर तिन के ।
 दहुरची तनक स्तन-प्रय पाइ, बार बार तुम रहत अघाइ ।
 कय के जग्य-भाग हो ग्वान, तहँ तुम तनकी नहिँन अघान ।
 उह बजजन की भाग बड़ाई, हो प्रभु, मो पै नहि कहि जाई । ११५
 जा प्रभु के जानैद को लेस, वर्तन अज, सिव, नैस, महेश ।

इन के भक्ति लहलहत ऐसी, देखी गुनी न कितहूँ तैसी ।
 मोहिं तो नोच परची है महा, हो प्रभु इन को देही कहा ।
 बड़ी बड़ाई मुकति तुम्हारे, जाको चारघो वेद पुकारे ।
 इन के वेष मात्र पूतना, महा पापिनी, जगत धूतना । १४०
 बहुग्यो प्रभु को मारन कारन, आई थन लगाड गर दारन ।
 तो वह बकी सकल कुल लै कै, बैठी जाड तनक विप दै कै ।
 जिन के गेह देह धन धाम, लागे सकल रावरे काम ।
 देही कहा महा अरभेरी, मोह्यी जात इहाँ मन मेरी ।
 ही जानी नित रिनी रहिंगे, टक टक इन के वदन चहिंगे । १४५

पूर्व पक्ष

जो कहहु कि ये ती नव रागी, मुन, वित, मित्र, विपै-गम पागी ।
 मोहिं कांड बीतराग भन पार्व, तहं विधि भक्ति-विभी दिखरावै ।
 हे नुदर वर नंदकिसोर, गगादिक तबई लगि चोर ।
 तबई लगि बंधन आगार, देह, गेह अरु नेह विचार ।
 तबई लगि दिड़ जजर जेरी, मोह-लोह की पाइनि वेंरी । १४०
 तब ली मननि वामना छपे, जब लगि तुम्हरे नाहित भये ।
 जो कांड कहै प्रभु-चैभव जिनी, हम सम्यक जानत है तिनी ।
 जानहु ते जानहु जो जग चर, मो ती ती मन, वचन अगोचर ।
 अब नो की अपनी करि जानी, मो कृन कछु अपराध न मानी ।
 दगरी ग्यान दोर्ज बल जिनी, प्रभु नुम सम्यक जानहु तिनी । १४५
 इनती मार्गत अहो अनंत, वदन करी कल्प परजंत ।

उन के भक्ति लहलहत ऐसी, देखी गुनी न कितहूँ तैसी ।
 मोहिं तो नोच परची है महा, हो प्रभु इन को देही कहा ।
 बड़ी बड़ा मुक्ति तुम्हारे, जाकों चारचो वेद पुकारे ।
 उन के वेष मात्र पूतना, महा पापिनी, जगत धूतना । १४०
 बहुर्यो प्रभु को मारन कारन, आई थन लगाड गर दारुन ।
 तो वह बर्का सकल कुल लै कै, बैठी जाड तनक विप दै कै ।
 जिन के गेह देह धन धाम, लागे सकल रावरे काम ।
 देही कहा महा अरुभेरी, मोह्यी जात इहाँ मन मेरी ।
 ही जानी नित रिनी रहीगे, टक टक इन के वदन चहीगे । १४५

पूर्व पक्ष

जो कहहु कि ये ती नव रागी, मुन, वित, मित्र, विपै-ग्न पागी ।
 मोहि कांड वीतराग भल पार्व, तहूँ विधि भक्ति-विभी दिखरावै ।
 हे नृदर वर नंदकिसोर, गगादिक तवई लगि चोर ।
 तवई लगि बंधन आगार, देह, गेह अरु नेह विधार ।
 तवई लगि दिड़ जजर जेरी, मोह-लोह की पाइनि वेंरी । १४०
 तब ती मननि वामना छपे, जव लगि तुम्हरे नाहिन भये ।
 जो कांड कहै प्रभु-वैभव जिनी, हम सम्यक जानत है तिती ।
 जानहु ते जानहु जो जग चर, मो तै ती मन, वचन अगोचर ।
 अब नो कीं अपनी करि जानी, मो कृत कछु अपराध न मानी ।
 हगरी ग्यान दोर्ज वन जिनी, प्रभु तुम सम्यक जानहु तिती । १४५
 इननी मांगत अहो अनंत, वदन करी कल्प परजंत ।

देगहु हो ये द्रुम या वन के, सब भुग्व करने, हरने मन के । ३५
 निगा निकरि परसन तुव पाइ, जानत हीं कछु इन को भाइ ।
 कहत कि हो ईस्वर जगनाइक, हीं तीं तुम सबहिन सुखदाइक ।
 ऐ परि हम पर दहुत ढरें, जातैं या वन के द्रुम करे ।
 अरु देगहु या वन के भृंग, बोलत डोलत तुम्हरे संग ।
 जनु ये मुनिगन अलि ह्वं आये, जदपि गुप्त तदपि लखि पाये । ४०
 धनि यह घर जा पर पग धरी, धनि ये कुंज जहाँ संचरी ।
 धनि ये सर-सरिता जहँ खोरत, धनि ये कुमुम जिनिहिं कर तोरत ।
 इहि विधि बिहरत वृंदावन मै, छिनछिन अति रति उपजत मन मै ।
 कहूँ कहूँ हंसन मिलि सु कलोलत, वैसें ही डोलत, वैसें ही बोलत ।
 कहूँ मत्त निरतत दिनि मोर, तैसें ही निरतत नंदकिसोर । ४५
 कहूँ मदांघ मधुग जहँ गावत, तिन संग मिलि गावत छवि पावत ।
 कवहूँ हरि जाइ जब गाइ, ललित कदवन पर चढ़ि जाइ ।
 आनंदधन मम मुदर टेरनि, उत उत वह हेरनि, पट-फेरनि ।
 हे गगे, हे गे गोदावरि, हे जमुने, हे भावरि, चावरि ।
 हे मंजरि, हे कुजरि, सीयरि, हे हे धीरी, धूमरि, पीयरि । ५०
 कहूँ मल्लजुड मिलि खेलत, मद गज ज्या ठेलत, पग पेलत ।
 अमिन हंन आवत नरु तरें, किसलय सयन, मु पेमल करे ।
 पीड़न गवा सघन सिर नाइ, कोई बड़भाग पलोडत पाइ ।
 कोरि कोमल पद लै कर मोजन, कोई लै कुमम बीजना बीजत ।
 कोरि अति मधुर मधुर मुर गावत, नावरें कुंवरहि नीद अनावत । ५५
 कहूँ धन रंया के पाइ, आपुन हरि दावन भरि भाइ ।

देवहु हो ये द्रुम या वन के, सब मुख करने, हरने मन के । ३५
 निम्ना निकरि परसन तुव पाइ, जानत ही कछु इन की भाइ ।
 कहत कि हो ईश्वर जगनाइक, ही ती तुम सबहिन सुखदाइक ।
 ऐ परि हम पर बहुत ठरें, जातें या वन के द्रुम करे ।
 अरु देवहु या वन के भृंग, बोलत डोलत तुम्हरे संग ।
 जनु ये मुनिगन अलि ह्वं आये, जदपि गुप्त तदपि लखि पाये । ४०
 धनि यह घर जा पर पग धरी, धनि ये कुंज जहाँ संचरौ ।
 धनि ये सर-सरिता जहँ खोरत, धनि ये कुमुम जिनहिं करतोरत ।
 इहि विधि बिहरत वृंदावन मै, छिनछिन अति रति उपजत मन मै ।
 कहँ कहँ हंसन मिलि सु कलोलत, वैसें ही डोलत, वैसें ही बोलत ।
 कहँ मत्त निरतत दिनि मोर, तैसें ही निरतत नंदकिसोर । ४५
 कहँ मदांघ मधुग जहँ गावत, निन संग मिलि गावत छवि पावत ।
 कहँ हृदि जाइ जब गाइ, ललित कदवन पर चढ़ि जाइ ।
 जानैदयन मम नुबर टेरनि, इत उत वह हेरनि, पट-फेरनि ।
 हे गगे, हे गोदावरि, हे जमुने, हे भावरि, चावरि ।
 हे संजरि, हे कुजरि, सीयरि, हे हे धीरी, धूमरि, पीयरि । ५०
 कहँ मल्लजुद्ध मिलि खेलत, मद गज ज्या ठेलत, पग पेलत ।
 श्रमिंत हान आवत नर नरे, किसलय सयन, मु पेसन करे ।
 पाइत गवा सघन सिर नाइ, कोई बड़भाग पनोटत पाइ ।
 कोई कामल पद लै कर नीजन, कोई लै कुमय बीजना बीजत ।
 कोई अति मधुर मधूर मुर गावत, नावरें कुंवरहि नीद अनावत । ५५
 कहँ दल रंया के पाइ, आपुन हृदि दावन भरि भाइ ।

जमुनिहि मिल्पा निकट ही महा, प्रति अगाध हृद कहिये कहा ।
 विप की आगि नागि जल जरै, उडते खग जहँ गिरि गिरि परं ।
 पवन नागि उठि नुठि जल लहरे, तिन तँ विप की फुही जु फहरै । १०
 एक जोवन के थिर चर जंत, जरि जरि मरि मरि गये अनंत ।
 जो वृन्दावन जोग्य न हुते, ते सब विप-जल-ज्वाला हुते ।
 ताही ढिँग इक मृदुल कदंब, सो छत्रै सकयी न विप की अंब ।
 या पन द्रुप-चन्न पनसिहै, इहि चडि या दुष्टहि करसिहै ।
 भावी जा कदंब की ऐसे, विप-जल परसि सकै निहि कैसै । १५
 ऐसे ही भावी भवत जु आहि, कालादिक छत्रै सकत न ताहि ।
 कान्ह कहाँ कि हमारी जमुना, क्या पूछियै विप भरी अमुना ।
 मरिनिहि मुद्ध कन्न कलमले, छवि सौ उहि कदंब ढिँग चले ।
 किंकिनि सौ कटि पटहि लपेटि, कुटिल अलक मुकट में समेटि ।
 चट है जिहि कदंब पर चढे, छाजन ता छिन अति छवि बढे । २०
 जिहि जल छदन जान जन जरे, निहि जल कुंवर कूदि ही परे ।
 दर बारन ज्यों जल मै बसरै, सत मन वनु चहुँ दिसि पय पसरै ।
 अति ऊधम नुनि काली उरची, वज्र परची कि गरुरवल करची ।
 अंग अरु आर्या रिय भरची, कोमल कुंवर दिष्टि-पथ परची ।
 नृन नन सुंदर न्याम, नडि दिव पीतवसन अभिराम । २५
 घन इव, तडि दिव उपमा ऐसं, साखा विन ससि मुकै न जैसें ।
 विद्वन् विभु अपने रस-रंग, ईश्वरता कछु नाहिन संग ।
 नागों यह जानै यह नीच, लोचन भरे महा तम कीच ।
 अरु वन न कोमल पाइ, उमन भयी दुरात्मा आइ ।

जग्मुनि मित्या निकट ही महा, प्रति अगाध हृद कहिये कहा ।
 विप की आगि लागि जन जरै, उडते खग जहँ गिरि गिरि परं ।
 पवन नागि उठि गुठि जल लहरै, तिन तै विप की फुही जु फहरै । १०
 उक जांजन के थिर चर जंत, जरि जरि मरि मरि गये अनंत ।
 जो वृंदावन जोग्य न हुते, ते सब विप-जल-ज्वाला हुते ।
 ताहीं ढिँग इक मृदुल कदंब, सो छत्रै सकयी न विप की ग्रंव ।
 या पर द्रुप-चन्न पगसिहै, इहि चडि या दुष्टहि करसिहैं ।
 भावी जा कदंब की ऐसै, विप-जल परसि सकै निहि कैसै । १५
 ऐसै ही भावी भवत जु आहि, कालादिक छत्रै सकत न ताहि ।
 कान्ह कर्षी कि हमारी जमुना, कयी पूछियै विप भरी अमुना ।
 मग्निहि मुद्ध कर्गन कलमने, छवि साँ उहि कदंब ढिँग चले ।
 किंकिनि नाँ कटि पटहि लपेटि, कुटिल अलक मुकट में समेटि ।
 चट है जिहि कदंब पर चढे, छाजन ता छिन अति छवि बढे । २०
 जिहि जन छपत जान जन जरे, निहि जल कुँवर कूदि ही परे ।
 दर वारन ज्याँ जल में धसरै, सत मन वनु चहुँ दिसि पय पसरै ।
 अति ऊधम मुनि काली उरग्यी, वज्र परचौ कि गरुर बल करचौ ।
 अंग अरु आर्या रिम भरचौ, कोमल कुँवर दिष्टि-पथ परचौ ।
 नृतन धन तन सुंदर न्याम, नडि दिव पीतवसन अभिराम । २५
 धन इव. तड़ि दिव उपमा ऐसैं, साखा विन ससि मुकै न जैसैं ।
 विदग्ध विभु अगने रत्न-रंग, ईश्वरना कछु नाहिन संग ।
 नागों वह जानै यह नीच, लोचन भरे महा तम कीच ।
 अरु वनन ने कोमल पाइ, डमन भयी दुरात्मा आइ ।

तिन तँ अग्नि की चिनगी परें, ठाढ़े इहा तीर के जरें ।
 ऐमें काली सी दनमाली, खेलन लगे सकल गुनसाली ।
 वाम भाग दिये तिहि उर मेलत, जैमै गरुड़ सर्प सी खेलत ।
 बलि गर्या ओज उरग की ऐमें, नाग दवन के देखत जैसै । ५५
 पुनि ताके फन पर चढ़ि गये, सकल कला गुरु निर्वृत भये ।
 साँहै नंद-गुवन तहँ ऐसै, सेरा उपर नाराइन जैसै ।
 तिहि छिन यज गंधर्व जितेक, लै लै ताल मृदंग अनेक ।
 गुप्तर नृपद जे नुर लोक के, सिव लोक के बिष्णु ओक के ।
 अद्भुत नर्तक नाह कछु बचे, सर्प फनन पर तांडव नचे । ६०
 फनन तँ निकसि निकसि मनि परै, पगन में भलमल भलमल करै ।
 तैनिय हरि-नख-मनि की जोति, सब दिसि जगमग जगमग हाँति ।
 जोरै जोरै फन ग्रहि उन्नत करै, तहँ तहँ मान बान्ह की परै ।
 पगन की कूटनि दुखित जु भर्या, सर्प की दर्प सबै गिरि गर्या ।
 कइत कि यह बल नहि न मनुज की, निरबधि ईश्वर बल जु अनुज की । ६५
 साधनाथ अहि निपटहि डरघी, मन करि चरन सरन अनुसरघी ।
 दुखित देखि ताकी गदग लिया, आँठ थर थर कपत हिया ।
 बड़े गरिबान आगे किये, जैसै दया फुरै हरि हिये ।
 नैनन तँ जलवन यो परै, कमलन तँ जनु मुक्ता भरै ।
 विगदिन अन्न नु दन्न छवि बड़े, अहि निमु जनु कि ममिन पर चड़े । ७०
 बड़ मुद्र भर्या कछु भय भर्या, करि बंडवत स्तुती अनुसर्या ।
 ग्रहो नाथ अनुचित नाह करघी, अहि कह्यु बंड न्याय ही थरघी ।
 दुष्ट-गमन नुहरी अवतार, हो ईश्वर ब्रजराज-कुमार ।

तिन तँ अग्नि की चिनगी परें, ठाढ़े उहा तीर के जरें ।
 ऐसैं कानी सीं दनमाली, खेलन लगे सकल गुनसाली ।
 वाम भाग दिये तिहि उर मेलत, जैमै गरुड़ सर्प सीं खेलत ।
 ब्रह्मि गर्या ओज उरग की ऐसैं, नाग दवन के देखत जैसैं । ५५
 पुनि ताके फन पर चढ़ि गये, सकल कला गुरु निरत भये ।
 सांहे नंद-गुवन तहैं ऐसैं, सेत उपर नाराइन जैसैं ।
 तिहि छिन यज गंधर्व जितक, लै लै ताल मृदंग अनेक ।
 गुप्तर गुप्तर जे नुर लोक के, सिव लोक के बिष्णु ओक के ।
 अद्भुत नर्तक ताह कछु बचे, सर्प फनन पर तांडव नचे । ६०
 फलन तँ निरुसि निकसि मन परै, पगन में भलमल भलमल कारै ।
 तैनिय हरि-नख-मनि की जोति, सब दिसि जगमग जगमग हांति ।
 जोरें जोरें फन अहि उन्नत करै, तहैं तहैं मान कान्ह की परै ।
 पगन की कूटनि दुखित जु भर्या, सर्प की दर्प सबै गिरि गर्या ।
 कहत कि यह बल नहि ननुज की, निरवधि ईश्वर बल जु अनुज की । ६५
 सापगाध अहि निपटहि डर्यो, मन करि चरन सरन अनुसर्यो ।
 दुखित बैगि ताकी गदगदिया, आठ थर थर कपत हिया ।
 बड़े गरिबान आगे किये, जैसैं दया फुरै हरि हिये ।
 नैनन तँ जलवन यो परै, कमलन तँ जनु मुक्ता भरै ।
 धिगलिन अन्न नु दवन छदि बड़े, अहि निमुजनु कि मनिन पर चड़े । ७०
 बहू भद्र भर्या कछु भय भर्या, करि वंदवत स्तुती अनुसरी ।
 गहो नाथ अनुचित नाह कर्यो, अहि कहैं वंड न्याय ही धर्यो ।
 दुष्ट-ज्जन नुन्हरी अवतार, हो ईश्वर ब्रजराज-कुमार ।

श्री मुक कहीं अहिन के ठौर, परी रहति नित खगपति दीर ।
 पोंरे न्धार, बहुत हति जाड, तब सर्पन मिलि कियो उपाइ ।
 आवहु मास मास बलि दीजै, इहि विधि भले कौज दिन जीजै ।
 तब पर्वनि पर्वनि तरु तरे, अपनी अपनी बलि लै धरे ।
 यह अति विष-वीरज-मद भरघो, गरुड तैं रचक नाहि न उग्यो । १०
 अपनी भाग, अवर की भाग, खाइ जाइ यह काली नाग ।
 मुनि के कुपित भयो द्विजराज, कद्रू-मुतहि हतन के काज ।
 महा वेग धरि गिन्त भरि धार्यो, बल-आलय उग्गालय आर्यो ।
 एत यह बली बालि भिहरानी, मधु-रिपु-आसन अति समुहानी ।
 इक गन फगन फुकात मु तानी, द्वै मत लोचन अनल चुत्ताती । १५
 अति बल गरुड नखायुव जाके, दूजी मधुमूदन बल ताके ।
 वाम पच्छ, नव कंचनमई, रहपट एक जु ताकी दई ।
 तहैं तै भज्यो मु विह्वल भयो, वाड आइ इहि दह दुरि गयो ।
 इहां गरुड की कछु न बसानी, फिरि गयो सोभरि संका मानी ।
 मुनि के प्रग्न करी नृप ऐसे, हो प्रभु ! सोभरि संका कैमै । २०
 तब राजा सो श्री मुक कहै, सोभरि की तहैं आश्रम रहै ।
 एक नम इहि वह मै आइ, खगपति कीनी बहुत उपाइ ।
 तहैं के मानन कहैं दुख दीनी, निन की राड पकरि है लीनी ।
 अनन्तर दुखित देखि कै खरे, बोले रिषि अति करुना भरे ।
 अब के जो ह्यां खगपति आइ, प्राण सहित तो जान न पावै । २५
 अलिनी कानी जानत आहि, और न लेनिह जानत नाहि ।
 सो वह कानी, हरि वनमाली, काढ़ि दियो करि कीर्त्ति विमाली ।

श्री मुक कही अहि न के ठोर, परी रहति नित खगपति दौर ।
 पोरै त्वाइ, बहुत हति जाइ, तब सर्पन मिलि कियौ उपाइ ।
 आवहु मास मास बलि दीजै, इहि विधि भले कैऊ दिन जीजै ।
 तब पर्वनि पर्वनि तरु तरे, अपनी अपनी बलि लै धरे ।
 यह अति विष-वीरज-मद भरयो, गरुड तैं रचक नाहिन उर्यो । १०
 अपनी भाग, अवर की भाग, खाइ जाइ यह काली नाग ।
 मुनि के कुपित भयो द्विजराज, कद्रू-मुतहि हतन के काज ।
 महा वेग धरि गिरी भरि धार्यो, बल-आलय उरगालय आर्यो ।
 एत यह बली बालि भिहरानी, मधु-रिपु-आसन अति समुहानी ।
 इक गन फनन फुकात मु तानी, द्वै मत लोचन अनल चुचाती । १५
 अति बल गरुड नखायुध जाके, दूजो मधुनूदन बल ताके ।
 नाम पच्छ, नव कंचनमई, रहपट एक जु ताकी दई ।
 तहैं तैं भज्यो मु विह्वल भयो, वाइ आइ इहि दह दुरि गयो ।
 इहां गरुड की कछु न बसानी, फिरि गयो सीभरि संका मानी ।
 मुनि के प्रव्रज करी नृप ऐसैं, हो प्रभु ! सोभरि संका कैसैं । २०
 तब राजा सो श्री मुक कहै, सीभरि की तहैं आश्रम रहै ।
 एक नर्म इहि वह मैं आइ, खगपति कीनी बहुत उपाइ ।
 तहैं के मानन कहैं दुख दीनी, तिन की राउ पकरि है लीनी ।
 जगन्धर दुखित देखि कै खरे, बोलै रिपि अति करुना भरे ।
 अब कै जा ह्यां खगपति आइ, प्राण सहित तो जान न पावैं । २५
 अश्विनी कानी जानत आहि, और न लेनिह जानत नाहि ।
 सो यह कानी, हरि व्रतमाली, काढ़ि दियो करि कीर्ति विमाली ।

जे द्रुमलता दवानल जरे, अमी-दृष्टि करि तेसई करे । ५०
 भोर भये अपने ब्रज आये, मिटे अमंगल, मंगल गाये ।
 अग्निनि पान हरि जान काँ, गान जु करिहँ कोइ ।
 महा भार संसार-भर, वहुरि न परिहँ सोइ ॥

अष्टादश अध्याय

अब गुनि अष्टादशी अध्याइ, नुनत सहज सब ताप नसाइ ।
 जानँ कृष्ण केलि अभिराम, हतिहँ अनुर प्रलंबहि राम ।
 श्री मुक्त कहत है हो नृप सत्तम, अवर एक लीला मुनि उत्तम ।
 गोप-वेष करि अद्भुत सोहत, राम-कृष्ण सब के मन मोहन ।
 श्याम रितु आपने सुभाइक, प्रगटर्चा जगत सबन दुखदाइक । ५
 यनि निदाय तहँ कछु मुधि नाही, दादुर दुरे फनी-फन-छाही ।
 सो वृंदावन मधि जव आयी, सरस वसंत समान मुहायी ।
 ठाँ ठाँ गिरि तैं निर्भर भरै, ते वै सलिल सिलन पर परै ।
 निन नँ बहति जु सरिता गहिरी, दूरि दूरि लीं परसति लहरी ।
 वहुरि अनेक अगाव गु नरवर, रस भूमरे, धूमरे तरवर । १०
 निन के तर तृन-बीरव जिने, हरित हरित रँग भरित नु निते ।
 नगनि किरन जिन नंक न परसै, छिन छिन में छवि निन में सरसै ।
 कुमुनिन दनराजी अनि राजी, जैनी नहिंन वसंत विराजी ।
 ठौर ठौर नर सरमिज फूने, टोन्त लंपट अनिकुल भूने ।
 चमन पवन, अरु चदन पान, मिनि जु बहन्, मुन कहियँ कान । १५

जे द्रुमलता दवानल जरे, अमी-दृष्टि करि तेरोई करे । ५०
 भोर भये अपने ब्रज आये, मिटे अमंगल, मंगल गाये ।
 अग्निनि पान हरि जान काँ, गान जु करिहै कोइ ।
 महा भार संसार-भर, बहुरि न परिहँ सोइ ॥

अष्टादश अध्याय

अब गुनि अष्टादसी अध्याइ, मुनत सहज सब ताप नसाइ ।
 जानै कृष्ण केलि अभिराम, हतिहँ अनुर प्रलंबहि राम ।
 श्री मुक्त कहत है हो नृप सत्तम, अवर एक लीला मुनि उत्तम ।
 गोप-वेष करि अद्भुत सोहत, राम-कृष्ण सब के मन मोहत ।
 श्याम रितु आपने सुभाइक, प्रगटर्चा जगत सबन दुखदाइक । ५
 यनि निदास तहँ कछु मुधि नाही, दादुर दुरे फनी-फन-छाँही ।
 मो बृंदावन मधि जब आयी, सरस वसंत समान मुहार्यी ।
 ठाँ ठाँ गिरि तै निर्भर भरै, ते वै सनिल सिलन पर परै ।
 निन नै बहति जु नरिना गहिरी, दूरि दूरि ली परसति लहरी ।
 बहुरि अनेक अगाव गु नरवर, रस भूमरे, धूमरे तरवर । १०
 निन के तर तून-वीर्य जिने, हरित हरित रँग भरित मु निते ।
 तगनि किरत जिन नंक न परसै, छिन छिन में छवि निन में सरसै ।
 कुमुनिन वनराजी यनि राजी, जैसी नहिँन वसंत विराजी ।
 ठौर ठौर नर सरसिज फूले, टोलत लंपट अनिकुल भूले ।
 दमन पवन, अरु चदन पान, मिनि जु बहत, मुन कहियँ कान । १५

श्रीगंगा वृषभाक्षि ग्वाल, बल दिसि गये बजावन गाल ।
 जमुना पुलिन ललित चोगान, खेलन लगे जान-मनि जान ।
 लै गये मारि टोल बल प्यारे, कमल-नयन दिनि के सब हारे । ४०
 निन पर चढ़ि चढ़ि बल और के, चले चपल अपनी जोर के ।
 श्रीदामा हरि पर चढ़ि चलै, को ठाकुर जो खेल मै रले ।
 बल प्रलंब पर सोहत ऐसै, सो उपमा अब कहियत कैसे ।
 बट भंडीर तीर लागि चढ़े, लै गये बालकलि रस बड़े ।
 लान्ह कुंवर की दृष्टि बचाड, अमुर अवधि तै आगे जाड । ४१
 अपने रूपहि आश्रित भयी, तब ही अंबर लो चढ़ि गयी ।
 ता छिन भयी भयानक भारी, पहिरे कंचन-भूपन कारी ।
 ता पर नमस्कृत अति सोहे, ब्रजवानक विलोकि सब मोहे ।
 जो होइ कारी भारी घटा, बिच बिच चमकै-दमकै छटा ।
 ऊपर सरद चद होइ जैसे, सोहि रोहिनि-नंदन तैमै । ४०
 विकट बदन अरु बड़े दंत, विकट भृकुटि दृग अग्नि वमंत ।
 तपन ताम्र ने सिररुह लने, तब दिखि हलधर रंचक वने ।
 पुनि मुधि आड तनक मुनकाड, दियौ जु मुठिका मूंड बनाइ ।
 किरच किरच हूँ गयी लिलार, मुख तै चली रुधिर की धार ।
 धन्यो प्रलंब न कछु सभारधी, गिरिजम गिरन वज्र कौ मारधी । ४५
 पांड पगारि अनुर जव परधी, निरखि रूप तब सब ब्रज डरधी ।
 पुरि पुरि मिले ग्वालगत ऐसै, मरिगयी कोड फिरि आवत जैसे ।
 पनन निकन दर अनियय हरये, बल पर सुमन सु मुंदर वरये ।
 दूधन पर लै ब्रज कौ आवन, बालक-बृंड नु कीर्तन गावन ।

श्रीमाना वृषभाक्षिक खाल, बल दिसि गये बजावन गाल ।
 जमुना पुलिन ललित चोगान, खेलन लगे जान-मनि जान ।
 लै गये मारि ठाल बल प्यारे, कमल-नयन दिनि के सब हारे । ४०
 निन गर चढ़ि चढ़ि बल ओर के, चले चपल अपनी जोर के ।
 श्रीदामा हरि पर चढ़ि चले, को ठाकुर जो खेल मै रले ।
 बल प्रलंब पर सोहत ऐसं, सो उपमा अब कहियत कैसें ।
 बट भंडार तीर लागि चढ़े, लै गये बालकेलि रस बड़े ।
 तान्ह कुंवर की दृष्टि बचाइ, अमुर अवधि तै आगे जाइ । ४५
 अपने रूपहि आश्रित भयी, तब ही अंतर लो चढ़ि गयी ।
 ता छिन भयी भयानक भारी, पहिरे कंचन-भूपन कारी ।
 ता पर नम्रपन अति सोहे, ब्रजवालक विलोकि सब मोहे ।
 जो होइ कारी भारी घटा, बिच बिच चमकै-दमकै छटा ।
 ऊपर सरद चद हांड जैसै, सोहै रोहिनि-नंदन तैसै । ५०
 बिकट बदन अरु बड़े दंत, बिकट भृकुटि दृग अग्नि वमंत ।
 तपन ताम्र ने सिरकह लने, तब दिखि हलधर रंचक त्रमे ।
 पुनि मुधि आठ तनक मुनकाइ, दियौ जु मुठिका मूंड बनाइ ।
 किरच किरच हूँ गयी लिलार, मुख तै चली रुधिर की धार ।
 धन्धी प्रलंब न कछु सभारधी, गिरिजन गिरत वज्र को मारधी । ५५
 पोड पनादि अनुर जत्र परधी, निरखि रूप तब सब ब्रज डरधी ।
 पुरि घुरि मिले खालगन ऐसं, मरि गयी कोउ फिरि आवत जैसै ।
 पनन निरुन दर अतिनय हरये, बल पर सुमन सु मुंदर वरये ।
 कृपन पर लै ब्रज को आवत, बालक-बृंद नु कीरति गावत ।

तब हरि एक कदंब पर चढ़े, छाजत निहि छिन अति छवि बटे । १५

जन सब कुन की फल रस-पग्यी, हि कदंब एके यह लग्यी ।

चंचल दृगन की जन उत हेरनि, मधुर मधुर टेरनि, पट फेरनि ।

मुकट की भलकनि, कुंडल भलकनि, कछु कछु राजति गोरज अलकनि ।

न ल नामन गारन टेरे, यह छवि सदा बसहु मन भेरे ।

दगदी उत तै चाइन चाइन, हरि-मुख तै सुनि अपने नाइन । २०

प्रेम सहित आवनि, हुंकारनि, मीचत धरनि दूध की धारनि ।

आनि जु भई धेनु इकठोरी, धोरी धोरी, अति छवि बीरी ।

सब के कंठनि कंचन-माला, सोहत सुंदर नयन बिसाला ।

घनन घनन घंटागन गजै, अमरराज-नाज की छवि लजै ।

हनि सनमुख आवति उमहि, उज्जल गोधन-नार । २५

समुदहि नन्हें मिलन चर्चा, गंग भई सतधार ॥

ऐगैहि नाहि दवानल लग्यी, वृष-रवि-रस्मि परसि जगमग्यी ।

प्रदल पदल नागि अति भर भट्ट, लतन सी लपटि द्रुमन सी लपट ।

जरि जरि नाल तमाल जु लटके, पटके बाँस, काँस-तृन चटके ।

ढरे गोप-गोधनगन सबै, आये नंद-मुवन ढिँग तबै । ३०

ज्यों कोउ काल व्याल तैं ढरे, भजि हरि-चरन-सरन अनुसरै ।

पहन लगे कि अहो बलराम, हो श्रीकृष्ण कृष्ण घनस्याम ।

नासि लेहु हम बंधु तुम्हारे, जरत हैं सब दवानल जारे ।

तब हंसि बोले मोहनलाल, मूँदहु नैन धेनु, बछ, बाल ।

जब सब के दृग मद्रित भये, तब हनि अगिनि पान करि गये । ३५

दृग उगानि जो चह्नि अनीर, टाढ़े बट भांडीर के नीर ।

तब हरि एक कदंब पर चढ़े, छाजत निहि छिन अति छवि बटे । १५

जन मय कुन की फल रस-पर्या, हि कदंब एके यह लग्यी ।

चंचल दृगन की जन उत हेरनि, मधुर मधुर टेरनि, पट फेरनि ।

मुकट की भलकनि, कुंडल भलकनि, कछु कछु राजति गोरज अलकनि ।

नै लै नामन गाहन टेरे, यह छवि सदा बसहु मन भेरे ।

दगदी उत तै चाइन चाइन, हरि-मुख तै सुनि अपने नाइन । २०

प्रेम सहित आवनि, हुंकारनि, नीचत धरनि दूध की धारनि ।

आनि जु भई धेनु इकठोरी, धोरी धोरी, अति छवि धोरी ।

सब के कंठनि कंचन-माला, सोहन सुंदर नयन बिसाला ।

घनन घनन घंटागन गजै, अमरराज-गज की छवि लजै ।

हनि सनमुख आवति उमहि, उज्जल गोधन-नार । २५

समुदहि नन्हें मिलन चर्नी, गंग भई सतधार ॥

ऐगैहि नाहि दवानल लग्यी, वृष-रवि-रस्मि परसि जगमग्यी ।

प्रवल पवन गगि अनि भर भरै, लतन सी लपटि द्रुमन सी लपटै ।

जरि जरि ताल तमाल जु लटके, पटके बाँस, काँस-तृन चटके ।

ढरे गोप-गोधनगन सबै, आये नंद-मुवन ढिँग तबै । ३०

ज्याँ कोउ काल व्याल तैं ढरें, भजि हरि-चरन-सरन अनुसरै ।

पहन लगे कि अहो बलराम, हो श्रीकृष्ण कृष्ण वनस्याम ।

गखि लेहु हम बंधु तुम्हारे, जरन है सब दवानल जारे ।

तब हंसि बोलै सोहनलाल, मूँदहु नैन धेनु, बछ, बाल ।

जब सब के दृग मद्रित भये, तब हनि अग्नि पान करि गये । ३५

दृग उतारि जो चह्नि अमीर, टाढ़े बट भांडीर के तीर ।

जैन नृप अपनी कर नैह, समय पाड पुनि परजहि देंह ।
 तद्वित-दृगन करि भेष महंत, देवे ताप तपे सब जंत । १०
 प्रेरे पवन नु जीवन वरपै, नवन के दुख करपै, मन हरपै ।
 जैन करन पुरुष पर हेत, अपने प्यारे प्रानन देत ।
 गीम-नाप करि कृप्य हुनी धरनी, सरस भई, सोहति वर वरनी ।
 ज्या सकाम कोउ फल कां पाड, भोगन भुगति पुष्टि ह्वै जाइ ।
 माँभा ममै पटविजना चमकै, घन करि छपे नखतगन दमकै । १५
 ज्यां कनि विषै पाप पाखंड, नहिन निगम के धरम प्रचंड ।
 घन-नारजनि मुनि मुद्रि जु भेक, बोले धरनि अनेक अनेक ।
 ज्या गुरु ग्राग्या सुनि चटसार, चटा पढि उठत एक हि वार ।
 पाछे मुकी हुती जे मरिता, उत्पथ चली बहुत जल भरिता ।
 अजितेद्रिय नर ज्या इतराड, देह, गेह, घन, संपति पाइ । २०
 बुढ़ी लुढ़ी जु हरित भई धरनी, उछलीध्र छवि फवि हियहरनी ।
 जनु कोउ भूपति उतरयाँ आइ, छत्र ननाड, विछीन विछाड ।
 निपजे छेत्र कागुनी घान, तिनहि निरखि हरखे जु किसान ।
 धनी लोग उपतापहि जाही, दैवाधीन मु जानत नाही ।
 जल के, थल के वासी जिते, जल-सोभा करि सोभित तिते । २५
 जैन हरि-मेवा करि कोई, रुचिर रूप अति राजन सोई ।
 मरित-मंग करि छुगिन जु सिंधु, उमगि ऊरमी, ह्वै गयी अंधु ।
 ज्यां प्रपक्व जोगी नित घाड, विषयन पाइ भ्रष्ट ह्वै जाड ।
 निरिगन पर जलवर वर वरनै, ऐ परि गिरि कछु विद्या न परसै ।
 परसे पै निर्मन नहि ऐसै, कष्टन पाइ कृप्यजन जैनै । ३०

जैमै नृप अपनी कर नैह, समय पाड पुनि परजहि दैह ।
 नदित-दृगन्त करि भेष महंत, देखे ताप तपे सब जंत । १०
 प्रेरे पवन नु जीवन बरपै, नवन के दुख करपै, मन हरपै ।
 जैमै कारन पुरुष पर हेत, अपने प्यारे प्रान्त देत ।
 शीघ्र-नाथ करि कृष्ण हुती धरनी, सरस भई, सोहति बर बरनी ।
 ज्यौ सकाम कोड फल कां पाड, भोगन भुगति पुष्टि ह्वै जाइ ।
 भाँझ समै पटविजना चमकै, धन करि छपे नखतगन दमकै । १५
 ज्यौं कनि विपै पाप पाखंड, नहि न निगम के धरम प्रचंड ।
 धन-नरजनि मुनि मुदिन जु भेक, बोले धरनि अनेक अनेक ।
 ज्यौं गुन आग्या सुनि चटसार, चटा पडि उठत एक हि वार ।
 पाछे मुकी हुती जे मरिता, उत्पथ चली बहुत जल भरिता ।
 अजितेद्रिय नर ज्यौं इतराड, देह, गेह, धन, संपति पाइ । २०
 बड़ी लुट्टी जु हरित भई धरनी, उछलीध्र छवि फवि हियहरनी ।
 जनु कोड भूपति उतर्यौ आइ, छत्र ननाड, विछीन विछाड ।
 निपजे छत्र कागुनी धान, तिनहि निरखि हरखे जु किसान ।
 धनी लाग उपतापहि जाही, दैवाधीन सु जानत नाही ।
 जल के, थल के दासी जिते, जल-सोभा करि सोभित तिते । २५
 जैमै हरि-नेवा करि कोई, रुचिर रूप अति राजन सोई ।
 नरित-नंग करि छुनिन जु सिंधु, उमगि ऊरमी, ह्वै गयी अंधु ।
 ज्यौं प्रपक्व जोगी चित घाड, विषयन पाइ भ्रष्ट ह्वै जाड ।
 गिरिगन्त पर जलवर बर बरनै, ऐ परि गिरि कछु विद्या न परसै ।
 पग्ने पै निर्गने नहि ऐमै, कष्टन पाइ कृष्णजन जैमै । ३०

एकविंश अध्याय

अतः मुनि उर्ध्वगो अध्याह्न, सरद गमै वृंदावन जाड ।
 वेत्त वर्जित मोहनलाल, तिहि मुनि मुंदर व्रज की बाल ।
 दग्धन दग्धै परम पुनीत, ग्रहो मीत ! सुनि गोपी-गीत ।
 नरग न्वच्छ जल-वागल जितेक, प्रफुलित भये अनेक अनेक ।
 नित की वान वायु नै गया, ता करि सब वन वासित भयी । ५
 तिहि वन अच्युत मोहनलाल, गवने बल-बालक-गोपाल ।
 गारां सुनम कुसमगन फूले, मधुकर मत्त फिरत जहँ भूले ।
 नरवर, सरवर के खग जिते, मुद भरि करत कुलाहल तिते ।
 तहँ गिरि गोधन मुछ छवि छये, नित वरसत, सरसत मुख नये ।
 जहँ नंदनंदन चारन वेनु, मधुर मधुर सुर वजवत वेनु । १०
 सो वह वेनुनीत सु रंगाल, मुनत भई व्रज मै व्रजबाल ।
 दृष्टी जु नन-मन प्रेम अनंग, मनु उत ही हैं हरि के संग ।
 वरनन भई सखिन प्रति ऐमें, परतछ कान्ह कुंवर वर जंसे ।
 हे सखि ! दिखि नटवर वपु धरे, कर्ननि कँवल कनिका करे ।
 धरे मुकट चटकीली माय, फेरत कमल दाहिने हाथ । १५
 गजत उर वैजंती माल, चलत जु मत्त द्विरद की चाल ।
 अधर-मुग मुरली के रंघनि, निकसति मिलि मुरसप्ल मुगंधनि ।
 ता करि सब दन धूनित कियो, काहू माँझ रह्यी नहिं हियो ।
 निज पद अकित, नित कमनीय, वृंदारन्य परम रमनीय ।
 तहाँ प्रवेश करत छवि पावन, गोपवृंद कल कीरति गावन । २०

एकविंश अध्याय

अतः मुनि उर्कर्मो अध्याइ, सरस्व गमै वृंदावन जाइ ।
 वेनु वज्रहं मोहनलाल, तिहि मुनि मुंदर व्रज की बाल ।
 वरनन करिहै परम पुनीत, ग्रहो गीत ! सुनि गोपी-गीत ।
 सरस्व न्यच्छ जल-कमल जितेक, प्रफुलित भये अनेक अनेक ।
 तिन की वास वायु नै गर्या, ता करि सब वन वासित भयी । ५
 तिहि वन अच्युत मोहनलाल, गवने बल-बालक-गोपाल ।
 आंरी सुमम कुसमगन फूले, मधुकर मत्त फिरत जहँ भूले ।
 नरवर, सरस्वर के खग जिते, मुद भरि करत कुलाहल तिते ।
 तहँ गिरि गोधन मुछ छवि छये, नित वरसत, सरसत मुख नये ।
 जहँ नंदनंदन चारन वेनु, मधुर मधुर सुर वज्रवत वेनु । १०
 सो बह वेनु-नीत सु रंगाल, मुनत भई व्रज मै व्रजवाल ।
 दृष्टी जू नन-मन प्रेम अनंग, मनु उत ही हैं हरि के संग ।
 वरनन भई सखिन प्रति ऐमै, परतछ कान्ह कुंवर वर जैसै ।
 ते सखि ! दिखि नटवर वपु धरै, कर्मनि कँवल कनिका करै ।
 धरै मुकट चटकीली माय, फेरत कमल दाहिने हाथ । १५
 राजन उर वैजंती माल, चलन जु मत्त द्विद की चाल ।
 अधर-मुखा मुरली के रंध्रनि, निकसति मिनिमुरसपुमगंधनि ।
 ता करि सब वन धूनित कियो, काहू माझ गह्यी नहिं हियी ।
 निज पद अकिल, नित कमनीय, वृंदागन्य परम रमनीय ।
 तहँ प्रवेग कन छवि पावन, गोपवृंद कल कीरति गावन । २०

मुनि पुनि कर्म फलन तजि जैसै, अप अपनी धृति-सापा वैसे । ७५
कमल-नयन अदलोवन करै, फलन के अंतर नहि सहि परै ।
तैसेँ उह वन खगगन जिते, मुनि हीन के जोग है तिते ।

अन्याहु

हैं सखि ! चेतन जन की रही, ये जु अचेतन ते किन चही ।
वेनु-नीत मुनि सरिता जिती, उमगि मनोभव विथकित तिती ।
वीच जु भ्रमत भँवर अभिराम, मारत मनहि मसूने काम । ८०
लै लै अमल कमल उपहार, लहरि भुजन करि ढारहि ढार ।
पकरे चहत स्याम के पाड, जैनै काम-विधा मिटि जाइ ।

अन्याहु

वन नै बल ग्रह मुंदर स्याम, पनु चारत, परसत दिखि घाम ।
निरगहु सजनि नेह की नेह, छत्र करि लियी अपनी देह ।
छोह किये डोलत दिन मंग, फुही फूल वरपत बहु रग । ८५
कनक-दंड जिमि दामिनि बनी, छाजति छवि कछु परत न गनी ।
नया भयो घन घनस्याम की, नानी मानि एक नाम की ।
जग-आरति हरने, नम-सने, दाऊ आनि एक से बने ।

अन्याहु

हैं सखि ! मेह-नेह की रही, भाल-भामिनी तन किन चही ।
प्रमुक्ति जन जु फिरति है सखा, मैं डक इनके मन की लखी । ९०
जिया-उरज कुकुम-रन-रगे, ते कुकुम हरि पिय-पद नगे ।
पद्म नै घन-नून भूषित भये, ते तून इन नीयन नखि पये ।

मुनि पुनि कर्म फलन तजि जैसै, अप अपनी धृति-सापा वसै । ७५
कमल-नयन अदलोकन करै, फलन के अंतर नहि सहि परै ।
तैसैं उह वन खगगन जिते, मुनि हीन के जोग है तिते ।

अन्याहु

हैं सखि ! चेतन जन की रही, ये जु अचेतन ते किन चहीं ।
वेनु-गीत मुनि सरिता जिते, उमगि मनोभव विथकित तिते ।
वीच जु भ्रमत भँवर अभिराम, मारत मनहि मसूमे काम । ८०
नै नै अमल कमल उपहार, लहरि भुजन करि ढारहि ढार ।
पकरे चहत स्याम के पाड, जैन काम-विथा मिटि जाइ ।

अन्याहु

वन नै बल ग्रह मुंदर स्याम, पनु चारत, परसत दिखि घाम ।
निरगहु सजनि नेह की नेह, छत्र करि लियी अपनी देह ।
छोह किये डोलत दिन मंग, फुही फूल वरपत बहु रंग । ८५
कनक-दंड जिमि दामिनि बनी, छाजति छवि कछु परत न गनी ।
नग्रा भयो घन घनस्याम की, नानी मानि एक नाम की ।
जग-आरति हरने, नम-सने, दाऊ आनि एक से बने ।

अन्याहु

हैं सखि ! मेह-नेह की रही, भील-भामिनी तन किन चहीं ।
प्रमुञ्जित जन जु फिरति है सखी, मैं इक इनके मन की लखी । ९०
जिया-उदर कुकुम-रन-रंगे, ते कुकुम हरि पिय-उद नगे ।
पग नै घन-नून भूषित भये, ते तून जन नीयन लखि पये ।

‘नंद’ इसीसे अध्याइ यह, ऐसे सुनि चित चाहि ।

प्रिया-वचन जिमि पीय के, सुनिवाई फल चाहि ॥

द्वाविंश अध्याय

विवि विंशत अध्याइ नुनि मित्र, वस्त्रहरन मनहरन पवित्र ।

नंद गोप व्रज की दारिका, अद्भुत अद्भुत नुकुमारिका ।

जदपि समस्त विवाहित चाहि, नंद-मुवन के रूपहि चाहि ।

विचस भई पति परिहरि परिहरि, करत भई व्रत हिय हरि धरि धरि ।

हिम ग्नि प्रयन मास अभिराम, देवी कात्यायनी जु नाम । ५

तिहि पूजन जमुना-नद जाहि, तहाँ न्हाइ हविषा कछु खाहि ।

व्रत की पूर्व भाग कहत हैं

उठै बड़े खन चाइन चाइन, बोलत छवि सीं मबुरी भाइन ।

कछुक आगनोवत भक्त तिन के नाम कहत हैं

प्रेमगुला, विमला, रतिकला, कामकला, नवला चंचला ।

चंद्रगुला, चंद्रावलि, चंदनि, जग-वदनि वृषभान की नंदनि ।

कामगुला, ललिता, रतिवेलि, रूपलता, चंपकलता एलि । १०

अवर अनेक नहिंन कहि परै, चंचल नैन मैन-मन हरै ।

सद दिनि नै प्रायति छवि पावनि, नूतन मंगल गीतन गावति ।

असता दिवि जमुना-नद आवनि, अतिनै करि मन मोद बढ़ावति ।

एनि नंगल नन्दिल में जाइ, मीन बरे विधि नहिंन अन्हाइ ।

दहरि कारिनी कुलन नरै, वारु की दन प्रतिमा करै । १५

‘नंद’ इसीस अध्याय यह, ऐसी सुनि चित चाहि ।

प्रिया-वचन जिमि पीय के, सुनिवाई फल चाहि ॥

द्वाविंश अध्याय

विवि विस्तत अध्याय सुनि मित्र, वस्त्रहरन मनहरन पवित्र ।

नंद गोप व्रज की दारिका, अद्भुत अद्भुत नुकुमारिका ।

जदपि समस्त विवाहित चाहि, नंद-मुवन के रूपहि चाहि ।

विचस भई पति परिहरि परिहरि, करत भई व्रत हिय हरि धरि धरि ।

हिम ग्नि प्रथम मास अभिराम, देवी कात्यायनी जु नाम । ५

तिहि पूजन जमुना-नट जाहि, तहां न्हाइ हविषा कछु खाहि ।

व्रत की पूर्व भाग कहत हैं

उठै बड़े खन चाइन चाइन, बोलत छवि सीं मयूरी भाइन ।

कछुकर आगमोवत भक्त तिन के नाम कहत हैं

प्रेमकला, विमला, रतिकला, कामकला, नवला चंचला ।

चंद्रावता, चंद्रावलि, चंदनि, जग-वदनि वृषभान की नंदनि ।

कामलता, ललिता, रनिवेलि, रूपलता, चंपकलता एलि । १०

अवर अनेक नहिं कहि परै, चंचल नैन मैन-मन हरै ।

सब दिनि नै प्रावति छवि पावनि, नूतन मंगल गीतन गावति ।

अनता विधि जमुना-नट आवति, अतिनै करि मन मोद बढ़ावति ।

एनि नंगल्य नन्दिल में जाइ, मीन बरे विधि नहिं अन्हाइ ।

दहरि कारिंदी कृपन सरै, वारु की दन प्रतिमा करै । १५

नन्द-महर्षि के पुत्र रावरे, जानि बूझि जिनि हीहु बावरे ।
 देहु वनन, वरि गई अत हँसी, मरनि हँ सीत नलिल में धसी ।
 पुनि तिन में जे प्राढ़ा आहि, ते बोली हँसि हरि तन चाहि । ४०
 हे मुंजर बर ! करहु न हांसी, हम ती सब तुम्हारी दासी ।
 जो तुन कहहु, सोइ हम करिहँ, देहु बसन, बिन काजहि मरिहँ ।
 जो न देइही रम भाइ माँ, कहिहँ जाइ नंदराइ सी ।
 तब बोले ब्रजराज दुलारे, मैं समझे सकल्प तिहारे ।
 इत आवहु, रंचक न लजाहु, व्रत की फल लै लै घर जाहु । ४५
 नन्द-मुवत की गन हो जैसी, निकसी सब रम-विकसी तैसी ।
 पद्म प्रेम के फंदन परी, नंद के नदन खेल की करी ।
 पुनि बोले ब्रजराज दुलारे, पूर्ण मनोरथ होहु तुम्हारे ।
 पर आत्यंतिक नाहि न हँहै, मन-अभिलाष पाइ पुनि जँहै ।
 भेर विषय जु मति अनुसरै, नु मति न बहुरि विषय सचरै । ५०
 भुजित भान जगन में जैसी, बीज के काम न आवहि तैसी ।
 ऐ परि जो मो डच्छा हाँई, भूज्यी बीज निपजि परं मोई ।
 जगामिनी जामिनी एहँ, तिन में तुमहि बहुत सुख दँहै ।
 इति विधि बरहि पाइ छदि छई, केन हूँ केन ब्रज गई ।
 वनन एवे, परं मन नहि पये, मन मनमोहन गोहन गये । ५५

अजित्य की दे अपनयी, कृष्ण कमल-दल-नैन ।

जगदात्मनी अपनी करन, चले अनुग्रह दैन ॥

तिन के मति जु भक्ति-रति-हीन, कर्मन विषय निपट लवलीन ।

तिन तन दृष्टि दिवें मनकात, वन के डुनन मराहत जात ।

नन्द-महर्षि के पूत रावरे, जानि बूझि जिति हीहु बावरे ।
 देहु वनन, वरि गई अरु हँगी, मरनि हँ सीत नलिल में धसी ।
 पुनि तिन में जे प्रीड़ा आहि, ते बोली हँसि हरि तन चाहि । ४०
 हे मुँडन बर ! करहु न हांसी, हम ती सबे तुम्हारी दासी ।
 जो तुम कहहु, सोइ हम करिहँ, देहु बसन, बिन काजहि मरिहँ ।
 जो न देखी रम भाइ नाँ, कहिहँ जाइ नंदराइ सी ।
 तब बोले ब्रजराज दुलारे, मैं समझे सकल्प तिहारे ।
 इन आवहु, रंचक न लजाहु, व्रत की फल लै लै घर जाहु । ४१
 नन्द-मुवन की गन हो जँसे, निकसी सब रम-विकसी तैसे ।
 पद्म प्रेम के फंदन परी, नंद के नदन खेल की करी ।
 पुनि बोले ब्रजराज दुलारे, पूर्ण मनोरथ होहु तुम्हारे ।
 पँ यात्यंतिक नाहि न हँहँ, मन-अभिलाष पाइ पुनि जँहँ ।
 भेर विषय जु मति अनुसरँ, नु मति न बहुरि विषय सचरँ । ४०
 भुजिन भान जगन में जँसे, बीज के काम न आवहि तैसे ।
 ऐ परि जो मो डच्छा हाँई, भूज्यी बीज निपजि परं मोई ।
 जगामिनी जामिनी एँहँ, तिन में तुमहि बहुत सुख दँहँ ।
 इति विधि बरहि पाइ छदि छई, केन हँ केन ब्रज गई ।
 वनन एवे, पँ मन नहि पये, मन मनमोहन गोहन गये । ४१

अजित्य की ई अपनयी, कृष्ण कमल-दल-नैन ।

जगदातिनी अपनी करन, चले अनुग्रह दँन ॥

स्नि के प्रति जु भक्ति-रति-हीन, कर्मन विषय निपट लवलान ।

स्नि मन दृष्टि दिये मनशात, वन के डुनन सराहत जात ।

जमुना निकट नुभग एक वाग, सब अनीक तर अति बड़भाग ।
 एक तर नरे कुँवर घनस्याम, ठाढ़े कोटि काम अभिराम ।
 पीतवसन वनमाल रमाल, मोरचंद छवि छाजत भाल ।
 सज्जा अंम बाँड भुज द्विये, केलि-कामल दच्छिन कर किये । ५५
 अङ्गुनगुनगन मुनि हिय धरिधरि, रही हुती उत्कंठा भरि भरि ।
 मो माच्छात प्रगट रम भरे, अति रोचन लोचन-पथ परे ।
 दृग-रंघन करि अंतर लये, तहँ प्रभु का परिरंभन दये ।
 मुनिन भई तिहि छिन सब ऐनै, तुरिय अवस्था पाइ मुनि जेसैं ।
 तब बोले हरि हे बड़भागि ! नीके आई भरि अनुराग । ६०
 प्रतिबंधक जे हुने निहारे, ते तुम तिन से लघु करि डारे ।
 मो दरसन हित इत अनुसरी, उचित करी, अनुचित नहि करी ।
 जे जन निपुन जपारथ वेदी, स्वारथ अरु परमारथ भेदी ।
 ते मो विष भक्ति-रति करै, फल न कछु रंचक चित धरैं ।
 हम सब ही के आत्मा आहि, तत्ववेत्ता लेत है चाहि । ६५
 प्राण, बुद्धि, मन, इंद्रि, देह, पुत्र, कलित्र, मित्र, धन, गेह ।
 जाके अव्यास तैं अचेत, प्रिय लागत अपनपै समेत ।
 सो तुम करि हम पाये सबै, धनि धनि धन्य भई तुम अवै ।
 अद्य तुम देवि जजन प्रति जाहु, द्विज-जग्यन का करहु निवाहु ।
 तुम करि सब नमापति कन्हि, अवर न कछु तनक मन धरिहै । ७०
 कहत गयी तब तब द्विज निया, मुनि यह बात बहकि गयी हिया ।
 हे मुँदर वर सरमिज-नैन, जिनि बोल्हु अस करकस वैन ।
 अर्ण्या प्रतिग्या तन किन चहँ, वेद-पुरानन मैं ज्यां कही ।

जमुना निकट नुभग डक वाग, सब अगोचर तर अति बड़भाग ।
 डक तर नरे कुंदर घनस्याम, ठाढे कोटि काम अभिराम ।
 पीतवसन वनमाल रमान, मोरचंद छवि छाजत भाल ।
 सज्जा अंस बाई भुज द्विये, कैलि-नामन दच्छिन कर किये । ५५
 अद्भुतगुनगन नुनि हिय धरिधरि, रही हुती उत्कांठा भरि भरि ।
 मो माच्छात प्रगट रम भरे, अति रोचन लोचन-पथ परे ।
 दृग-रंध्रन करि अंतर लये, तहँ प्रभु का परिरंभन दये ।
 मुनिन भई तिहि छिन सब ऐनै, तुरिय अवस्था पाइ मुनि जेसैं ।
 तब बोले हरि हे बड़भागि ! नीके आई भरि अनुराग । ६०
 प्रतिबंधक जे हुने तिहारे, ते तुम तिन से लघु करि डारे ।
 मो दरसन हित इत अनुसरी, उचित करी, अनुचित नाहि करी ।
 जे जन निपुन जपारथ वेदी, स्वारथ अरु परमारथ भेदी ।
 ते मो विष भक्ति-रति करै, फल न कछु रंचक चित धरै ।
 हम सब श्री के आत्मा ग्राहि, तत्ववेत्ता लेत है चाहि । ६५
 ज्ञान, बुद्धि, मन, इंद्रि, देह, पुत्र, कलित्र, मित्र, धन, गेह ।
 जाके अव्यास तैं अचेत, प्रिय लागत अपनपै समेत ।
 मो तुम करि हम पाये सबै, धनि धनि धन्य भई तुम अवै ।
 अत्र तुम देवि जजन प्रति जाहु, द्विज-जग्यन कां करहु निवाहु ।
 तुम करि सब नमापति कन्हि, अवर न कछु तनक मन धरिहैं । ७०
 कहत नगी तब तब द्विज निया, मुनि यह बात बहकि गयी हिया ।
 हे मुंदर अर सरमिज-नैन, जिनि बोलहु अस करकस वैन ।
 अपनी प्रतिम्या तन किन चहैं, देव-पुरावन में ज्या कही ।

जगपतिनिन जे व्यंजन आने, जाहि कै गोप-गोविंद अघाने ।

द्विज जु कहावत जे अति बड़े, तियन की गतिहि देखि सब गड़े ।

‘नंद’ जु गोविंद भक्ति विन, बड़ी कहावत कोइ ।

बुझै जु दीपक ज्यौ बड़ी, कहियत वह गति सोइ ॥

तियन की गतिहि निरखि द्विज जिते, पञ्चाताप करत भये तिते । १००

जो प्रभु निगम अगम करि गाये, जैवन मिस ते हम पै आये ।

धिग धिग हम, धिग धिग ये क्रिया, धिग धिग विप्र जन्म धिग जिया ।

धिग बहुग्यता, धिग सब इपै, विमुख जु कृष्ण अधोक्षज विपै ।

यह प्रभु की माया मोहनी, जोगीजन-मन की खोहनी ।

जा करि हम द्विज ह्वै मद भरे, गुरु कहाइ सठ भठ मैं परे । १०५

जिन के न कछु सोच आचार, गुरुकुल सेव न तत्त्व विचार ।

नहि जप, नहि तप, नहि सुभक्रिया, कर्कस, कुटिल, जटिल नित हिया ।

तिन के भई भक्ति-रति जैसी, देखी-सुनी न कित हूँ ऐसी ।

सम्यक द्विज कर्मन करि भरे, ते हम है भख मारत परे ।

हम करि जदपि न्युनी अवतार, जदुकुल विप हन भू-भार । ११०

पुनि आये इत दास्ता-कंद, जाचन पूरन परमानंद ।

ओदन कहा चाहियै तिन के, कमला पाइ पलोडत जिन के ।

नुमिरि नुमिरि ग्वालन की बात, करन मांजि सब द्विज पछितात ।

पुनि वहै हम हूँ उत्तम भये, मन के सब संसय मिटि गये ।

जिन की ऐसी नित बड़भागि, नन-मन-भरी कृष्ण-अनुराग । ११५

जिहि अनुराग हमारे हिये, चपरि कै कनन-नैन में किये ।

'जगपतिनिन जे व्यंजन आने, जाहि कै गोप-गोविंद अघाने ।

द्विज जु कहावत जे अति बड़े, तियन की गतिहि देखि सब गड़े ।

'नंद' जु गोविंद भक्ति बिन, बड़ी कहावत कोइ ।

बुझै जु दीपक ज्यौ बड़ी, कहियत वह गति सोइ ॥

तियन की गतिहि निरखि द्विज जिते, पञ्चाताप करत भये तिते । १००

जो प्रभु निगम अगम करि गाये, जैवन मिस ते हम पै आये ।

धिग धिग हम, धिग धिग ये क्रिया, धिग धिग विप्र जन्म धिग जिया ।

धिग बहुग्यता, धिग सब इपै, विमुख जु कृष्ण अवोक्षज विपै ।

यह प्रभु की माया मोहनी, जोगीजन-मन की खोहनी ।

जा करि हम द्विज ह्वै मद भरे, गुरु कहाइ सठ भठ मै परे । १०५

जिन के न कछु सोच आचार, गुरुकुल सेव न तत्त्व विचार ।

नहिं जप, नहिं तप, नहिं सुभक्रिया, कर्कस, कुटिल, जटिल नित हिया ।

तिन के भई भक्ति-रति जैसी, देखी-सुनी न कित हूँ ऐसी ।

सम्यक द्विज कर्मन करि भरे, ते हम है भख मारत परे ।

हम करि जदपि मुन्याँ अवतार, जदुकुल विपै हरन भू-भार । ११०

पुनि आये इत करुना-कंद, जाचन पूरन परमानंद ।

ओवन कहा चाहियै तिन के, कमला पाइ पलोटत जिन के ।

नुमिरि नुमिरि ग्वालन की बात, करन मांजि सब द्विज पछिनात ।

पुनि वहै हम हूँ उत्तम भये, मन के सब संसय मिटि गये ।

जिन की ऐसी नित बड़भागि, नन-मन-भरी कृष्ण-अनुराग । ११५

जिहि अनुराग हमारे हिये, चपरि कै कनन-नैन में किये ।

ना नर नहि पाये कल्याण, कहत है वेद पुरान मुजान ।
 महानंद, उपनंद, मुनंद, निजानंद अरु बाबा नंद ।
 ऐसे करि जब सबहिन कह्यो, सब के ईश्वर नाहिन गह्यो । २०
 मुग्गति अन श्रीमद करि छयी, महा गर्व पर्वत चढ़ि गयी ।
 तहें ते ना कहें डारयो चहें, करम की गति लिये बात कहें ।
 ऐं परि नाहि प्रमान ये नित ही, मुग्गति मान-भंग के हित ही ।
 रंदिहि निमि दिवाह दंद सी, बोले मंद मुसकि नंद सी ।
 अहो तात यह देव न कोई, करम की गति जु होइ सो होई । २५
 कर्महि करि उपजत ये जन, कर्महि करि पुनि सब की अत ।
 कुनल-छेम, मुग्ग-दुग्ग, भै-अभै, होत है ये कर्मन करि सर्व ।
 रज गन करि उपजत है मेह, वरपत सब ठां नहि संदेह ।
 ऊतर पर, पर्वत पर परै, ते सब कहाँ जग्य है करै ।
 हमरे नहि पुर-पट्टन ग्राम, वन, गिरि, नदी, निकट विश्राम । ३०
 जहें मुग्ग नहें हम बसहि निसंक, करिहैं कहा पुरदर रंक ।
 एक करहु जग्यन को जिनी, करि ते मुभ सामग्री तिती ।
 और कछू जिय मै जिनि आनी, मेरी कह्यो सत्य करि मानी ।
 मुनतहि मोहन मुग्ग की बानी, भले भले कहि सबहिन मानी ।
 कुल-भंडन मपूत मुग्ग-दैन, सब के जीवन, सब के नैना । ३५
 रचहु विविधि परकार नु व्यंजन, मुभग, मुगंध, स्वच्छ, मनरंजन ।
 पुवा, मुहारी, मोदक भारी, गूभा, रस-मूभा, दधि न्यारी ।
 मिश्री मिश्रित पायन करी, दर संजाव भाव विस्तर ।
 नूदा बानी, घृत की व्याली, रस के कंदर सुंदर सानी ।

नां नर नहि पापं कल्याण, कहत है वेद पुरान मुजान ।
 महानद, उपनद, गुनंद, निजानंद अरु बाबा नंद ।
 ऐसे करि जव सबहित कह्यो, सब के ईश्वर नाहिन गह्यो । २०
 गुग्गुनि अति श्रीमद करि छयो, महा गर्व पर्वत चढ़ि गयो ।
 तहें तं ना कहें डारयो चहें, करम की गति लिये बातें कहें ।
 ऐं परि नहि प्रमान ये नित ही, मुग्गपति मान-भंग के हित ही ।
 इंद्रहि गिन दिवाइ दंड सौ, बोले मंद मुसकि नंद सौ ।
 अहां तात यह देव न कोई, करम की गति जु होइ सो होई । २५
 कर्महि करि उपजत ये जन, कर्महि करि पुनि सब कां अत ।
 कुमन-छेम, मुख-दुख, भैं-अभैं, होत है ये कर्मन करि सब ।
 रज गन करि उपजत हैं मेह, वरपत सब ठां नहि संदेह ।
 ऊतार पर, पर्वत पर परै, ते सब कहाँ जग्य हैं करै ।
 हमरे नहि पुर-पट्टन ग्राम, वन, गिरि, नदी, निकट विश्राम । ३०
 जहैं मुख नहें हम बसहि निसंक, करिहैं कहा पुरदर रंक ।
 एक करहु जग्यन कां जिनी, करि ते मुभ सामग्री तिती ।
 और कछू जिय मैं जिनि आनी, मेरी कह्यो सत्य करि मानी ।
 मुनतहि मोहन मुख की बानी, भले भलें कहि सबहित मानी ।
 कुल-संडन मपूत मुख-दैन, सब के जीवन, सब के नैन । ३५
 रचहु विविधि परकार नु व्यंजन, नुभग, मुगंध, स्वच्छ, मनरंजन ।
 पुवा. नुहारी. मोदक भारी, गूभा. रस-मूभा, दधि न्यारी ।
 मिश्री मिश्रित पायन करी, वर संजाव भाव वित्तरी ।
 नृदया दानी, धृन की व्यानी, रस के कंदर सुंदर सानी ।

पंचविंश अध्याय

प्रथम मुनि पंचविंश प्रव्याज, पंचविंश निर्मेत हूँ जाऊ ।
 मुनि मैं इंद्र भर्या रिन भारी, लाग्या देन सवन को गारी ।
 धन-पद-प्रथ नंद नी वेटा, सो भयो हमरे मख की मेटा ।
 ताके नम करि सो मो पाती, रहिहैं गोप कहो किहि भाती ।
 ज्यो कोउ उरन पूछि कर धारे, तरघी चहै सठ सिधु अपारे । ५
 भूठ की जो कोउ नाउ बनावै, मूढ़ तर्हा लं कुट्टव चढ़ावै ।
 ऐने गोपन कृष्ण भरोने, महा वीर कीनी है मो मे ।
 अरु देवी बौनी गिगलाऊँ, गांकुन गावहि न्वादि बहाऊँ ।
 सोले मेघन के गन मोद, जिन के जल जग परलै हाँड ।
 परमात्म पर पार के नाइक, कृष्ण कमल-नीचन मुखदाइक । १०
 दान्त रहन कि निन की कुटी, इंद्र मूढ़ की चारघी फुटी ।
 'नंद' बहूत श्रीमद सब ऐने, मुने न मुत कुवेर के जैसे ।
 उनगे बन-गन रिन भणि भारे, ताते, राते, पियरे कारे ।
 नइतड़ाहि नहि बज्र से परे, घरहराहि धन ऊधम करे ।
 नानी अपरबन वान अघात, उड़े जान कहि वनति न वान । १५
 परन नगी नान्ही बुंदवारी, सोटे थाभन हू ते भारी ।
 नरु वनजन जित नित न थाये, मुंदन नद-कुंवर पं आये ।
 धारी वारी येतु नु दारी, बड़ी वन के दुख वारी ।
 नमित नु गोद, पच्छ उन दिने, छिछिनी छितिन न बछरन नये ।
 गोपन न कहि वनन न वान, पर थन कता कोमल गान । २०

पंचविंश अध्याय

जब मुनि पंचविंश प्रव्याज, पंचविंश निर्मल हैं जाऊ ।
 मुनि की छंद भर्या रिन भारी, लाग्यो देन सवन को गारी ।
 धन-नद-प्रव नंद की घेठा, सो भयो हमरे मुख की सेठा ।
 ताते नव करि सो मो घाती, रहिहैं गोप कहो किहि भांती ।
 ज्यों कोउ उरन पूछि कर धारै, तरघी चहै सठ सिधु अपारै । ५
 भूठ की जो कोउ नाउ बनावै, मूढ़ तर्हा लं कुटव चढ़ावै ।
 ऐनै गोपन कृष्ण भरोनै, महा बैर कीनी है सो मै ।
 अन्न देखा कौंगी गिनलाऊँ, गोकुल गावहि खोदि बहाऊँ ।
 सोलें मेघन के गन मोठ, जिन के जल जग परलै हाँड ।
 परमात्म पर पीर के नाइक, कृष्ण कमल-लोचन मुखदाइक । १०
 दान्न कहत कि नित की कुटी, छंद मूढ़ की चारघी फुटी ।
 'नंद' बहूत श्रीमद सब ऐनै, मुनि न मुत कुबेर के जैसै ।
 उनसै वन-भान रिन भनि भारै, ताते, राते, पियरे कारे ।
 तड़ितड़ाहि नदि वज्र से परं, परहराहि वन ऊधम करे ।
 चर्मी अपरबल बात अघात, उड़े जान कहि वनति न वान । १५
 पन्न लगी नान्ही बृंदवारी, मोटे थाभन हू ते भारी ।
 नरु प्रजन्त जिन नित न थाये, मुंडन नद-कुंवर पं आये ।
 धारी धारी धेतु नु दारी, बड़ी ब्रह्म के दुख वारी ।
 नमित नु मोठ, पच्छ उच किये, छटिनी छतिन न बछरन निये ।
 गोपिन वी कहि वनत न वान, पर धन कसत कोमल गान । २०

सात दिवस अद्भुत भर ठान्यो, ब्रजवासिन तनकी नहि जान्यो ।
 सुंदर वदन विलोकन आगे, भूख प्यास उर काँ नहि लागै ।
 निकसे तब जब गिरिधर भाख्यो, गोवरधन फिरि तहँई राख्यो । ४५
 प्रेम-भरी वनिता जुरि आई, वारहि अभरन लेति बलाई ।
 चूमति वदन जसोमनि मैया, इत घुरि रह्यो बड़ी बल भैया ।
 नंद पन्म आनंदहि पाइ, पूतहि रह्यो छनी लपटाइ ।
 मुनिवर, गुन्वर, सिधवर जिते, वरपत कुमुम भरे मुद तिते ।
 दुहुनि-धुनि, दुर-धुनि हिय हरे, जै जे धुनि पुनि मुनिवर करे । ५०
 गावत गुन गधर्व सु गाइन, नृतत अपछरा चाइन चाइन ।
 तिन मधि यह अमरन की रानी, ही रानी पै निपट खिसानी ।
 हरि दिनि नकि, अपनी दिसि तकै, मुरन मै वदन दिखाइ न सकै ।
 करन मीडि पछितान है ऐमै, मुगपान करि द्विजवर जैमै ।
 तदनंतर गोपी अरु गोप, ओपे परम ओप की ओप । ५५
 लोकन लै निज लोकन चले, रगन रले, लगत अति भले ।
 निन मै गोप-द्यू मुख वरमै, नूनन गीतन मरमन परसै ।
 निन आगे हरि अरु बलराम, आवत कर जोरे छवि-धाम ।
 बच्छन कहत मद्य के त्रिय हस्ते, पहुपन पर पद-मक्काज धरते ।
 सेन मीं गेलि कै इहि परकार, बज आये ब्रजराज-कुमार । ६०

बल अनुजहि जु मनुज किये, जानै जग में कोइ ।

अहो 'नंद' इहि इह जिमि, दई दिगारै सोइ ॥

पंचविन अध्याइ यह, याँ हिय मै धरि राखि ।

रमि नयन विन जान नाँ, 'नंद' न कबहूँ भाखि ॥

सात दिवस अद्भुत भर ठान्यो, ब्रजवासिन तनकी नहि जान्यो ।
 सुंदर वदन बिलोकन आगे, भूख प्यास उर कां नहि लागी ।
 निकसे तब जब गिरिवर भाख्यो, गोवरधन फिरि तहँई राख्यो । ४५
 प्रेम-भरी वनिता जुरि आई, वारहि अभरन लेति बलाई ।
 चूमति वदन जसोमनि मैया, इत घुरि रह्यो बड़ी बल भैया ।
 नंद पन्म आनंदहि पाइ, पूतहि रह्यो छनी लपटाइ ।
 मुनिवर, गुन्वर, सिधवर जिते, वरपत कुमुम भरे मुद तिते ।
 दुहुनि-धुनि, दुर-धुनि हिय हरै, जै जे धुनि पुनि मुनिवर करै । ५०
 गावत गुन गधर्व सु गाइन, नृतत अपछरा चाइन चाइन ।
 तिन मधि यह अमरन की रानी, ही रानी पै निपट खिसानी ।
 हरि दिनि नकि, अपनी दिसि तकै, मुरन मै वदन दिखाइ न सकै ।
 करन मीडि पछितान हैं ऐमै, मुगपान करि द्विजवर जैमै ।
 नदनंवर गोपी अरु गोप, ओपे परम ओप की ओप । ५५
 लोकन लै निज लोकन चले, रगन रले, लगत अति भले ।
 निन मै गोप-द्यू मुख वरमै, ननन गीतन मरमन परसै ।
 निन आगे हरि अरु बलराम, आवत कर जोरे छवि-धाम ।
 बद्धक कहत मद्य के त्रिय हरते, पहुपन पर पद-मकज धरते ।
 गेन मीं गेनि कै इहि परकार, बज आये ब्रजराज-कुमार । ६०
 बज अनुजहि जु मनूज किये, जानै जग मै कोइ ।
 अहो 'नंद' इहि इह जिमि, बडे विगारै सोइ ॥
 पचविन अध्याइ यह, यो हिय मै धरि राखि ।
 रमिऊ नयन बिन आन नौ, 'नंद' न कबहूँ भाखि ॥

करकर चीन दिवारची कैने, चीन कोउ पटेरहि जैन ।
 वेनुक खर अनि वन कलमल्यी, बलदाऊ कैने दलमल्यी ।
 ताके बंधु डेल मे करे, ऊँचे फल तिनहूँ करि करे ।
 गोप बेग करि अनुर प्रलव, कैने गयी न लग्यी विलंब ।
 पशु अरु पशुप द्वानल माहीं, चकिन भये जित-किन त्रै जाहीं । २५
 कैने राखि आपने लये, अगिनिहितछन भछन करि गये ।
 अरु वह् काली गरल छिनाली, ताके फल पर चड़ि बनमाली ।
 नांडव नृत्य नचे मो कैने, देवे-मुने न कितहूँ ऐमे ।
 जमुना कैने निर्मल भई, मानी बहुरि नई करि छई ।
 अहो नंद ! ब्रजजन है जिते, नर-नारी पशु-पंछी तिते । ३०
 तेरे मुन मो सब की प्रीति, कोउ नुभाइ कछु ऐमिय रीति ।
 मंका उपजत इहि तन चाहि, जैन सब की बेत्ता ग्राहि ।
 कत यह् मान वरम को नवै, फूल मो उचकि लियी गिरि तवै ।
 याने मंका उपजत महा, कही नंद मो कारन कहा ।
 तिन के नमाधान ब्रजराइ, कहे गरग के वचन सुनाइ । ३५
 नामकरन मधि लच्छन लहे, अरग-अरग दै मो सीं कहे ।
 चाके चरित परत नाह् वरने, हिय-हरने जग-मंगल-करने ।
 उज्ज्वल अस्त और उक रीत, अद श्री कृष्ण नु परम पुनीत ।
 पूरव जन्म कहँ मुन तेरी, पून भयो है दमुदेव केरी ।
 ताने वासुदेव उक नाम, पूरन करिहै सब के काम । ४०
 और बहुत नद मुन के नाम, सब गुन-धाम परम अभिराम ।
 हन अनंत, गुन-कर्म अनंत, गनत गनत कोउ लहे न अंत ।

करतार चीन दिवारगी कैने, चीन कोउ पटेरहि जैन ।
 धेनुक खर अनि वन कलमल्यी, वनदाऊ कैने दलमल्यी ।
 ताके बंधु डेल मे करे, ऊँचे फल तिनहूँ करि भरे ।
 गोप बेग करि अनुर प्रलव, कैने गयी न लग्यी बिलंब ।
 पशु अरु पशुप द्वानल माहीं, चकिन भये जित-किन त्रै जाहीं । २५
 कैने राखि आपने लये, अगिनिहितछन भछन करि गये ।
 अरु वह काली गरल जिगाली, ताके फल पर चड़ि बनमाली ।
 नांडव नृत्य नचे मो कैने, देखे-मुने न कितहूँ ऐने ।
 जमुना कैने निर्मल भई, मानी बहुरि नई करि छई ।
 अहो नंद ! ब्रजजन हूँ जिते, नर-नारी पशु-पंछी तिते । ३०
 तेरे मुन गो सब की प्रीति, कोउ नुभाइ कछु ऐमिय रीति ।
 मंदा उपजत इहि तन चाहि, जैन सब की बेत्ता आहि ।
 कत यह मान वरम काँ सब, फूल मो उचकि लियी गिरि तवै ।
 याने मंदा उपजत कहा, कही नंद मो कारन कहा ।
 तिन के समाधान ब्रजराइ, कहे गरग के वचन सुनाइ । ३५
 नामकान्त मधि लच्छन लहे, अरग-अरग दै मो सीं कहे ।
 बाके चरित परत नाह वरने, हिय-हरने जग-मंगल-करने ।
 उज्जल अस्त और उक रीत, अद श्री कृष्ण नु परम पुनीत ।
 पूरव जन्म कहूँ मुन तेरी, पून भयो है दगुदेव केरी ।
 ताने बागुदेव उक नाम, पूरन करिहूँ सब के काम । ४०
 और बहुत नद मुन के नाम, सब गुन-धाम परम अभिराम ।
 लव अमंत, गुन-कर्म अनंत, गनन गनत कोउ लहे न अंत ।

हो प्रभु सुदृढ तत्त्वमय रूप, एक रूप पुनि नित्य अनूप ।
 रज गुन, तम गुन, ये सब उरें, तुम कहें दूरि परे तैं परे ।
 हम रज गुन, तम गुन करि भरे, अंध दुर्गंध गर्व-मद-भरे ।
 कहेँ तुम निज आनंद-रस-भरे, कित हम लोह, मोह, मद-भरे ।
 दृष्ट-दमन तुम्हरी अवतार, हे अद्भुत ब्रजराज-कुमार ।
 परम धरम रच्छा जु करन ही, हम ने खलन की दंड धरन ही ।

१५

पूर्व पक्ष

जी कही नक्तिवान अस कौन, तुम की दंड धरि सकं जीन ।
 तुम ती निभुवन-कारन, पालक, हम ब्रजजन गोपालक बालक ।
 नहा कहत हैंसि मुरगनि वैन, हो श्रीकृष्ण कमल-दल-नैन ।
 जगन-जनक, गुरु-गुरु, तुम स्वामी, सब जंतुन के अंतरजामी ।
 तुम ही महा दुग्मद काग, धारे दंड प्रचंड कराल ।
 तुम ती उचित दंड की धर्यो, मो मे उन्मद की मद हर्यो ।
 जी कही तुम्हरी हम कहा कियो, ब्रज अपनी राखि है लियो ।
 नहा कहत मुरगनि हो नाथ, तुम्हरे तनक खेल के साथ ।
 मो मन की जू मद्दा अभिमान, मदन होत जानि-मनि जान ।
 नहि जान्यो तुम्हरी परभाव, मत्त भयो मुरगव कहाव ।
 नंद बुद्धि हो निमट अगाध, छमा कन्हू मेरी अपगाध ।
 यद प्रभु मो पै ऐमे दरी, ऐसी अमन मति बहुरि न करी ।
 श्रीनंद अणि जू अंध हूँ गयो, मनु अंजन रंजन तुम द्यो ।
 नृम जेवन गुरु आत्म अघने, और नवै रजनी के गपने ।

२०

२५

३०

हो प्रभु मुद्ध तत्वमय रूप, एक रूप पुनि नित्य अनूप ।
 रज गुन, तम गुन, ये सब उमें, तुम कहूँ हरि परे तैं परे ।
 हम रज गुन, तम गुन करि भरे, अंध दुर्गव गर्व-मद-भरे ।
 कहें तुम निज आनंद-रस-भरे, कित हम लोह, मोह, मद-भरे ।
 दुष्ट-दमन तुम्हरी अवतार, हे अद्भुत ब्रजराज-कुमार । १५
 परम धरम रच्छा जु करन ही, हम ने खलन की दंड धरन ही ।

पूर्व पक्ष

जो कही नक्तिवान अस कौन, तुम की दंड धरि सक जीन ।
 तुम तो निभुवन-कारन, पालक, हम ब्रजजन गोपालक बालक ।
 नहा कहत हैंसि मुरगति वैन, हो श्रीकृष्ण कमल-दल-नैन ।
 जगन-जनक, गुरु-गुरु, तुम स्वामी, सब जंतुन के अंतरजामी । २०
 तुम ही महा दुर्गमद कान, धारे दंड प्रचंड कराल ।
 तुम तो उचित दंड की धर्यो, मो मे उन्मद की मद हरयो ।
 जो कही तुम्हरी हम कहा कियो, ब्रज अपनी राखि है लियो ।
 नहा कहत मुरगति हो नाथ, तुम्हरे तनक खेल के साथ ।
 मो रन की जू महा अभिमान, मर्दन होत जानि-मनि जान । २५
 नहि जान्यो तुम्हरी परभाव, मत्त भयो मुरगाव कहाव ।
 नंद बुद्धि हो निमट अगाध, छमा कन्हू मेरी अपराध ।
 अरु प्रभु मो पै गुंनै हरी, ऐसी अमन मनि बहुनि न करी ।
 श्रीनंद कनि जू अंध ह्वं गयी, मनु अंजन रंजन तुम दयी ।
 तुम जेवन गुरु आनम अदने, श्रीर गवै रजनी के गपने । ३०

नचन धारा अति मुद भरी, जनु नग-जरी छटन की छरी ।
 धमर नगर तें वरपत फूल, सब के हिये समान न मूल ।
 हीन नगे अभिषेक जु महा, तिहि छिन की छवि कहिय कहा । ५५
 कटिन अगक तैं चुवत जलकनी, वदन की दुति पुनि परति न गनी ।
 जनु अयुज-रस अलि अनियारे, मुख भरि भरि डारत मतदारे ।
 धन्यो गोविंद नाम अभिराम, पूजन भये सवन के काम ।
 जब ही इंद्र भये गोविंद, ठा ठा उमगे परमानंद ।
 वृष्टि गई, कछु परति न बरनी, छाई रहति दूध करि धरनी । ६०
 सरित्त की छवि जान न कही, उमगि उमगि सब रस भरि बही ।
 जंतु नयै अति हृदित भये, सहज प्रसन्न दुरगति मिटि गये ।
 फूल फूल रहत द्रुम जिते, मधुर मधुर मधु बरपत तिते ।
 अन्न अनेक भाँति ही नये, उपजत भये विना ही वये ।
 नगन मध्य नग हुते जितेक, लै लै ऊपर बैठे तितेक । ६५
 समुद्र पुनि उत्तम मांती जिते, कढ़ि कढ़ि बाहिर डारत तिते ।
 मंद सुगंध पवन नित सरसै, करकस ह्वै कहूँ तनकन परसै ।
 स्वर्ग तें सुंदर सुंदर फूल, बरप्यी करत सदा अनुकूल ।
 इंद्र-गोविंदहि दै अभिषेक, सुर, मुनिगन, गंधर्व जितेक ।
 आग्या पाइ चले निज ओक, सुखित भये तब ही सब लोक । ७०

नप्तवित्त अध्याइ यह, इंद्र भये गोविंद ।

‘नंद’ नंद इहि गाइ धाँ, को है कनि-मल मद ।

नवन शत्रारा अति मुद भरी, जनु नग-जरी छटन की छरी ।
 अमर नगर तें वरपत फूल, सब के हिये समान न मूल ।
 हीन नगे अभिषेक जु महा, तिहि छिन की छवि कहिये कहा । ५५
 कृटिन अगक तें चुवत जलकनी, वटन की दुति पुनि परति न गनी ।
 जनु अज-रस अलि अनियारे, मुख भरि भरि डारत मतदारे ।
 धर्या गोविंद नाम अभिराम, पून भये सवन के काम ।
 जब ही इंद्र भये गोविंद, ठा ठा उमगे परमानंद ।
 वृष्टि गई, कछु परति न वरनी, छाई रहति दूध करि धरनी । ६०
 सरितन की छवि जान न कही, उमगि उमगि सब रस भरि बही ।
 जंतु गवै अति हृषित भये, सहज प्रसन्न दुरगति मिटि गये ।
 फूल फूल रहत द्रुम जिते, मधुर मधुर मधु वरपत तिते ।
 अन्न अनेक भाँति ही नयें, उपजत भये बिना ही वये ।
 नगन मध्य नग हुते जितेक, लै लै ऊपर बैठे तितेक । ६५
 समुद्र पुनि उत्तम माँती जिते, कढ़ि कढ़ि बाहिर डारत तिते ।
 मंद सुगंध पवन नित सरसै, करकस ह्वै कहूँ तनकन परसै ।
 स्वर्ग तें सुंदर सुंदर फूल, वरण्या करत सदा अनुकूल ।
 इंद्र-गोविंदहि दे अभिषेक, गुर, मुनिगन, गंधर्व जितेक ।
 आग्या पाइ चले निज ओक, सुखित भये तब ही सब लोक । ७०

नप्तवित्त अध्याइ यह, इंद्र भये गोविंद ।

‘नंद’ नंद इहि गाइ वाँ, को है कलि-मल मद ।

तुम अपने परमात्म स्वामी, ब्रह्मन्प नव अंतरजामी ।
 लोक नृपति निगजत यह माया, तुम ते दूरि मनमई काया ।
 हे सरस्वत्य, अग्य जन मेरे, जाने नहि न धर्म प्रभु केरे ।
 तुम्हरे पितृति जू दत्त ले आये, कछु भाये, कछु मोहि न भाये ।
 पुनि पुनि धरत पगन पर सीस, अति प्रसन्न कीने जगदीस । २५
 छद्मिनी भाति अपने घर आये, ब्रज मै घर घर मंगल गाये ।
 नंद जू जय बरनालय गयी, निगवि विभूति चछत अति भयी ।
 पुनि जय मुन के पाछनि परयी, तव ब्रजराज अचंभे भरयी ।
 कहन लग्यो द्विय मैं यह बात, ईस्वर है यह मेरी तात ।
 स्वच्छ मुनि जो ब्रह्म है कोई, हम की सहजहि देह मोई । ३०
 ऐनै जय विस्मय करि लसे, तव गोविंदचंद्र मृदु हँसे ।
 भक्त मनोरथ पूरन करने, जैसे वेद-पुरातन बरने ।
 जिहि गति प्रेरे जोगीजन-मन, जात है क्रम क्रम करि तप कै पन ।
 समारी-जन तहँ को गने, काम-कर्म जू अविद्या सने ।
 निहि गति बैठे गव ब्रज लोच, पूरन तरुन, किरनमय होइ । ३५
 प्रथमहि ब्रह्म विपै अनुसरे, इहि न ब्रह्म घर ता मधि अरे ।
 देह नहि न ब्रह्म देखन गये, तहँ के मुख ते सब अनभये ।
 तानै पुनि वैकुण्ठ सिवारे, तहँ के मुख नीके अवधारे ।
 मूर्तिबन्त जहँ चारी वेद, बरनत प्रभु के नाना भेद ।
 अर जांतुक जे कह्य ब्रज करे, गिरिवर-धरत अवर रँग भरे । ४०
 ते सब गान करत श्रुति जहां, नंदादिक मुनि चकि रहे तहाँ ।
 परी कटारटी नव के मन में, कव देखै इहि वृंदावन में ।

तुम अपने परमात्म स्वामी, ब्रह्मम्प नव अंतरजामी ।
 नोक्त नृष्टि निगूजत यह माया, तुम नै दूरि गलमई काया ।
 हे सरस्वत्य, अग्य जन मेरे, जाने नाहित धर्म प्रभु केरे ।
 तुम्हरे पितृति जू दत्त ले आये, कछु भाये, कछु मोहि न भाये ।
 पुनि पुनि धरत पगन पर नीस, अति प्रसन्न कीने जगदीस । २५
 छविनी भांति अपने घर आये, ब्रज मै घर घर मंगल गाये ।
 नंद जू जब वरनालय गयी, निरखि विभूति चकृत अति भयी ।
 पुनि जब मुन के पाछनि परयी, तव ब्रजराज अचंभे भरयी ।
 कहन लग्यो द्विय मै यह बात, ईस्वर है यह मेरी तात ।
 स्वच्छ मुनि जो ब्रह्म है कोई, हम को सहजहि देह मोई । ३०
 ऐनै जब विस्मय करि लसे, तव गोविंदचंद्र मृदु हँसे ।
 भक्त मनोरथ पूरन करने, जैसे वेद-पुराणन वरने ।
 जिहि गति प्रेरे जोगीजन-मन, जात है क्रम क्रम करि तप कै पन ।
 समारी-जन तहँ को गने, काम-कर्म जू अविद्या सने ।
 निहि गति बैठे गव ब्रज लोच, पूरन तरुन, किरनमय होइ । ३५
 प्रथमहि ब्रह्म विषे अनुमरे, इहि न ब्रह्म घर ता मधि अरे ।
 देह नहित ब्रह्म देखन गये, तहँ के मुख ते सब अनभये ।
 तानै पुनि बैकुण्ठ सिवारे, तहँ के मुख नीके अवधारे ।
 मूर्तिबन्त जहँ चारी वेद, वरनत प्रभु के नाना भेद ।
 अर जांतुक जे कान्ह ब्रज करे, गिरिवर-धरन अवर रँग भरे । ४०
 ते सब गान करत श्रुति जहां, नंदादिक मुनि चकि रहे तहां ।
 परी कटरटी नव के मन मै, कव देखै इहि वृंदावन मै ।

कोणन किरन अरुनिमा नई, कुजनि कुजनि प्रसरित भई ।

हरिणिग-हिय-अनुराग जु भरघी, सोई जनु निकमि बाहिरं परघी ।

ग्याम रंग सिंगार की, अरुन रंग अनुराग ।

प्रीत रंग है प्रेम की, ओढ़ि कौउ बड़भाग ॥

१५

तब लीनी कर-कंजनि मुरली, खर्जादिक जु मप्त नुर जरली ।

गोठ जांग-माया गुन-भरी, लीला-हित हरि आश्रित करी ।

निव मोहिनी जु वह मोहिनी, वा तं मुरली सरस सोहिनी ।

बहुरघी अघर-नुधासव रली, मधुर मधुर गति ब्रज कहूँ चली ।

मुनी मदन पी नई आई, जे हरि मुरली मांक बुलाई ।

२०

प्रीतम-मूचक मद्ध मुढागक, मुनतहि इतर राग बिल्मारक ।

दृष्ट चली जु दह्यो तजि चली, सिद्ध वस्तु तेऊ दलमली ।

ना करि अर्थ, धर्म अरु काम, परिहरि चलति भई सब व्राम ।

मान-जात-भ्रान्त करि बरजी, पतिन अनेक भाँति कै तरजी ।

नदपि न गही सयं पचि गहे, जिन के मन मनमोहन गहे ।

२५

देन-विद्यम जु दिक्कल ब्रज-बहे, भूपन-वसन कहूँ के कहूँ ।

धरे हुते जे परम मुहाये, जहो के तहाँ आप ही आये ।

मन-बच-क्रम जु हनिहि अनुसरै, कवन विधन जु विधन दाँ करै ।

अवतति मति-कुइल भलमले, देगि चलन कहूँ जनु कलमले ।

गुनन भजित दने जु नैन, मन के मनहि देन ताहि चैन ।

३०

गुरु जु निव धर मे घिरि गई, विद्यम भई, निकमत ताह पई ।

वेगे-मृते हुते हरि जेने, ध्यान धरे हिरद म नैन ।

नजि ताहि तिहि छिन गुननय देह, जाठ मिली करि परम सनेह ।

कांगन किरन अगुनिमा नई, कुजनि कुजनि प्रसरित भई ।
हरिगिय-हिय-अनुराग जु भरर्चा, सोई जनु निकमि बाहिरे परर्चा ।

न्याम रंग सिंगार की, अरुन रंग अनुराग ।

पति रंग है प्रेम की, ओढ़े कोउ बड़भाग ॥ १५

नव लीनी कर-कंजनि मुरली, खर्जादिक जु मप्त नुर जुरली ।
मोह जोग-माया गुन-भरी, लीला-हित हरि आश्रित करी ।
निव मोहिनी जू वह मोहिनी, वा तै मुरली सरस सोहिनी ।
बहुरर्चा अघर-मुधासव रली, मधुर मधुर गति ब्रज कहूँ चली ।
मुनी मवन पै नई आई, जे हरि मुरली माझ बुलाई । २०

प्रीतम-मूचक सब सुढारक, मुनतहि इतर राग बिस्मारक ।
वृद्ध चली जू दही नजि चली, सिद्ध वस्तु तेऊ दलमली ।
वा करि अर्थ, धर्म अरु काम, परिहरि चलति भई नव वाम ।
मान-नात-भ्रान्त करि बरजी, पतिन अनेक भाँति कै तरजी ।
नदपि न रही सब पचि गहं, जिन के मन मनमोहन गहे । २५

देन-दियन जू दिक्कत ब्रज-दहें, भूपन-ब्रमन कहूँ कै कहूँ ।
धरे हुते जे परम सुहाये, जहाँ के तहाँ आप ही आये ।
मन-बल-क्रम जू हनिहि अनुसरै, कवन विघन जू विघन दाँ करै ।
अवनति मनि-बुझल भलमले, देगि चलन कहूँ जनु कलमले ।
गुनल मखिन दने जू नैन, मन के मनहि देन नाहि चैन । ३०
गुरु जू निव धरु मे घिरि गई, विघन भई, निकमत नाह पई ।
वेगै-वृते हुते हनि जैगै, ध्यान धरे हिरई म नैम ।
नजि नाह निहि छिन गुननय देह, जाह मिली करि परम सनेह ।

दिष्टि मी जव तव सव अग, दृगन में भरे, रहे रस-रग ।
 कुजन की निवसन गुग लमे, चहुँ दिशि उदित चंदगन जैसे ।
 आननन आदी भई प्राउ, ता छिन की छवि नाह कहि जाउ ।
 रजति वेग, समकथ मुदेन, ऊपर वन जु वदन विनेस ।
 कवन कोटि कान जनु करची, चंद की वृंद बंगूनि धरची । ६०
 छवि सी चितये नवन की ओर, बोले नागर नंदकिनोर ।
 प्रथमहि कवन धर्म नेम को, कहत लगे जु परम प्रेम की ।
 हे बड़भाग भले ही आई, बरी आई कछु मंत्रम पाई ।
 बज में कुमार-वेग नौ आहि, कारन कवन कहहु किन ताहि ।
 तव नव मंद परगपर हेंगी, लाज-नपेटी अंगिया लमी । ६५
 ग छवि की कछु उगमा नही, ननी-वनी नित जहें की तही ।
 पुनि बोलें दिशि तिन की ओर, यह नजनी यह रजनी घोर ।
 निगन की नाहित निकसनी बेर, वेग जाहु घर होति अवेर ।
 नात, नात, पति भ्रात तुम्हारे, डूँढत हैं वधु पियारे ।
 चढण्टी परी होइहैं सब ही, कहिहैं कित गई इत ही अब ही । ७०
 तव कछु प्रनय-गोप-रस-पगी, छुभित हैं इन-उन चितवन लगी ।
 तव बोलें तिन सी मननोहन, ही जाना आई वन जोहन ।
 वेगहु वन कुमनित छवि छयी, राका ससि करि रंजित भयी ।
 अर इन यह कलिद-नदिनी, बहति मरम आनद-कदिनी ।
 न यह कलि नवन की फूलनि, सुनि फूलि जमुना जल भूवनि । ७५
 वेगरे वन, वद गृह अन्मरी, हे गति पतिन की सेवा करी ।
 न ही वन वेगन नाह आई, नो हित करि आई मांदि भाई ।

दिग्विष्ट गंगी जव तव नव अग, दृगन में भरे, न्हें रस-रस ।
 कुजल नी निवगल नृग लने, चहुँ दिशि उदित चंदगल जैसे ।
 आननन आदी भई प्राप्ति, ता छिन की छवि नाहि कहि जाइ ।
 जगहि वेग, समगव नृदेस, ऊपर दन जु वदन विसेस ।
 कवन कोटि कान जनु करची, चंद की वृंद कंगूरनि धरची । ६०
 छवि नी चितये नवन की ओर, बोले नागर नंदकिनोर ।
 प्रथमहि कवन धर्म नेम को, कहन लगे जु परम प्रेम की ।
 हे वदभाग भले ही आई, बयी आई कछु मंत्रम पाई ।
 वद मैं कुसर-वेग नी आहि, कारन कवन कहहु किन ताहि ।
 तव नव मंद परपर हेंगी, लाज-नपेटी अंगियां लमी । ६१
 ग्य छवि की कछु उपमा नही, लनी-वनी नित जहें की तही ।
 पुनि जंगे दिशि तिन की ओर, यह नजनी यह रजनी धोर ।
 निगन की नाहिन निवमनी वेर, वेग जाहु घर होति अवेर ।
 नात, नात, पनि भ्रात तुम्हारे, हूँवत हूँवत वधु पियारे ।
 चटपटी परी होइहैं नव ही, कहिहैं कित गई इत ही अब ही । ७०
 तव कछु प्रनय-योग-रस-पगी, छभिहैं हूँ इत-इत चितवन लगी ।
 तव बोले तिन नी मनमोहन, ही जाना आई वन जोहन ।
 देखहु वन कुसमित छवि छयी, राका ससि करि रंजित भयी ।
 अर इत यह कानिद-नदिनी, बहति सरस आनद-कदिनी ।
 एत यह कानिद नवन की फूलनि, कूलि फूलि जमुना जल भूलनि । ७१
 देखेन वन, यह गृह अत्सरी, हे गति पतिन की सेवा करी ।
 अर नी वन देखन नाहि आई, नी हित करि आई मांदि भाई ।

चित्त तम कच्छ नंग न चहै, चित्त ती तब पद-संकाज रहे । १००
 अरु क्यु नृनारी लसी रस भरी, अनु चित रहति पगन पर परी ।
 यार्न तुम्हारे चरन मेज्जे, मुख देखै कछु न लेखै ।
 अरु जो कहत कि जाहु बज माही, जाहि कहा अरु कह न जाही ।
 चित्त ती दुसाह चोरि हं गियो, चरन न चलै कहा धी कियो ।
 हियो नहीं अब हाथ हमारे, करिहं कहा ब्रज जाइ तिहारे । १०५
 हो पिय ! यह कल गीन निहारी, महा अनित के वान अनिवारी ।
 अमर-अमृत करि काहे न मीचत, मुसकि मुसकि वनि क्यौ दूग मीचत ।
 जां न मीनिही पिय बजनाथ, ती रह बिरह अगिति के साथ ।
 धरि धनि ध्यानहि जरि दरिअर्य, ह्वै आनि कै दासी सबै ।
 जो कहा क्यौ भई दासी हमारी, तजि तजि गृह ठकुराइन भारी । ११०
 तहा कहत अहो पिय मनमोहन, आवत तुम जब गोनन गोहन ।
 लदन-लालन परि धूँधर केस, देखि कै गोरज छ्भिन्न मुखेस ।
 नैनं सनि-कुण्डल छवि बड़े, दुहुँ विसि जात मीन मे चहै ।
 मृदुल मुकुट मे लोल कपोल, मंद हसनि मिलि करन कलोल ।
 नर अपरन मधि मधु भलमली, दिवि दिवि उपजन हिय कलमली । ११५
 अरु यह छविनी छती सावरी, भुज रावरी रूप वावरी ।
 एन करि नृधि वृधि गई हमारी, यार्न भई पिय दासी तुम्हारी ।
 जो कहा उपपति-रस नाहि म्दच्छ, नव कोउ निंदत अरु अनि तुच्छ ।
 यह कहति हैं बजनामिनी, लहलहाति जनु नव दामिनी ।
 तुम्हारी यह कलगी तजि पीय, त्रिभुवन सारु कवन अरु तीय । १२०
 सुनविह्यारज-वय नाहि नर्ज, मुंडन नंद-मुयन नाहि भर्ज ।

चित्त तन कच्छ नंग न चहै, चित्त ती तूख पद-संकज रहै । १००
 अरु कछ नुसली लसी रस भरी, अतु छित रहति पगन पर परी ।
 नान नुम्हारे चरन नेहहै, मुख देखहै कछ न लेखहै ।
 अरु जो कहत कि जाह बज माही, जाह कहा अरु कह न जाही ।
 चित्त ती तुमाह चोरि हं लियो, चरन न चलै कहा धी कियो ।
 हियो नही अब हाथ हमारे, करिहं कहा बज जाइ तिहारे । १०५
 हो पिय ! यह कल गीन निहारी, महा अनित के वान अनिवारी ।
 अवर-व्रमन करि काहे न नीचन, मुनकि मुनकि बलि कयी दूग मीचत ।
 जां न नीचिही पिय बजनाथ, ती रह बिरह अगिनि के नाथ ।
 धरि धरि ध्यानहि जरि धरि अबै, ह्वैहै आनि कै दासी सबै ।
 जो कही कयी भई दासी हमारी, तजि तजि गृह ठकुराइन भारी । ११०
 तहा कहत अहो पिय मनमोहन, आवत तुम जब गोगन गोहन ।
 नदन-नामन परि धूँवर केस, देखि कै गोरज छूभित मुखेस ।
 ननई मति-कुटन छवि बड़े, दुहुँ जिसि जात मीन से चढ़े ।
 मृदुल मुकुट ने लोल कपोल, मंद हसति मिलि करन कलोल ।
 अरु अधरन मधि मधु भलमली, दिखि दिखि उपजन हिय कलमली । ११५
 अरु यह छविनी छती सावरी, भुज रावरी रूप वावरी ।
 एत करि मृधि दृधि गई हमारी, चानै भई पिय दासी नुम्हारी ।
 जो रहौ उन्नति-रस नाहि म्दच्छ, नव कोउ निंदन अरु अनि नुच्छ ।
 नह, कहति हैं बजनामिनी, नह-नहाति जनु नव दामिनी ।
 नुम्हारी यह कलगी तजि पाय, निभुवन नाँक कवन अम नाय । १२०
 गुनतहि प्रारज-नय नाँह नज, मुंदन मंद-मुवन नाँह भज ।

कनक त्रिमोद, कुमुद त्रिमोद, सब परिमल जहँ देत विनोद ।
 तहाँ बैठि भुज भुज गरमेलनि, परिरंभन, चुवन, कल केलनि । १४५
 वन-जट गहि यदन की चूमनि, नख नागचन घायल घूमनि ।
 कुनन की परसति, नीची कररानि, मुखन की वरसनि मन की सरसनि ।
 नाही के सरन मेन जब हृत्यौ, दुखित भयो घूमत जिमि मृत्यौ ।
 भस्म करहि जिनि इह डर डरचौ, तब उठि प्रभु के पाइनि परचौ ।
 कोटि अनंग अंग के भौन, इक अनंग जीतिवौ सु कौन । १४६
 निव 'सैं जीतत कैसेहुँ कैसे, दृढ़ वैराग्य जोग बल तैसे ।
 ऐंगे विस्व-दिमोहन कामहि, को जीतहि विन मोहन स्यामहि ।
 अपने रस वस देखि सावरे, ह्लैं गये तियन के मन वावरे ।
 कहनि भई भरि हिय अभिमान, हम सम तिय न तिहूँ पुर आन ।
 गहँ मान बढ़ि सैल समान, ओट परि गये पिय भगवान । १४७

मुनै जो कोउ मन-क्रम-वचन, उनतीसौ अध्याइ ।

ध्वंसनि कलि-मल-वंस कहूँ, 'नंद' न अवर उपाइ ॥

कगल त्रमोद, कुमुद त्रामोद, सब परिमल जहँ देत विनोद ।
 तहाँ बैठि भुज भुज गरमेलनि, परिरंभन, चुवन, कल केलनि । १४५
 गन-जट गहि वदनन की चूमनि, नख नागचन धायल घूमनि ।
 कुनन की परसनि, नीवी करसानि, मुखन की वरसानि मन की सरसानि ।
 नाही के सरन भेन जब हृत्यौ, दुखित भयौ घूमत जिमि मृत्यौ ।
 भलग करहि जिनि इह डर डरचौ, तब उठि प्रभु के पाइनि परचौ ।
 कोटि अनंग अंग के भौन, इक अनंग जीतिवौ सु कौन । १५०
 निव सँ जीतत कैसेहुँ कैसे, दृढ़ वैराग्य जोग बल तैसे ।
 ऐनँ धिख-दिमोहन कामहि, को जीतहि विन मोहन स्यामहि ।
 अपने रस बस देखि सावरे, हँ गये तियन के मन बावरे ।
 कहनि भई भरि हिय अभिमान, हम सम तिय न तिहूँ पुर आन ।
 यहँ मान बढ़ि सैल समान, ओट परि गये पिय भगवान । १५५
 मुनै जो कोउ मन-रुम-वचन, उनतीसाँ अध्याड ।
 ध्वंसनि कलि-मन-वंस कहूँ, 'नंद' न अवर उपाइ ॥

उहड़ते मग, कुंम-रंग-रजित, राजत रस के पेना ।
 वंजन पर खेनत मानी वंजन, वंजनजुत बने नैना ॥
 दमकत गंठ पदिका मनि कूडल, नवल प्रेम-रंग बोरी । २०
 आनुर गति, मानी चंद उदय भयी, धावति तृपित चकोरी ॥
 गति नसि परत मुमन मीमन नै, उपमा कान वखानी ।
 चरम-चलन पर रीझि चिकुर वर, वरपत फूलन मानी ॥
 गावति गीत, पुनीत करति जग, जनुमति-मंदिर आई ।
 वदन विलोकि, बर्नया लै लै, देन असीस मुहार्द ॥ २५
 ना पाछे गन गोप ओप नां, आये अनिसय सोहै ।
 परमानंद-कद रस भीते, निकर पुरंदर को हैं ॥
 मंगल कलम निकट दीपावलि, ठां ठां दिलि मन भूल्यी ।
 मानी आगम तंद-मुवन के, मुवन फूल वज फूल्यी ॥
 आनंद-धन ज्यां गाजत, राजत, वाजत दूदुभि भेरी । ३०
 राग-रागिनी गावन हरपत, वरपत मुख की डेरी ॥
 परम धाम, जगधाम, स्याम अभिराम श्री गोकुल आये ।
 मिटि भये हृद 'नंददामन' के भये मनोरथ भाये ॥

श्री गोपाल लाल गोकुल बने, ही वलि वलि तिहि काल ।
 गोकुल भरे वसुदेव गोद लै, अवलि लोक प्रतिपाल ॥ ३५
 तरनि नेत्र जर्म तम फूटत, खुलि गये कुटिल कपाट ।
 मनु देग वल छाड़ि आपनी, दीनी श्री जमुना बाट ॥
 भोर भये कुमुदिन ज्यां मृदन, कंसादिक भये मोहे ।
 मंद जनन के मन अबुज वनि, कल उहड़ते सोहै ॥

उहड़हे मग, कुंजुम-रंग-रजित, राजत रस के पेना ।
 गंजन पर खेवन मानी गंजन, गंजनजुत बने नैना ॥
 दमकत गंड पदिक मनि कूडल, नवल प्रेम-रंग बोरी । २०
 आनुर गनि, मानी चंद उदय भयी, धावति तृपित चकोरी ॥
 गनि नसि परत मुमन सीमन तै, उपमा कान वग्यानी ।
 चरन-चलन पर रीझि चिकुर वर, वरपत फूलन मानी ॥
 गावति गोन, पुनील करान जग, जनुमति-मंदिर आई ।
 बदन बिलोकि, बलिया लै लै, देन असीस मुहाई ॥ २५
 ना पाछे गन गोप ओष नां, आये अनिसय सोहै ।
 परमानंद-कद रस भीते, निकर परंदर को हैं ॥
 मंगल कलम निकट दीपावलि, ठां ठां दिखि मन भूल्यो ।
 मातों आगम तंद-मुवन के, मुवन फूल वज फूल्यो ॥
 आनंद-धन ज्यां गाजत, राजत, वाजत दूदुभि भेरी । ३०
 राग-रागिनी गावन हरपत, वरपत मुख की डेरी ॥
 परम धाम, जगधाम, स्याम अभिराम श्री गोकुल आये ।
 मिटि भये हृद 'नंदवानन' के भये मनोरथ भाये ॥
 श्री गोपाल लाल गोकुल बने, ही बलि बलि तिहि काल ।
 गोकुल भरे वसुदेव गोद लै, अखिल लोक प्रतिपाल ॥ ३५
 तननि नेत्र जैन तम फूटत, नुलि गये कुटिल कपाट ।
 मनु देग बल छाड़ि आपनी, दीनी श्री जमुना वाट ॥
 भोर भये कुमुदिन ज्यां मृदत, कंसादिक भये मोहे ।
 मंद जनन के मन अबुज बनि, कल उहड़हे सोहे ॥

यालकृष्ण

चिरंज चहचहानी, मुनि चकई की बानी,

कहति जसोदा रानी, जागो भरे लाला ।

रवि को किरन जानी, कुमुदिनी नकुचानी,

कमलन बिकसानी, दधि मयै वाला ॥

६५

मुगल श्रीरामा, तोक उज्जल वसन पहिरे,

द्वारे ठाढ़े हेरत हूँ बाल गोपाला ।

'नंददास' रनिहारी, उठि बैठी गिरिधारी,

नव कोट देख्यो चाहै लोचन विसाला ॥

प्राज निंगार स्यामसुंदर की देखे ही बनि आवै ।

७०

स्याम पाग अरु स्वेत चोलना छूटे बंद मुहावै ॥

मोतिन माल हार उर ऊपर, कर मुरली जु बजावै ।

'नंददास' प्रभु रसिक कुंवर की लै उछंग हुलगावै ॥

बाल गोपाल ललन की, मोद भरी जमुमति हुलगावति ।

सुख नमति, देखति सुंदर तन, आनंद भनि भरि गावति ॥

७५

कवहुँक पनना मेनि झुलावति, कवहुँक अन्तन पान करावति ।

'नंददास' प्रभु गिरिधर की रानी निगवि निरवि मुख पावति ॥

अहो नो नो नंदलालिने भगहँगी ।

मेरे मंग की हरि जाति है, मटुकी पटकि डगहँगी ।

भोग ही टाटी, जन करी मो की, तुम्है जानि कछु कानि न कहँगी ।

८०

तुम्हारे मंग मंगल के देखत, अबही लाउ उतारि बहँगी ।

बालकृष्ण

चिरंग चहचुहानी, मुनि चकई की बानी,

कहति जसोदा रानी, जागो भरे लाला ।

रवि की किरन जानी, कुमुदिनी नकुचानी,

कमलन बिकसानी, दधि मयै वाला ॥

६५

गुग्गुल श्रीरामा, नोक उज्जल वसन पहिरे,

द्वारे ठाढ़े हेरत हैं बाल गोपाला ।

'नंददास' गनिहारी, उठि बैठी गिरिवारी,

नव कोउ देख्यो चाहै लोचन बिसाला ॥

प्राज निंगार न्यामसुंदर की देखे ही अनि आवै ।

७०

न्याम पाग करु स्वेत चोलना छूटे बंद मुहावै ॥

मोहित माल हार उर ऊपर, कर मुरली जु बजावै ।

'नंददास' प्रभु रसिक कुंवर की लै उद्यंग हुलरावै ॥

बाल गोपाल ललन की, मोद भरी जनुमति हुलरावति ।

मुर मुगति, देखति मुदग तन, आनंद भगि भरि गावति ॥

७५

खवहुँक पलना भेलि भुलावति, कवहुँक अन्तत पान करावति ।

'नंददास' प्रभु गिरिवर की रानी निगवि निरवि मुख पावति ॥

अजो नो नो नंद-नाडिले भगहँगी ।

मेरे मंग की हरि जानि हं, मटुकी पटकि डगहँगी ।

भोग ही छाटी, जन गरी मो की, तुम्है जानि कछु कानि न कहँगी ।

८०

तुम्हारे मंग मंगल के देखत, अबही लाउ उतारि बहँगी ।

गोवर्द्धन-धारण

अब नैक हमहि देहु कान्हू गिरिवर ।

तुम्हें नियो बड़ी बार भई है, दूखि चली है कोमल कर ॥

सति दिग पर, दवे सब ब्रजजन, भरी है हाथ पर अति भर ।

नय रंगे यह वदन देखि है, नाने जीव मैं बड़ी यहें डर ॥

१८५

जानि सखत की हेत मनोहर, दियो नवाउ नैक अपनी कर ।

'नन्ददास' प्रभु भुजा लटकि गई, तब हँसे नागर नगवरवर ॥

भूला

हिंजोरे नारि भूलत गिरिवर लाल ।

संग राजत वृषभान नंदिनी, अँग अँग रूप रसाल ॥

मोन्नुकट मकराकृत कुटल, उर मुक्ता वनमाल ।

१५०

रमकि रमकि भूलत पिय प्यारी, मुख घरसत निहि काल ॥

हंसत पररपर इन-उन चितवत, चंचल नैन दिगाल ।

'नन्ददास' प्रभु की छवि निरग्न, विवस भई ब्रजवाल ॥

भूलत मोहन रंग भरे, गोपबधू चहुँ ओर ।

उमृता पुलित मुदावनी, वृंदावन नुभ ठीर ॥

१५५

नया जू करे झिलकारी, ज्यौं गरजन घनघोर ।

ता पक्षे सब गोप-नदरी, मिनि जु कगति है मोर ॥

नैनें गटत परिया, चातक, बोलत दादुर मोर ।

'नन्ददास' यानेद भरे निरग्न, जे जे जूगलविमोर ॥

गोवर्द्धन-धारण

अब नैक हमनि देहु कान्हू गिरिवर ।

नुगै लिये दडी बार भई है, दूगि चल्की है है कोमल कर ॥

सति दिग पर, दवे नव ब्रजजन, भरी है हाथ पर अति भर ।

नव रंगे यह वदन देखि है, नाने जीव मै वडी यह डर ॥

१८५

जानि सखन की है मनोहर, दियो नवाउ नैक अपनी कर ।

'नन्ददास' प्रभु भुजा लटक गई, नव हँसे नागर नगधरवर ॥

भूला

हिंजोरे नारी भूला गिरिवर लाल ।

संग राजन वृषभान नंदिनी, अँग अँग रूप रसाल ॥

मोँगुलकट मकराकृत कुडल, उर मुक्ता वनमाल ।

१५०

रमकि रमकि भूलत पिय प्यारी, नुख बरसत तिहि काल ॥

हंसन पररपर इत-उत चितवन, चंचल नैन दिसाल ।

'नन्ददास' प्रभु की छवि निरखत, दिवन भई ब्रजवाल ॥

भूलत मोहन रंग भरे, गोपवधू चहुँ ओर ।

रसुता पुलित मुहावनी, वृंदावन नुभ ठीर ॥

१५५

नया जू करे किलकारी, ज्यी गजजन धनधोर ।

ता पछे नव गोमन्दरी, मिनि जु कगति है मोर ॥

नैने नटत परिया, चानक, बोलत दादुर मोर ।

'नन्ददास' जगद भरे निरखत, जे जे जगलकिनोर ॥

आँ नर अगाधा नया, छाँव बननी तहि जाए ।
 नखल किलोँर अमल चंदे मानो भिनी है चटिका आठ ॥
 नैल भच्छो ब्रज वीथिनि वीथिनि, वरपन परम अनंद ।
 दमकन भाल गुलाल भरे, मानो चंदन भरकी चंद ॥
 यों रंग पित्तकारिनि भरि भरि, छिरकल हरि तन तीय ।
 झुटल कटाच्छ प्रेम रँग भरि भरि, भरति पीय को हीय ॥
 दुरि दुरि भरति, बचावनि छवि साँ, बाढ़ी रंग अपार ।
 मँन मनी नी बोलति डोलति, पग नूपुर भनकार ॥
 सिद्ध मनकाविक नारद नारद बोलन जै जै जै ।
 'नंदवान' अगने ठाकुर को जीव बलैया ले ॥

१८५

१८०

तो हो हो हो होरी बोल, नंद-कुँवर ब्रज वीथिन डोल ।
 नखल रंगीली मया मँग लीने, राजन अंग अँग सब रँग भीने ।
 रंगीली भाँति रंगीली निकल्यो जहाँ, चोवा-चंदन कीच मचै तहाँ ।
 नाल, मृदंग मुरज, टक बाजै, डोल टनक नव धन ज्यों गाजै ।
 गृनि ब्रज-अधु आनंद अति बाढी, निकसि निकनि मव पीगनि ठाढ़ी ।
 अँजरी अवीर छुटन छवि पावै, पगज मनी पगग उडावै ।
 चित्ततन्नि रँग उछुटन भारी, उड़ि गुलाल रँग अटा-अटारी ।
 जल नगि लाल लाल चित्तकारी, तव नगि भामिनि भाँति भरी ।
 नी नंद नखल वधु भरि भारी, रंगीली लाल ताके गोहन लारी ।
 निगीत शत शत भक्त छुटली, जैने जाहि दन नम रँग रंगीली ।
 जात पद नखल-मंदल जट, घेरि लेत, कल नारी केत नव ।

१८५

२००

आँ रार अगाथा नथा, छाँव वरनी तहि जाए ।
 नखन किनार अमल चंदे मानो मिली है चटिका आठ ॥
 गेल मन्थो बज वीथिनि वीथिनि, वरपन परम अनंद ।
 दगकन भाल गुलाल भरे, मानो चदन भरको चंद ॥
 आँर रंग पिनकारनि भरि भरि, छिरकन हरि तन तीय ।
 रुटिन कटाच्छ प्रेग रँग भरि भरि, भरति पीय को हीय ॥
 दुरि दुरि भरति, बचावनि छवि साँ, बाटुची रग अपार ।
 मँन मनी नी बोलति टोलति, पग नूपुर भनकार ॥
 सिद्ध मनकादिक नारद नारद बोलन जै जै जै ।
 'नंदवान' अगने ठाकुर को जीव बलैया ले ॥

१८५

१८०

नी हो ही हो होरी बोल, नंद-कुँवर ब्रज वीथिन डोल ।
 नखन रंगीली मया मँग लीने, राजन अंग अँग सब रँग भीने ।
 रंगीली भाँति रंगीली निकस्यो जहाँ, चोवा-चंदन कीच मचै तहाँ ।
 नाल, मृदंग मृन्ज, टक बाज, डोल टनक तब धन ज्यों गाज ।
 गुनि ब्रज-वधू आनंद अति बाढी, निकसि निकसि मव पीग्नि ठाढी ।
 अँजरी गविर छुटन छवि पावै, पकज मनी पगग उटायै ।
 पिचतनि रँग उछुटन भागी, जड़ि गुलाल रँग अटा-अटारी ।
 जग लंगि लाल लाल पिचकारी, तब लंगि भामिनि भाँति भरी ।
 नी नंद नखन वधू भरि भाँग, रंगीली लाल लाके गोहन लाल ।
 निरति शत शत भक्त छुटली, जैन जाहि वन नम रँग रंगीली ।
 जग भक्त ललना-मंदल जग, धेरि लेन, कर नारी देन तब ।

१८५

२००

मूर्ति परे अंग, गावन तान-नरग.

तान मृदंग मिलि बजायें वीन-वेनु रनाला ।

२२५

नंदवान प्रभु-प्यारी के खेलन रंग रग्यो,

छाँचि बाँधी, छूटी है अलक, टूटी है माला ॥

गुरी रागी निरने मोहनलाल, खेलन ब्रज में फाग री ।

उमड़यी है अग्रि गलाल, मानी उनयी अन्तरंग री ॥

मोहित मदनगोपाल, कटि बांधे पट मोहती ।

२३०

काछिनि काछे लाल, लाल निचोय रंगी मनी ॥

मोमकूट छवि देन, बरु दृगत हैंनि देखनी ।

गव ही को हिया हरि लेन, ऐन मन मानी पखनी ॥

घट आवज सुर वीन, अनावात गति गाजही ।

तान मृदंग, उषंग, वज, मुरज, उफ बाजही ॥

२३५

चिनि आई ब्रजनारि, मृगनयनी, गजगामिनी ।

छेके हैं मदनगोपाल, घन घेर्यो मानी दामिनी ॥

छिरकन मिय नंदनंद, निय पट-आँट बचावही ।

मानी घन पुन्यो चंद, दुरे निकनि पुनि आवही ॥

बने हैं नित्य के अंग, छिरकि छाँट छवि छैन की ।

२४०

मानी कली रंग रंग, ललित लता जनु प्रेम की ॥

बढ़यी है रग्यर रंग, उमगि उमगि रम भग्न में ।

निगनि भई मति पग, पीतावर फहरनि में ॥

जब नहि रगत भरे, मोहन मूर्ति नादरे ।

हरे हरे हरि हंनि गे मुनि-मन है गये वादरे ॥

२४५

मुरति परे अतंग, गावन नान-नरग.

नाल मृदंग भिनि वजाये वीन-वेनु ग्गाला ।

२२५

नंदवान प्रभु-प्यारी के खेलन रंग ग्गाली,

छवि नाही, छूटी है अलक, दूटी है माला ॥

ग री रागी निरमे मोहनलाल, खेलन ब्रज मै फाग री ।

उमदी है अवीर गुलाल, माना उनयी अन्तराग री ॥

मोभित मदनगोपाल, कटि बांधे पट मोहनी ।

२३०

काछिनि काछे लाल, लाल निचोय रंगी मनी ॥

मोन्मकुट छवि देन, बरक दृगत हैंनि देखनी ।

नख ही को हिया हरि लेन, ऐन मन माना पेखनी ॥

घट आवज नुर बीन, अनावात गति गाजही ।

नाल मृदंग, उतंग, रुज, मुरज, उफ ब्राजही ॥

२३५

चिनि आर ब्रजनारि, मृगनयनी, गजगामिनी ।

छेके है मदनगोपाल, घन घेरघी माना दामिनी ॥

छिरकत पिय नंदनंद, तिय पट-आंट बचावही ।

माना घन पूर्यो चंद, दुरे निकसि पनि आवही ॥

“बने है तियन के अंग, छिरकि छांट छवि छैन की ।

२४०

माना कली रंग रंग, ललित लता जनु प्रेम की ॥

बदली है रत्नर रंग, उमगि उमगि रम भरन मै ।

निगनि भई मति पग, पीतावर फहरनि मै ॥

जद नटि रगत भरे, मोहन मुरति नादरे ।

हरे हरे हरि हैंनि परे मुनि-मन है गये वादरे ॥

२४५

समुद्र तैरा के गहरे ताल पाट के मोटे ।
'मन्त्रास' बाग्य तन-मन-धन गिरियर धीमान जोहे ॥

तान-सहिमा

गुन-नाम डव न धरन गुनी री आर्वा,
भूनी री भजन हा नी बावरी भई री ।
भरि भरि आर्य नैन, चित हृ न परे चेत, २७०
तन री दना कछु आरं भई री ॥
जनिम नैम-धर्म-गुन कीने री म बह निधि,
अंग अंग भई म तो श्रवणमई री ।
'नन्दान' जाके श्रवण मुने ऐसी गति,
नावरी मगनि कीधी कौसी दई री ॥ २७५

गुरु

प्रान्त नर्म श्री दल्लभ गुन को उठतहि न्यना लीज नाम ।
प्रान्तकारी, संगतकारी, प्रमुभहन्न, जन पूरन काम ॥
उत्तमीन परलोक के वंध, को कहि सकै तिहारे गुन-ग्राम ।
'नन्दान' प्रभु रमियनिगेमनि, राज करी गोपाल मुखधाम ॥
प्रान्त नर्म श्री दल्लभ-गुन के नन्दन-कमल की द्रमन कीजै । २८०
नीति नीति ददिन दुरंगनम, उरमा को पटनर ली दीजै ॥
'नी' दायकन-गुन उदिन उदगा, नह दृष्टि नैन-चकोरन पीजै ।

सम्पन्न होय के रहिरे ताल पाद के मोह ।
'नन्दान' वास्य दन-मन-धन गिरियर धीमज जोह ॥

तान-सहिमा

हृन्-तान अब न श्रवण सुनी रो आनी,
भूनी रो भजन हा तो वावरी भई रो ।
भनि भनि आठ नैन, चित हू न परे चेत, २७०
तन की दसा कछु आरे भई रो ॥
जनिन नैम-धर्म-रत कीने रो म वहु निधि,
अंग अंग भई मै तो श्रवणभई रो ।
'नन्दान' जाके श्रवण सुने ऐसी गति,
नावरी मृगति कीर्ती कैंसी दई रो ॥ २७५

गुरु

प्रान्त गर्भ श्री बल्लभ मुन को उठनहि न्यना लीज नाम ।
गर्भद्वारी, संगलकारी, त्रुभहृन्, जन पूरन वाम ॥
उठ सीतल परलोक के वंश, को कहि सकै निहारे गुन-ग्राम ।
'नन्दान' त्रुभ ननिवनिरोमनि, राज करी गोकुल मुखदाम ॥
प्रान्त गर्भ श्री बल्लभ-मुन के उठन-कमल की दरसन कीज । २८०
नीति योग दानि त्रुभानम, उवमा को उठनर की दीज ॥
'नन्दान' त्रुभ उठिन उठना, नह दधि नैन-चकोरन पीज ।
'नन्दान' श्रीबल्लभमुन पर दन-मन-धन न्याछावन कीज ॥

परिशिष्ट

परिशिष्ट

१ संदिग्ध तथा असंपादित सामग्री

(क) 'मानसंजरी नाममाला' के संदिग्ध दोहे

'अ' प्रति से उद्धृत

ताम रव गुन भेद के नो प्रगटित सब ठीक ।
ता दिन तन्द ज्ञान सद् कहै नो प्रति बड बोर ॥१॥

पं० राँत

गुण निर्वाहित अंतर्गत गुड दुष्ट निरीय ।
नोअंजन से नकि मयी देगी इह विधि नाय ॥२॥

गुग्गुलु

अरुण श्रौत आरुण पुनि लांछित गते गान ।
बुध अलग आनंद ने जन् अनुराग चुवान ॥३॥

२०

महाराज ब्रह्मक्षया आश्रयल मुग्धपन ।
मुग्धागीर नेत्रर्षभर मतमत्वर दिव्यत ॥४॥
मुद्राभा नदन वृषा जृभभेदि हरि हांड ।
वसन्तति हृग्ग्राहनी मेघवाहनो नांड ॥५॥

३०

अग्न दक्ष उर पीठ के निरखि आपनी भाय ।
मान गन्तो गिर डीर से जान लिया के भाय ॥६॥

गुग्गुलु

अनन्त गन्धर्वत पुनि चार्माकर नपनीय ।
अग्न रड रोदन वन्द्य मदा गजन गननीय ॥७॥

१. संदिग्ध तथा असंपादित सासग्री

(क) 'गानमंजरी नाममाला' के संक्षिप्त दोहे

‘अ’ प्रति से उद्धृत

नाम सव गुन भेद के सो प्रगटिनि सब ठीन ।
ना दिन नद्य ज प्रातः पच्छ कहै सो प्रति वट बोर ॥१॥

$\frac{1}{2}$

गुण निर्वाहिनं जननिं गुडं दुग्धं निर्वाय ।
 कर्तव्यं ते यत्किं मया देवी इह त्रिविधं ताय ॥२॥

100

अरुण श्रोत आरुण पुनि लोहित गते गान ।
तुभ्य आरुण आनन्द ते जन अनुराग च्छान ॥२॥

— — — — —

महर्षाऽ व्रद्धश्रद्धा आश्रयन् मुग्धपत्न ।
 युगायीन् लेख्यभक्त मत्तमन्वृत्त द्विविधत् ॥८॥
 मुद्राभा मदन वृषा जूभर्माद्व त्रि होऽ ।
 दत्तात्रयि हर्षिद्राहन्तो मेघद्राहन्तो नाऽ ॥९॥

1000

जग्न नम उर पीय के निर्गमि आपनी भाय ।
मान बन्धो गिर दीर मे तान लिया के नाय ॥६॥

Region	1995	2000	2005
North America	1.2	1.5	1.8
Europe	1.0	1.2	1.4
Asia	0.8	1.0	1.2
Africa	0.6	0.8	1.0
South America	0.4	0.6	0.8

सर्वान् सर्वान् बुद्धिं चामात्रं नमनीय ।
सर्वं सर्वं नमस्तु सर्वं सर्वं नमनीय ॥३॥

मंदिर मउप आयनन वनति निकाय अन्धान ।

भजन भू वृषभान ते गर्द महचरी जान ॥१७॥

पनिव्रता

नाथी नती ननम्बिनी मुचिगिवा मुचि हीय ।

पनिव्रता तुव नाम लै होत जगत में तीय ॥१८॥

पान

नाम्बुत अहिदेनिदन द्विज मुव मउन पान ।

नहिन त्वानि अतग्यानि अति भर जो रही मन मान ॥१९॥

मनोहर

मज्जुन मंजु मतांज मधु मधुर चारु मुकुमार ।

तक्ति उदार मुनद को सब वृज को आवार ॥२०॥

महादेव

उग कपदी भूतपति पमुपति मृड इसान ।

नालकठ मितकठ निव मृत्युजय कल्याण ॥२१॥

मेघ

धागधर जलधर जलद जगजीवन जीमूत ।

मदिर वलाहक तदितपति कामुक धूम-मपूत ॥२२॥

गीन्द छीन्द अग्रुग्रह दान्दि जलमुक नांड ।

पन विछरी विजरी मती इनि देवन बलि जाउ ॥२३॥

रत्न

नान्द मधु पृति पुष्प-रत्न कुमुम-नार मकरद ।

रत्न के जानन द्वार जन मुनि पैहै नुव कंद ॥२४॥

रत्नाञ्जली

गदी अकदी आगलति रीन पति द्वि भाउ ।

मन्द उत ते भयमलन देवी नांजी भाउ ॥२५॥

मंदिर मंडप प्रायतन वर्गति निकाय अस्थान ।
भजन भूषण वृषभान के गर्भ महचरी जान ॥१७॥

पतिव्रता

नाथी नती नतम्बिनी मुचरित्रा मुचि हीय ।
पतिव्रता तुव नाम लै होत जगन में तीय ॥१८॥

पान

नाम्बुन अहिदेनिदल द्विज मुव मडन पान ।
नहिन त्वानि अतंगानि अति भर जो रही मन मान ॥१९॥

मनोहर

मकुल मंजु मनोहर मधु मधुर चारु मुकुमार ।
तक्ति उदार नुनद को सब वृज को आवार ॥२०॥

महादेव

उर कपदी भूतपति पमुपति मृड इसान ।
नालकठ गितकठ निव मृन्युजय कल्याण ॥२१॥

मेघ

आगवर जलवर जलद जगजीवन जीमूत ।
मडिर बलाहक तजितपति कामुक धूम-मपूत ॥२२॥
गोन्द छीन्द अत्रुवह दारिद जलमुक नाँउ ।
पन विछरी विजरी मती इनि देवन बनि जाउ ॥२३॥

रत्न

नागद मधु पुनि पुष्प-रत्न कुसुम-नार मकरद ।
रत्न के जानन द्वार जन नुनि पैहै मुख कंद ॥२४॥

रत्नाञ्जरी

राती अरली आगलनि रोग पाति दहि भाउ ।
मानद उत ते भागमलन देती नाँकी भाउ ॥२५॥

उन के उन जे नाहि धारि हमरी जिय आला ।
हम नद कियो प्रजा (न ?) गम हरि नंग बिलाना ॥१६॥
निरनि रजनि कमनीय जू निरवचनीय निकार्ड ।
रोहि नामरे गनिक गन खेलन मनु आर्ड ॥१७॥

(पंक्ति १६४ के बाद)

जिनरी बधि श्री कृष्ण विन सो शुक मुनि बरनी ।
अबधि प्रेम आवेग मोहनी की बस करनी ॥१८॥

(पंक्ति १६८ के बाद)

मानहु मनमिज कोटि पुण्ड रम भरची मुहायो ।
बदन कागरे चंद लाल गोपिन विच आयो ॥१९॥
मोहन मूरति एक भरी सी प्रेम लगाई ।
जानि पृच्छ के धर्म कथा सामरे चलाई ॥२०॥

(पंक्ति १७४ के बाद)

गुगल छेम ब्रज खन खन नभ्रम सी पाई ।
गान्ध कान जू भान नजि केमै नुम आर्ड ॥२१॥

(पंक्ति १७६ के बाद)

पूनि बोले निहि और चाहि गोविंद रमाला ।
ही नजनी रजनी मज्हा नहि निकसन बाला ॥२२॥
अब ग्रह जारो मन भायो पैह दूख सब प्यारे ।
मान लान मुन वय कंत दूतनु जू तुम्हारे ॥२३॥
पनी होई नदपटी अटपटी सब के मन मै ।
क्यों गई अब ही सब हुनी मदन मै ॥२४॥
दहन वरंग मुनि श्री गनि मुनि मन मै छविन भई सब ।
अबय नो के (?) निरम बोर पगी चितवनि जू लगी नय ॥२५॥

उन के उन जे नारि थारि हमरी जिय आना ।
हम मय कियो प्रसा (न ?) राम हरि नंग बिलाना ॥१६॥
निरगि रजनि कमनीय जू निरवचनीय निकार्ड ।
रीभि नामरे रनिक राम खेलन मनु आई ॥१७॥

(पंक्ति १६४ के बाद)

जिनरी बंधि श्री कृष्ण विनो नो युक्त मुनि बरनी ।
अबधि प्रेम आवेन मोहनी की बस करनी ॥१८॥

(पंक्ति १६८ के बाद)

मानहु मनमिज कोटि पुरट रस भग्यी नुहायो ।
बदन कागरे चंद लाल गोपिन बिन आयो ॥१९॥
मोहन मूरति एक भरी सी प्रेम लगाई ।
जानि पृच्छ के धर्म कथा नामरे चलाई ॥२०॥

(पंक्ति १७४ के बाद)

गुगल छेम ब्रज खन गवन नभ्रम सी पाई ।
गान्ध कानि जू भानि नजि केमै नुम आई ॥२१॥

(पंक्ति १७६ के बाद)

पूनि बोलि निहि आर चाहि गोविंद रमाला ।
हो नजनी रजनी मज्हा नहि निकसन काला ॥२२॥
अब ग्रह जारो मन भायो पैहें दुख सब प्यारे ।
राम लाल नुन बय कनै दुठनु जू तुम्हारे ॥२३॥
पनी होई चटपटी अटपटी सब के मन मै ।
नहो गई अब ही सब हुनी मदन मै ॥२४॥
दखन वरंग मुनि श्री गूनि पुनि मन मै छुनि भई सब ।
अब नीके (?) निरग आर पनी चितवनि जू नगीतव ॥२५॥

(पंक्ति २३८ के बाद)

झट्टि कुद केवरा केतकी गध बंध हित ।
गध बेलि छत अरल बेलि मृग मदका बेलि हित ॥३७॥

(पंक्ति ३०६ के बाद)

कोऊ श्रीदामा ह्वै वाम चढ़नि कान्हुर के काथै ।
कोऊ जनुमनि ह्वै ललित लाल ऊवल सी बाथै ॥३८॥

(पंक्ति ३१२ के बाद)

जमनार्जुन भजन फनी फन गंजन सब की ।
कोऊ कहै सुंदरी लीचन ही मोचो दावानल की ॥३९॥
जदपि परम मुखधाम स्याम सुंदर नीला रस ।
तदपि नितहि अवलोकनि विन प्रकुलाय अस ॥४०॥
ज्यों चंदन श्री चंद तप्त कां नीतल करही ।
विगही जन जे लोग नितहि लागि अग्नि बितरही ॥४१॥

(पंक्ति ३२० के बाद)

पुनि जगनग खोज मनोज के चांज ब्रह्मनि ।
कहत लगी रस पगी जगी छदि प्रति मन भासिनि ॥४२॥
पूज भयो रस गगन परन नहीं अक्षय कहानी ।
गद झग सरसी लखी जिय की लो दोली मृदु बानी ॥४३॥
निगनि नुवन वर ऊंच नुन गिय मन में ठानी ॥
गिय गिय कंध चढाय नु छदि नहीं परन बनानी ॥४४॥
भयो भान ते दाम कंध लयो रस मन्दकानी ।
गाने नीची परची अवनि उतरी दुलहनी ॥४५॥

(पंक्ति २३८ के बाद)

उनहि गुद केवरा केतकी गव बंध हिन ।
नाथ बेलि इत अरल बेलि मृग मदका बेलि हित ॥३७॥

(पंक्ति ३०६ के बाद)

कोऊ श्रीदामा ह्वै वाम चढ़ति कान्हूर के कार्व ।
कोऊ जनुमति ह्वै ललित लाल ऊबल सां बावै ॥३८॥

(पंक्ति ३१२ के बाद)

जमनार्जुन भजन फनी फन गंजन सब की ।
कोऊ कहै सुंदरी लीचन हौ मोचो दावागल की ॥३९॥
जदपि परम मुखधाम स्याम सुंदर नीला रस ।
तदपि नितहि अवलोकनि बिन प्रकुलाय अस ॥४०॥
ज्यों चंदन श्री चंद तप्त कों नीतल कन्हौ ।
बिन्हौ जन जे लोग नितहि लागि अग्नि बितरही ॥४१॥

(पंक्ति ३२० के बाद)

पुनि जगमग खोज मनोज के चांज ब्रह्मनि ।
तहत लगी रस पगी जगी छुद्रि प्रति मन भासिनि ॥४२॥
एक भरी रस गरन गरन नहीं अकथ कहानी ।
नव रस नारी लखी जिय की नो दोली मृदु बानी ॥४३॥
निगडि नुवन वर ऊंच नुच गिय मन में ठानी ॥
निय गिय कंध चढाय नु छुद्रि नहीं गरन बानी ॥४४॥
भयो नार ते दाम कंध लयी रस मन्दकानी ।
नाते नीची परयो अवनि उतरी दनकानी ॥४५॥

बुद्धि नग्न बजामे गाने नाननि नामे ।
 गौतम की गति जनि अति रति करन ऊ अमात्रे ॥५१॥
 जगमग जगत्तन करन रगदगी मडल मोभा ।
 मोऊ बलित रन छुकिन लाग मय निरपन लोभा ॥५२॥
 सगन्त निरगत लाल लाउनी प्रेम बटामे ।
 रति छवि उपमा देन उरकि गुरभनि नहि पामे ॥५३॥

(पंनि ५१२ के बाद)

गुधर नग नगनी मंडल द्विग गुन गन गावन ।
 अपने अपने गुन गनहि सब प्रघट दिवावन ॥५४॥

(छंद १२ के बाद')

कोई यापन नै धनी लसी पिय अति रति मानी ।
 कोऊ पट गहि कटि गहि छवि नृ पानी मै आनी ॥५५॥

(पंनि ५७६ के बाद)

उह लीला गोपाल लाल की परम बास विधि ।
 शिव मुक नारद नारद निन कान महा निधि ॥५६॥

(पंनि ५८४ के बाद)

बह बंदावन रंग महल गिरधर प्यारी की ।
 पंचाध्याई गन रजनि अति उजियारी की ॥५७॥
 जिन के हिय धर्म देवनि नंपनि जंपनि मोई ।
 सब संसार अनार छान करि डार मोई ॥५८॥

बुद्धि गन्ध वनार्म गानै नाननि नामै ।
 गंत्य की गति जनि अति रति करन ऊ भ्रमावै ॥५५॥
 जगमग जगनग गन्ध रगदगी मडल मोभा ।
 नोऊ बलित रन छकिन लाग मय निरपत लोभा ॥५६॥
 गगन्त निरगत लाल लाउली प्रेम बटामै ।
 रति छवि उपमा देन उरभि गुरभनि नहि पामै ॥५७॥

(पंक्ति ५१२ के बाद)

सुधर राग रागनी मंडल द्विग गुन गन गावन ।
 अपने अपने गुन गनहि नव प्रघट दिवावन ॥५८॥

(छंद १२ के बाद^१)

कोई यावन नै धनी लसी पिय अति रति मानी ।
 कोऊ पट गहि कटि गहि छवि नृ पानी मै आनी ॥५९॥

(पंक्ति ५७६ के बाद)

उद लीला गोपाल लाल की पन्म वास विधि ।
 गिय मुक नारद नारद निन कौन महा निधि ॥६०॥

(पंक्ति ५८४ के बाद)

बह बृंदावन रंग महल गिरधर प्यारी की ।
 नंचाध्याई रग रजनि अति उजियारी की ॥६१॥
 जिन के हिय धनं वंशति नंशति जंशति मोई ।
 मय मंगार अन्गर छार करि जरै मोई ॥६२॥

(छंद ३६ के बाद)

दिन वैद्यन दिन उद्यन लोटने निदि रज माही ।
 प्रीरे जग जग नीन चीन गानुन प्रकृताही ॥८०॥
 मल्लन भय ने प्रलय कवन कवन-कवन निहारे ।
 नर प्रद जेह नाय नयक गिर छुवन हमारे ॥८१॥
 गहन गहन संगलदायक यम प्रीर न होई ।
 गौतम यम निरपे दिन प्रीर महाय न कोई ॥८२॥

(पंक्ति ४४६ के बाद)

पुन पुन ही वेह मयूर मुनि रग भीने ।
 कोटि ज्ञेय ज्ञेय जर्दान मनीरय पूरन कोने ॥८३॥

(पंक्ति ५४० के बाद)

मय विदपन गंग लज निगिट कुली भुली जल ।
 कृष्ण गान्धर्व हंस वान विगनित प्रबुज दल ॥८४॥

(पंक्ति ५६० के बाद)

नैन हीन जों नायक नाको नन नागरि जन ।
 मंद दलन नु बटाक्ष लननि कहा वह जाने रन ॥८५॥

'ज' प्रति से उद्धृत

(पंक्ति ६० के बाद)

श्री मुन रा जनुप हो, क्यों दन्ने कठि नन्द ।
 प्रद यन्दावन वननिहो जहें वृदावन चन्द ॥८६॥

(छंद ३६ के बाद)

झिन् बैद्यन झिन् उठन लोटने निदि रज माही ।
 धोरे जग ज्यों नीत दीन मानुन प्रकृलाही ॥८०॥
 मल्लन भय ने जसय कसन कन-कमन निहारे ।
 लह प्रद जेह नाय नयक गिर छुवन हमारे ॥८१॥
 लखन लख संगलदायक रस जोर न होई ।
 मोहन भग निरखे बिन जोर महाय न कोई ॥८२॥

(पंक्ति ४४६ के बाद)

पुन पुन ही ब्रह्म मयूर मुनि रस भीने ।
 लोटि जूय बज जयान मनोरथ पूरन कोने ॥८३॥

(पंक्ति ५८० के बाद)

नय दिटपन नय लन निगदि कुली भूली जल ।
 पृथ्वी मानस हंस वान विगलित प्रवृज दल ॥८४॥

(पंक्ति ५६० के बाद)

नैन हीन जो नायक ताको नन नागरि जन ।
 मंड हलन नु बदाध लननि कहा वह जाने रस ॥८५॥

‘ज’ प्रति से उद्धृत

(पंक्ति ४० के बाद)

श्री मुन रा प्रनू हो, क्यों वरने कछि नन्द ।
 प्रद वृन्दावन वरनिहो जहें वृन्दावन चन्द ॥८६॥

(ग) पदावली

‘क’ प्रति से प्राप्त पद

वर्षोत्सव

(१)

भावों की अष्टमी आधी रात में कात्त भयो सब के मन भायो ।
 जोनि बटोरि घरयो धन गोरी में नोरी जसोदा जु लुटायो ॥
 मोद नो मोद लिये हृलरावन प्रात पियारे को प्रात नो पायो ।
 रोहनी में भयो मोहनी मृगति नंदवान लखि हियो सिगयो ॥१॥

(२)

पद भयो है आज श्री कृष्णराज के ।
 प्रथम व्यासनि व्रत ही हो पृष्टि मारग रम दप ।
 भुक्त प्रगट भये नाथ के हो श्री गोकुल के भूप ॥
 श्री कृष्णराज को दूर गये दुख भाज ॥ श्री कृष्णराज के ॥
 दशवर्षा मय मुक्तही हो आवत चहुँ दिग धाय ।
 ले कादन दधि दूध ही हो नम की मुठि विनराय ॥ श्री ॥
 तिन छोट दिखे घर राज ॥ श्री ॥
 सरप दुध दधि दधन कुमकुम देन पन्थार नाथ ।
 भोज भई नर दान में ही, जगन नाची कीच ॥ श्री ॥
 तिन गजी लोक की राज ॥ श्री ॥
 नर भय कर नचावही हो देह दगा गये भूत ।
 नरक नरक जगदही मन पद जन्म की दूद ॥
 मुन मर्याद के रीतिराज ॥ श्री ॥

(ग) पदावली

‘क’ प्रति से प्राप्त पद

वर्षोत्सव

(१)

भादों की अष्टमी आधी रात में कान्ह भयो सब के मन भायो ।
 जोनि बटोरि घरघो धन गोरी में सोरी जसोदा जु लुटायो ॥
 मोद नो मोद लिये हनुमान प्राण पियारे को प्राण नो पायो ।
 सोहनी में भयो सोहनी मृगति नंदवान लखि हियो सिंगयो ॥१॥

(२)

पत्र भयो हे आज श्री कृष्णराज के ।
 प्रथम व्यासनि दर्शन ही ही पुष्टि मारग रस रूप ।
 भूतल प्रगट भये नाथ के हो श्री गोकुल के भूप ॥
 श्री कृष्णराज को दूर गये दुख भाज ॥ श्री कृष्णराज के ॥
 दशवर्षों मध मुत्तही हो आवन चहुँ दिग धाय ।
 ते कान्ह दधि दूध ही हो नम की मुखि विनराय ॥ श्री ॥
 लिल छोट दिखे घर राज ॥ श्री ॥
 दूर दूर दधि दूधन कुम्कुम देन परम्पर मीच ।
 भाँस भई नर दान में हो, जगन माची कीच ॥ श्री ॥
 लिल गजी दोव की राज ॥ श्री ॥
 नर भय नर मज्जावही हो देह दगा गये भूच ।
 मरेन मरान जगदही मन पत्र जन्म की सूच ॥
 सुन मर्याद के सीमाज ॥ श्री ॥

मदमय बरौ जग हार न्यो ठाठो बाये महिना
नद उर गतिन मायन ती ॥२॥

(१)

मृ री नगी प्रकटे कृष्ण मृत्ति,
वज्र पर पर प्रानंद भयो दति जाने आंगन नद के ।
मृ री नगी ब्राजन नाल मृदंग पोर बाजे सब गति के ।
भवन भीर ब्रजनामि पुन भयो वज्रराज के ॥
श्रीत श्रीत ते दाम बगनन गति गति के गटे ।
गोपनी सदा बड भागि आदर दे भीतर लई ॥
विद्वदन के भक्तकार गतिन गतिन प्रति ह्वै रहे ।
नयन नयन पार उर पर श्रमनन च्ये रहे ॥
स्वयं गोपिता जान रावरो मगरा भरि रह्यो ।
पते जग न नात गवन को भागि उचनि न्यो ॥
जहां ब्रजगानी आप नेन कीयो डोटा भये ।
नया कुतूहल हांत मिनि जूवनी जूवन गये ॥
निरनि कानन मग चार आनंद मय मृगति भई ।
नयन मंचल पट छोर मन भाई अर्गन दई ॥
राग बोल मे घेरि छिरकत बधि हन्दी माल ।
बालिपकदि के बाल बोल लेन भुज भुजन पैलि ॥
मायरि मयना नाट अगतिन गिने नही जान हे ।
अरे अरे मर ठोर बाला लो मदन समान हे ॥
होत मगरा नार मायन के गेदरा करे ।
एक एक क नकि वदन जग लेगन मरे ॥
जग के दति दूध बीज नीमन गगदि ठरे ।
नयन लो भई जौच रति रति मगरे परे ॥

मदनम यही जग हार गयो ठाढ़ी राखे सहित
नरक उर नरितन मायन तो ॥३॥

(१)

मृ. री राखी प्रकटे कृष्ण मूर्ति,
नरक पर पर प्रानंद भयो दधि जग अंगन नर के ।
मृ. री राखी वाजन नाल मृदंग और बाजे सब साज के ।
भयन भीरु ब्रजनाथ पुन भयो बजरज के ॥
थोत थोत ते दाम वगनन गजि गजि के गटे ।
गोपनी सदा बड भागि यादर दे भीतर लई ॥
विजयन के भक्तकार गलित गलित प्रति ह्वै रहे ।
तत्पन तेवन थार उर पर श्रमनन च्वे रहे ॥
स्वतन गोपिता जान रावरो नगरो भरि रह्यो ।
फरै जग न नान गवन को भागि उद्यमि रह्यो ॥
जग ब्रजनाथी आप नेन कीयो डोटा भये ।
नरक कृतहण होत मिनि जूझनी जूझन गये ॥
निरति कलल मन चार आनंद मय मृगति भई ।
नरक संनल पट छोर मन भाई अर्गने दई ॥
राज चौल मे घेरि छिरकत दधि हन्दी मेलि ।
पराणि पारि के खाल खोल नेन भुज भुजन पेनि ॥
पारि नयना नाट अगदित गिने नही जान हे ।
परे भरे मन ठोर कदा को नयन नमान हे ॥
होत नगर नार सायन के वेदक करे ।
पुन एक क नकि वदन अग नेन नरे ॥
जग मे दधि दूध बीज नीलन गगनि टरे ।
नयन तो भई जौन नरति नरति नयने पने ॥

गङ्गा नदी गङ्गा नदी पाँच दश आर्यो ।
 तमि हनि रंहिनी आप व्रज नरनी पहगार्यो ॥
 पन पन दुग्ग निगान कही न जान बछ्ये जिय की ।
 गंगलमय पजदैन पिग्ग दुहारी गाज की ॥
 व्रज दना को नव कहा कहु गम्भी धा नमे ।
 निर्गम निर्गम तंदवान नृत्य करन हे ता नमे ॥४॥

(५)

अगरे गी बाजत आज गुहारी श्री गोकुलगज के धाम ।
 गन्ती जमुमनि टांटा जायो हे सोहत सुदर नयाम ॥
 मुनि नय गोप धोष के वानी चले वर वसन बनाय ।
 वायुर की मगल व्रज वीयनि भीर न निकस्यो जाय ॥
 राई मग गोप बधू मिलि साथन हायन कचन धार ।
 कसम बदन मय दर्सा कमला की भलकन कुडल हार ॥
 सारन खाल कान कनूहण दधि घृत खारे गान ।
 देन लगाय दनन पट भूषण पूने अग न नमान ॥
 हो जाते मन हती कायना नो पृजाई नदराय ।
 नंदराय को दई वृषा कारि अयने लदन की बनाय ॥५॥

(६)

श्री लज्जामा के प्रामत बाजत रंग बधाउ,
 अवन मुक्त मय गोपिनि अतुरदेयन राई ॥
 मय भदो कटे किन अर्थवीना दधवारी,
 लीला लय मोदीनी जने हे नद कुनार ॥
 गीत प्रीत से मलय प्रले हे नदी कान
 नंदराय नंदराय नंदराय नंदराय नंदराय ॥

समस्त गंधर्व छाय महत् पांच दिन आह्वयो ।
 तमि तमि रंदिनी आय ब्रज तरनी पहगह्यो ॥
 पर पर पुन निगान कही न जान कह्ये जिय की ।
 गंगलमय वज्रदेन पिग्न दुहाई गाज की ॥
 ब्रज दना को सब कहा कह गयी या नमे ।
 निर्गमि निर्गमि नंददास नृत्य करत हैं ता नमे ॥४॥

(५)

अपारि गी बाजत आज मुहाई श्री गोकुलराज के धाम ।
 गनी जमुमनि टोंटा जायो हे सोहन सुंदर ग्याम ॥
 मुनि गद गोप धोष के दानी चले घर बनत बनाय ।
 तापूर की मंगल ब्रज दीयनि भीर न निकस्यो जाय ॥
 त्राई मग गोप बधू मिलि नाथन हाथन कचन धार ।
 कागध वदन म्द दर्सी कमला की भलकन कुडल हार ॥
 नानद ग्याल करन कुतूहल दधि घृत चोरं गान ।
 देत लगाय दसन पट भूषण फूले अग न समान ॥
 हो जाते मन हरी कामना नो पूजाई नदराय ।
 नंददास को दई मुपा करि अगने बलन की बनाय ॥५॥

(६)

श्री लज्जामा के प्रगत बाजत रंग बधाउ,
 अवनभुवन म्द रंजिनि अतुरदेवन त्राई ॥
 मग भदो कटे किन अर्थनीना ब्रह्मवारी,
 दीपन नग रोटीनी जले हे नद कुमार ॥
 गीत गीत से नानद प्राने हे नंदी कान
 नानद म्द सोलहद कान्त सुनद नान ॥

उमड़त सुख संगीत तलित गति डेरी करी दीव्यगते हो ।
 निरर्जयो जसोदा तेरो नुत यो कही मोद बढ़ाने हो ॥
 मुनि मुनि नीभि नीभि प्रजपति अति आनंद उन न मगवे हो ।
 गान लाल फर गरि व्योछावर ढाडति को पहंगवे हो ॥
 देव अलिन चली मदिर व्रजगनी नेग चकावे हो ।
 राखार बिलोकी ललन मुख नंददास मन भावे हो ॥६॥

(१०)

कृष्ण जन्म मुनि अपन पति सो ढाडित यो बोली जू ।
 गड जाड तुम नंद नृपति के दान कोठरी बोली जू ॥
 तुमसो मिलेसो बागो बीटा और वधना भरि भोली ।
 ह्मली तैयो नख निय गहनो जेहरि सहित एक जौरी ॥
 तयो कन जुगति सो तैयो ह्म चहिवे को डोली ।
 गंदी सो मेन मुवन गोगन की टहल करन को बोली ॥
 गज सहित एक पुडिया तेरो गया दुख अनोली ।
 गुरन सो एत हर्ना तैयो हरित भग अनोली ॥
 सिद्धा सहित एत दुगिया तैयो और पानन की डारी ।
 धोरी करि करि मोहि नखरै तैयो गंग नमोली ॥
 रक्त रक्त लाला तैयो जख्यो छिनि नही नाचो भोली ।
 नंददास नंददास को ढाडी भयो अजाधिन डोली ॥१०॥

(११)

गयो ज नरक न। उदन मुदन भासा दो पनक भुगुटी पन ननक छिठेला ।
 ननक लहरी मोटे मुल्लि के मन मोटे गनो कमल दिन केटे अति छोला ॥
 मरन नी नन गली निरगत छट भागी, दठ कठुला मोटे नख गयला ।
 नंददास नंददास ननमेरे जागे जस बाज पान मुनिनये गयला ॥११॥

उग्ररूप मुख संगीत तलित गति देयी करी दीव्यगति हो ।
 निरर्जयो जसोदा तेरो मुन जे कही मोह बढ़ावे हो ॥
 मुनि मुनि नीति नीति प्रजपति अति आनंद उर न मगवे हो ।
 राम नाम पर करि व्योधावर ढाडनि को पहंगवे हो ॥
 देव दामन चली मदिर ब्रजगती नेग चकावे हो ।
 मगवार विन्दोकी ललन मुख नंददास मन भावे हो ॥६॥

(१०)

कृष्ण जन्म मुनि अपने पति नो ढाडिन वो बोली जु ।
 राव जाउ तुम नंद नृपति के दान कांठरी बोली जु ॥
 कुमरो मिलेयो बागो ब्रीडा आर ब्रधना भरि भोली ।
 ह्यही लैयो नख निय गहतो जेहरि नहिन एक जौरी ॥
 लवो कन जुगति मो लैयो हम चहिवे को डोली ।
 ब्रह्मा मो मन मुवन गोगन की टहल करत को बोली ॥
 गज नहिन एक पुडिया लैयो गया दुख अनोली ।
 गुरु मो एक हर्षो लैयो हरितन भग अनोली ॥
 सिद्धा नहिन एक दुनिया लैयो ओर पानन की डारी ।
 ओरो करि करि मोहि गवय लैयो नंग नमोली ॥
 राम जन्म लाला नरो जाव्यो अगि नई नाउ कोली ।
 नंददास नंददास को ढाडी भयो अजाधिन डोली ॥१०॥

(११)

गयो ज नरक नो अवन गवन भासा दो मनक भुगुटी पर ननक छिठोला ।
 भगत लहरी मोटे मुल्लि के मन मोटे गहतो कमल हिर सेठे अति छोला ॥
 भगत नी नद गहरी निगहन छठ भागी, दठ कठुला मोटे नद गपला ।
 नंददास जन्म प्रसीदासि क मनमेरे जायो जय बाउपास मुनिनये गगला ॥११॥

नंग के लरिका नत वनि ठनि प्राये यों कहेने बेनी हे नेरी माय रे लाना ॥

ज्योंन गहत पाय बेया मोहन करन न्ह्या न्ह्या

नंददास वनि जाय रे लाना ॥१५॥

(१६)

गमो को हूँ जो छुवे मेरी सट्की अछूती वहेड़ी जमी ।

जिन माने दियो न जाय माने ने गारी खाऊ केनेई करो उपाय

उगले उरत नहि मेरे ते गोरम की कहा थो कमी ॥

प्रांर को दहों छिलछिलो लागत में ओट जमायां भर के तमी ।

नंददास प्रभु वडेई खबेया मेरे तो गोरम में बहुत अमी ॥॥१६॥

(१७)

दात तुम परे हमारे ख्याल, ख्याम लाल दान ही दान भउ नकवानी ।

जब हम यहि व्यापार छाडी देहे दूध वही को तब ह्वे हे काहे के दानी ॥

निहारी चितवनी मुनी हो लाडीले नीके हम पहीचानी ।

नंददास प्रभु एसे तुम व्योनेयो जेनी हम व्योमानी ॥१७॥

(१८)

पटो जू दान नेहो केने हम तो देव गोवर्द्धन पूजन आई ।

कोउ दह्यो कोऊ मह्यो मानवन जोरि जोरि आछो अछूतो लाई ॥

गुम्हे पहले केने दीजे कान्हर जू तुम तो गवे फवी करन मत भाई ।

नन्ददास प्रभु तुमही परमेश्वर भये अथ कछु नई ये चाल चलाई ॥१८॥

(१९)

काहे न आय आय देखो रानी जू असनें मुन के कम ।

भजन में भाजन एक न रह्यो कहे ने ननि परी को को जाने बाको मम ॥

संग ले लरिका मत बनि ठनि प्राये यों कहने केगी ते तेरी माय रे लाला ॥
 जनोंस गहत पाय बेया मोहन करन न्ह्या न्ह्या
 नंददास बलि जाय रे लाला ॥१५॥

(१६)

गुनो को है जो छुवे मेरी मदकी अछूनी बहेरी जमी ।
 गिन माने दिया न जाय माने ते गारी खाज केनेई करो उपाय
 उगये उरत नहि मेरे ते गोरन की कहा थो कमी ॥
 प्रोर को दहों छिलछिलो लागन मे थोट जमायो भर के नमी ।
 नंददास प्रभु बडेई खबेया मेरे तो गोरन मे बहुत अमी ॥॥१६॥

(१७)

लाग तुम परे हमारे ख्याल, ख्याम लाल दान ही दान भउ नकवानी ।
 जब हम यहि व्योपार छाडी देहे दूध बही को तब ह्वे हे काहे के दानी ॥
 निहारी चितवनी मुनी हो लाडीले नीके हम पहीचानी ।
 नंददास प्रभु एने तुम व्योनेयो जेमी हम व्योमानी ॥१७॥

(१८)

पढ़ा जू दान तेहो केने हम तो देव गोवर्द्धन पूजन आई ।
 कोउ दह्यो कोऊ मछ्या मानव जोरि जोरि आछो अछूनी लाई ॥
 तुम्हे पहले केने दीजे कान्हर जू तुम तो गवे फरी करन मन भाई ।
 नन्ददास प्रभु तुमही परमेश्वर भवे अब कछु नई ये चाल चलाई ॥१८॥

(१९)

कहे न थाय आर देगो रानी जू अने नुन के कम ।
 भजन मे भाजन एक न रह्यो कहे ने हनि परी को को जाने बाको मरम ॥

(२३)

गर्भ कर्यो नीय गुधि नो पति पायन तन लटक के ।
 निव को गटक विकट ताकी चोगी अंस पटाक के ॥
 गग नो रथ भटन सो भट नटपटी नो चटक के ।
 जारि के गह लंक विकट राटण मुकुट भटक के ॥
 गिनेक छेल तंदुल ने छरे ले ले सूजल मटक के ।
 गिरि नो गज गेद नो गहि डायी भूमि भटक के ॥
 गुगुर आनंद उमग उर नो आंट अटक के ।
 नदगस बहुयी नट ज्यो उलट काछो समुद्र नटक के ॥२३॥

(२४)

गग विवि पार पांछीच्यो पवन पुत हुन श्री खुनाय को ।
 छुटयो जनां भनुप ने सर परम नुगट हाथ को ॥
 भर थर जहा कान्त मीच एसी राजधानी ।
 पेदन निर्दिह लंक बंक कपि न जंका मानी ॥
 पर भंडिर गिनि कदर मुद्र मणिगई ।
 राटण रणवान दूहयो कह न नीय पाउ ॥
 नट लो पद् जेतिक नगरी नगरी उचक दीजे ।
 उजई ने जाय नामहि जानकी दूह दीजे ॥
 केना दमकंध अंग उजई ने मारो ।
 केने रज्जुन आगे जाय निर्दिह जने ॥
 नट विवि दल जगता लपि मोहन जिय मोह ।
 नदगस प्रन् को मोहि एनी जाला नोही ॥२४॥

(२३)

गरि चरयो नीय नुधि लो पति पावन तन लटक के ।
 गिव को गटक विकट ताकी चोगी अंस पटाक के ॥
 गर नो रथ भटन सो भट नटपटी नो चटक के ।
 शारि के गह लंक विकट रावण मुकुट भटक के ॥
 विनेक छैन तंदुल ने छरे ले ले सूजल मटक के ।
 गिर नो गज गंद नो गहि टायो भूमि भटक के ॥
 गुरगुर आनंद उमग उर नो आंट अटक के ।
 नदगल बहुयो नट ज्यो उलट काछो समुद्र नटक के ॥२३॥

(२४)

गल विधि पार पांहीच्यो पवन पत दून श्री खुनाय को ।
 छुटयो जनां धनुष ते सर परम नुगट हाय को ॥
 धर धर जहा कान्त भीत्र एसी राजधानी ।
 पैठन निर्हि लंक बंक कपि न जंका मानी ॥
 पर संदिर निनि कदर नुदर मणिगई ।
 रावण रगवान टूटयो कह न नीय पाउ ॥
 नद लो पट जेतिक नगरी नगरी उचक बीजे ।
 जहि ले जाय नामहि जानकी दुह बीजे ॥
 केन दण्डक अंग उडाई ले मारो ।
 केने रज्जिय आगे दाय निर्मुहि डारो ॥
 गर विधि दल आपता कपि सोलन जिय मोह ।
 नदगल प्रभु को मोहि एसी जाला तांही ॥२४॥

प्रापे है निजह नाद रीण रहे गलचात

बार बार देखे देखे सुगती तेन बनाव ।

नमन प्रम प्रिय प्रमन्न वीरी लाय

नमिक विहारिन प्यारी चाँद परी मृगजाय ॥२७॥

(२८)

कालि करे प्यारी प्रिय पाँडे लल चादन मे

नेह नो लग गये जीवन के जोस के ।

प्रसिद्ध दरक गउ मानो प्राण देखवे को

चाच काँडि चक्रवाक काम तर रोम मे ॥

पानन नो मोरी बाह दौड दूत गहे

प्रिय रति के जीर्वाता मानो डाँपि दीये जोस मे ।

रग के नरोवर मे तंदवान देख अली

चक्र के छोता बेटे कनन के कोस मे ॥२८॥

(२९)

रेत रीनी हो प्यारे हरि को नम देख

बाही ते अधिक बट गई तेन ।

नन न मकन हरि रूप विमोही नही

एकटक आछे लखन नयन ॥

छवि नो कृपन मानो विच विच तारेहीन के

आभूषण पर बार जरी जग गुन ।

बेदा हूँ प्रलिन भयो देख के लालन

नगाँ हूँ देख के परम चैन ॥

प्राये है निरुद्ध तब रोम रहे नलचाय
 धर धार देव देव नृपति तेन बनाय ।
 नन्दन प्रग पिय अमन वीरी लाय
 रनिक विनारिन प्यारी चाँद परी मगजाय ॥२७॥

(२८)

कलि करे प्यारी पिय पाँडे नल चादन मे
 नेह नो लग गये जीवन के जोस के ।
 प्रसिमा दरक गउ मानो प्राण देखवे को
 चाच काँडि चक्रवाक काम तन रोम मे ॥
 पारन मो मोरी बाह् द्रोड हुन गहे
 पिय रनि के खीनोना मानो छापि दीये जोस मे ।
 मग के नरोवर ने नन्दन देख अनी
 चकल के छोता बेटे कवन के कोस मे ॥२८॥

(२९)

रेन रीनी हो प्यारे हरि को नम देख
 बाही ते अधिक बट गई गेन ।
 नन न सकत हरि नय बिमोही रही
 एतक आछे नदन नयन ॥
 छवि मो छन्द नानी विच विच तारे हीन के
 आभूषण पन धार धारी जग एन ।
 सदा हूँ अलिन भयो देख के जानन
 गयो हूँ देन के परम चैन ॥

देन प्रसीत मयल गीर्वाण वरुण लो जग प्रसन्न भव ।
 जनि नदमृत प्रवण विनिधन को नदमन के दूर हरे ॥३२॥

(३३)

नाजे विनिधन प्राज नाय गीत जाके नर
 नेन गी धानिक वन नरे भेन नदवर ।
 निधो हे उद्यम वरुण के कृष्ण कर
 तरुण वरुण नगरी मुरगी की फूक पर ॥
 वरुण प्रलय के पानी न जान दाह पे वरुणी
 वरुण हे ते गति भारी वृद्धन हे तर तर ।
 नार के नग नृग चानक चकार मोर
 वरुण न दाह के नानि भयो हे कोतुक भर ॥
 वरुण ज की वरुणी उरुही ही वरुणी
 मनि वरुण हेर हेर वरुण हेर हेर हर ।
 नदमन प्रमृ विनिधनी ज की हानी गेल
 वरुण को गर्व गयो भये हे दूर घर ॥३३॥

(३४)

निधो केन नाय नगर विनिधन ।
 गीर्वाण मयल गीर्वाण वरुण वरुणी फोर वर ॥
 वरुण हे वरुण वरुण वरुण वरुण वरुण वरुण वरुण ॥
 नदमन प्रमृ पश्यत वरुणी गी हन न हेर देवी दादर ॥३४॥

(३५)

देन प्रसीन सरल गीर्वाण वस्त्र ली जा प्रसिद्ध भर ।
 ज्ञान सद्गुरु प्रसाद सिन्धु को नन्दान के दुग हरे ॥३२॥

(३३)

नाजे सिन्धुज प्राज गाय गीत शक्ति नर
 नेत्र गी वानिक जने नरे भेग नदवर ।
 निमो है उद्यान वस्त्राज के कृष्ण कर
 पत्तन ध्वज नगरी मुरगी की फूक पर ॥
 वस्त्र प्रलय के पानी न ज्ञान दाह पे वस्त्राती
 वस्त्र हू ते यति भारी वृद्ध है तर तर ।
 नागर के नग मृग चानक चकार मोर
 वद न दाह के दाहि भयो है कोतुक भर ॥
 वध ज की प्रभुताई उग्रहू ही प्रभुताई
 मुनि जने हेर हेर हरि हने हर हर ।
 नन्दान प्रभु सिन्धुजानी ज की हानी गेल
 उग्र को गर्व गयो भये ते हर घर ॥३३॥

(३४)

निमो देन गाय नगर सिन्धु ।
 गीर्वाण वस्त्रने गाय वस्त्राज नत वस्त्राज फेर कर ॥
 वस्त्र गी वस्त्र गाय वस्त्र गाय वस्त्र गाय वस्त्र गाय वस्त्र गाय ॥
 नन्दान जने वस्त्र वस्त्राजी गी हने न जने देवी दादर ॥३४॥

(३५)

नन्दानी वस्त्राज उग्र न वस्त्राज ।
 नन्दानी वस्त्राज वस्त्राज वस्त्राज वस्त्राज वस्त्राज ॥

(5)

सुखं च भवति तदा सुखं ।

पञ्च भूत प्रकृत पञ्चभूतानां ये यन्त्राः सुखदायकाः ॥

माया वला वल भो वला वल आनद न गयारि ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥॥

महान् माना मानिन वाचन मोक्षिन चोक्त पुराण ॥

कभी दिन जवान होत है पद भुजग पहिराई ।

निष्ठ गये हूँ नन्ददास के मन वाञ्छित फल पार ॥५८॥

(66)

नम्र भयन मद्र कण्ठ व्याह परांशु वरी हे कंनन धारी ।

हंस हंस ज्ञान देन मोक्षन कर दह निजल जनुमति सहकारी ॥

संज्ञा ग्रन्थ ग्रन्थ ग्रन्थ ग्रन्थ तत्त्व खण्ड हे मुद्रिकायाः ।

संशयान् जगन् एव संशयः तत् सत्यं ज्ञानं दायि ॥४८॥

(40)

॥०॥ नृसिंहाय नमः सुखं विधिं विषयं को पीव चरुदि यत्न ।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

ਸ੍ਰੀ ਹਜ਼ੂਰ ਜਿਸਦੇ ਤੇ ਸਦਾ ਰੋਜ਼ ਰੋਜ਼ ਹੀ ਆ ਗੰਗ ।

संस्कारान् नयन्ति त्रिंशत् वर्षाणि तत्रैव विवर्धन्तु ॥५०॥

(23)

(४८)

नानक हर वादन पाव बधार्त ।
 परन प्रता प्रपट पकरोलन गी पल्लन मुखदाट ॥
 मानन धरन बृद्ध ओर वाता हर वातन न गगार्त ।
 न न नन नन बंधोजन बांधन बिगन वेद पटार्त ॥
 हरन हृद पवन बधि पकन ज्ञानन कीच मचार्त ।
 नदन नाना गालिन बाधन मोतिन नीक पुरार्त ॥
 कृते द्विज परवान देन हें पट भूषण पहनार्त ।
 गिट गये हृद नंदनार के मन बाधिन फल पार्त ॥४८॥

(४९)

नवन भवन मध करन व्यास परांस वरी हे कंचन थारी ।
 हंस हंस जात देन मोहन दर बहू विजन अनुमति सहनारी ॥
 नवन अंग अंग गेन कीए नन लागत हे मुखकारी ।
 नंदनान चरन रज नंदन नन मन टानन दारी ॥४९॥

(५०)

नवन नृपांग नवन मुख निधि पिय की पीव नडावे चदन ।
 नव नी नीन निगारी नारी जगज्जा प्रांग नृधर नंद नदन ॥
 न न नन निरखे ज् पन्थन रीन रीन नही जो बंदन ।
 नंदनान जग् निधि रन नीजे नृनिन मुख दिग्दृष्ट दुख कंदन ॥५०॥

(५१)

नवन नवन नाच ननि हे नन नृनिन दुदानी हो ।
 नवन नवन ननिन नन नन नन निहारी हो ॥

(५५)

नमो रहे बाग नगरी निगा के नहो महरि लाने बीजे जगाय ।
 धर्म नितु कहें बरने अचानक बागक जाय उराय ॥
 भिरण के नर नरान जनाया कर पपनी निग्यरि घर कान ।
 यदि भयन बेटि लावो दुध इही छांस बदन ब्रजगज ॥
 बदन छोर बलभद्र जगाई वृद्धि दुहि लावन हे सब गाय ।
 नन्ददास लाग जगाय निहि छिन लीनो अक जगोदा माय ॥५५॥

(५६)

बागन उजारे बेट करोहो कलेउ लाग भवन प्रधेरो हे रे दोउ भैया ।
 पुनरी पन घटा पाट नह दिख ने छाउ हमन चटे गटे दोउ धैया ॥
 नागन मिथी छोर छांटयो पय प्यावन मथ मथ दुधकी धैया ।
 एनो मुन देव नन्ददास प्रभु की पुन पुन लेन बलया ॥५६॥

(५७)

जहाँ नदी द्रोणन सोन मुहाये ।
 बागन नगरी भजन दृढावन प्रांग घोर घन आयें ॥
 नैली नैली बदन बगपन लाग्यो बज मंजु मे छायें ।
 नन्ददास प्रभु संग माया दिने मुजन मुनि बजायें ॥५७॥

(५८)

गौराजी छाने भरी गी नर नवल धवल महेन गौरा आली मनसाभा ।
 मेरी उरजे मेरी दुख मेरीये गुम्भी मारी मेरीये फुली हे नाज ॥
 गौरा जी के सो बदन बजावन लोट नर भूले भनदावन भाभा ।
 नन्ददास मर नर नगरी छडी नरी दिनेनी नारी निगुना भरी बामा ॥५८॥

(५५)

नमो रहे वाहन सवारी निना के नहो महरि लाने वीजे जगाय ।
 ठगो नितु कहुं बरने भवानक वालक जाय उराय ॥
 निर्द्वन्द्व के नरु नवान जमावा कर पदनों निरुवरि घर काज ।
 दधि भवन वेठि लावो दुध वही छांस बदन ब्रजगज ॥
 बदन छोर बलभद्र जगाउं वृद्धि दुहि लावन हे सब गाय ।
 नन्दान लाग जगाय निहि छिन लीनो ग्रक जगोदा माय ॥५५॥

(५६)

चागन उजारे वेठ करोही कलेउ लाव भवन प्रधेरो हे रे दोउ भैया ।
 पुनरी पन घटा घाट नह विन ने छाउ हमन नटे गटे दोउ धैया ॥
 नागन मिथी छोर छोटिया पय प्यावन मथ मथ दुधकी धैया ।
 एनो मुग केय नन्दान प्रभु की पुन पुन लेन बलया ॥५६॥

(५७)

जहा नहां वीगन मोन मुहाये ।
 बबल गगन भजन दूदावन पोर घोर घन आयें ॥
 नेली नेली बदन बगवन लार्यों बज मंडल मे छायें ।
 नन्दान प्रभु नंग नगा दिने गुजन मुनि बजायें ॥५७॥

(५८)

नीकरी छालो भर सी नट नवल धवल महेन गीतों आली मनसाभ ।
 मेरी हलके मेरीने दुवत तेरीये सुम्भी मारी नेरीये फुली हे नाज ॥
 नीक छालो सी बोल बजावन लोट नगन भीसे भनतावन भाभ ।
 नन्दान नट नगा नगरी छाली नली दिनेनी नली निगुना भरें बाभ ॥५८॥

तरी त्री भरी नर नदन हो पोभा बादी
 नग्न रंग विद्रोहा विद्रायाँ ॥
 दाये दिनी चोर निर्वाहे जल नोर
 नयोगी नाचन नो निल रनि सचुपायो ।
 मज्जान प्रभु नंदनद हो आजाजरी
 रान नुनतारी द्रजदगी नन भायो ॥६१॥

(३२)

रंग भेदेन रंग राग नहीं बैठे कलह ज्ञान तू जल जलूर रंगीली राखे ।
 प्रति विविध लियो मात्र तो तो रंग रहेगो राज
 नैनो अटुर मोर रंगी फूल फूल द्रुम बाग ॥
 नव रंग राग माने पहेर लखनी मारी
 ता पर रीक ज्ञान बीज बीज मोधि बाग ।
 हनी के जल नून उठ जनि पिय पे
 नद छवि निग्य गाये नंदवान दद भाग ॥६२॥

(३३)

प्रसन्न होय पावन की छतना काँउ डोप उला पर बीजे हो ।
 सुख अकरान म्याम जित चली हो तिन आगे ह्वे बीजे हो ॥
 प्रसन्न भवतिर बडे दासी दसरन सब ग्यार क्यों बीजे हो ।
 मंडवाम प्रसन्न गिर न ग्यार ग्यार जां व्यंजन रस भोजे हो ॥९३॥

(5)

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

हरी हरी भनि कर कृष्ण हो गोभा बाढी
 मरण रंग विद्योता विद्यायो ॥
 दायेरे विरनी चोर तीर्ताहे जगन चोर
 नयोर्गा नाथन नो निल रति सचुपायो ।
 मर्यादा प्रभु नंदनद हो आजागरी
 यान् मुखागरी श्रमदागी नन भायो ॥६१॥

(६२)

रग मेहेल रग रग नदां बेटे बूटे जाल न जल जतुन रसीली रावे ।
 प्रति विविध गियो साज तो मो रंग रहेगो राज
 नेगेउं अदुर गोर अपैया फूले फल द्रुग दाग ॥
 नव रंग रंग नाजे पंहेर ललुनी मारी
 ता पर रीक लाल बीच बीच मोधे दाग ।
 हरी के जल नून उठ जनि पिय पे
 नह छवि निरग्य नाये नंदवान बड भाग ॥६२॥

(६३)

जल हाय पालन को दाना कोउ डांप उला पर बीजे हो ।
 मुन जगदान प्रयास दिन जली हो तिन आगे ह्वे लीजे हो ॥
 जल भरीर बने नारी दानन मव जगान क्यों बीजे हो ।
 मंदवान प्रभु फिर न नदाद नद हो व्यंजन रग भीजे हो ॥६३॥

(६४)

जगन नल जलन न जाये दीर ।
 चोर परी देला नजलन नो प्रायो नद मेनि दीर ॥

(६८)

भोजन भयो नाल नीली निधि नो मदन कुज की माह ।
 गरन गरन धन दग्न्यो प्रवल रति नन्द हम् जान्यो नाह ॥
 गगन तवधन अद वेगो ब्रज गोमा कदंब गड बन नाह ।
 संदधान प्रभु तुम चिरर्जायो हम् निरग जुटन गाह ॥६८॥

(६९)

दुखे दुलहिग नुरग हिटोने भूने प्रथम समागम अहो गठ जोरे ।
 गगनरग भुज गरिमदार जाटी चाल कमलकर रमक हुनगे दोउ ओरे ॥
 नुभग नेज पटली नुम वादयो मग्दा वेलन प्राची ओरे ।
 संदधान प्रभु रम दग्नन जहा तवधन दामिनि के अनुहोरे ॥६९॥

(७०)

भूत प्रीतम संग जान न परन दीन जामीनी ।
 संगी मग सहं ओर भुलावन ओरे ओरे रग दग्नन मानो धन दामीनी ॥
 नवल मचो संदेन मोहन मिय नेहेन कनोटी दसन
 प्रीतम संग बनक कामीनी ।
 रग हगन मिय प्यारी जहा संदधान वारो नहा
 गरठ गोपाल संग व्यामा गजगामीनी ॥७०॥

(७१)

भूतदल प्रवरंग जोगी ब्रज दधु ।
 नद वगन मग प्रनदीनि कीच संग राधिका गोरी ॥
 मलार्थ मारी मंचकी उपर मलाधी सीमन पीनोरी ।
 मलाधी माल उगगन गाल संग चमकन दामिनी जोग ॥

(६८)

भोजन भरी लाल नीली निनि नो नयन कुज की माह ।
गगन गगन धन चरन्थो प्रवल गति दन्त हृम जान्यो नाह ॥
गा तचवन दद देगी द्रज गोमा कद्वेय गड वन गाह ।
नंदवान प्रभु तुम चिरजीयो हृम निरु जठन गाह ॥६८॥

(६९)

इते हुनहिग नुरग हिटोने भूने प्रथम समागम अहो गठ जोरे ।
गगन गगन भुज कर्मिदार जडी चारु कमलकर रमक हुनगे दोउ ओरे ॥
गुमग नेज पटली गुम बाढयो मग्दा वेलन प्राची ओरे ।
नंदवान प्रभु रम दग्गत जहा तचवन दार्मिनि के अनुहोरे ॥६९॥

(७०)

भूत प्रानम संग जान न पन्न दीन जामीनी ।
सोयी तच वहं सोर भूलावन थोरे थोरे रग दग्गत मानो घन दामीनी ॥
नवल मचरी नेहेन मोहन मिज नेहेन कयोटी दगन
प्रीतम संग कतक कार्मानी ।
नर हग्न मिज प्यारी जहा नंदवान दारो तहा
गरठ गोपाल संग व्यामा गजगामीनी ॥७०॥

(७१)

भूतवन पचरस प्रीती कज दधु ।
नद नयन धन प्रान्तीनि दीय संग राधिका गोरी ॥
गलार्ध नारी भुजुकी उपर गलाधी सीमान गीनोरी ।
गलाधी नाल उगग्न नाल संग चमकत दामिनी श्रीन ॥

(८५)

मार्त मान ना निवेरे भूले देसां यदन की ।
 मोती मर दादी मानो नित्र के यदन की ॥
 देवत मसीने नवन दोलन मयुरे वन
 मोटे नव कोटि ताम छत्रीने यदन की ।
 मायत मयूर ध्वनि मोटे गुन नर मनि
 नल्ल ने मन्नायोगी नारी छट्टी निनकी ॥
 निनित्र मसीने जहा वलीनट भूले तहा
 मंड मर गावे नगी मधा के यदन की ।
 मंभरान प्रभु जहा नलिना भुलावे तहा
 मर्त मग्न निधु मोभा देव न्याम वन की ॥८५॥

(८६)

मार्त भुलत नवन लाल भलावन व्रज बाल
 गानिदी के तीर मार्त गव्यां हे हिदीरतां ।
 मेमोट दोने री मोर वीज वरे चहु ओर
 मेमोट मयूर ध्वनि लाग्यो वन धोरतां ॥
 मेमोट एने री कृप हरन मन के सुद
 अलि वन गुजे मार्त मन के मयोलना ।
 नदयान प्रभु ग्यारी जोरी अदभन भारी
 देवधोर कीजे जेने चंद्र ती चकोरतां ॥८६॥

(८७)

मार्त मर ना निवेरे छत्रो मर नहीं यमुना ।
 मयूर के मर मोटे छत्री वर भुलत की
 मयूर वनी मयूर मर रहे वेलता ॥

(८१)

मार्त पाव न तिमिरे भूले देसां उदम की ।

मोती मय टापी मागो निव के वदन की ॥

देखत मरीने नयन दोलन मयुरे वन

मांटे नव कोटि काम छरीने वदन की ।

मानत मगर ध्वनि मोटे मृग नर मनि

मणन ने मदायोगी नारी छुटी निनकी ॥

दिनिध मरीर जहा वरीमट भूले तहा

मंड मड गावे नगी गधा के वदन की ।

मंदराज प्रभु जहा नलिना भुलाये तहा

मर्त मग्न निधु नोभा देव न्याम वन की ॥७१॥

(७६)

मार्त भुवन नवन दाव भलावन वज बाल

जालिनी के तीर मार्त मच्यो हे हिंदोरतां ।

मेमोर्ट दोने री मोर जीज वरे नहु और

मेमोर्ट मयुर ध्वनि लाव्यो वन धोरतां ॥

मेमोर्ट जने री कृत हरन मन के वृद

अनि वन गुजे मार्त मन के मनोलना ।

नवराज प्रभु मारी जोरी अद्भुत भारी

देवमोर्ट कीजे जेने चंद्र तो चकोरतां ॥७६॥

(७७)

मार्त वन न तिमिरे वच्यो मर नही यमुता ।

मणन के मग्न मोटे वच्यो वन भुवन की

मग्न वनी मणन मृत नही वेदता ॥

भोजन से पावनीष्ट गलत बात हम भरे

निराली छवि नन्दान वन तून गोरे ॥७६॥

(८०)

गर्मी बावन गर्म श्याम कर ।

दीरा नल विन विन मानिक विन विन सुकन भर ॥

रक्षिता डेन नंद पावनगत अमीम देन गुन्जन सत्र द्विजवर ।

नंदनस प्रभु जियो तन लो ज्यों लों नंद नूरज मालनवर ॥८०॥

(८१)

नर नर छीटे लागी लीको बन्धो धान ।

गोना प्रभर लगगजा छिन्नन नेनन गोपी कान्ह ॥

नार भरे कनक पिन्ककटि भनि भरि देन गुजाल ।

नूर नर मुनि जन कौतुक भुल जय नर जटुकुल भान ॥

नान ललाचन घेन बांगुरी नर रागिनी नान ।

नन्दान विनवावनि बनिन नरी उदसा को नान ॥८१॥

(८२)

नूर नदीर गिनि समुदा नीर लेकन होगी हम भरे अहीन ।

नूर नदीर नदीर धीन नरि एक नान नुदनिन ती नीर ॥

नदी नीर नर नर नदी नीर निर एक नुदनिन धनि नान नदीन ।

नर नदीन नर नदी नीर नदीन नदी नीर छिन्नन द्वे नीर ॥

नदी नदीन नदीन नदी नीर नदीन नदीन नदीन नदीन ।

नदीन नदीन नदीन नदी नीर नदी नीर नीर नीर नीर नीर ॥८२॥

मोहन से पाखोड़ पलत दोन रंग भरे

निरुखी छवि नन्दान वन तून मोरे ॥३६॥

(८०)

गगी बावन गग रगाम कर ।

हीरा रत्न दिन दिन मानिक दिन दिन सुनन भर ॥

रविता देन नंद पाखोड़न अमीन देन गुनजन सब द्विजवर ।

नंदनान प्रभु जियो तन नो ज्यों नों नंद नूरज मानववर ॥८०॥

(८१)

सब रंग छीटे दागी नीको बन्धो धान ।

गोन प्रवर दामजा छिन्नन नेन गोरी कान्ह ॥

नार भरे कलक पिन्काई भनि भनि देन गुजान ।

नूर नर मृति जन कौतुक भुन जय नर जदुगुन भान ॥

नाम पदाब्ज बेन बांगुरी नान रागिनी नान ।

नन्दान विमलावनि वनि नरी उदया को नान ॥८१॥

(८२)

पुन गदीर गिनि गम्भा नीर लेखत होरी रंग भरे अहीन ।

गुन गीर दानदीर धीन ननि एक गीन मुदनिन को नीर ॥

केरी नीर नान नान गीरीर निर एक मृदुप भनि दान संजान ।

गग नदीर नान दे गदीर देननि के नीर छिन्नन हे नीर ॥

अपे अहीन नीरद नै नीर नन्दन गम्भीर नन्दन नदीर ।

नन्दान नान पदमे नीर नान निन्दन नीर नान गुन नै नीर ॥८२॥

गज प्रीति प्रगटित भई लाज ननक नी नोरी ।
 जो गजगाने जंग भोर भलकल निकली चोरी ॥
 गजगन गुन देखन के काज गाठ दुहन की जोरी ।
 निगल नरन्यां न सदे छवि न बढी कछु चोरी ॥
 कोइ छेन छरीले लाने छिरलन रग अमोल ।
 कोइ कमल गर ले परग परगन रुचिकर कपोल ॥
 लने हे लिया के कमल लोचन जव गहि आजे अंजन ।
 जानी अल्लाह कमल मंडल में फंदन फंदे युग मंजन ॥
 देनि विष्णु वृषभान धरनि हंसन हंसन नहा आर ।
 चरनी जान नदन बधु भुज भनि लिये बन्हाई ॥
 पाँछन गुन अपने अंजन पनि पनि लेन दनाय ।
 मनकि मनकि छोगत गुगाट छवि बग्नी नही जाय ॥
 छोगत न देही नदन बधु मागे कुचन पे फाग ।
 जो पं फगुवा दियो न जाय प्यारी राधा के पाय लाग ॥
 अंग वहां लगि दरनिये बडियों गुन मिधु अपार ।
 प्रेम बलोन हृदयलन में किन्हूं रहीं न नभार ॥
 रंग रंगीली बज बधु रंगले गिनिधर पीय ।
 यह रंग भीने नित बगो नंददान के हीय ॥८॥

(८५)

बज में गले री धमार मोहन प्यारी री नद को ।
 नंग दनी रस नोरी गोरी बखो न पन बखू
 लटपे या गुन मिधु उदुंज को ॥
 लाल लाल नृपंग जिदरी उर बडयो गुन आनंद को ।
 नरनल बधु अपने कानुन देखन आन
 नोभर गिनिधर मेन फंद को ॥८५॥

गन्ध प्रीति प्रगटित भई ताज तनक नी नोरी ।
 जो गदगाने जोग भोर भानवन निकसी चोरी ॥
 गतिगत मुख देखन के काज गाठ दहन की जोरी ।
 निम्न दर्जियां से सवे छवि न बड़ी रल्ल चोरी ॥
 मोड़ छेन छपीले नाले छिरान रग अमोल ।
 कोड़ कमल कल ने पराग परगत सचिकर कपोल ॥
 लगे हे तिया के जगल लोचन जब गति आज्ञे अंजन ।
 जानी अकालत कमल मंडल ने फंदन फेंदे युग मंजन ॥
 देनि विष्णु वृषभान घरनि हंसत हंसत नहा आर्ति ।
 चण्डी ज्ञान नयन बधू भुज भंगि लिये बन्हाई ॥
 पाँछन मुख अपने अंतल धनि पनि लेन बनाय ।
 मनकि नमकि छोगत गुगाठ छवि बग्नी नहीं जाय ॥
 छोगत न देही नयन बधू मागे कुदर पे फाग ।
 जो पं फगुवा दियो न जाय प्यारी राधा के पाय लाग ॥
 ओर वहां लंग दर्शनिये बढियों मुख निधु अपार ।
 प्रेम बलोल हलोलन मे किनहूँ रही न नभार ॥
 रंग रंगीली बज बधू रसीले गिन्धर पीय ।
 लह रंग भीने निन बगो नंदवान के हीय ॥८॥

(८५)

वज में गले से बनार मोहन प्यारी से नद को ।
 नंग बनी रल मोरी मोरी बल्लो न पन बल्लू
 लटयो या मुख निधु उदुन्द को ॥
 लाल लाल नृपंग गिररी उर अटयो मुख आनंद को ।
 नमन नम प्यारे कोटुक देखन ओर
 नमन गिन्धर मेन फंद को ॥८५॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

(52)

महा ईश्वर धर प्रभु आकाश एक त्रिस मोहन मदन गोपाला ।
जगत्त देव स्वयम्भूति जों रही न सन्नि तिहि वाला ॥
सबहु दुख दुःख भण्य लखनी सब कियौ रही छाव ।
मेरोहि करी गलान्द बगन लखु अकाल अकालो न जाय ॥

मरर मरर प्राणी भौंठी गति । हर जो प्राणी मनोज्ञ जाये जाति गुनि ॥
 राज एक तान मृदंग नुहाये । मदन मदन मानो मगल बनाये ॥
 मोर मरर पदु पदु चंदन दुराय । प्राये प्राये बिनु मानो बदन छाये ॥
 चंदन मरर मरर माने रंग भौंती । मानो छोट छोट मरर मरर टाक लीनो ॥
 उतले प्राये हे मोहन भौंते रंग रंगा । चरण पलोटत चावे प्रतगा ॥
 रंगली मनिन विन मेन मन्यो भारी । उन हरि उन व्यभान दुलारी ॥
 ललत बचन निन बोधा भई भारी । छवि मो छटत मानो मेन कलदारी ॥
 दिग्विजय छविने प्राय प्यारी प्रिया गान । रंग बन्ने मानो नीतन घन ॥
 निन के रंग रंग का गण नोहे । कंचन छरी जनय जरी छवि कोहे ॥
 उतले रंग की प्रारे नाचरे जो मेली । प्रानुर उलही मानो प्रेम नवेली ॥
 मयीर मन्दाय मध्य मरित गगन । मानो प्रेमरवि अय चाहत उगन ॥
 गमिनी इंदन न्याम देर नये एने । दामिनी निकर मानो नवघन जेने ॥
 मरटी नाचरे अंग नोहे नय पेसी । निगार कानन छविलता जेसी ॥
 प्रेमन ईनत चंद्रावलि उन गई । लाल मो कहत हूं निहारी दिगभई ॥
 मरनी प्रियाय लई छन मो किलोरी । नारीद्वे हंमहे सब बांने हो हो होरी ॥
 राग ज अथर धनी वांसुनी दिनजी । ऐसी कवह नाचरे पिय पे न बाजी ॥
 ऐसीदेन निम प्यारी राधिका दुलाये । हंसत हंसत लाल अकले हो प्राये ॥
 गायन प्रग की बहू हीनति निहारी । निरजीयो प्यारी लाल अटल बिहारी ॥
 गगन कंधर जान्ह बहुत जो दीनो । सब सखी प्रेम प्रीत माथे मान लीनो ॥
 नवनायक वर सुख कहा लो प्राने । विविध कल्यो हे एने जाने सोई जाने ॥६॥

(22)

॥ अथ ईश्वर उवाच ॥
 भक्त्या यः प्रियं कुरुते सर्वं तदा मुनिर्ब्रह्मविदुः ॥
 भक्त्या चैव शिवो नृणां भवति सत्त्विकः शुभराज ॥
 भक्त्या चैव शिवो नृणां भवति सत्त्विकः शुभराज ॥
 भक्त्या चैव शिवो नृणां भवति सत्त्विकः शुभराज ॥

(६३)

काल की भासा हार कुल नव नारी नाथ
 भावन करोला ठारी नदनी जनक की ।
 देवता जिग की मोला नीम के लोचन लोभा
 फुटकर ठारी मानो पुनरी जनक की ॥
 जितनी दान दान कमल कोमल गान
 राग ही प्रतिजा निय के धनक की ।
 नन्दन नृगि जान्यो वृष कर तोरों नारी
 बाग के धन्य जेने बालक के करती ॥२॥

(६४)

दीने दीने पर धन दीनी पाग टरक रही
 द्ये मेहि किन्त ऐने कोन पे जू दहे हो ।
 नाटे तो दीप के पीय ऐनी गादी कोन दीय
 गाटे गाटे भुजत बीच गाटे कर गहे ॥
 भाव भाव बाँधन मे उनीदे लाग लाग जात
 नाची कहा प्राणति मे तो लाग लहे ।
 भवभाव प्रभु निज निज के उनीदे प्राये
 भये प्रात करो दान नान कहा रहे ॥३॥

(६५)

आने तो रेल नृम नृम नयना प्रमद प्रसारे ।
 तुम विजे मरदान द्रव्य प्रसारी नृम प्रसारे ज नंद बुझारे ॥
 तुम नृम विजे नृमारे दान प्रसारे दान्य कोन दिजारे ।
 नृम प्रसारे नृम प्रसारे नृमारे अनित्य जय दाम कर भुम भुझारे ॥४॥

(६७)

काल की माया नाम काल सब सारी माय
 भानन करीला ठाई नदनी जनक की ।
 प्रेमम पिता की माया नीम के मोचन लोना
 फुटकर ठाई मानो पुनरी जनक की ॥
 मित्राणां वरुण दान कमल कोमल गान
 राग ही प्रतिज्ञा निध के धनक की ।
 मन्थन रुनि जान्यो वृष कर तोरों नाही
 बांग के धनैया जेने बालक के करकी ॥२॥

(६८)

दीने दीने पर धन दीना राग टरक नहीं
 दये नेहि किन्त ऐने कांन पे जू बहे हो ।
 गाटे तो दीन के पाय ऐसी गाड़ी कांन दीय
 गाटे गाटे भुजन बीन गाटे कर गहे ॥
 बाल बाल मोचन मे उनीदे लाग लाग जात
 नाही कहा प्राणमति मे तां बाल लहे ।
 भव्यात प्रभु मित्र निन के उनीदे प्राये
 भये प्रात करो दान गन कहा रहे ॥३॥

(६९)

आगे तो रेत कुल सब नदना प्रमथ इकारे ।
 तुम विषो मरणात पुन प्रहारी नन पार्श्वे ज नंद कुकारे ॥
 उम दान विन कुकारे दान प्रमथ प्रमथ कोन विकारे ।
 रेत प्रमथ प्रमथ प्रमथ प्रमथ प्रमथ प्रमथ प्रमथ प्रमथ ॥४॥

Figure 1

मन्त्रोक्तं सर्वज्ञं श्री भोजं तामि मोक्षं पदम न नीतिं श्रेयसं पाठक ।
 एतत्तु मेवै हि त्वं प्रत्यक्षं त्वत्तु कृतं त्वत्तु वन्द्यं त्वत्तु दिव्यं त्वत्तु उक्तं पाठक ॥
 मे, सर्वज्ञं श्री भोजं तामि मोक्षं पदम न नीतिं श्रेयसं पाठक ।
 मन्त्रोक्तं सर्वज्ञं श्री भोजं तामि मोक्षं पदम न नीतिं श्रेयसं पाठक ।
 मन्त्रोक्तं सर्वज्ञं श्री भोजं तामि मोक्षं पदम न नीतिं श्रेयसं पाठक ।

(202)

नर साधु श्रीको जागत री ।
 प्रातः सवे दधि भक्षण स्वाग्निनी मुत्तन मधुर ध्वनि गागत री ॥
 पञ्च गोपी दण्ड ये स्वात्त जितते नोत्तम द्रव जागत री ।
 अक्षय्य नग स्वात्त सत राजत निर्दिष्टर तं ये दधि भागत री ॥
 चन्द्रा चन्द्र मुन्देन्द्र महामूर्ति पदो पद नहीं स्वागत री ।
 नन्द्याग गो रत कृष्णरत पिन्धिर देवे भन जागत री ॥१०॥

(203)

[illegible]

हैं वह नये नये चीजें गले पहनें लड़ी

तेन चीन केरों मारी कहां तुम खसत हो ॥

हैं देखाए धरत जंगल में जहां जंगल धरत

ऐसी दीप वनहू लाज जंगल में रीतत हो ।

नगराज वनधर वनधर में निजिगज वन

देखो फेदा आउ वध चीन में वनधर हो ॥१५॥

(१११)

मोहल की वनधारी वनधारी भरण चली

वड़े वड़े नगरा नारे वनधर रहीं कजर ।

वनिधे वनधारी मारी वनधर वनधर भारी

गोरी गोरी वनधर में मोहल के गजर ॥

नगरा वनधर वनधर वनधर वनधर वनधर

नगरा की वनधर वनधर वनधर वनधर वनधर ।

नगरा वनधर वनधर वनधर वनधर वनधर

नगरा की वनधर में वनधर वनधर वनधर ॥१६॥

(११२)

व नगरा वनधर वनधर वनधर ।

नगरा वनधर वनधर वनधर वनधर वनधर वनधर ॥

नगरा वनधर वनधर वनधर वनधर वनधर वनधर ।

नगरा वनधर वनधर वनधर वनधर वनधर वनधर ॥१७॥

(११३)

नगरा वनधर वनधर वनधर वनधर ।

नगरा वनधर वनधर वनधर वनधर वनधर वनधर ॥

होते सब सुने लोने कील गते भागो लकी

लेन लोन केन्ना गरी कहां तुम कसन हो ॥

सरे हरे कसन भयल लोन में कहां लोन कसन

ऐसी होय कयहु लोन कोन में रीगत हो ।

नरनाम कसन काम कन में गिरिगज पाल

देखो फेदा आउ बध कोन में कसन हो ॥११॥

(१११)

गोपुत ली बलितारी ललियां भरण लकी

बड़े बड़े मगना दासे नून रह्यो कजर ।

बलिते ललियां गारी अंग कन छवि भारी

गोरी गोरी बलियन में मोलिन के गजर ॥

कन में लिये जान हन हन कसन दान

नक ली नुधि भूली नीम धरे नगर ।

नंदनान कनारी दीन गिने गिरिगारी

नक की नेन में भूत गते उगरा ॥१२॥

(११२)

पू कन कसन आन उगरी ।

कन कन कनारी जौट नीम बिनयन लपर कलक गरी ॥

जो कन लोरी ली लो कन कन लो लो लो लो लो लो ॥

कन लो लो लो लो लो लो लो लो लो लो लो लो ॥१३॥

(११३)

कन लो लो लो लो लो लो लो लो लो लो लो लो ॥

कन लो लो लो लो लो लो लो लो लो लो लो लो ॥

(११८)

उत्तम भरणे खात केर के उठाये, पडाये ग्यान छाक ले जावे ।

मिल केरें गाठ न जानी कान खोल ली भैया

इसन गुरुन ताहाहार पावन पन्के पडावे ॥

जान टल्लगनी न खिजाने मेरे जना पर

धार जोधन बेला न नमावे ।

सोखान प्रेमी खान पन्न पड कही बात

बान्ह ने जू तावर भर किकर बुगावे ॥२२॥

(११९)

सुख बज गारी रही तक ताक ।

कर कर गाठ लखन मर्यादित के दन को चखत जय छाक ॥

सध भैया पण्डित मिठारि घर घर ने ले निरुमी थाव ।

सोखान प्रेमी को यह भावन प्रेम प्रीति के पाक ॥२३॥

(१२०)

उत्तीर नदून ने दिगजे मंडल मध्य मोहन छाक खात ।

जोधन रोटी जेरा धरे लख ताक पाक फद नमाल गीता पर गोपन के पात ॥

नर जेन केन ज्यो उठत कुतारे कही कवहु नदून गोंद इमि दर जात ।

सोखान प्रेम खान पण्डित पण्डित खान

जमन देवावद खान्दत गन्त बनावन खात ॥२४॥

(१२१)

खान पण्डित भोजन नमाल मोहन ।

जोधन रोटी जेरा धरे लख ताक पाक फद नमाल गीता पर गोपन के पात ॥

(११८)

जहाँ भस्मों लागे कंग के उड़ाये, पड़ावों स्थान छाक ले जावे ।

मिले देखें गाठ न जानी कौन कौन की भैया

बसत गुरज हाताहार पावन परके पठावे ॥

जहाँ उज्जवली न विचारने में जहाँ पर

धार चोदन बेला न नमावे ।

मोदनाम प्रेमी स्थान परन पद कहीं जान

बालू न जू लावर भर किकर बुलावे ॥२२॥

(११९)

मद वज गारी मही तक ताक ।

दर कर गाठ लसत मर्यादित के दन को चवन जय छाक ॥

मद भेजा पदवान निठारि घर घर ते ले निकसी धाव ।

मोदनाम प्रभु को यह भावन प्रेम प्रीति के पाक ॥२३॥

(१२०)

उसीन मरुत नै विनये मंडल मध्य मोहन छाक जात ।

प्रीति रौंदी जेरा करे लप्य लाक पात मद मर्याद गीता पर गोरन के पात ॥

नर जोर भेज ज्यो उठत कुरारे मही कबहु मरुत गोंद हनि दर जात ।

मोदनाम प्रभु मरुत टाकत मरुत

जसत दगावन खान्दत मरुत बनावन जात ॥२४॥

(१२१)

जहाँ नै भोग्य दान सौख्य ।

जहाँ नै भोग्य दे मरुत मरुत मरुत मरुत मरुत ॥

मोहन जगो मुग्धो यद वच तमे नोति गर्जितानी ।
 उगो दौ गरी चेद गौ नान्यो नद व्यक्तमगुण फलननवाणी ॥
 पालित ते निजमे री मोहन तादित मे हरि तय विदागो ।
 नदजन प्रन् की भग भित्तियो जगो नानर मे पानी ॥२०॥

(१८४)

मगना नद नद निरुज द्रुम नद वल पतौष पुज
 नहा रची नागर दर रावटी उमीर की ।
 नदम पनमान धोर पकज दल दोर दोर
 नन्दन चहुं योर धवनी पकज पाटीर की ॥
 मोहित तन गीत ग्याम मुग्ध नदम वृजधाम
 परान नानग मुगंध मदगति नगीर की ।
 नंदवान गिय पगरी निरुज नगी लानता थोट
 धवन धुनि नृन किकिणी मंजीर की ॥२१॥

(१८५)

मन्त्रो मगनालो आश अनि नाने राने
 रावटी उमीर नान छीरक छीरणी ।
 नदम काने नान नद नगध शनि
 नगर निरुज धरित छवि जीवन गीली ॥
 नगना नद नद नद नद नद नद नद नद नद नद
 नद नद नद नद नद नद नद नद नद नद नद ।
 नद नद नद नद नद नद नद नद नद नद नद
 नद नद नद नद नद नद नद नद नद नद नद ॥२२॥

मोहल लखो मुग्गल जे दल तबे नोति गीतानी ।
 उगीसो रानी चेदानी सो लख्यो नद व्यसल गुन फलन बानी ॥
 भाति नै गिये री मोहन लखि नै हरि लख बिदायो ।
 नदगल जन् की भन मिलियो ज्यों मागर से पानी ॥२०॥

(१२०)

जगना नद नद निरुज द्रुम नर दल फलोप पुज
 नहा रची नागर दर गवटी जमीर की ।
 नदम प्रनमान धोर पकज दल दोर दोर
 नन्दन चहुँ योन प्रवती पकज पाटीर की ॥
 मोहित जन गीन ग्याम मुग्गल मद्रज कजधाम
 फरगन मीनल मुग्गल मदगति मगीर की ।
 नंदवान गिय पगरी निरुज नगी नानता ओट
 धवन धनि नुन किकिणी मंजीर की ॥२१॥

(१२१)

नदो लखलखो राज अनि नाने राने
 नगरी जमीर गीन छीक छीनी ।
 नदम दलारे नान दल नगल भनि
 नगर निरुज धरित छवि जीवन गीरी ॥
 नदगल भनि नदगली नद दोर दोर
 नदगल नदगली नदगली नदगली नदगली ।
 नदगल नदगली नदगली नदगली नदगली
 नदगल नदगली नदगली नदगली नदगली ॥२२॥

(१४४)

जब जो भी मुहल मेरु भग साठे गरी ने सटाही दरम जी ।

उन मोहल सान उन गरजन सान

जिना जिना आटी सान भग्न गरी परम जी ॥

सुं नान गले नीर नदनन लेन नीर

एनचट भई भौर गुध न कलम की ।

नैजान प्रम नो ऐसी प्रीन गाटी

दाटी फेन गरी चावन नग्न की ॥१०॥

(१४५)

अर जायो री गाज मेरे ऐसी तीन बाज आवे

कमल नदन नीकि देवन न दीने ।

ठरने आवन माग्न मे भेट भई

मकल गरी उन लोगन के नीने ॥

जाई कलम कर गरी री निहायवे कू

पंचन की आंट दे दे कांठि श्रम कीने ।

संजान प्रम आवरी नान निन ने मेरे नयना

उनही के अग अग रग रग भीने ॥११॥

(१४६)

मेरे भौन नी गरीरुन ने दनिन प्रेमणी भये

अनर ने निरयो भये ज्ञ नयन सान ।

मेरे गगनरुन केर दानिनी री नान सान

अनर के अगन आवरी के नय प्रयो सान ॥

(१४४)

तब भी गई झुल्लू नेक भग्न गाई परी ने कटावटी दमन की ।

उन मोहक गाने उन गरजन वान

जिना जितनी आटी नान प्रसन्न गयी परस की ॥

रुं गान गाई जीन नयनन कोन नीर

एकचट भई भोर गुथ न कलम की ।

नंगनन प्रसन्न नो ऐसी प्रीति गाटी

आटी कोन परी जायन नग्न की ॥१०॥

(१४५)

रुन जायो री गाज मेरे ऐसी जीन बाज बाज

कमल नयन नोके देखन न देने ।

कलने आवन माग्न मे भेट भई

नयन गयी उन लोगन के नीने ॥

जाति एतन कर गयी री निहारने कू

पंचन की आंठ दे दे कांठि श्रम कीने ।

नयनन प्रसन्न परी नान ने मेरे नयन

उनही के अग अग रग रग भीने ॥११॥

(१४६)

मेरे भीन की गरीबन ने दलित आँखों भये

कलम दे जितनी भये जू नयन वान ।

मेरे गरीबन देन दानिनी री बाज वान

जिन दो जगन आर्य के बाज आर्य वान ॥

(१७१)

धनी जगत् ध्वेन ताग नाग मिर नयो नयो देवन जाय ।
 उमीन मन्त्र ने कुमुम रावटी छिरागो गुलाब नीर नैनन को फल पाय ॥
 मन्त्र नोटा ता मधि बाध्यो दने है मदन नन कदम गी छांग ।
 मन्त्रागमभू प्रियार्जुनम परम्पर मन्त्रक करत केनि
 मन्त्रक हसि डर जाय ॥१६॥

(१७२)

रत्नार नितागरी मन्त्र कज के मधि कुमुम रावटी राजे ।
 मदन के नह आंग छवि छाव गी
 मदन के आगमन मन्त्र फुलन गिगार सब नाजे ॥
 मन्त्रन छेनाते मे निविध समीन नीयरी
 चंदन के नाग मधि चंदन महल छाजे ।
 मन्त्राग प्रिया प्रियम मदन जोरी
 विनया र्ची बनाय श्री बजरज विराजे ॥१७॥

(१७३)

मन्त्राग नाग बन्धो नद निबुज मध्य
 निविध पक्षी तहां गुजार करन री ।
 इमीन मन्त्र गनि बडे प्रिया प्रियम
 मन्त्र चोर महदरी होइन भरत री ॥
 मन्त्राग मन्त्र गी नैन ज्यों मन्त्राग
 मन्त्राग मन्त्राग मन्त्राग मन्त्राग री ।
 मन्त्राग मन्त्राग मन्त्राग मन्त्राग री
 मन्त्राग मन्त्राग मन्त्राग मन्त्राग री ॥१८॥

(१५१)

धन, प्राप्त स्वतः प्राप्त प्राप्त मिल ज्यों ज्यों देवन जाय ।
 उमांग नग्न से कनक नखटी छिगरी गुनाय नीर नैनन को फल पाय ॥
 मन्त्र, न सोदा ता मधि बाध्यों दने हैं मदन न कदम गी छांय ।
 नखनगमभू प्रियाप्रान्तम परम्पर कदक करत केनि
 दबहुक हसि डर जाय ॥१५॥

(१५२)

नीनर निगमारी नग्न कज के मधि कनक नखटी राजे ।
 नदन के नह छी छवि छांय गी
 कुलन के आनन्द नख फुलन गिगार सब नाजे ॥
 मन्त्रन लंगराने से निविध नमीन नीयरी
 चंदन के नाग मधि नदन महल छांजे ।
 नखनगम प्रिया प्रितम नदन जोरी
 विवना नवी वनाय श्री वजराज विराजे ॥१६॥

(१५३)

नखनगम नाग वन्यो नख निवृज मध्य
 निविध पक्षी तहां गुजार कनक री ।
 उमांग नग्न गति बैठे प्रिया प्रितम
 नख नीर महदरी होइन भगत री ॥
 नखनगम नखी नख ज्यों नखन
 उमांग नख नीली मदन वननगम री ।
 नखनगम नख नीली मदन वननगम री
 नखनगम नख नीली मदन वननगम री ॥१७॥

स्निग्धी आह तापे भस्मर वीरे परचराण
 उदुम्बर नाया नागदं धर्मददा ।
 नन्दनम प्रभु मेगी राते जो नर्मदे दान
 पातो मग दगे नं मिदन् तुम दंग ॥६१॥

(१५७)

नेने री मनावे नं मान नीति लागत
 जोनीं ग्ही आगी तो लों लाल नं प्राऊ ।
 नेनी तो मयारी प्यारी ओर हो हयनी
 मोर म्म मोरेंद्र कता हो पृथ्वी चंद बल जाऊं ॥
 चत न मयन इन पय न पयन इन
 ऐसी मोभा फिर पाऊं के न पाऊं ।
 नन्दनम दान दिन कठिन भई
 देगदो नर्म केयां लाल नं आऊं ॥६२॥

(१५८)

प्राप्त नानिवे लागत भीजिये न लाग ।
 मोनी को तुम होदिक रदावो प्यारी न मानत आज ॥
 री री विहारी प्राजापारी मोली बहा वंदन महागज ।
 नन्दनम प्रभु कउरे नरे नयें दाम दान महागज ॥६३॥

(१५९)

तुम मयन देन मयरी री मन मेरी मानवे मो वरत ।
 मयरी री मयन देन मेरी जिय दान देन मेरी दृष्टि देन देन दान ॥
 मो तो मयन मय मेरी न दान दान
 मयन मयरी मय मय देन मयन ।

मिमांसी भ्रातृ तापे अमर वैं प्रस्वराग

उदुल्ल भाया नागेंद पगेंददा ।

नदगम प्रभु ऐसी तां गो मीरे दग

जातो नग दगे ने मिदल दुग दंग ॥६१॥

(१५७)

देने री मनावे ने नात नीति लागत

जोलीं गही आगी तो लों लाल ने प्राऊ ।

तरी तो मयारी प्यारी और हो हमनो

मोर मग मोरेंद्र कला हो पुन्यो चंद्र चल जाऊं ॥

जग न मयन उन पग न पुन्य उन

ऐसी नोभा फिर पाऊं के न पाऊं ।

नदगम दग दिन सठिन भई

देगदो कलं कैयां लाल ने आऊं ॥६२॥

(१५८)

जाल ननिवे लागल मीजिये न लाग ।

गोलीं हो दुग दोंदिक दठावो प्यारी न मानत आज ॥

रो रो मिहारी घावायारी मेलो दहा वंदे महाप्राज ।

नदगम प्रभु मारे रहे मगं दग लाल महाप्राज ॥६३॥

(१५९)

गुं ग मयन देग मारी री मन ऐसी मन्दवे हो दग ।

मिद री पयल देग मों जिम दग तंग मेरी दृष्टि देग देग दग ॥

मो री लाल लाल ऐसी न दंग वद

मिद री पयल देग मों दंग मयन ।

सदस्य सदन सदन सदन सदन सदन

सुनो की धर्म सुन मेरो नाम मान दो ॥६७॥

(१६३)

प्यारी तू रहे रहे कर ।

मेरे मेरे सुन न दाखी जागत ब्रज की लीन
नहीं सुनाये यों हाहा रे ह्रीली मेक मेरो कतरो कर ॥

हो तो धन दीति माहि नमन कुज की परछाहि
नो लीं सुख दाप नान सुख नमि कर ।

नमन नम प्यारी छितहु न होय प्यारी
नमन डियारी नामेवेहोवहुन ॥६८॥

(१६४)

सज सजे मेरे खान नाम सार नामर नंद मिश्र ।

सदा रे नृ पिर नो नदियो दोन न पाये भोर ॥

दादु नदीन दैया दोगी और दोगी दन के मर मार ।

नमन नम के जिन दोगी और नमन और ॥६९॥

(१६५)

सज सज सज सज सज ।

सज सज सज सज सज सज सज सज ॥

सज सज सज सज सज सज सज सज ॥

सज सज सज सज सज सज सज सज ॥७०॥

सुदधान सुदधान सँडे अविजय विजय

सुनयो की धनि सुन मेरो नाग गात हो ॥६७॥

(१६३)

प्यारी का हँ हँ कर ।

जैसे मेरे सुन न बाजही जागत ब्रज को लोग
मारी सुताये योग हाता रँ हँहीली नंक मेरो कपरो कर ॥

हो हो धन ब्रीति माहि नजन कुज की परछाहि
हो हो सुख दास नाग सुख नमिक कर ।

संजगल जगु प्यारी छिपहु न होय प्यारी
नन्द उजियारी नामेजेहोकहुन ॥६८॥

(१६४)

गज गये मेरे धान नाम मारि नागर नंद गियाँ ।

गदा रे नृ पिर गो नहियो होत न पाये भौर ॥

बाहुन नगीर पंगु बोयो और बाँयो धन के मर मौर ।

संजगल जगु के दिन बाँयो अरो नमकर बाँ ॥६९॥

(१६५)

गान बगल भोजनदान ।

नन्द नंद नंद नंद नंद नंद नंद नंद नंद नंद ॥

नन्द नंद नंद नंद नंद नंद नंद नंद नंद नंद ।

नन्द नंद नंद नंद नंद नंद नंद नंद नंद नंद ॥७०॥

ऊनी ते भान जिये वागत गगन ।
 देखि न गुन न एसी संदति सपने ॥
 द्यो नो वार पाछे छूटे नति ध्रुव ।
 नाग नारद्वज नगर विगजे ॥
 शून्य सतिन कण जगमग जौनी ।
 सती छुट्टु मुखा नाने प्रमीमय मोती ॥
 रागो मोती हार चार उर रागो नमी ।
 वनय वना ने सानो उदय होत सगी ॥
 पर मृगशी नन मोतिन के हाग ।
 रोगावनि मिनी मानो यमुना की धारा ॥
 मेलन कानन सोहे नरद्वती ऐनी ।
 गरम पावन देवी मदन नखेनी ॥
 मन्थन उन्नत छवि कहिये कवन ।
 नय दीप निम्न सानो परली पवन ॥
 छिन्न मोने जिन वह मोहनी जे कोट ।
 प्यारी जे पायन राज शान परे मोट ॥
 नख्यान गोर छवि बत नो कहिये ।
 छेने नी नने हो नाग चण्डो ॥३४॥

(१७०)

गरी नो नदन नने चारो पे पे प्यारी नहीं मानत ।
 गुन ते नन की नमी छोटे वन उदामी वैनन शान शान वागत ॥
 नो नो छिन्नो नन नन की चरितनन चरण ने चरननय आपनन वागत ।
 नंदनन ननु जगते नन भेद भरी दुहेनो नानननन वागत ॥३५॥

कर्णों के मान लिये वागवत गणन ।
 देखि न गुनि न एसी संदति सपने ॥
 को को नर पाछे छुटे नति ध्रुव ।
 मानन मानध्वज नगर विराजे ॥
 अवन सविन कण जगमग जौनी ।
 मानों इतु दुधा नाने प्रमीमाय मोती ॥
 प्राणों मोती हार चार उर रागो नमी ।
 पनक मना ने मानों उदय होत नगी ॥
 पद सुखरी नर मोहित के हाग ।
 रोगावनि मिली मानों यमुना की धारा ॥
 मोल कानन सोहे मरुद्वती ऐनी ।
 गरम पावन देरी मदन नवेनी ॥
 मनुष्य उन्नत छवि कहिये कवन ।
 नर दीप जिया मानों परसी पवन ॥
 शिर मोहो जिन वह मोहनी जे कोटि ।
 प्यारी जे पावन प्राज आन परे मोह ॥
 मन्दाग गौर छवि बत नो कहिये ।
 छेने नी नने हो मान जगगोह कहिये ॥३८॥

(१७०)

लोको को मदन मने आने पे पे प्यारी नहीं मानत ।
 दुख के नर की लगी ओले वन उदामी वैनन आन आन मानत ॥
 को को मोहने नर नर की कर्दलनारी कनक ने कनकनय अपवदन प्राणत ।
 मन्दाग गौर जहने नन भेद मने इंदरो नालकटयो जानत ॥३९॥

(१७५)

मारा सब विनुमानी मे जानी कहे देन सैना सब भाँप ।
 कंचन चमक मे न नमान हिनगत सब द्रवधि मानो भीत महावर धाँप ॥
 कदम पैदा भगमवान द्रव सगिक मानो जगय लीये प्रेम पाट धाँप ।
 नदधान द्रव मुन के नाँव लालति जानत हो निज नैक न भाँप ॥८०॥

(१७६)

कदरी नयुवन की मोहन गंग निज दिन रहत खरी ।
 कदमे पदम भयो मोहन की कदमे रहत हरी ॥
 मोहन नद जमुना को मोचन प्रकृति द्रव लना नगरी ।
 नदधान द्रव के पदम जाण ते जीवन मुक्ति करी ॥८१॥

(१७७)

जो न दग्गन मे निरग्न निरग्न हसन सो तो मे जानी री माई ।
 के मेरे रैन रानीने नैनन प्राय प्यारे ति माधुरी मुक्त ताकी बभाई ॥
 हो तो री रीक रीक नो पे कदु कहे न आवे तब दो लोनाई ।
 नदधान द्रव की प्यारी सब कदु मोहि धिजाये जू देला धो केनी वन आई ॥८२॥

(१७८)

जो तो जग जरी तब नन दन लालन कर ।
 लाल रीक सब द्रव की लालन पदम निज मुभन नदारी ॥
 भाँप निरग्न निरग्न लोनेनन लालन मोहन पदगरी ।
 नदधान द्रव की कृति निरग्न री रीक लालन न पदम नदारी ॥८३॥

(१३५)

मन मय विभुमानों से जाती वने देन मैना रग भोंग ।
 मन्दार तनय से न समान हिरण्य रूप उदधि मानों मान महाधर घोंग ॥
 लवण भोग भगवतान द्रव सन्धिक मानों जगय लीये प्रेम पाट पोण ।
 नन्दान प्रम सुग धो गोंग लालनि जानन हो निज नैरु न सोण ॥८॥

(१३६)

गहरी नधुवन की मोहन गंग गिर दिन रहत खरी ।
 जलन धरन भयो मोहन हो नयन रहेत हरी ॥
 गीतन बल जगुदा को मोचन प्रकृति द्रव लना गहरी ।
 नन्दान प्रम के धरन जाए ते जीवन मुखिन खरी ॥९॥

(१३७)

जो न दग्गन ले निग्न निरग हसन मो तो मे जानी री माई ।
 जे नेने रैन रनीने नैनन प्राग प्यारे कि माधुरी मुनत नाकी बकाई ॥
 जो तो रनी रीग रीग मो पे कदु कहे न आवे लव को लोनाई ।
 नन्दान प्रम ते प्यारी ख कदु मोहि धिर्जीये जू देला धो केनी वन आई ॥१०॥

(१३८)

जो तो जग जरी वन मन वन लालन कर ।
 जल रित मय वन की लन पेन गिर नुभन खगरी ॥
 भान रितन रितन नोनेनन लन मोहन खगरी ।
 नन्दान प्रम ते लुनि निगनन री रीग न वन खगरी ॥११॥

मान में बरौरी दाद मटनी भटक नीनी
 जानों कला कीनी पाट डहुरी नर्यानी ।
 गमज जझानी घग्गो न मानी रजतनि
 गनी में तितारो वान कीनी ॥८६॥

(१८२)

सगल कुम मागत वान कीनी ।
 छाडो दाद हग जेहे मोहन रोजन हो नग रीनी ॥
 दूध की को मत नुगम कही देहो कहा नही जु तैनी ।
 मंदवान प्रभु गिरिधर गुन क्यो बोगत बोल बनेगी ॥८७॥

(१८३)

प्रभे मेरी गारी मे वन गारि ।
 का माग्य कुम रीके रीत हो छीन छीन बधि गारि ॥
 दूध वागत हो बरी हगने नही अपनी समदारि ।
 मंदवान प्रभु वनक छाछ मे निदम पान ठगुगारि ॥८८॥

‘ख’ प्रति मे प्राप्त पद

(१८४)

बेनी मे बनी गो कनी गोचरान नरन कनी तो मथुरा वाम ।
 मरिगा चरी तो चरी, मरुग पद मरगा चरी तो चरी वृष्य नाम ॥
 मर मे मरुग चरी मे हगने पाट नीतन मरगा ही मे वनव्याम ।
 मर नाम मरुगचर कन मर मर मर मरुग चरुो विश्राम ॥८९॥

गान में नरोंकी बात मटकी झटकी लीनी
 जगो कहा कीनी बात मटकी नरानी ।
 गगन जगती धरती न मानी रजनी
 गनी में तिलारी वान कीनी ॥८६॥

(१८२)

गगन तुम मागत वान कीनी ।
 आगे बात हम जेहे मोहन रोजन हो नग रानी ॥
 इन की को गन गुनग कीनी देही कहा वही जु तैनी ।
 गंदमान प्रभु गिरिधर गुन क्यों बोलत बोल यतनी ॥८७॥

(१८३)

जे तेरी गारी मे वन गारि ।
 गन गगन तुम रोके रहत हो छीन छीन बधि गारि ॥
 तुम वागत हो गरी हमने नही अपनी समदारी ।
 गंदमान प्रभु तनक छोट मे निदम जात उदगारि ॥८८॥

‘ख’ प्रति मे प्राप्त पद

(१८४)

योनी मे योनी को योनी मोहनन नगन योनी तो मथुरा नाम ।
 मथुरा योनी तो योनी; यमुना पद नगन योनी तो योनी वृषभ नाम ॥
 नग मे नगन योनी मे हमने पद लीला गगन मे हे वरदयाग ।
 नगन नगन योनी योनी योनी योनी योनी दिशाम ॥८९॥

(१८९)

गल दूध लक्षण निशि भोज ।
 मे मरमेज दण्ड अरे वे दण्ड जीवन मानन चोर ॥
 उल्लो छत्र नागर भित्तानत भरत मभूत लक्ष्मण जोर ।
 उल्लो न हृद मयट पीताम्बर गावन के मग नंदकिशोर ॥
 उन गागर में मिता नगई उन गागरो निरवर नय कोर ।
 गेवराग प्रभु प्रपन्न सजि भजिये जेने निरत चतु चकोर ॥६॥

(१९०)

भक्त दर करि कुआ समुना ऐनी ।
 छटि निज धाम विश्राम भूतल निग्रो न प्रकट नीला दिवाई जो नैनी ॥
 परम परमार्थ कारण है पर्वत को स्व गद्भुत देत थाप जैनी ।
 नंदगग जो जाति वृद्ध चरण गई एक रसना कटा कट् देनी ॥७॥

(१९१)

मेरे वाग्य समुना प्रथम आठ ।
 भक्त की चिन वृत्ति सब जानई ताहिने अति ही आनुर जो धाई ॥
 जैनी जाते सब जेनी सब उच्छा ताहि नैनी नाथ जो पुजाई ।
 लक्ष्मण प्रभु नाथ ताहि पर गीतल समुना जू के गृण जो गाई ॥८॥

(१९२)

ज मे लखने छनने जो गावो ।
 मेरे वाग्य नाथ गवय निज दिन बार नहीं पावत ताहि पावो ॥
 लक्ष्मण प्रभु लक्ष्मण गति लखो उच्छात वाज मेनाग बार भुनि जिति जावो ।
 लक्ष्मण की वाग्य समुना प्रथम जेनी ताहि लखे छनो छनी ऐनी निज नाथो ॥९॥

(१८६)

नमः कृष्ण कृष्ण निमि भोम ।
 मे नमो नमः कृष्ण भरे वे नमः जीवन् मायन् नोम ॥
 उमो नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः ॥
 नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः ॥
 नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः ॥
 नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः ॥६॥

(१८७)

नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः ॥
 नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः ॥
 नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः ॥
 नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः ॥७॥

(१८८)

नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः ॥
 नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः ॥
 नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः ॥
 नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः ॥८॥

(१८९)

नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः ॥
 नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः ॥
 नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः ॥
 नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः ॥९॥

(१६७)

प्राप्त समय श्री कलभ नुन को पुण्य पावन विमल मन गाऊं ।
मधुर मधुर वदन गिरिवर को निर्गमि निर्गमि दूग दूगन मिगाऊं ॥
मोहन मधुर वनन श्रीगुन के भव्य नुति नुति हृदय बनाऊं ।
गत मन प्राण निर्देदि वेद विधि यह जपनशी हो मुभल जगाऊं ॥
रही मया चरणन के आगे महाप्रनाद उच्छिष्ट पाऊं ।
नन्दनाम यह नागत हो श्री कलभकल को वन कहाऊं ॥१४॥

(१६८)

आनन उनींद नयन लाल निहारे बहा तुम रैन बिनाए ।
पीक करौल देनियत है प्रिय अचरनि अंजन लग्गाए ॥
जायत भाव उर विन गुण मान हृदय नव चिन्ह दिगाए ।
नन्दनाम प्रभु बोल निगाहे भोर होत उठि धाए ॥१५॥

(१६९)

नन्दनाम नृ के द्वार भोनहि उठि पहाउ ।
निर्गमि आनद नृनि निर्गमि नैन मिगाउ ॥
उज्ज्वल तर धौरी गोदि राता अम्बर मोटे ।
यग्य यमने निर्गमि पूरण चंद की छवि को दे ॥
अरु अशीमल पूत कर अगुनिया लायो ।
रुद्र रुद्र लाल निर्गमि मोचन फल पायो ॥
निद्रि निद्रि निद्रि रानि रमा दहल जगनि किये ।
नरु भूमि लाल मोरु भीरु कितानि परे ॥
नरु न लाल लाल लाल लाल लाल लाल ॥
नन्दनाम नन्दनाम को मेक इतीक गाउ ॥१६॥

(१६७)

मान समय श्री कलभ नुत को पुण्य पावन विमल मन गाऊं ।
 मंदर मलय वदन गिरिवर को निरगि निरगि दूग दूगन मिराऊं ॥
 मोहन मयन वनन श्रीगुन के भव्य नुति नुति हृदय ब्याऊं ।
 मल मन प्राण निवेदि वेद विधि यह उपनयो हो नुभल ताराऊं ॥
 रही मदा चरणन के आगे महाप्रसाद उच्छिष्ट पाऊं ।
 नंददास यह मानन हो श्री कलभकृत को मान कहाऊं ॥१७॥

(१६८)

मानन उदीदि नयन मान निहारे बहा तुम रैन बिताए ।
 पीक कपोल देखियत है प्रिय अचरनि अंजन लखाए ॥
 जाप्रक भाव उर बिन गुण मान हृदय नख चिन्ह दिखाए ।
 नंददास प्रभु बोल निवाहे भोर होत उठि धाए ॥१८॥

(१६९)

नंददास तु के द्वारे भोनहि उठि पहाउ ।
 निरदास मानन नुति निरगि नैन मिराउ ॥
 उज्जय तन धोनी दोदि गता अम्बर मोहे ।
 यमन यमने निरगि पूरण चंद की लुखि को हे ॥
 मल यमीनन नून कर अगुनिया लायो ।
 मल मल कलन निरदगनि मोचन पाल पायो ॥
 निदि निदि निदि रनिन मला दहल तरनि फिरे ।
 लो भरो लाल रंग भरी मितानि परे ॥
 नर न मानन नला मानन ने देनि नुनाउ ।
 नंददास नंददास को नंद उदीनन गउ ॥१९॥

तिति में कपोती कहति छै । नृ० । प्यै नू नहि श्रीर । ग्रहो ॥
 कृष्ण नगमन कर धरै । नृ० । विषम विष भरे तान । ग्रहो ॥
 जो नहि नै नैछन परे । नृ० । चढे चढ पर तान । ग्रहो ॥
 मृगयन मिति नम्य भयी । नृ० । नव कृष्णमाकर चार । ग्रहो ॥
 जगै कन मंडल जुद्धति के । नृ० । मंजिन मजुल हार । ग्रहो ॥
 नगन नृकुट मति गान नृ । नृ० । लाल रमिक मति गाय । ग्रहो ॥
 जोरै नगन वसन समे । नृ० । पहनै पिय, सो जाइ । ग्रहो ॥
 मित्त न लाल गपान को । नृ० । छुवन तिहारे पाइ । ग्रहो ॥
 मोन छांति मोहन मिली । नंददाम बलि जाइ ॥१॥

(२०१)

वराजोरी होरी मचार्य री ।
 धरी मरी क्षुत्ति भटके नाचरी । वराजोरी ॥
 ग जा (१) गान बरहैया कर गति लीनी श्रु व ना र्य दस्त चलावे ।
 मोहनो मुरति मोहनो मुरति रग भरी धुम मचार्य ।
 नंददाम प्रभु नुम वह नायक हितिमिति कंठ लगावै री ॥२॥

‘ड’ प्रति से प्राप्त पद

(२०२)

रमि रम नंद नयन रमि रम । नयन नागरी गन प्रनृष ।
 नय नै ना र ति न विगन । नयन मोहन मय हान ।
 नय नै नयन नयन विगन । नयन नयन नयन गान अग ।
 नय नयन नयन नयन नयन । नय नयन नयन नयन अगिगन ।

तिमि में करीनी करति रहे । नु० । एके नू नहि श्रीर । ग्रहो ॥
 गुरुम गगनन कृप धरे । नु० । विषम विष भरे वान । ग्रहो ॥
 गो मन्दि नैद्यन परे । नु० । चटे चद पर मान । ग्रहो ॥
 गुरुमन मिति नम्य भयी । नु० । नव कृमुमाकर चार । ग्रहो ॥
 जरी कृन मंजुल जुदति के । नु० । मंजुल मजुल हार । ग्रहो ॥
 नगन मृकुट मति वान नृ । नु० । नान रनिक मति राय । ग्रहो ॥
 नीर नगन वनन नगे । नु० । पहने पिय सो जाज । ग्रहो ॥
 निन्द न लान गुपान को । नु० । छुवन निहारे पाज । ग्रहो ॥
 मोन छांति मोहन मिली । नन्दन वनि जाज ॥१॥

(२०१)

वराजोरी होनी मन्नाये री ।

वरी मनी चूर्तिर भटके नावरों वराजोरी ॥

ग जा (१) वान वरुहया कर गति लीनी श्रु व ना श्र दस्त चलावे ।

गोपनी मुर्ति मोहनो मरति रग भरी धुम मन्नाये ।

नन्दन प्रभु तुम वह नावर हितिमिति कंठ वनाये री ॥२॥

‘इ’ प्रति से प्राप्त पद

(२०२)

नगन नद नैद्यन रनिक नर । नन्दन नागरी गन प्रनय ।

नद ले नर २ तिन विगन । नन्दन मोहन मर हाय ।

नद नीय दस्त नर विगन । नन्दन नारी गन जग ।

नद नगन नैद्यन नर नर । नद नन्दन नृ अभिगम ।

नंदन की मंगल लिये इन वनमाल लिये नन्दन को बेचि मांगो उल्लेख ।

नन्दन नन्दन ली छुटि निराश्रय इन वन नन्दन ॥३॥

(२०६)

नन्दन में नन्दन दंड नन्दन नन्दन नन्दन

नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन ।

नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन

नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन ॥

नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन

नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन ।

नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन

नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन ॥४॥

(२०७)

नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन

नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन ॥

नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन

नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन ॥

नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन

नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन ॥

नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन

नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन ॥

नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन

नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन नन्दन ॥५॥

संस्तुत श्रीमान् विष्णु इन्द्र वसुधातु त्रिभुवन को देवि माता उल्लेख ।

सन्तान सन्तु श्री दुर्गा विनायक इन्द्र वसुधातु उल्लेख ॥३॥

(२०६)

सम मे रमित दीऊ मन्त्रत शान्त भवि

मन्त्रिता सन्त मन्त्रित मे रति दोले ।

सम सन्त विष्णु विष्णु मन्त्र मन्त्रित मन्त्रित

मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित ॥

मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित

मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित ॥

मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित

मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित ॥४॥

(२०७)

मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित

मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित ॥

मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित

मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित ॥

मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित

मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित ॥

मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित

मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित ॥

मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित

मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित ॥५॥

दिगन्त गयी गयी गोकुल की कहि न परे छवि भारी ।
 उठि उठि केसर चुका द्योत रंगि गये अटा अटारी ॥
 नगनि नगिन नजि नादरे नुसर अति आनुर के आवे ।
 नालीं अबुज अलकाग विवग हों अनि लपट उठि आवे ॥
 पहिले कान्ह कुवर मनमोहन पिचका उन पर भेली ।
 मानह नीम सुधा करि सीनी नवल प्रेम की बेली ॥
 दुरि नुरि भगनि बचावनि छवि नों आवनि उलटनि सोहें ।
 प्रमदयो अवीर गुलान गगन में जो देखे नो मोहें ॥
 हरि कर पिचका निरखि प्रियन के नैना छवि सों डराही ।
 नयन में उठि नले मनहं पुनि डरकि मीन हों जाही ॥
 पिय के अंग प्रियनि के लोचन लपटे छवि लोभा ।
 मानह हरि कमलनि करि पूजे भई हें अनोपम मोभा ॥
 पिय धिक् छूटन कटाछ कूटिन नर उचटि उलटि कहं लागी ।
 नुरछित परयो तहां भैत महाभट रति भुज भरि ले भागी ॥
 प्रीत कहां नों कहि आवे छवि जो कछु बडी तिहि काना ।
 नंददास प्रभु सब गुण बरपत ब्रजजन पर नंदलाल ॥७॥

(२१०)

नय कहि नयन श्री गिरपर लाल ।
 धाम भाग्य कैरत जू की कन्या मोहन परम रसाल ॥
 रति पति रति नयने दिव्यकर्म तुरंग अर्द्धरंग भाग ।
 जो नय को मोचनि प्रभु नंदनी नय नय गति चाल ॥
 प्रभु पर कयलठ भोग अति इष्टि विधि सब ब्रज चाल ।
 नंददास प्रभासी उत्तम निरनय होत निदाल ॥८॥

दिगन्त नवी नवी गोपल की कही न परे छवि भागी ।
 उठि उठि केसर नृप बदन रंगि गये अटा अटारी ॥
 नगनि नगनि नगि नादरे मुद्रन अति आनुर के आयें ।
 नानी अंजुन बगवाग धियन हों अनि लपट उठि धायें ॥
 नगिन काक कवर मनमोहन पिचका उन पर भेली ।
 मानहु नीम मुधा करि नीची नवल प्रेम की बेली ॥
 हरि नुरि भगनि बचावनि छवि नों आयनि उलटनि सोहें ।
 धूम्रयो अवीर गुलान गगन में जो देखें नो मोहें ॥
 हरि कर पिचका निरगि धियन के नेंना छवि नों दराही ।
 नंगन में उठि नले मनहु पुनि डरकि नीत हों जाही ॥
 पिय के अंग धियनि के लोचन लपटे छवि लोभा ।
 मानहु हरि कमलनि करि पूजे भट्ट हें अनोपम मोभा ॥
 पिय पिय छूटन कटाछ कूटिन गर उचटि उलटि कहं लागी ।
 नुरछित परयो नहां भेल महाभट रति भुज भरि ले भागी ॥
 प्रीत कहां नों कहि आवे छवि जो कछु बडी तिहि काना ।
 नंददास अम् सब मुख बरपत अजजन पर नंदलाना ॥३॥

(२१०)

नय कहि नयन श्री गिरपर नान ।
 आन भाग कीरन जू की कन्या मोहन परम रसान ॥
 रति रति रति नयों दिव्यकर्म तुरंग छर्दरंग भाव ।
 नय नय की मोचनि ब्रज सुंदरी नय नय नय गति जान ॥
 जगते पर जगन्नाथ भोग यदि इहि विधि सब ब्रज जान ।
 नंददास आनरी उपरान निरनय होत निजान ॥४॥

‘ऊ’ प्रति ने प्राप्त पद

(२१७)

प्राप्त नमैं पंछी बोलत हैं, झोड़ी हरि ! अनन घर जाऊँ ।
 ऐसी करी जो कोउ न बूझै निस-ई-निस बहुरची फिर थाऊँ ।
 हठ करें होइ उजियारी पंथ में, गमन समैं लोगन की लाज ।
 तुम ती अपने भगत बिराजी, मोहि कठिन लोगन सों काज ।
 चतुराई चतुरन ने सीखी, पर नारिन सों नाहिन जोर ।
 नेह बिना कोउ प्राप्त न आवै, तनक बिचारी नंदकिसोर ।
 नसिक रसीलें रस की ठनों बिरस किणें कछु रहै न स्वाद ।
 नंददास प्रभु दुरजन बैरी, बिना बिचारें मिथ्या वाद ॥१॥

(२१८)

तुम कय नैं सीखे हो लालन या लगन कों जानन ।
 सोबत नाहि रैन दिन लगी रहै आनरें, कयहूँ हँस बोलत नाहि आनन ।
 ध्यान धरत पुनि अंक भरत ही, गाइ उठत कभों बाके गुन आगन ।
 साँची कहत हों वदन बिलोक्यो भागिनी—

भेद जनायी, कटाच्छन, नंददास पांडन परे त्रिन लै पानन ॥२॥

(२१९)

न्याय अनायक आय नमनी, फिन पाछें कहें भागे ।
 नीय परी नरने नैं देरो दिनक बसत नन त्यागे ।
 डरी नेह यह नैन नकुन गाइ, पाए न दिँग, दुख पागे ।
 नंददास निर्दोष कैं जीये, पंच दान उर लागे ॥३॥

‘ऊ’ प्रति ने प्राप्त पद

(२१७)

प्राप्त नमैं पछी बोनन हैं, द्योती हरि ! अंचन घर जाऊँ ।
 ऐसी करी जो कोउ न बूझै निरा-ई-निस बहुरची फिर आऊँ ।
 हठ करे होइ उजियारी पंच में, गमन समें लोगन की लाज ।
 तुम ती अपने भगन विराजी, मोहि कठिन लोगन सों काज ।
 चतुरार्ध चतुरन ने सीखी, पर नारित सों नाहिन जोर ।
 नेह बिना कोउ पास न आवै, तनक विचारी नंदकिसोर ।
 रसिक रसीलें रस की ठानों बिरस किंगें कछु रहै न स्वाद ।
 नंददास प्रभु दुरजन बैरी, बिना विचारें मिथ्या वाद ॥१॥

(२१८)

तुम कय नैं सीखे हो लालन या लगन को जानन ।
 सोवत नाहि रैन दिन लगी रहै आसरे, कयहूँ हंस बोलत नाहि आनन ।
 ध्यान भरत पुनि अंक भरत ही, गाइ उठत कभीं वाके गुन आगन ।
 साँची कहत हों वदन बिलोक्यो भामिनी—

भेद जनायी, कटाच्छन, नंददास पाइन परे दिन लै पानन ॥२॥

(२१९)

न्याम सुखानक आगु मजनी, फिर पाछे कहूँ भागे ।
 नोक परी मरने नैं देरो दिमल वसन नन त्यागे ।
 डरी नेह का नैना नून गाए, पाए न दिँग, दुख पागे ।
 नंददास विरहित कैसे जीये, पंच दान डर लागे ॥३॥

मोर लज उर मान के, मान पिता की कान ।
 मो गैहलन ते उटि चले, मोर भयो जिय धान ॥
 कान कटी पित्र रंग है, करत जु तनचर रोर ।
 गाज कुहन समयो भयो, रही रंग अर मोर ॥
 मन मुद्र कर जोर को, विनवो ओली आंट ।
 कथाम को यह टेर है, परियो तनचुर खोट ॥
 तनचुर तु गर जाहो, विधना को कर दोर ।
 नीत कान मिर पर छयो, कातिक, मगसिर, पान ॥
 गोती जन मन कल्प करि, छिन न वियोग मुहाइ ।
 क्षण चवाने, का करे, मन मन देव मनाइ ॥
 कोयिल और परीहारा, बर बोली बन मोर ।
 मंगदास गोी बाज न बोली, कहियतु है चितचोर ॥६॥

(२२६)

छाँरी की शिखर भाई कोन को किलोर ।
 सोकरे करन, मन हसन, बंगीयान, काम करन बोली गति जोर ॥
 पवन परनि ज्ञान नपन होत केनि शिखरे पट को चटकीली छोर ।
 गुन सोवरी छोटी पटा नें निकनि घाँस ।

दे छरीली छटा को जैना छरीली ओर ॥

पुँदरीक चहरी ग्वानि हाहा हो मोरी

कदा कडे को है चित दिन नीर ।

मंगदास जाहि जाहि चय गोरी आर जाउ,

भुली की भवन-वनन भुली रजनी मोर ॥७॥

(२२७)

कान मिर मन दर्शिय मोरी ।

कान मुलाय पंडित रामन निगन लगी मत मोहि ॥

नौकरी लाज कर मान के, मान पिता की मान ।
 नौ गैहलन से उठि नाने, भोर भयो निज जान ॥
 नाना कर्तौ निज रंग है, करत जु नमचुर रोर ।
 नाज कुहन समयो भयो, रही रैन अथ भोर ॥
 नैन मुंद, कर जोर को, विनवों ओली बांट ।
 नकाम की यह डेर है, परियो तमचुर बांट ॥
 तमचुर नु गर जाहो, विनवा को कर दोस ।
 नील कान मिर पर छयो, कातिक, मगसिर, पांन ॥
 नौकरी जन मन कल्प करि, छिन न वियोग मुहाइ ।
 दोन चवाने, का करें, मन मन देव मनाइ ॥
 नौदिल और परीहरा, बग बोली बन मोर ।
 नंददास नौ काज न बोली, कहियनु है चितचोर ॥६॥

(२२६)

आठों की खिन्न नार्ड कोन को किलोर ।
 सांगरे करन, मन हरन, बंगीषन, काम करन बैसी गति जोर ॥
 पथ परनि जात नपल होत केनि विघरे पद को चटकीली छोर ।
 गुन सांगरी छोटी पदा नें निकनि छोर ।

वे छडीली छटा को जैना छडीली ओर ॥

पदोने कहनी ग्वाणि हाहा हो मोरी
 कदा नाई को है चित विन मोर ।
 नंददास नाहि बर्तहि चय नीती अत नज,
 भूखी री भवन-भवन भूखी रजनी भोर ॥७॥

(२२७)

नाद निज मन बर्तियन मोरी ।
 नाद मुनन बर्तियन नाना निज नारी मन मोरी ॥

कोउ कछु कर्तनि, कोउ कछु नाचनि, कोउ बडावनि नारी ।
नंदवान प्रभु भोजन-धन ने, सब हो बँटे पारी ॥११॥

(२२ =)

तपन लागी तरनि परत धन घांस भैया, कहँ छाँह सौतल किन देखी ।
भोजन को भई अवार, लागी है भुंख भारी, मेरी आँर तुम पेखी ॥
बन की छाँह दुष्टैर की बिरिया, गैया सिमिटि इहाँ आवै ।
नंदवान प्रभु कहत सखन सी, यहँ ठौर मेरे जिअ भावै ॥१२॥

(२२१)

अहाँ हरि भोजन कीजै, आई छोक इक बार ।
मैं बैठी छकिहारी कदमन , तब रसिक नुकुमार ॥
उँगरी पटा, पटा चहुँ दिन ने, लागी परन फूहार ।
उलटि चली तकिनी ग्यानिनी, कगति नमनि बनिहार ॥
कर, कर ऊँची आँह बुलावन, चल आए सब ग्यार ।
नंदवान प्रभु जो मंडली, बँटे नंदकुमार ॥१३॥

(२३०)

आज बूझा बिपिन कुँज छदभुन नई ।
एक नौनन मुगद, त्याग नौनित नही,
माधुरी मयूर अति पीत फूलन छई ॥
लिखि कहली गेन भूमता भूक रहे,
मयूर गुंजार, मुर कोकिला धनि ठई ।
को राखत ओ दुखभोग की लखिनी ननों—
एकदाम दिँस जलजी नौना नई ॥

कोऊ फट्ट फट्टनि, कोऊ फट्ट गावनि, कोऊ बजावनि नारी ।
नंदवान प्रभु भोजन-पर ने, अब हो बंटे पारी ॥११॥

(२२८)

तपन लाग्यो तरनि परत अब घान भैया, कहें छाह सौतल किन देखी ।
भोजन को भई खवार, लागी है भुंज भारी, मेरी आर तुम पेखी ॥
बन की दैया दुपहर की बिरिया, गैया सिमिटि इहां आवै ।
नंदवान प्रभु कहन सगुन सी, यह ठौर मेरे जिअ भावै ॥१२॥

(२२९)

अहो हरि भोजन कोन, आई छोक इक वार ।
यै बंटी छकिहारी कदमतन, तप रसिक नुकुमार ॥
उमगी पटा, पटा चहुँ दिन ने, लागी परत फुहार ।
उलटि चली तकि नीर खानिनी, कनति नमनि बनिहार ॥
कर, कर ऊँची बाह बुलावन, जन आए सब खार ।
नंदवान प्रभु जो मंडली, बंटे नंदकुमार ॥१३॥

(२३०)

आज ब्रूवा द्रिपित कुंज अदभुत नई ।
तपन सौतल मुगद, त्याग सोभित नही,
भायरी मयूर अति पीत फूलन छई ॥
लिखत कदली सोम भूमता भुज रहे,
मयूर गुंजार, मुर कोकिला प्रति ठई ।
सबै दासक श्री पुरुषोत्तम की दाहिनी मनो—
अनखान दिग इतनी सोभा नई ॥

कर अनुमान विनाशक मृत को, सम्पूर्ण कर प्रेम धर्यमा ।

नन्दान जग पैं गोपी, बानी नेह वर्धिया ॥१८॥

(२३१)

कर कर भोगते जिवके ।

तब रस विजय गँठे गारे, अंचल स्वार करत मित्र मित्र के ॥

फलजैक कीर ऐनि श्री सुत में नाथ नमोवन अपने द्वि के ।

नन्दान प्रभु रंग मँहल में प्राण पिछारी अपने मित्र के ॥१९॥

(२३२)

आलो री नयन कुंज पृथ्व सुंज उज्जर की रावटी,

नामधि राजत पीतम प्र्यारी ।

कंचन बाद गाधि साईं ब्रज बाम,

जिमावन प्राण प्रियहि सूखत हार निचारी ॥

कोऊ द्विजना कर गहें, कोऊ परगत मित्र को,

कोऊ धरमाजा प्रति लावन, फलन की कंचुकि मारी ।

जैमत स्वात्मा स्वाम, वैनि नजाने कोट काम,

नन्दान तहाँ पैं जाड दनिहारी ॥२०॥

(२३३)

अपार करत अकरान स्वाम जैनी पटा लयन मुख रगाम देखत मन ।

नन्दान कोऊ अकृपाव, आगत अत नज न मयन मुक्री बरी पन छन ॥

मननन प्रमिलान नयन छल छलिके मुनि भाग, प्रति प्रति पद गोपीजन ।

नन्दान प्रभु के मुँह मुख जगन दान कैंसें अकनोरी नन मन बन ॥२१॥

कर अनुमान विनामन मृग को, समिपून कर प्रेम धर्मना ।

नन्दान जग पँ पीयो, पीयो नेह नन्दना ॥१८॥

(२३५)

द्वारा करन भांगले शिखर ।

पाद रन शिखर गँठे गारे, अंगन द्वार करत शिखर पिछ के ॥

पदार्थक नीर रंनि श्री मृग में नाप नमोवन अपने द्विष्ट के ।

नन्दान प्रभु रंग मँहल में ब्रान पिछारी अपने पिछ के ॥१९॥

(२३६)

आलो री नवन कुंज पृष्ठ पृष्ठ उज्जर की रावटी,

नामधि राजन पीनम प्यारी ।

कंठन बार नामि नाई ब्रज वाम,

विमादन प्राण शिखरि मूयन हान निघारी ॥

कोऊ शिखर कर गहें, कोऊ परमत पिछ को,

कोऊ चरनाजा पनि नावन, फलन की कंनुकि मारी ।

जैमत न्याय न्याय, देनि नजाने कोट काम,

नन्दान तहाँ पँ जाड दनिहारी ॥२०॥

(२३७)

द्वारा करन अंगन न्याय जैली पटा न्याय मृग न्याय देवत मन ।

नन्दान कोऊ परमावन, आनन अत नज न मलन मृगी बरी पन छन ॥

नन्दान प्रमिताय न्याय छल छल मृगि भाग, पनि पनि बह गोपीजन ।

नन्दान जग के रंनि मृग जग नान केरी अमलो-री नन मन पन ॥२१॥

मुझ में तरीर कियो, बाँट बाँट नुरन दिया।

नन नर के फेरि जियो नन घर के नयो ।

संदधान प्रभु प्यारी, तबहि न कष्ट बरख सरयो,

फेरि जाट समुद्र परयो, बिधि बूझन न द्यो ॥२२॥

(२४२)

आयो तेरी घरन चंद देखत, बस भए कुंजबिहारी ।

ऊँच भईल में तो नम निवन (निगवन?) बारबार भोगारी ॥

तो दिन रहि न सकत नवन प्रान प्यारी,

ऐसी निशुराई नू नुनि री कुमारी ।

संदधान प्रभु प्यारी रूप गुन उजियारी,

ऐसे ब्रजधाम तो मान करत, नू चल लाज निवारी ॥२३॥

(२४३)

गुननि गानगी हवी, जनि पीतम पं गट है लजाइ ।

वे ठी नहि गाननि, कोट जतनन किये,

हो पचिहारी बहंत मनाइ ॥

आए ही मनाइ लीज, मो मो ऐमें कही,

गुनी अब कहा कीज लाग दूसरी उपाइ ।

संदधान प्रभु ऐसी गुन आपही पकारे,

तब पीदे असनी प्यारी को उर लाइ ॥२४॥

‘ए’ प्रति से प्राप्त पद

(२४४)

जिने जिने सारं कमा जपारं भर द्विज वेठें बग्योंकी पान ।

जिने अवधान परसन को सद्य प्रसूयित मन ब्रह्मदान ॥

मुखा में सरीर किया, बाँट बाँट नुरत दिया।

भर भर के फेरि जियो नन घर के नयो ।

संज्यास प्रभु प्यारी, नयनि न नन्दु बरख सरयो,

फेरि साह समुद्र परयो, बिधि बूझन न द्यो ॥२१॥

(२४२)

आयो तेरी वदन चंद देखत, बस भए कुंजबिहारी ।

उगीर मैदल में नो मग निगल (निरखत ?) बारंबार नौभारी ॥

नो बिन रहि न सकत नवल प्रात प्यारी,

ऐनी निठुराई नू मुनि री कुमारी ।

संज्यास प्रभु प्यारी रूप गुन उजियारी,

ऐने ब्रजार्थाल नो मान करत, नू चल लाज निवारी ॥२२॥

(२४३)

मुनिन मगानी हूनी, ननि पीतन पं गट है लजाइ ।

बे री रहि नातनि, कोट जतनन किए,

हो पचिहारी बहोत मनाइ ॥

आर ही सेनाइ लीज, मो मो ऐमें कही,

मुनी अब कहा कीज लाग दूसरी उपाइ ।

संज्यास प्रभु ऐसी मुन आरही पदारे,

तब पीहें अरनी प्यारी को उर लाइ ॥२३॥

५२ प्रति सं प्राप्त पद

(२४४)

जिने जिने सार सभा जयाई भर दिज बेठें वरगोत्री पान ।

जिने अरदन बरसन को सय प्रसूदित मन अकुमान ॥

4. *Neotoma*

[illegible]

(2)

[illegible]

(ब) सुद्रामा चरित

[illegible]

[illegible]

मने नो कुरुषु पञ्चम धन नः मंदन कर्णो नृन्यो नाथ कनन मुनार ।
 कर्णिक कनयो मेरे मेत मेत नमि मेरे कनि नाथे डन हार ॥
 निनयो ननन नन नैताडि कुरुन नो कन धारन धनन मुनानि ।
 मयनन नन नननननन नन कनि नो किन ह न पायो नन ॥४॥

(75)

छाती की नागरी कर्मीन तेरे जीव में बसति
 काटे को दुखद कर्म न दुख ।
 नैनन धन प्रगट प्रेमिल नाम प्रीतिवि
 तेने विनाद नगन ॥
 मुख को गहरी नों छिपाते न छिन्न आर्ध
 कर्मन की जोति ननि जोति हर्षि ।
 नंदप्रसन्न प्रभु ध्यानी एही मकर जीन की बलि
 गहरी नद धर्म कर को निमर नगन ॥२॥

(ब) सुद्रामा चरित

[illegible]

काले नगर, नगर, गति धावे, जो मुग्ध-पति, नग्न-पति गति धावे ।
 नगर नगर को नहिंन प्रवही, रोना रहति पीरिया सब ही ।
 छाये भयो हारि पै द्विज-वर, एकु पीरिया धार नगों कर ।
 ते नगों कहें एकमिनि को मंदिर, बड़े तहें जहुनायक मुग्ध ।
 मोहर आग होयन है छाई, पिय मुग निरखति अनिरतिवाही ।
 जदपि नान-नम दानी चाहैं, प्रेन-विषय रन देति न कहीं ।
 दुष्टि परे द्विज वर तहें जवही, अन्वगार हरि दोरे नवही ।
 भले निले, कहि अनि मृदु बानी, भेंटनि भरि आग दूग पानी ।
 पयले पायन द्विज बैठारे, निज कर-कंचनि चरन पयारे ।
 पीरिय रनिकार पग जन-नायक, जलने पियरे पट मुखदायक ।
 चरन नाहि पट अटक रहत जव, रमा मुन्दरी मुमति पग्न तव ।
 मुग्ध भोजन निविधि प्रकारी, आनि धरे भरि कंचन धारी ।
 जो नाने कबहूँ नहिं दग्ने, क्षीयति नयना निज कर परने ।
 गति धार द्विज मुग नहिं मान्यों, पन्थानंद कंद रन सान्यों ।
 नै बड़े पति श्री जहुनाथा, मुधि कौनी मुगकुल की गाथा ।
 जहो मिल ! जग दैवन ज्ञानन, मुग पयसी पठाए नव वासन ।
 मोनन दैवन सन द्विज आग, अमित जेनि नों जव बरताग ।
 दग्गन बरगन पर नई रजनी, किनहु नगर की डगर नु न जनी ।
 भूने ठिरे रन तहें नगरी, तऊ न मुग की पाई नगरी ।
 भयो प्रभात तव मुग पै आग, अनि दैवन तहें मोल नवाग ।
 ये दिन भले हूँ प्रदो तव नों, तट मयों ठोठ ठोठ चित अठ तों ।
 भयो भई फिर निवहे दुमयो, गायो कछू जियों हें हृमयो ।
 चिन्ता कोरि कोर नै कोने, गर मुठो निज-मुख में कोने ।
 निकरी देर सहुनि सन कोने, तव ब्रंठ रया ! रमन गहि नीने ।
 गमन जग पीड़े द्विज गर्वी, नान धान करि नाना भावी ।
 नान रोन निज धाम मियारो, नई नाहि वहुयक पचि हारे ।

गरी कंधर, नान्न गति ठाढ़े, लो मुन्न-पति, नगपति गति थाढ़े ।
 गरीय गराय को नहिनि प्रबही, रोको रहति पौनिया सब ही ।
 आरों भवो हारि पै द्विज-वर, एक पौनिया बाद गहनों कर ।
 मे गरी जह ग्यमिनि को मंदिर, बंदे तह जहुनायक मुन्न ।
 नोकर चाग होन्न है ठाढ़ी, पिय मुन निरखति अनिरति बाढ़ी ।
 गरीय नान्न-नग दानी आही, प्रेन-विद्यन रन देति न कही ।
 पण्डि परे द्विज वर तह गवही, अगवरा हरि दोरे तवही ।
 गते निने, कहि अनि गृधु बानी, भेंटनि भरि आण दूग पानी ।
 पयले पागन द्विज बैठारे, निज कर-कंठनि चरन पयारे ।
 पौकल रत्निकर पग जग-नायक, जपने पियरे पट मुखदायक ।
 चरन माहि पट अटक रहत जव, रमा मुन्दरी मुनिक पग्न तव ।
 मुन्न भोजन विशिधि प्रकारी, आनि परे भरि कंचन धारी ।
 लो गगने कवहो नहि वन्ने, श्रीपति लयना निज कर परने ।
 गति पाव द्विज मुन नहि मान्यों, पग्यमानंद कंद रन सान्यों ।
 लो बंदे पति श्री जहुनाथा, मुधि कौनी मुनकुल की गाथा ।
 जहो मित ! जग दैवन आनन, गुरु पगनी पठाण नव वासन ।
 योग्य दैवन जग दिनि आण, अस्ति जोनि नो जग वरताण ।
 दयान्न वरदान कर गई रजनी, किनहु नगर की डगर मु न जनी ।
 भूने तियरे रत तह नगरी, तज न गुरु की पाई नगरी ।
 भयो प्रसाद तव गुरु पै आण, अनि दैवन तह मोल नवाण ।
 ये दिन भले हने जहो तव नो, तट नयो ठोर ठोर चित अछ तों ।
 भयो भई दिनि निवहे दुमयो, गानी कछू दिनों हू हसयो ।
 चिन्ता कोरि चौर नै जीने, गर मुँढो निज-गुरु नै जीने ।
 निगरी डेर कहुनि नन कोने, तव उठि रमा ! रमन गहि नीने ।
 गगन दान रोहे द्विज गरी, गगन दान करि दाना भागी ।
 दान रेत निज दान मियारे, नह नोहि बहक पयि हारे ।

जानिकेत पुराण (उद्धरण)

(१)

जानिकेती धिये दहती है । तो एक दिन नन्द नगर के अन्धी
 को जिस नाम की बेंबई पूजिये कुं जानी है । जब पुंडरीक नाम
 को कन्या को पढ़ित भयो । तुम कहाँ जान ही । जब कन्या
 को बेंबई तो नाम पूजिये कुं जान है । जब पुंडरीक नाम बोल्या
 इसी वत्ता कन्या हूं तोनु एक गुरु की बात कहूं । जी तो कहूं नै कहे
 को हूं कहाँ नाहीं । यदि ब्राह्मण की कन्या कर्मा । गुनाई जी हूं ।
 गुहारी बान्ता कहूं तो तो कुं नाहई । भरो यही भागि ज तुम सो
 को आपना गुरु की बात कहत हो । न (दि ?) पुंडरीक बोल्या है ।
 पुंडरीक उवाच । तू हमारी बानी है अर बहुत प्यारी है । तेरे घर हूं नाग
 की बेंबई धरे हूं जाइंगी । तू उर्ये नति । घर ही विषे नाग होइ तो बाबी
 कहे कुं नर्ये । पुंडरीक नाग ब्राह्मण के घर आर्या है । अपनी नन्द
 नाग की भगनी है । नत्तिव गनी है । अर कनक का पीहोय है । अर
 गुन नाग को सोच है । जब वह कन्या । नाग की पूजा करी है । विधि
 नकुनि करी है । तब बाही की माता देवि के अचरज भई है । हे देव
 पदा अतायो है । नाग की नन्द देरी जब वह कन्या पूजि गरि परकमा
 करी जगनी माता कुं काऊं । यह नाग मेरी भरतार है । तब माता
 माहो का तो नाग है । न नत्तिव नेह है । मोहित बाहि जोगि नाहीं ।
 जब नाग जगनी यह सीता है तू जान नाहीं । भत्तिव नर भी धार । अर
 नाग नाग सो धारें तब पुंडरीक हूं वचन मुनि करि मन में सोच करन भयो ।
 माहो भयो आनंद बात कन्या कुं कहिये नाहि । अर्यो कुं गगत है ।
 नाग विधि दिन नै दोहो है । जो नन्द कनक माहरी है । तब कीता नै
 गगत धोयो है । तब वही बाहनी आगना भरतार नु उहो । जो विधि पूजा

जानिकेत पुराण (उद्धरण)

(१)

जानानी विषे राजा है । तो एक मिन नम्र नगरा का अर्घ्यो
 तो दिन नाग की बंधी पूजिये कुं नगी है । जब पुंडरीक नाग
 की कन्या कू वृद्धि भयो । तुम कहाँ जान हो । जब कन्या
 गुमाई जी नाग पूजिये कुं जान है । जब पुंडरीक नाग बोल्या
 इसो कहा कन्या हूं तोसु एक एक की बात कहूं । जी तो कहूं नै कहे
 हूं कहा नाही । यदि ब्राह्मण की कन्या कही । गुमाई जी हूं ।
 गुमाई ब्रह्मणा कहूं तो सो कुं सोहहूं । भरो यही भागि जू तुम सो
 बाग्या एक की बात कहत हो । न (दि ?) पुंडरीक बोल्या है ।
 पुंडरीक उवाच । तू हमारी बानी है अर बहुत प्यारी है । तेरे घर हूं नाग
 की देही भरे हूं आवां । तू उर्ये नति । घर ही विषे नाग होइ तो बाबो
 काहे कु नर्ये । पुंडरीक नाग ब्राह्मण के घर आयो है । अपना नम्र
 नाग की भरयो है । नतिव नगी है । अर कनक की पीहोय है । अर
 मुक्त नाग की सोज है । जब वह कन्या । नाग की पूजा करी है । विधि
 नकुनति करी है । तब बाही की माता देवि के अचरज भई है । हे देव
 कहा अतायो है । नाग की नम्र देरी जब वह कन्या पूजि करि परब्रह्मा
 करी पार्वती माता कुं कही । यह नाग भरो भरतार है । तब माता
 माते का तो नाग है । नू नतिव देह है । मोहित बाहि जीणि नाही ।
 जब कन्या कन्या कहूं सोतार है तू जानि नाही । भतिव नर भी आर । अर
 नाग नाग भी आर नर पुंडरीक ए वचन मुनि करि मन में सोच कन्य भयो ।
 माता भरो आतार जान कन्या कू कहिये नाहि । अर्घ्यो कुं मगत है ।
 नाग विधि दिन नै सोचो है । जा नम्र कन्य माग्यो है । तब कौता नै
 मगत भयो है । तब यही बाबानी आतार भरतार नू कही । जा विधि पूजा

गन्ता भयो है । जब गण्ड जी पृथ्वीक में पत्थरी पत्थिन लै चली पत्ता गयी
 भीम जलन भयो है । जब विजयन किया है जब गण्ड जी योग्यी है । ज्यों
 पुंनरीक कोरि कया भी गेम चरता कही । कालि तुम्हारी काल है । जब
 पृथ्वीक भय कोल भयो है । जब बोल्यो है । गन्तों जी आनं गुरु की
 जान प्रसन्नो को करिष्ये नही । तब ब्राह्मण की गन्ता । नागपतिनी बोझोत
 पति ही । जब गुनवान ही । कल्या ब्राह्मण की नागपतिनी मन में कयो ।
 गण्ड जी आपना गुन गुं पृथ्वीक गुन कीयो है । अर्थ नाग पतिनी गुरु धरम
 की कया कहत भई है । अरु ध्यान को चार्न (चर्चा ?) कही हैगी ।
 गण्ड जी प्रसन्नो करि के कहत है । सर्वोक्त । एकाक्षर प्रधानारं को गुं
 नागिगन्धते । ध्वानजन्म धानगद्या चादानेव्यभिजायते ॥ धान्या ।
 जब गण्ड जी कहत है मेरे तुम गुरु ही । तुम वचन करि मन मांहि मोचु
 गति करी । निरुन रहीं । तुम अरु मे ब्राह्मण को सत्य धरि करि वेद
 की उन्नार सीजियो गद्या तुम कू छोड़ंगी । अरु हूं सारी भर्षी । अरु
 तब एक ब्राह्मण गद्या की जगन्मुनि जगि कू चाल्यो है । भूपी महागज
 की जाना कनि गद्या है चाल्यो है । दोनों एक नगर में भिक्षा करने
 भए है । भिक्षा खाह नै धान्यो नाही तब ए दोनों के प्राण छूटत लार्थ ।
 कन्धी दूरीय के जेन भिया । तब एक हाथी के धान महाधन के पार आए
 नै । जब महाधन धनी का जूठा चन्दा दीना है । तब दोनों भूछे चना
 खाव्यो है । उदरयो नो ब्राह्मणी गंठि बांधि लार्थ है । जेन में प्राण भयो
 है । ए दोनों जगि कू चने है । तब कन्धी पुरीय के धनन रहत है
 महागज पुरी पार जरा है । जब ब्राह्मण बोल्यो है चन्दा पारि वेद ए चना
 चरक चरक कू प्रार्ति होत है । ए महाकथान है । जब कन्धी धोनी है
 पुनरीक लालि ली चरक गया नही आज कंस चरक जान है । जब ब्राह्मण
 बोल्यो है । महागजो महाधनी । जो धारनी प्राण प्राण करीय नो
 खाह लार्थ लार्थ । जगति ए प्रार्ति करीय । माने कानि चन्दा चने
 है...

कहा भयो है । जब गण्ड जी पृथ्वीक से चम्प्री गतिन लै चली गया गली
 बीच जल भयो है । जब किजान किया है जब गण्ड जी बोली है । जहाँ
 पुररक कोर कहा भी नाम चरता कही । कान्हि तुम्हारी कान है । जब
 पृथ्वीक भय कोर भयो है । जब बोली है । गंगाई जी आनन गुरु की
 आन प्रपन को करिष्ये नहीं । तब ब्राह्मण की गन्या । नागपतिनी बोलीन
 पति ही । जब गुन्यान ही । कन्या ब्राह्मण की नागपतिनी मन में कहा ।
 गण्ड जी आपना गुन भु पृथ्वीक पुर कीयो है । अब नाग पतिनी गुरु घरन
 की कहा कहत भई है । अब ग्यान को नागन (नर्वा ?) कही होगी ।
 गण्ड जी प्रपनोकर करि के कहत है । सर्वक । एकाक्षर प्रयानारं यो गुनं
 नागिगम्यते । स्वांगजग्य घनंगत्या चाद्यंत्यभिजायते ॥ आन्या ।
 जब गण्ड जी कहत है मेरे तुम गुन ही । तुम वचन करि नत मांहि गोचु
 गति करी । निरुन र्ही । तुम अरु मे ब्राह्मण को सत्य धनि करि वेद
 की उतार सीजियी गता तुम क ओंजों । अब हं नागी भयंगी । अब
 तब एक ब्राह्मण गता की जग्यनुति जगि क चाल्यो है । भूमी मत्तग्य
 की जाना करि गता है चाल्यो है । दोनों एक नगर में भिक्षा करन
 भय है । भिक्षा पाह नै चाली गही तब ए दोनों के प्राण छूटन लार्थ ।
 चम्प्री पृथ्वी के जेन बिना । तब एक हाथी के आन महावन के पार आए
 है । जब सदावन हन्ती तब जूठा चन्दा दीना है । तब दोनों भूटे चना
 चाल्यो है । चम्प्री नी ब्राह्मणी गति ब्रथि लार्थ है । दोनों में प्राण भयो
 है । ए दोनों जगि क चने है । तब चम्प्री पृथ्वीक क वचन कहत है
 महावन पृथ्वी पार जग्य है । जब ब्राह्मण बोली है चना पारि वेद ए चना
 चम्प्री चम्प्री क जग्य होत है । ए महाकथान है । जब चम्प्री बोली है
 पृथ्वीक पतिनी नी चम्प्री गया गही आज कले चम्प्री जान है । जब ब्राह्मण
 बोली है । महावन महावन । जी चम्प्री प्राण प्राण करिये नी
 चम्प्री पृथ्वी । जगति ए प्राणति कर्तव्य । नाग कानि चना चने
 है ।

(३)

गोशरी नाम जो ॥ श्री रामेनमनमः ॥ अथ नामकेन पराण निर्यते ॥
 अग्नि नमस्कृत महाभाषा करि विनयी है ॥ नामकेन पूराण भाषा करि
 नमस्कार श्री आपण निर्यतै कहत है । सो याह कथा कौनो है ॥ या कथा
 महंमकत पराण येनंपायत रिपि राजा परीक्षित को पृथ जनमेजय की कथा
 कह्यो है ॥ और जनमेजय सा कथा सुनी परम भति की प्राप्ति भयो है ।
 और नरें पाप दंड है । और स्वामी नंदवान जी आपण भिन्नतै भाषा करि
 कहतु है । निर्यतै कहत है गुनाष्ट जी भैरव अभिनाथा नामकेन पूराण मुनिधा
 की रीति कहत है सोनै भाषा वाग्वता कह्यो । महंमकत मै समझी नही ।
 पदं नंदवान जी कहत है निर्यतै श्री वनंपायति रिपि राजा जनमेजय
 को कह्यो है । रिपि कहत है राजा परीक्षित को मरग भयो है पहाप की
 कर्त्ता मोहि दक्षिक नगनि डर्यो नीनी रिपि का पुत्र को मरग भयो है नम्यक
 रतिपुरे को जब राजा जनमेजय पिता का धैर निनति जग्य रच्यो है मरग
 होमि याके निर्यतै जग्य को आरंभ कीयो है । जग्य पुर की विरै रच्यो है
 और वेद वेद की मरगति तै मरग आवत भयो है तब तापो नाग भाग्यो है
 जाग परम भूत को मरग धर्यो है नाग की भी वेद धरै अर भग्य की भी
 वेद धरै । मरग है सो विप को जीव है तोकली नाग है और वेद नाग भागे
 है सो दन्त के मरग जाय रह्यो है जाह मरग प्रथी को भार कृम ही धर्यो
 है । जे विनमहय कतो कहै इन्द्राय स्वाहा नो इंद्र आदि अगति मै आय
 पद्वि ॥ एणि वेद वेद इतनु निर्यतै । और पुंडरीक नाग भाग्यो है ।
 सो वागवनी विरै जाग पद्वि है । और पुंडरीक नर वेदी धरी है ॥
 और महाप्रियवान है और वेदत वेग मरग पद्वि और मरग वाग्वता मै
 पद्वि है । इह प्रकार पुंडरीक नाग वागवनी विरै रह्यो है । एक दिन
 मरग भगदी की अगदी विनवा याके की दिन नाग की वेद पुत्रिका कर्त्ता
 है तब पुंडरीक नाग एक श्रावण की कथा ।

(३)

गाथी राम जी॥ श्री रामायणम् ॥ जय रामकेत पुराण निर्यते ॥
 यदि नमस्कृत महाभाषा करि मिलिती है ॥ नामकेत पुराण भाषा करि
 नमस्कृत जी आपण निर्य न कहत है । सो याह कथा कौनो है ॥ या कथा
 महंभक्त पुराण धर्मपावन रिपि राजा परीछित को पृथ जनमेजय की कथा
 कही है ॥ श्रीन जनमेजय ना कथा सुनी परम गति की प्राप्ति भयो है ।
 श्रीन सर्व पाप दंड है । श्रीन स्वामी नंदवान जी आपण भिन्न न भाषा करि
 कहतु है । निर्य पृच्छत है सुनाउ जी मेरे अभिलाषा नामकेत पुराण मुनिदा
 की सिद्धा वसोत है सोने भाषा वागता कही । महंभक्त में समझी नहीं ।
 यह नंदवान जी कहत है निर्य को श्रीन धर्मपायनि रिपि राजा जनमेजय
 की कही है । रिपि कहत है राजा परीछित को नराप भयो है पहाप की
 कनी मोहि तद्विक नगनि इसी मोनी रिपि का पुत्र को नराप भयो है नमस्क
 रतिपुर की जब राजा जनमेजय पिता का घर निगति जग्य भयो है नराप
 होमि याके निर्य जग्य को आरंभ कीयो है । जग्य पुर की विर्य भयो है
 श्रीन वेद संश की सकति ते नराप आवत भयो है तब तापो नाग भाग्यो है
 जाय वनि भगुर को नरक धरयो है नाग की भी वेद धरे अर भन्य की भी
 वेद धरे । नराप है सो विर्य को जीव है तोकुली नाग है श्रीन संस नाग भागे
 है सो इन्द्र के सरल जाय रह्यो है जोह नमय प्रथी को भार कृष्ण हो धरयो
 है । जे विनागहय कनी कहै इंद्राय स्वाहा तो इंद्र आदि अगति में आय
 पण्डि ॥ श्रीन वेद संश इतनु निगया । श्रीन पंडरीक नाग भागो है ।
 सो वागवनी विर्य जाय पण्यो है । श्रीन पंडरीक नर वेही धरी है ॥
 श्रीन महाविक्रान्त है श्रीन वेदान्त अंग सतत पहयो श्रीन नराप वागता में
 पण्डोय है । यह प्रकार पंडरीक नाग वागवनी विर्य रह्यो है । एक दिन
 नराप भगरी की अगरी विनहा पांच की दिन नाग की वंश पृथिवी कनी
 है तब पंडरीक नाग एक आश्रय की अग्या . . . ।

साधन समझनी कस्त अनभारि जसमान ।
३ मुकुन्द पारव नाया गमयवृज जो विमान ॥२॥

पंचमी

पंचमी कर पणवध करज कदसाया पंचाय ।
नयन कोनी कां यधि जग पुनि कहीये जाय ॥३॥

सांगन

सांगन धानुर अजर कह वरुन मुकवि प्रवीन ।
जगुम सांगन मध्य प्रभु सांगन मानन दीन ॥४॥

उप

उपर उपे उमान नन बनी विमान मुबानि ।
चंद उयो जेवो मनो ऊपर नायो तानि ॥५॥

कपोल

गंद कपोल मुमान नैं क उवहं तो करई नीय ।
न्याय जू लट छुट्टी मनो लनि सकान मो हीय ॥६॥

जग

सप्ततन्त्र मख जग्य शून बैमन्धर कह जाग ।
बढ़ भागिन तव तूण या जग्य पूर्य बढ़ भाग ॥७॥

जान

कहत जान जानाय पुनि मीन-निरोधा नांय ।
कोमन को उतमान ते कह कोविद मख कोय ॥८॥

दिग्गज

एकज कुंवेनी सकल कहि वगना धारी ताह ।
दिग्गज कोविद वरुनही कहीता महे निन्दाह ॥९॥

नरसिंह

मारी नृपती रोजन नई उदित जान भनि हीन ।
जिनि विज नय कसत रानी देविपत भनि केतीन ॥१०॥

मायव भगमागी कयत बनभारि जसमाग ।
 १ मुकुन्द पारव नया मगजबुज जो चितान ॥२॥

प्रेमप्रीति

प्रेमप्रीति कर पल्लव करज करसाया पंचाय ।
 तयनत प्रीति करि यपि अर पुनि कहीये काय ॥३॥

प्रांगन

प्रांगन धानुर अजर कह वरनन मुकवि प्रवीन ।
 जगुम प्रांगन मध्य प्रभु मांगन मान्यन दीन ॥४॥

प्रेम

प्रेम उर उर उरान नभ वनी चितान मुकानि ।
 चंद उर उर उरान नभ उर नभो जार नभो तानि ॥५॥

प्रांगन

गंड प्रांगन मुगान नैं क उरु नैं क उरु नीय ।
 न्याय जू लट कूटी मनी ननि मकान मो हीय ॥६॥

जग

जगजग मय जग जग वरनन कह जाग ।
 बड़ भागिन तव तूय या जग पुख बड़ भाग ॥७॥

जान

कहत जान जानाय पुनि मीन-निराधा नाय ।
 कोमल को उरनान नैं कह कोविद मय कोय ॥८॥

हिमाल

हिमाल कुंवरी सकल कहि वसना धारी ताह ।
 हिमाल कोविद वरनन कहि वसना महे निरवाह ॥९॥

मरिदिया

मरिदिया मरिदिया मरिदिया मरिदिया मरिदिया ।
 मरिदिया मरिदिया मरिदिया मरिदिया मरिदिया ॥१०॥

अनमि

अनमि कर्तव्य देवता, अनमि गीत कहें ।
अनमि कान बगल गह, जाकी कहें न संत ॥२॥

अहि

अहि घागर अहि राह पुनि, अहि इक घातक नाम ।
अहि काली निर पर नर, नटवर बग घनन्याम ॥३॥

कांतार

कांतार कानन काली, पुनि कानन कांतार ।
कांतार दुर्गमिच्छ पुनि, अति कहिये कांतार ॥४॥

काट

काट कान विमोघ इक, काट दिना जी आट ।
काट कहनि वासंधरा, बुद्धिमान नर काट ॥५॥

कृत

कृत मलिन श्री कृत कुल, कृत अनन नम कान ।
कृत कान कवि कानन नों, कृत जु बद्ध कानन ॥६॥

कृत

कृत कान कानन काली, कृत कान कपटी वन ।
कृत कान कानन कहनि, कृत कहिये कान ॥७॥

कृत

कृत कान कृत कान पुनि, कृत कहनि कृत होइ ।
कृत कान कान कान, कृत कान कानन होइ ॥८॥

कृत

कृत कान कानन कान, कृत कान कानन होइ ।
कृत कान कानन कान, कृत कान कानन होइ ॥९॥

जन्मिनि

जन्मिनि कतिमे देवता, जन्मिनि गीत कहैं ।
जन्मिनि काने बगान गह, जाको कहैं न संत ॥२॥

अति

अति आगर अति राह पुनि, अति इक जानव नाम ।
अति काली निर पर ननै, नटवर बय घनन्याम ॥३॥

कांतार

कांतार कानन कहाँ, पुनि कानन कांतार ।
कांतार दुर्गभिच्छ पुनि, अति कहिये कांतार ॥४॥

काष्ट

काष्टा कान विमोष एक, काष्ट दिना जी आठ ।
काष्ट बहुरि वासुंधरा, बड़हीन तर काठ ॥५॥

कुंत

कुंत मलिन श्री कुंत कुंग, कुंत अनन नन कान ।
कुंत कान कवि कानन गी, कुंत जु खड्ग कानन ॥६॥

कुंतल

कुंतल कानन कहाँ, कुंतल कपटी बंन ।
कुंतल कानि कुंतल बहुरि, कुंतल कहिये केत ॥७॥

कुय

कुय कौय कुय कौट पुनि, कुय बहुरि कुय होइ ।
कुय कौट निर कुय, कुय कौट कौट होइ ॥८॥

कुयल

कुयल कौटिली तवी, कुयल वीरनि होइ ।
कुयल कौटिली तवी, कुयल वीरनि होइ ॥९॥

द्रोण

द्रोण गहिरि छिन्न द्रोण पुनि, द्रोण कहे गृह कोन ।
द्रोण बाक अरु द्रोण भिरि, कृष्ण आचार्यन द्रोण ॥१८॥

नंदन

नंदन नन्दन को कहत, नंदन कहिये तान ।
नंदन दन पुनि दंड को, नंदनंदन दिग्यान ॥१९॥

नेन

नेन नयन पुनि नेन पट, मृग मय नेन कहंत ।
नेन शान जय जगमगै, नव नुर्गे भगवंत ॥२०॥

परिष

परिष पवन जय रज नदी, परिष सूर नसि सेष ।
परिष वज्र पर्वत परिष, परिष जो नम्र विषेय ॥२१॥

पलास

हरित वर्त पालास पुनि, राक्षस बहूनि पलास ।
दुम दम मकल पलास है, बहुरो डाल पलास ॥२२॥

पुटरीक

पुटरीक नायक कहै, पुटरीक आकान ।
पुटरीक पनि कमल जहै, कमला को नित वान ॥२३॥

दया

दया मैत्र्य दयुदा दया, दया औनधी होइ ।
दया चंचला कच्छिनी, जेहि जाये नव कोइ ॥२४॥

दलि

दलि दुम दलि दमुन दलि, दलि नित को मधि भाग ।
दलि कच्छिनी दलि कच्छिनी, जाके मया मुदा ॥२५॥

द्रोण

द्रोण महीय भिन्न द्रोण पुनि, द्रोण कहे गृह कोन ।
द्रोण वाक्य अरु द्रोण गिरि, कृष्ण आचार्यज द्रोण ॥१८॥

नंदन

नंदन नंदन को कहत, नंदन कहिये तान ।
नंदन दन पुनि इंद्र को, नंदनंदन दिग्पाल ॥१९॥

नेत्र

नेत्र नयन पुनि नेत्र पट, मृग मय नेत्र कहंत ।
नेत्र ज्ञान जय जगमग, नेत्र नुई भगवंत ॥२०॥

परिष

परिष पवन जल रज नदी, परिष सूर नसि सेष ।
परिष वज्र पवंत परिष, परिष जो नरय विमेष ॥२१॥

पलाय

हरित वर्त पलायन पुनि, राक्षस बहुरि पलाय ।
दूम दल मकर पलाय है, बहुरी दाल पलाय ॥२२॥

पटरीक

पटरीक नायक कहें, पटरीक आकान ।
पटरीक पनि कमल जहें, कमला को नित वान ॥२३॥

पत्ता

पत्ता मय्य अनुदा पत्ता, पत्ता औनधी होइ ।
पत्ता चंचला कच्छिनी, जेहि जाये मय कोइ ॥२४॥

पति

पति पुनः पति अनुन पुनि, पति नित को मधि भाग ।
पति जहिसे पुनि कच्छिनी, जाके मया मुदाग ॥२५॥

हस्त्रि

काय हस्त्रि दग धवी, निगा हस्त्रि होड ।
गुरि हस्त्रि संगली, हस्त्रि हस्त्रि नोड ॥६५॥

हार

हार सुवन को सुल को, हार छेद विस्तार ।
हार दिग्द को योनिवो, मारन कहियन हार ॥६६॥

नयन

नयन विन विनान नन, रिनु वनंत छवि नीर ।
ये नारन नव पदम पद, पदम रंग रघुवीर ॥६७॥

निघ

निघ कल नरि अमीर नों, निघ जो प्रीतम होड ।
निघ कल आचार्य कों, निघ नियत जो नोड ॥६८॥

नृपति

नृपति अतिना पवन पी, यन नहि ताड़ नदूज ।
पायक दिन घन धनुष निनि, मून संगान अरुज ॥६९॥

हृग्नि

तत्तत् हृग्निं वन धनी, निगा हृग्निं होंड ।
जगति हृग्निं संगती, हृग्नि हृग्निं नोंड ॥३४॥

हार

हार मूल को फूल को, हार छेद विस्तार ।
हार विन्दु को योनियो, मारग कहियन हार ॥३५॥

नंग

नंग विष विज्ञान तन, रिनु वनंत छवि नीर ।
ये नारंग नय परम पद, परम रंग रघुवीर ॥३६॥

निद्र

निद्र कद्वत रति अमीर नों, निद्र जो प्रीतिम होंड ।
निद्र कद्वत आचार्य को, निद्र निद्रन जो नोंड ॥३७॥

नृप

नृप को धनिता पवन पी, वन तड़ि ताड़ नवृज ।
पापक दिन घन भनुन निनि, मृग संगम अरुज ॥३८॥

- ४६ कृत्तन ही कृत्तनारी—कृत्तन कृत्तन सारी (क) ।
 ४७ उन ही कृत्तन मानन छवि भरी (क) (ग) (ग) ।
 ४८ कृत्त—कृत्त (क) ।
 ४९ ना कहिये, . . . निगार—कहा कहिये यह नार निगार (क) (ग) ; छार—पार (क) (ग) ।
 ५० राजीव, कृतेन—राजीवकृ जेने (क) (ग) ।
 ५१ जन् मनकारनि—जानेन कारन (क), जन् ना करनि (ग) ।
 ५२ धर्मवीर नरें कर—धर्मधीन करन (क), धर्महि राज करन (ग), धर्मधीन विह कर (ग) ।
 ५३ नर श्रावहि, . . . दुधारा—गुनि आवे सब राज दुधारा (क) ।
 ५४ निग—निग (क) ।
 ५५ मानिन ऐन बेश मुकुमारी, हिम निरिवर जन् ही मतवारी (क) ।
 ५६ भूषन पार—भूषन तार (क) ।
 ५७ रानी—रानी (क) (ग) ।
 ५८ दीन न, . . . मांभ—उदय न दारे राज (क) ।
 ५९ व्याप, . . . जगति—बार बार नम बाल बखाने (क) (ग) ।
 ६० छुट्टी—छुट्टी ; कान-कलम, . . . उगी—काम कला जानी दुनिया उगी (क) ।
 ६१ कृत्त—कृत्त (क) (ग) (ग) ।
 ६२ कृत्त, . . . अहि—कृत्त हिम अहि देन (क) ।
 ६३ एग के साथ 'क' ने यह पतिन ही है—
 यह करे सप जन्म कोट, मृष पर ध्येन कृष् जो होई ।
 ६४ कृ—क (क) ; कृ—कृ (क), कृ (ग) ।
 ६५ कृत्तपति, . . . पार—कृत्त कृत्त नर केवल पार (क) (ग) ।
 ६६ पीट—पाट (क) ।
 ६७ कृत्त, . . . कृत्त-काम—कृत्तों जगपती को अविचार (क) ।

- ४६ कृत्तन ना कृत्तवारी—कृत्तन कृत्तन वारी (क) ।
 ४७ उन ही कृत्त मानन कृत्ति भरी (क) (ग) (ग) ।
 ४८ कृत्त—कृत्त (क) ।
 ४९ ना कहिये, . . . निकारि—कहा कहिये यह नार निकारि (क) (ग) ; दाई—पारि (क) (ग) ।
 ५० राजीव, कृत्तेन—राजीवकु जेने (क) (ग) ।
 ५१ जन् मनकरनि—जानेन करत (क), जन् ना करनि (ग) ।
 ५२ धर्मवीर नरु कर—धर्मवीर करत (क), धर्महि राज करत (ग), धर्मवीर निह कर (ग) ।
 ५३ नर श्रावहि, . . . दुआरा—गुनि आवे सव राज दुआरा (क) ।
 ५४ निज—निज (उ) ।
 ५५ गोबिन्द ऐन धेज मुकुमारी, हिम निरिवर जन् ही मलवारी (क) ।
 ५६ भूषण पारि—भूषण पारि (क) ।
 ५७ प्रीती—प्रीती (क) (ग) ।
 ५८ दीन न, . . . नाक—उदय न वारे साज (क) ।
 ५९ व्यास, . . . वसति—बार बार नम बाल बसने (क) (ग) ।
 ६० छुट्टी—छुट्टी ; कान-कलम, . . . उगी—काम कला जानी दुनिया उगी (क) ।
 ६१ कृत्त—कृत्त (क) (ग) (ग) ।
 ६२ कृत्त, . . . अहि—कृत्त द्वि अहि हेत (क) ।
 ६३ रग के रंग 'क' ने यह पंक्ति दी है—

राह करे रंग अन्त कोट, मुख पर व्यंन कष्ट जो होई ।

- ६०० कृ—कृ (क) ; कृ—कृ (क), कृ (ग) ।
 ६०१ कृत्त, . . . राई—कृत्त कृत्त नर कृत्त पावे (क) (ग) ।
 ६०२ कृत्त—कृत्त (क) ।
 ६०३ कृत्त, . . . कृत्त—कृत्त कृत्त को कृत्त (क) ।

- १५२ बौद्ध बह—बो बहं बहो (क), का बहं बहो (ग) ।
- १५३ बैसन—बैसन (क) ।
- १५४ बरी—बरी (क) ।
- १५५ बो सगुण...विन—बो सुग में तब ही लवि पाव (क) ।
- १५६ ये नो बर—ये नर (क) (ग), ये नोव (उ) ।
- १५७ कस्ता हू के तुम—कस्ता के तुम हों (क) ।
- १५८ निय—नो (क) (ग) ।
- १५९ सगिद्धि बरि—सगो बुर (क) ।
- १६० सनिग ब्रह्मनी—सगो यों ब्रह्मन (क) ; गोद जुठि—दूर दूर (क) ।
- १६१ कहु—को (क) ।
- १६२ ठांड—नाम (क) (ग) ।
- १६३ मखन—मखन (क) ।
- १६४ धान धन धाने—धान धन धाने (ग) ।
- १६५ बैली—बैलि ली (उ) ।
- १६६ बक—बगु (उ) ।
- १६७ लनि—लुनि (क) ।
- १६८ पैरत—पारि (उ) ; या—है (क) ; मपन—प्रेम (क) ।
- १६९ बाके—बाहे (उ) ।
- १७० ह—तो (क) (ग) ।
- १७१ शक...अनी—शक हुतो कुवरि उन्वा मेरी आनी (ग) ।
- १७२ बुद्धि बुद्धि—बुद्धि बुद्धि (क) ।
- १७३ सरसन रन...कीनी—सरसन सनि निचांय रन नीनी (क) ।
- १७४ ददावत—ददावतक (क), ददावतक (ग) ।
- १७५ काल ज मो सनि—कहनी तो सनि (उ) ।
- १७६ सर्व—सो (क) (ग) ।

- १५६ चौडः चहै—चौ चहुं चहै (क), चा चहुं चहै (ग) ।
 १५७ देगल—देगल (क) ।
 १५८ धरै—धरै (क) ।
 १५९ मो नन्दन... पयै—मो मुन में तब ही लखि पायै (क) ।
 १६० ये नो बर—ये नव (क) (ग), ये नोव (उ) ।
 १६१ कस्ता हू के तुम—कस्ता के तुम हौं (क) ।
 १६२ निय—नो (क) (ग) ।
 १६३ सगिहि धरि—सगो दुर (क) ।
 १६४ सगिन बृकनी—सगो यों बृकन (क) ; गोद लुठि—दूर दुर (क) ।
 १६५ कटु—को (क) ।
 १६६ ठांड—नाम (क) (ग) ।
 १६७ मखन—मखन (क) ।
 १६८ धान अम धाने—धान अम धाने (ग) ।
 १६९ बेनी—बेनि की (उ) ।
 १७० एक—जगु (उ) ।
 १७१ लनि—मुनि (क) ।
 १७२ पैकत—पार्ट (उ) ; या—है (क) ; मपन—प्रेम (क) ।
 १७३ पाके—काहे (उ) ।
 १७४ ह—हो (क) (ग) ।
 १७५ एक... यनी—एक हुनो कुबरि उन्वा मैरी आनी (ग) ।
 १७६ वृद्धि वृद्धि—वृद्धि वृद्धि (क) ।
 १७७ मरकत रम... कीनी—मरकत मणि निर्वाय रम कीनी (क) ।
 १७८ ददावर—दद्यान्क (क), दद्यान्क (ग) ।
 १७९ कलत हू नो मनि—कहतो नो मनि (उ) ।
 १८० मरै—मोर (क) (ग) ।

- ५२६ वयो . . . बिना—वड़े ब्राह्मण बिना प्यारे बिना (उ) ।
 ५२७ नह—नह (उ) ।
 ५२८ वोन विधाया—वोन विधाता (क) ।
 ५२९ नु कण्डि हो मारि—नो करो ज्यारि (क) ।
 ५३० उमनि—उमन (क) ।
 ५३१ नंदन . . . उमयारि—चंदन पर चंदन नन्दनारि (क) (न) ।
 ५३२ भोर्—भोर् (उ) ।
 ५३३ बड़ि—भंड (उ) ।
 ५३४ सवि—हेत (क) ; नपटनि—नपटन (क) ।
 ५३५ ग—X (उ) ; को यह—के एक (उ) ।
 ५३६ उरनि ग्गाना—उर ननि माना (ग) ।
 ५३७ भोजन भुज भित्ति जिम अहे, ए पर इन नर परन न कहे (क) ।
 ५३८ ब्रंकर—ब्रंकर (उ) ।
 ५३९ को मनी—वोन पै (क) (उ) ; पिय की—मानो (क) (उ) ।
 इसके पश्चात् 'उ' में यह छंद पाया जाता है—
 गणि गण गुणान गणियं मद्वा नगा विहंग भारे हा ।
 निय नम पेन पणायं जाणं जीयणं जणियं जीत्ता ॥
 ५४० सिपर—सीपन (उ) ।
 ५४१ ननि . . . बिनाला—ननि उनाम दुनाम बिनाला (क) ।
 ५४२ इति प्रीतन—प्रीतन के (क) (ग) ।
 ५४३ ने—ने (उ) ; होनी—घोनी (उ) ।
 ५४४—५४५ इन प्रविश्यों के स्थान पर 'न' ने निम्नांकित पद्यांश दिया है—

नर ही नोमिन नरम उवाग । प्रिया भिली नव प्रेम अयाग ॥
 ननुनि ननुनि पुनि कयुन थाले । पुननि नन नम-भरे विराजे ॥
 ननुनि नन है विप पै जार । जोगे जार जति वैडी मार ॥

५४६ वयो . . . विना—वड़े जाऊ बिना प्यारे विना (उ) ।

५४७ चढ़े—चढ़े (उ) ।

५४८ घोल विद्याला—घोल विद्याला (क) ।

५४९ नु कन्धि भी मारि—नो करो ज्यारि (क) ।

५४९ उमनि—उमन (क) ।

५५० बंझन . . . उग्यारि—बंझन पर बंझन बग्यारि (क) (ग) ।

५५१ भोई—भोई (उ) ।

५५२ बड़ि—भुंड (उ) ।

५५३ सयि—हेत (क) ; नगटनि—नपटन (क) ।

५५४ म—X (उ) ; को यह—के एक (उ) ।

५५५ डरनि ग्गाला—डर नानि माला (ग) ।

५५६ भोजन भुन भिने जिन अहे, ए पर इन नर परन न कहे (क) ।

५५७ बंजर—बंजर (उ) ।

५५८ को मनी—कोय पै (क) (उ) ; पिय की—माली (क) (उ) ।

उसके पञ्चान 'उ' में यह छंद पाया जाना है—

गनि गय गुणण गणियं महुा नगा बिहंग भारे हा ।

निय नय पैन पसाणं जाणं जीयणं जणियं जीता ॥

५५९ निपरि—नीनन (उ) ।

५५९ ननि . . . विद्याला—ननि उगान दुगान विद्याला (क) ।

५६० इनि प्रीतन—प्रीतन के (क) (ग) ।

५६० ने—ने (उ) ; होनी—घोनी (उ) ।

५६१-५६२ इन पंक्तियों के ग्यान पर 'न्य' ने निम्नांकित पद्यांश दिया है—

नर ही नोभिन्न नरन उदार । प्रिया भिली नव प्रेन अयार ॥

नरुनि नरुनि भुनि नरुन बाजे । भुनि नन न्य-नरे विगारे ॥

नरुनि नर है नित पै जात । जोड जारि जहि वैदी गार ॥

मन मुकुट नमस्ति कर्मन सम सदा । तन परात्मन जैन नति लडा ॥
 पदपुत्र भूमि भूमि नदा नद । मोलन, मुनगा, भयन जदो नद ॥
 नृपण भुल-भयन भूमि-नदा । जैन जैन जल बीजति याने ॥
 भूमि न नदी नदी नदी मोहन । नम नद के प्रेम नद प्रेम ॥
 निजद जे नमगा मुन जेन । नमन-निजारी नमन निजनी ॥
 नो नम नमिने प्रेम नदारी । नो नम नमिने नमिने नम ॥

श्री गुरुभ्यो नमः, नमः शिवाय ।

मृतमन्त्रं पुनः कथयन् तौ, तौजं न पश्यन् अंग ॥

नमः सूर्याय नमः सूर्याय नमः । देवी जीवन-मणि मुखांशे ॥
नमः सूर्याय नमः सूर्याय नमः । देवी जीवन-मणि मुखांशे ॥

मुमुक्षु प्रणाम तव कीर्तनं । वेदं वेदि करि कर गहि लौक्यं ॥
 कहेनि मुनिदि तू तों में कर्मा । तत्समंतरी की जगु मर्मा ॥
 शत्रुमर्मा जय एहि कहे मुनी । उपजि परी निग्धा सत-मुनी ॥
 ता कहिये तव भाग वरादि । जानी त व व्रजवाहन आदि ॥

एति यम दण्डन मादयो, उदुमती मुनि वात ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

[illegible]

- १६ यज्जि होत—यजित नये (य) ।
 १७ नव—वन (ह) ; विहरति—विरह्यत (ग) (च) ; विहरति...
 ...अवाप्ता—विहरति पिय सेग रूप अवाप्ता (क) ।
 १८ कछ् एक...आई—कछ् एक लहर प्रेम की आई (क), कछ्
 न प्रेम लहरी काँऊ आई (उ) ।
 १९ के—तो (उ) (न) ; रचो—रचे (घ), परें (च) ।
 २० प्रनय—प्रलय (क) (ग) ।
 २१ तनय प्राण—प्राण नाम (क) ।
 २२ शिती—भली (क) (छ), निती (घ) (च) ।
 २३ मिले हें—मिलंगे (ग) ।
 २४ हिय—एक (क) (घ) (च) ।
 २५ तिहि—तिनि (उ) ।
 २६ सोनदान—सोन प्राण (क) ।
 २७ नोन ते—नीर में (क) ।
 २८ नंदन नरनयन शितकां गियरे, तितकां नंद नुवन पद गियरे (च) ।
 २९ सो दुन नन—सो दुखिन न (क) ।
 ३० दिगि—दिवल (क) ।
 ३१ कर्ही—करै (क), रटै (च) ।
 ३२ बदरा बने—बदर बनैत (छ) ।
 ३३ जैतै—अनि (छ) ।
 ३४ परीकत—मरीरति (न) ; बाहि—जाहि (क) ।
 ३५ जारे नहि...नवन—जाये नहि कारण कवन (च) ।
 ३६ लली पोषियों ने “नवन की ढाला” पाठ दिया है । केवल ‘क’
 लल ‘न’ में इसके स्थान पर “नवन के ढाला” पाठ पाया जाता है ।
 ३७ गिय के—गियनि के (क) ।
 ३८ वन हर—वन हर (क) (घ) ।

- १६ चरित होत—चरित नहै (च) ।
- १७ नंद—नन (ह) ; विहरति—विरहत (ग) (च) ; विहरति...
...अद्यापि—विहरति पिय सेंग रूप अगाधा (क) ।
- १८ कछु एक...आई—कछु एक लहर प्रेम की आई (क), कछु
न प्रेम लहरी फोंक आई (उ) ।
- १९ के—को (उ) (च) ; रखी—रखे (घ), परें (च) ।
- २० पतक—पतक (क) (ग) ।
- २१ तनक प्राण—प्राण नाथ (क) ।
- २२ धिती—भती (क) (छ), निती (घ) (च) ।
- २३ मिले हूँ—मिलंगे (ग) ।
- २४ हिय—इक (क) (घ) (च) ।
- २५ निहि—निनि (उ) ।
- २६ पानपान—पान प्राण (क) ।
- २७ नैन नै—नैर में (क) ।
- २८ नयन नयन जिनकी नियरे, तिनका नंद नुयन पद नियरे (च) ।
- २९ मो दुख नन—मो दुखित न (क) ।
- ३० दिनि—दियन (क) ।
- ३१ कारी—करै (क), रटै (च) ।
- ३२ बदना बने—बदर बनत (छ) ।
- ३३ जैतै—अदि (छ) ।
- ३४ परीरत—परीरति (उ) ; बाहि—बाहि (क) ।
- ३५ जाये नहि...नयन—जाये नहि अरुन कवन (च) ।
- ३६ रामी पोंपियों ने “नयन की छाया” पाठ दिया है । केवल ‘क’
लया ‘च’ में इसके स्थान पर “नयन के छाया” पाठ पाया जाता है ।
- ३७ गिय के—नियनि के (क) ।
- ३८ कल हर—कल हर (क) (घ) ।

- ७ कम्बो—कम्बे (क), कम्बो (घ) ।
- ८ कर्—कहें (ग) ; कब जानें—कब दिन में (क) (ख) (घ),
सन्निता में (ग) ; करै—कहै (ग) ।
- ९ गुम नै . . . मोहै—गुमहरी भाया नय जग मोहै (ग) ।
- १३ रति नमेल—रति नु नमै (ग) ।
- १४ जानै—जाने (ग) (घ) ; प्रेम न तत्व—प्रेम तत्व न (ग) ;
पिछानै—पिछाने (ग) (घ) ।
- १६ मधुनिह—मधुप (क) ।
- १८ देख्यो—जाख्यो (ग) ।
- २० जय—जय (ग), जय (ङ) ; मोहय—मोहिन (क) (ग) (ङ) ।
- २२ ना कह्यै कर—नाहि कलह (क), नाही करि (ङ) ।
- २३ हम के खान पर 'ग' ने यह दोहा दिया है—
नू नुनि नै रन मंजरी, भरी प्रेम प्रमोद ।
बुद्ध जनम अनिगत रतिक, नरमे नरद विनोद ॥
- २४ अनुसारि कै—अनुसार के (क) (ख) (ग) ।
- २१ पुनि—बहिन (क) (ख) ।
- २२ पुनि—नय (ग) ।
- २३ सुषा . . . गनी—तहां मुख दुविधा करि गनी (ग) ; उत्तर
उत्तर ज्यो—ज्यो उत्तर उत्तर (क) (ग) (ङ) ।
- २४ जाज . . . मंदहै—मिल्यो न पिय द्विय परमनि उरै (ग) ; हम
परिज के जाट 'ग' ने यह संक्ति दी है—आपने आपार सम सुधी,
जंक दिलोपति में नाहि सुधी ।
- २६ सुख . . . जाख्यो—भोरी निरद अयस्या जाख्यो (ग) ।
- २७ पियह—जय (ग) ; मेज—मेन (ग) ।
- २८ कह—कर (क) (ख) ।
- २९ प्रेम भाव—भाव प्रेम (क) (ख) ।

- ७ कम्बो—कम्बे (क), कम्बो (घ) ।
- ८ कर्ने—कर्हें (ग) ; नय तामें—नय तिन में (क) (ख) (घ),
सहिया में (ग) ; रने—रहें (ग) ।
- = तुम नैं . . . नोहें—तुम्हरी साथी नय जग मोहें (ग) ।
- १३ रनि नोमल—रनि नु नमैं (ग) ।
- १४ जानैं—जानें (ग) (घ) ; प्रेम न तत्य—प्रेम तत्य न (ग) ;
पिछानैं—पिछानें (ग) (घ) ।
- १५ नयुनिह—नयुष (क) ।
- १६ देख्यो—ताख्यो (ग) ।
- २० अय—नय (ग), तय (ङ) ; मोहय—मोहिन (क) (ग) (ङ) ।
- २२ ना कर्हें कर—नाहि कलह (क), नाही करि (ङ) ।
- २३ हम के ख्यात पर 'ग' नैं यह दोहा दिया है—
तू मुनि नैं रन मंजरी, भरी प्रेम प्रमोद ।
बुद्ध जनम अनिगत रतिक, नरने मरद विनोद ॥
- २४ अतुमारि कै—अनुमार के (क) (ख) (ग) ।
- २१ पुनि—बहनि (क) (ख) ।
- २२ पुनि—नय (ग) ।
- २३ सुख्या . . . गनी—तहां सुख दुविधा करि गनी (ग) ; उत्तर
उत्तर ख्यो—ख्यो उत्तर उत्तर (क) (ग) (ङ) ।
- २४ नाज . . . नोहें—मिल्यो न पिय द्विज परगति उरै (ग) ; हम
परिज के वाद 'न' नैं यह पंक्ति दी है—आपैं आकाश सम सुधी,
जंक विजोयति मैं नाहें लुधी ।
- २५ सुख . . . ताख्यो—भीरी निरद अयस्या ताख्यो (ग) ।
- २६ पियर—पय (ग) ; मेज—मैन (ग) ।
- २७ कट—कट (क) (ख) ।
- २८ प्रेम नाउ—भाद प्रेम (क) (ख) ।

- ७४ गलाप—गलापि (क) ; बहू—बहू (ग) ।
- ७५ रस रेंगी—रस रवनी (ग), रस रेंगी (घ) ; नो....देवी
—ना रस बोड़ा प्रोड़ा रवनी (ग) ।
- ७६ पलाप—पलाप (ग) ।
- ७७ भगल—भगल (क) ; जगत (प) ; अगल—अगल (क) ।
- ७८ निनि—बनि (घ) ।
- ७९ अविग कहू—अविग करू (क) ; ग्लि—रस (क) (ग) ।
- ८३-८४ विगि अविगि वनन रिग जानें, कहू पीय नो सागर जानें ।
रवाकल अहो पात पियारें, मोहन मोहन नाथ हमारें । नय
अनुराग ननुर नंदनाला, गय किरांर चित मोर रसाना (ग) ।
- ८६ जोरि—जो हू (ग) ; मोरि—मो हू (ग) ।
- ८७ अनुनय—धिनय जू (घ) ।
- ८८ मुवा नी—मुवा की (क) ; रूप की—रूप ती (घ) ।
- १०० मेज न....भोरी—मेज नवनि लाज जिय भोरी (क), मेज
नात नजनि कपों भोरी (घ) ।
- १०१ अकृष्टि....नहिये—नखि नन कोप करति ज्या नहिये (ग) ।
न के अक 'न' ने यह पंक्ति दी है—सुंदर पिय कौह सागर जानि,
कनरें अनरें भोहनि ताति ।
- १०४ दनि....नियारें—दनि पंकज न कोषु नियारें (व) (ग) ।
- १०६ रसीलें—रसीलें (क), रसीली (ग) ।
- १०७ रिम-रस—रस रिम (क) (ग) ।
- १०८ रवि....नहिये—रवु जन रिदु कवु अविदु नहिये (घ) ।
- ११३ रज लरां—हू लरां (घ) ।
- ११४ रद—रस (घ) ; सारंग—सारंग (ग) ।
- ११६ रसकल....रसी—रसक विदु कल जो रसि रसी (क) ।
- १२३ रिज—रस (क) (ग) (घ) ।

- ८४ गलप—गलपि (क) ; गह—गह (ग) ।
- ८५ रस ऐसी—रस गवती (ग), रस रैती (घ) ; मो....देती
—सा रस बोझा प्रोड़ा रदती (ग) ।
- ८६ गलप—गलप (ग) ।
- ८७ भग्न—भग्न (क) ; जग्न (प) ; धमिन्—धमिन् (क) ।
- ८८ निनि—निनि (घ) ।
- ८९ धाँधि कर्ह—धंस कर (क) ; गिन्—रस (क) (ग) ।
- ९०—९१ विनि अदिनि वनन रिम साने, कर्ह पीय गों सागर जानें ।
स्वाकं अहो फल पियारे, मोहन मोहन नाथ हमारे । नय
अनुराग ननुर नंदनाला, गय बिलांर चित मोर रसाना (ग) ।
- ९२ जोह—जो ह (ग) ; मोह—मो ह (ग) ।
- ९३ अनुनय—धिनय जु (घ) ।
- ९४ नुवा सी—नुवा सी (क) ; रूप सी—रूप सी (घ) ।
- १०० मेज न....भोरी—मेज नवनि लाज जिय पारी (क), मेज
नाल वजनि क्यों भोरी (घ) ।
- १०१ अरुटि....नहिये—रवि नन कोर करति ज्यों नहिये (ग) ।
न के अरु 'न' ने यह पंक्ति दी है—सुंदर पिय कौहु सागर जानि,
करार अनय भोहनि जानि ।
- १०२ पुनि....नियार—पुनि पंकज न कोपु नियार (घ) (ग) ।
- १०३ रसीले—रसीले (क), रसीली (ग) ।
- १०४ रिम-रस—रस रिम (क) (ग) ।
- १०५ रवि....नहिये—रसु जन निह कसु अदिह नहिये (घ) ।
- ११० रस ज्यों—है त्यों (घ) ।
- १११ रस—रस (घ) ; सारंग—सारंग (ग) ।
- ११२ रसज्ज...गह—रसज्ज निह कसु जो ननि गह (क) ।
- ११३ रिम—रस (क) (ग) (घ) ।

- १९८ गर—गर (घ) ; गेंडनि अम-नन—गेंडन अम के नन (क) ।
 १९९ हूँ...तरेरे—हूँ नन करि ननन तारे (घ) ।
 १९९ जो—जड़ (घ) ।
 १९९ धुरि—धरि (क) ।
 १९९ मै—मो (घ) ।
 १९९ जनी अक्षिष्ट—अक्षिष्ट दृष्ट (क) (ख) ।
 १९९ गरने गर—गर वे जे (क) ।
 १९९ नीति...बिराट—त्यों त्यों सहनरी सों चिर राट (क) (ख) ।
 १९९ सम—सरि (घ) ।
 १९९ अगमाने—अगमाने (घ) ; विकूलये—प्रतिकूलहि (क) (ख) ।
 १९९ काड—काय (क) (ख) ।
 १९९ आरति करि—अरति कंप (घ) ; जुड़ाट—जनाट (क) (ख) ।
 १९९ नु हँ—यहँ (क) (ख) ।
 १९९ अज हँ—गिय नु (घ) ।
 २०० मन ही मन—मनई मन (घ) ; मूर्ख—सूख (क), लूख (ख) ।
 २०५ परषा—परे (क) ; धूम...नयानी—धूमति फिर कछु कहति
 न जानी (ख) ।
 २०८ अहिम—अनहि (क) (ख) ।
 २१२ आरिह...नियो—आरिह आहिर रहियो नियो (क) ।
 २१३ दिह—दग (क) (ख) ।
 २१३ तरे—तरे (क) ।
 २२३ गते—गते (घ) ।
 २२५ इनके जाय 'क' ने यह धरित हो है—हूँ कुमुम ब्रजना ब्रज,
 न कर कतर ओत कर गौले ।
 २३३ मज्जन मज्ज वन भाग्य वहां, मुह गह्वर वन देनि (क) (ख) ।
 २४५ अंग मैसनि—अंगहि अरि (घ) ।

- १७८ वर—वर (घ) ; गंडनि धम-गन—गंडन धम के गण (क) ।
 १७९ डूती...तारेरे—डूती गन करि नैनन तारे (घ) ।
 १८० जो—जय (घ) ।
 १८१ धुरि—धरि (क) ।
 १८२ मे—मो (घ) ।
 १८३ जनी छमिष्ट—अलिक दृष्ट (क) (ग) ।
 १८४ गरये गुर—गुर ये जे (क) ।
 १८५ नीति...किरारि—त्यां त्यां सहचरी सों चिर रारि (क) (ख) ।
 १८६ सम—सरि (घ) ।
 १८७ अमाने—अनमाने (घ) ; विकूलये—प्रतिकूलहि (क) (ख) ।
 १८४ काड—काय (क) (ख) ।
 १८९ आरति करि—अरति कंप (घ) ; जुड़ाई—जनाई (क) (ग) ।
 १९० नु है—यहै (क) (ग) ।
 १९१ अज हौ—गिय जु (घ) ।
 २०० मन ही मन—मन ई मन (घ) ; सूके—सूके (क), सूके (ख) ।
 २०५ परया—परे (क) ; घूम...नयानी—घूमति फिर कछु कहति न जानी (ग) ।
 २०८ अहिन—अनहि (क) (ग) ।
 २१२ आरिह...निर्या—आरिह आहिर रहियों निर्या (क) ।
 २१३ बिह—अन (क) (ग) ।
 २१४ तरे—तरे (क) ।
 २२३ गते—गते (घ) ।
 २२४ एते छय 'क' ने यह संकेत दी है—इती कुमुद बाजना बाजि,
 नर नर सतर ओत कर गोजे ।
 २२५ मज्जन समर वन माने तहां, मुह गह्वर वन देनि (क) (ख) ।
 २४२ दीन मेसनि—दीनहि दानि (घ) ।

- ३१६ परलोचन—परलोक हो (क) ।
 ३१७ गगन गायना—गगत गायना (क) (ग) ; गग को—गग के (क) ।
 ३१८ जगति—गुपति (क) ; तोहि—जो ही (क) ।
 ३१९ इस के बाद 'प' ने यह संक्ति दी है—जो पिय कगक कहू कगगायं, गादी करै परयो तिहि पायं ।
 ३२० गग भान में निरक बनावे, गुहि गुहि फूल माल पहिरावें (क) (ख) (घ) ।
 ३२१ बज—मिल (क) (ग) ।
 ३२२ भीतर, . . . लहे—मग के मुख मुख अंतर लहे (क) ।
 ३२३ रे नग ! मग—रेन गगन (क) ।
 ३२४ जाइ—आही (क), आई (घ) ; नाइ—ताही (क) ।
 ३२५ नग, . . . जतायै—हृदय कंग बैचन जतायै (ग) ।
 ३२६ इस के बाद 'न' ने निम्नांकित पद्यांग दिया है—

हुनी बरनी चारि प्रकारि, तिय पिय प्रेम बढ़ावनि शारि ।
 प्रथमहि गुहू निमृष्ट नु अरथा, पुनि बरनी तारि अमितरथा ।
 तितरौ पय हारनी गुनी, चाँची स्वयंदूतिका गुनी ।
 प्रथमहि तन को भाव बिचारै, बुद्धि आपुनी पुनि अयचारै ।
 नय यदि दुहुत भरीनों देख, भार नय अपने निर लेख ।
 बुद्धिहि जूनि नू आनि मितायै, दूति निमृष्टि अधिन कहदायै ।
 मोहि अनेक गुहि आतुरी, लखि पावहि पिय की आतुरी ।
 प्रथम ठारि नै नाहिन उरै, लूकसंजन है तहें नंतर ।
 प्रथम पछु जानै कहै कनाई, पिय हि मँत-नय करै मुहाई ।
 दुसराहि जाग मितायै जोई, अमितार्थी कहावति मोई ।
 जो पछु सठिबै है नैव-नैव, माता फूल कनेन, नु चंगन ।
 है आर्य, नहै नै नै आर्य, पय शारिनी दूति कहायै ।

३१६ परलोकाहु—परलोक हो (क) ।

३२५ नान्न जाचना—नान्न जाचना (क) (न) ; नान को—नान के (क) ।

३२७ जुगति—जुगति (क) ; जोहि—जो ही (क) ।

३३४ इस के बाद 'प' ने यह पंक्ति रो है—जो पिय कगक कहु कसपायै,
पाटी करै परयो तिहि पायै ।

३३७ यान भाग में तिलक बनाये, गुहि गुहि फूल माल पहिराये (क)
(ख) (घ) ।

३४० बय—मिस (क) (न) ।

३४५ भीतर....तहें—मय के मुख मुख अंतर तहें (क) ।

३४७ रे नग ! नग—रेन गगन (क) ।

३५५ जोइ—आही (क), आई (घ) ; नाइ—ताही (क) ।

३७८ नन....जनायै—हृदय कंप वचनं जनायै (ग) ।

३७९ इस के बाद 'न' ने निम्नांकित पद्यांग दिया है—

दुनी बरनी चारि प्रकारि, तिय पिय प्रेम बढ़ावनि हारि ।
अथमहि एकु निमृष्ट नु अरया, पुनि बरनी तावें अमितरया ।
तिनरौ पय हारनी गुनी, चाँची स्वयंदूतिका गुनी ।
अथमहि तन को भाव विचारै, बुद्धि आपुनी पुनि अयधारै ।
नय अति दुहुत भरीनों देह, भार नय अपनै निर नेंह ।
कुतिहि जुनि नु आनि मिलायै, दूनि निमृष्टि अयिन कहायै ।
मोहि अनेक कुटि चातुरी, अगि शायहि पिय की चातुरी ।
अगल डोरि नै नाहिन प्रै, नुकसंजन है तहें गंचरै ।
अन पदु पावै यहँ कनाई, पिय हि मैन-नय करै मुहाई ।
तुलसि जाग मिलायै जोई, अमितायी कहावति मोई ।
जो कहूँ सखि ई नेंह-नंदन, माता फूल कुनेन, नु वंजन ।
ई आये, नहें नै नै आये, पय हारिनी दूनि कहायै ।

- ३५ व्याघ्र हरि जघ केतरी घेरी व्याघ्र गजारि (ए) ।
- ३६ होयी—हूयी (अ) ; मेर नूर भनि सारहूल पलभक्ष सिध नृगारि (ए) ।
- ४३ जनकप—जननय (अ) (आ) (उ) ।
- ४७ ये जु....करि—अष्टसिद्धि जो कष्ट करि (अ) ; तहँ—कहत (आ) ।
- ४८ नां—ते (आ) (ए) ।
- ५१ या—जे (ए) ।
- ५२ ते नय बल्लभराज के—तेई श्री वृ भान के (ए) ।
- ५३ मुक्ति—मोक्ष (अ) ।
- ५४ पद—पुग (आ) (उ) ।
- ५६ वृषभान की पोरि भुकि—वृषभान के पोरि पर (अ) ।
- ५७ महीपति—परिग्रही (आ) (उ) ; प्रभूपति—प्रजापति (ए) ।
- ५८ छनि, धँटे—तहँ धँटी (अ) ।
- ६६ तहँ, जहँ—जहँ तहँ (आ) (उ) ।
- ६९ पनि—जन (अ) ।
- ७० विहँगन—विहंग (इ) (ए) ।
- ७२ बा टो—बाटे (अ) (आ) (इ) (उ) ।
- ७३ होइ—नाम (इ) ।
- ७४ वने जु गज मोती भवन मनहु मुक की दाम (उ) ।
- ८१ करि—कहि (आ) ; बंन अभिनय प्रनति पति अभिवंदन करि तहँहि (इ) ।
- ८७ जागे....अनि—नकुल अनी आगे चली (अ) ; कर—बुधि (आ) ।
- ८४ चली—चली (अ) (आ) (उ) ।
- ८६ पंदुर मोंड उड़ीर—संदूर मोंड छीर (आ) (उ) ।

- ३५ व्याघ्र हरि जघ केतरी घेरी व्याघ्र गजारि (ए) ।
 ३६ होंपी—हूयी (अ) ; मेर नूर भनि सारहूल पनभध सिध नृगारि (ए) ।
 ४६ अगव—अनगव (अ) (आ) (उ) ।
 ४७ ये लु....करि—छाटसिद्धि जो काट करि (अ) ; लह—
 लहल (आ) ।
 ४८ गो—ते (आ) (ए) ।
 ५१ या—जे (ए) ।
 ५२ ते नव बलभरा के—तेई श्री बृ भान के (ए) ।
 ५३ मुक्ति—मोक्ष (अ) ।
 ५४ पद—पुन (आ) (उ) ।
 ५६ बृषभान की पीरि भुकि—बृषभान के पीरि पर (अ) ।
 ५७ नहीपति—परिग्रही (आ) (उ) ; प्रभूपति—प्रजापति (ए) ।
 ५८ बनि, बंटे—तहें बंठी (अ) ।
 ६६ तहें, जहें—जहें तहें (आ) (उ) ।
 ६९ पनि—जन (अ) ।
 ७० ग्रिह्णन—ग्रिह्णन (इ) (ए) ।
 ७२ ठा ठा—ठाढ़े (अ) (आ) (इ) (उ) ।
 ७३ होइ—नाम (इ) ।
 ७४ बने कु गज मोंती भवन मनहु मुक की दाम (उ) ।
 ८१ करि—कहि (आ) ; बंघन अभिनय प्रनति पति अभिवंदन करि
 लखि (इ) ।
 ८२ बाने....अनि—नकुन प्रनी आने बनी (अ) ; कर—बुधि
 (आ) ।
 ८४ लयी—लयी (अ) (आ) (उ) ।
 ८६ पंदुर मोंड उड़ीर—पंदुर मोंड छीर (आ) (उ) ।

- १३३ जगत्—जगत् (ए) ।
- १३४ नाल वरन में दीप जनु बनकन गोर सरान (अ) ।
- १३५ नु जगत्—नुकर तिष्ठ (आ) ।
- १३६ पिन्-मुनि... देदि—नैननि में पिन् भनकि लनि बहुर जारि तिहि देन (अ) ।
- १३७ पदुम्यो—पदुमि (अ) ।
- १३८ ताम्बूल लहियेनिवन द्विज मृग नंदन पान (अ) ।
- १३९ नक्षि शानि अनखानि अति भर जो गही गग मान (अ) ।
- १४० गामय—गामिज (आ) ।
- १४१ बड़ी बंद नति लन चित रंजक घोली बाल (अ), बड़ी बंद ली महुरी धेरी बाल गाल (अ) ।
- १४२ बंद—बंद (अ) ।
- १४३ पातारि—पा पारि (अ) ।
- १४४ कर्नाट—कर्नाट (अ), कर्नाट (आ) ।
- १४५ के—कुल (आ) (उ) ।
- १४६ वरत—मिलत (अ) (ए) ; यों—त्यों (अ) ; तिहि दिनि—देखत नोहि (अ), तो दिनि (आ) ।
- १४७ छोन... निरनि—छोन भरी नुंजनि लगी (अ), छोन भरी लिन ली निरनि (ए) ।
- १४८ नडा—नटो (ए) ।
- १४९ जातद—जहजद (आ), जाहज (ए) ; घाम—नाम (आ) (उ) ।
- १५० न वरत जिहि—नुइ वरत ने (अ) ; नै—ने (अ) ।
- १५१ वर... निदा—निदा लखतु जागलु (इ) (क) ; दिवसा—देवा (आ) ।
- १५२ रनि—रन (ए), रन (उ) ।

- १३३ चान्न—चान्न (ए) ।
- १३४ तौ वरुण मे दीप जनु वनवत गोर मरीर (अ) ।
- १३७ नु चर्ये—नुकर तिय (आ) ।
- १३८ पिप-मुरनि, . . . देदि—नैननि में पिय भनकि लनि बहुर डारि
तिहि देन (अ) ।
- १४० चहुग्यो—गरुडि (अ) ।
- १४१ तन्मन्त्र ददियेनिअन द्विज मुन मंडन पान (अ) ।
- १४२ नदिन खानि अन्खाति अति भर जो गही मन मान (अ) ।
- १४३ मागय—नागिज (आ) ।
- १४४ बड़ी बेंर नति लन चित्त रंचक बोली बाल (अ), बड़ी बेंर ली
नहुसरी देसी दान गाल (अ) ।
- १४५ अंघ—अंघ (अ) ।
- १४६ पातारि—पा पारि (अ) ।
- १४७ कर्माठ—कलीठ (अ), कुर्याठ (आ) ।
- १४८ कै—कुर (आ) (उ) ।
- १४९ परत—मिलत (अ) (ए) ; यी—त्यां (अ) ; तिहि दिनि—
देखत नौहि (अ), तो दिनि (आ) ।
- १५० छोन . . . निरनि—छोन भरी नुंदनि कनी (अ), छोन भरी
लिज को निरनि (ए) ।
- १५१ चडा—चन्नी (ए) ।
- १५२ जातय—गहय (आ), चाहय (ए) ; घान—नाम (आ)
(उ) ।
- १५३ ना वरत जिहि—तुर वरत ने (अ) ; नै—ने (अ) ।
- १५४ पर . . . गिता—गिता रच्यमु आत्मनू (उ) (क) ; दिवसा—
बेसा (आ) ।
- १५५ रनि—रन (ए), रन (उ) ।

- २१६ आत्मा—अनयनी (उ) (च) , आनयनि (ए) ।
 २१७ डिर्नी—यन्नी (अ) ।
 २१८ पे—नो (आ) (उ) ।
 २१९ पुनि—मृत् (ए) ।
 २२० अनि—पर (अ) ।
 २२१ नो मुख पिय पद—हनि पद पंक्ज (ए) : नाहि नु वेर—नाहि
 वेर (ए) ।
 २२२ नन—नात (आ) ।
 २२३ बंचक—जिह्वा (आ) (उ) (ए) ।
 २२४ नारंग—कुरंग (अ) ।
 २२५ मृग, कुरंग से—मृग निनु केने (अ) ; इतराहि—अनगाहि
 (आ) ।
 २२६ गलीन, मनि—अमीव पुनि (ए) ।
 २२७ बहन-उप—उपन वद (अ) (उ) ।
 २२८ ओनिन . . . पुनि—ओनिन रक्तकलीनि पुनि (आ) (ए), ओ-
 निन रक्त कोष्यप जू पुनि (उ) ।
 २२९ निमाचर—निमाचर जू (आ), निमाचर र (ए) ।
 २३० रेनु पो—रेनुका (अ) ।
 २३१ बदन . . . गाहि—मोहन तम संसार (अ) ।
 २३२ नो जालन कपटी पियो जग जाके आधार (अ) ।
 २३३ होट नो—होत है (अ) (उ) ।
 २३४ केन नाम जुनि नदन ह्वै निच कंद दिग आठ (ए) ।
 २३५ कोन्तुन-अवधि—कुन्तन अवधि (अ) ।
 २३६ सोहन—मोहन (अ) ; पोय—नाल (अ) ।
 २३७ विरति—हिति (अ) : नोय—वन (अ) ।
 २३८ नगदा मेरी नालकृद अन्वयन नन येन (ए) ।

- २१६ आत्मा—अपयनी (उ) (न) , प्राणपनि (ए) ।
 २१७ डिनी—यनी (अ) ।
 २१८ पे—नी (आ) (उ) ।
 २१९ पुनि—मृनु (ए) ।
 २२० अनि—पर (अ) ।
 २२१ नो मुख पिय पद—हनि पद पंकज (ए) : नाहि नु वेद—नाहि
 वेद (ए) ।
 २२२ नन—नात (आ) ।
 २२३ ब्रजक—जिह्व (आ) (उ) (ए) ।
 २२४ गारंग—गुरंग (अ) ।
 २२५ मृग, गुरंग से—मृग निनु फेने (अ) ; इतराहि—अनप्राहि
 (आ) ।
 २२६ गलीन, मनि—अमीव पुनि (ए) ।
 २२७ बहन-वय—वचन वद (अ) (उ) ।
 २२८ श्रोनित . . . पुनि—श्रोनित खनककोनि पुनि (आ) (ए), श्रो-
 नित नवन कोष्यप जु पुनि (अ) ।
 २२९ निमाचर—निमाचर जु (आ), निमाचर र (ए) ।
 २३० रेनु नी—रेनुका (अ) ।
 २३१ कदत . . . जाहि—गोटन तम संसार (अ) ।
 २३२ नो प्रान्तन कपटी कियो जग जाके आधार (अ) ।
 २३३ होत नो—होत है (अ) (उ) ।
 २३४ पैल नाम नुनि मदन हई निय चंद दिग आठ (ए) ।
 २३५ कोन्तुन-अवधि—कुन्तन अवधि (अ) ।
 २३६ सुपन—गोह्वर (अ) ; पाद—नाल (अ) ।
 २३७ लिहित—लिनि (अ) : नोद—बन (अ) ।
 २३८ समुदा सेरी नालकद वनपका तम येन (ए) ।

- ३७६ अथ तिमर अलकाय तन ध्यात कुतर नीहार (ए) ।
 ३७७ निमिर मिटो मग मांभ को वदन नंद उजियार (अ) ।
 ३७८ तरे—तन (अ) ।
 ३७९ धन—बह (ए) ; तय—तय (अ) ।
 ३८० अम—मै (अ) ।
 ३८१ हरि—नय (अ) ।
 ३८२ किरि—बनि (अ) ; नोग—नोग (अ) ।
 ३८३ धनन—निनन (ए) ।
 ३८४ नंपट नुदन बहन—अक दून नुद गहन (आ) (ए) ; पुनि—
 अय (अ) ।
 ३८५ यो जैहँ बनि सोइ रहु जैहँ उठि परभात (अ) ।
 ३८६ बज नु तेरे—बज नु तुरे (अ) , उलका तेरी (ए) ।
 ३८७ परे—परखी (ए) ; धाम—सीत (आ) , बज (ए) ।
 ३८८ विवहि मिदि—पीय पे (ए) ; न—कि (अ) ।
 ३८९ जू निय—जुंयारि (अ) ।
 ३९० मोभित . . . ते—उज्जल जलधर ते मनों (अ) , महन धीर-
 हृद ते मनों (ए) ।
 ३९१ जोगु . . . ते—जोगु कुल परसत वदन (अ) ।
 ३९२ मोर—मो (ए) , अर (अ) ।
 ३९३ भिति—नति (अ) ।
 ३९४ बनि—दिन दिन (अ) ।
 ३९५ रीत—मद (अ) ।
 ३९६ नुद नगम आवंद ननु करन परसपर बात (आ) ।
 ३९७ बंदबान—बंदबान (आ) (ए) (अ) ।
 ३९८ गुनगुन—गुनगुन (आ) ।
 ३९९ का बजनी बनि सो परे नुद जयन उपहार (अ) ।

- ३८६ घोंघ तिगर घनकाय तन ध्यात कुकर नीहार (ए) ।
 ३८७ निमिर मिटो नग मांझ को वपन नंद उजियार (अ) ।
 ३८८ तरे—नन (अ) ।
 ३८९ धन—बह (ए) ; तर—तव (अ) ।
 ३९० अम—मै (अ) ।
 ३९१ हरि—नर (अ) ।
 ४०४ फिरि—बनि (अ) ; नंग—नंग (अ) ।
 ४०५ लगन—निगन (ए) ।
 ४१३ तंकट तुदन गहन—अक दून तुद गहन (आ) (ए) ; पुनि—
 अय (अ) ।
 ४१६ गयी जई बनि सोए रहु जई उठि परमात (अ) ।
 ४१७ बज नु तेरे—बज नु तुरे (अ) , उलका तेरी (ए) ।
 ४१८ परे—परखी (ए) ; धाम—सोस (आ) , बज (ए) ।
 ४२० विवहि मिलि—पीय पे (ए) ; त—कि (अ) ।
 ४२३ जू निय—कूपरि (अ) ।
 ४२४ मोमिन . . . ते—उज्जल जयधर ते मनों (अ) , महान धीर-
 हर ते मनों (ए) ।
 ४२६ जोग . . . ते—जोग तुल परसत वदन (अ) ।
 ४२८ मोर—नो (ए) , अर (अ) ।
 ४३० प्रिति—नरि (अ) ।
 ४३२ बनि—दिन दिन (अ) ।
 ४३४ रीत—तव (अ) ।
 ४३६ तुल नामक आनंद अतु करन परसपर बात (आ) ।
 ४४० अंकुश—अंकुश (आ) (ए) (अ) ।
 ४४१ गुच्छ—गुच्छ (आ) ।
 ४४२ का कपरी बनि पां रीं तुल जयन उवाहार (अ) ।

- १६० मर...राय—मर मृग को अघराय (अ) ।
 १६१ मनु—मनि (अ) ; मरुति—मरुति (ए) ।
 १६२ मर मर—दिग दिग (अ) ।
 १६३ मर—मनि (अ), मर (ए) ; मरें बैठे—बैठे हूँ (ए) ।

अनेकार्थमंजरी

- १ मृ प्रभु...जगत-मय—जो प्रभु जोति मृ जगत मय (इ) (उ) ।
 २ विषय—अमुन (आ) ; मुन—मुन (इ) (उ) ।
 ३ तै—ती (अ) ।
 ४ अग...अगमय—अमुनन को अगमय (इ), अर्थ ग्यान अ-
 गमय (आ) ।
 ५ भाग्यो 'अनेका अर्थ'—भाषानेकाअर्थ (इ), भाषि अनेक जु
 अर्थ (आ), रचन अनेका अर्थ (छ) ।
 ६ मर—मर (छ) ।
 ७ मुरभी जागत—मुरभि चरावन (छ) ; मुरभी चंपक बन कहे
 जो जग करता कंठ (उ) ।
 ८ मरु चंद—मरु चंद (आ) ।
 ९ मरें अघर—मैं और (इ), निहि और (ग) (उ), महि और (प) ।
 १० मरुन रुवि—कोन रुक (आ) ।
 ११ मरुन...मरुनय—मरुनि मरुनय अरुनहि (ग) ।
 १२ मरुन—मरुन (अ) (ग) ।
 १३ मरुन—मरुन (आ) ।
 १४ मर—मर (आ) ।
 १५ उरि...मिन—उरि उरि मिनिते मिन (आ) ।
 १६ मरु मर...मिनि—मरु मरुनय चित्त मिन (अ) ।

- ५१० सब . . . रोय—सब गुप्त को अघरोय (अ) ।
 ५१६ अनु—अनि (अ) ; परनति—पकरति (ए) ।
 ५१८ गौर वीर—दिग दिग (अ) ।
 ५२० तर—दति (अ), तहां (ए) ; जहें बैठे—बैठे हूं (ए) ।

अनेकार्थमंजरी

- १ जु प्रभु . . . जगत-मय—जो प्रभु जोति नु जगत मय (इ) (उ) ।
 २ विपन—अगुभ (आ) ; गुभ—गुप्त (इ) (उ) ।
 ४ तैं—कौ (अ) ।
 ५ अग . . . अगमय—गमुभत कों अगमय (इ), अर्थ ग्यात अ-
 तमय (आ) ।
 ६ गान्धो 'अनेका अर्थ'—भाषानेकाअर्थ (इ), भावि अनेक जु
 अर्थ (आ), रचत अनेका अर्थ (छ) ।
 ८ तर—तर (छ) ।
 १० गुरभी चारत—गुरभि चरावत (छ) ; गुरभी चंपक वन कहे
 जो जग करत पंत (उ) ।
 ११ गपू चैद—गर चैद (आ) ।
 १२ कहे अघर—तैं अर (इ), निहि अर (ग) (उ), महि अर (प) ।
 १३ वदत कवि—कोन एक (आ) ।
 १४ अर्जुन . . . अनेकय—अहुरि वनेकय अर्जुनहि (ग) ।
 १५ अघर—अघर (छ) (ग) ।
 १६ मदिम—देली (आ) ।
 १७ गप—गप (आ) ।
 १८ उहि . . . निन—उहि उहि निनिने निन (आ) ।
 १९ अही अर . . . जिनि—अही अरअक चित्त जिय (अ) ।

- ५२ कटाव—गुल्फ फल (आ) ; आहि पुनि —रु चलती (आ) ।
 ५३ बाल निहुर अहिकानं तुर जग सिरु मूक जु बाल (आ) ।
 ५४ बाल गन—नीप गण (आ) ।
 ५५ विधि न.... नैद-नंद—निरगि भूलि जनि नंद (इ) ।
 ५६ जलज.... फिरावते—जलज कमल कर फेरते (इ) ।
 ५७ उर धरि—उर धर (ख) (छ) (ज) ।
 ५८ जाल—नाम (आ) (ब) ।
 ५९ आवत मदन गुपाल—वति आवत घन त्याग (आ) (ब) ।
 ६० कटाव—गंठ अर (आ) ; पोत जु पद—करट पात्र (आ) ।
 ६१ जग—जग (आ) ।
 ६२ भयी—भाग (इ) ।
 ६३ बहंत कवि— पुनि सतत (आ) ।
 ६४ को कहत कवि—उपसम कहत (अ) ।
 ६५ उदय चंद उदयग गरुड़ श्री गरुड़ध्वज ग्राह (अ) ।
 ६६ मंद सतत नति अल्प लल रोगी पाप स्वछंद (आ) ।
 ६७ स्वदन.... कवि—स्वदन नुर जल तर निगम (आ) ।
 ६८ बहि—जिहि (इ) (छ) ।
 ६९ मंथी मदन—मथियी मदन (आ) ; मंथी ग्राह—दिनवार ग्राह (आ) ।
 ७० जिहि.... संट—हरि कीने विधि संट (आ), जो हरि कियो विगैट (इ) ।
 ७१ मंजर अगुन—वातन अगुन (आ) ।
 ७२ गोकल—गोकल (अ) ; तन—तन (अ) (आ) (ग) (ब) ।
 ७३ नग.... नग सतत—नग कहि अहि दून नवि सतत (आ) ।
 ७४ नग नाग—जीमूत (आ) ; नाग हुट—मयी हुट (आ) ।
 ७५ बाल—प्रगल (आ) ।

- २२ कदाचि—कदाचि फल (आ) ; आहि पुनि —र चलो (आ) ।
- २३ बाल निहुर अहिकानि तुर जल सिखु मूक जु बाल (आ) ।
- २४ बाल गन—नीप गण (आ) ।
- २५ विनि न . . . नंद—निगमि भूलि जनि नंद (इ) ।
- २६ जलज . . . फिरावते—जलज कमल कर फेरते (इ) ।
- २७ उर धरि—उर धर (ख) (छ) (ज) ।
- २८ ज्ञान—नाम (आ) (य) ।
- २९ आवत मदन गुणान—वनि आवत घन त्याग (आ) (च) ।
- ३० कदाचि—कदाचि (आ) ; पोत जु पद—करट पाय (आ) ।
- ३१ जग—जल (आ) ।
- ३२ भयी—भाग (इ) ।
- ३३ बहंत कवि—पुनि सतत (आ) ।
- ३४ को कहत कवि—उपसम कहत (अ) ।
- ३५ उदय चंद उदयन गरुड श्री गरुडध्वज बाहु (अ) ।
- ३६ मंद सतत सति अल्प जल रोगी पाप स्वच्छंद (आ) ।
- ३७ स्वदन . . . कवि—स्वदन गुरु जल तद निगम (आ) ।
- ३८ चहि—जिहि (इ) (छ) ।
- ३९ मयी मदन—नयिनी मदन (आ) ; मयी आह—दिनवार आह (आ) ।
- ४० जिहि . . . खंड—हरि कीने विवि खंड (आ), जो हरि कियो विखंड (इ) ।
- ४१ मंजर अगु—बात अगु (आ) ।
- ४२ गोमल—गोचल (अ) ; तर—तन (अ) (आ) (ग) (च) ।
- ४३ नग . . . नग सतत—नग कहि अहि दून नचि सतत (आ) ।
- ४४ जल नाप—जलुत (आ) ; नाग दुष्ट—कयी दुष्ट (आ) ।
- ४५ नाल—प्रगल (आ) ।

२२२ कुँद—कुँद (अ) ।

२२३ खर—ख (आ) ; खर रन नीर—रन खर नीर (इ) ।

२२४ जो...तथा—जो एहि अनेका अर्थ को (आ), जोइ अनेका अर्थ को (इ) ।

२२५ गो...तहँ—ताको अनेक अर्थ बुधि (अ) ।

स्यामसगाई

१ नंद—न्याम (अ) ।

२ महुरि—राय (ग) (ङ) (च) (छ) ; कही—चही (अ) (ख) ।

४ मो—मेरे (ग) (ङ) (च) (छ) (ज) ; गोविंद—श्री गो-विंद (घ), जो गोविंद (ङ) ।

५ मोहनी—मोहनी (अ) (ख) (ज) ।

६ एक—रहनि (छ) ; द्विज—व्रज (क) (ङ) (च) (छ) ।

७ मरम—प्रेम (च) ।

८ करिरी बहु—बहुत करो (क) (च) ।

१० मोहनी—अधिक है (ग) (ज) ।

११ बेगि—शीरि (अ), शीरि (ख), गुरत (छ) ।

१२ तहँ—के (ग) (घ) (च) (छ) ; बैठि...चलाई—मरम श्री वात चलाई (क) ।

१३ जिन—तौ (अ) (क) (ख), हम (ग), उन (घ) (च), ने (ज) ।

१४ कहुवहि कनि परदास—तुम मुनी दीननी तान (च) ।

१५ मेरी प्रति—उन मेरी (घ) (ज) ।

२१ मोहनि—मना (अ) (क) ; नु हो नहि करो—नाहि ने हम करे (ग) । नाहि हम करत (च) ।

२२२ कुंठ—कुंठ (अ) ।

२२३ रम—रम (आ) ; अर रम नीर—रम अर नीर (इ) ।

२२४ जो....नग—जो इहि अनेक अर्य को (आ), जोइ अनेक अर्य को (इ) ।

२२५ मो....तहँ—ताकों अनेक अर्य बुधि (अ) ।

स्यामसगार्ह

१ नंद—न्याम (अ) ।

२ गहरि—राय (ग) (उ) (च) (छ) ; कर्हो—चर्हो (अ) (ख) ।

४ मो—मेरे (ग) (उ) (च) (छ) (अ) ; गोविंद—श्री गो-विंद (घ), जो गोविंद (उ) ।

५ मोहनी—मोहनी (अ) (ख) (अ) ।

६ एक—रुहि (छ) ; डिज—दज (क) (उ) (च) (छ) ।

७ मरम—प्रेम (च) ।

८ करिया बहु—बहुत करो (क) (च) ।

१० सोहनी—अधिक है (ग) (अ) ।

११ बेगि—गौरि (अ), दोगि (ख), नुरत (छ) ।

१२ तहँ—के (ग) (घ) (च) (छ) ; बैठि....चलाई—मरम को बाल चलाई (क) ।

१३ जिन—तौ (अ) (क) (ख), हम (ग), उन (घ) (च), ने (अ) ।

१४ कृपहि कनि परनाम—तुन नुनो दीननी नाम (च) ।

१५ मेरी एनि—उत मेरी (घ) (अ) ।

२१ गोननि—गर्ना (अ) (क) ; नृ हो नहि करो—नाहि ने हम को (ग) । नाहि हम करो (च) ।

- ८८ ग्वालिन . . . कैं—तखि गुपाल भगरन लगे (अ) (स), देखि लगे दूधन लगे (छ) ।
- ८९ रही . . . आई—कौन गांव लों आई (ख), कौन नाम तैं आय (क) (क) ; ए तो नारि नैवारि हूँ, मति वहिकैं तू माइ (अ) ।
- ९० गोकु हनसों कहो (क) ।
- ९१ तेरी . . . बतारै—तेरी हीं लैहु बलैया (अ) (स), मैं तेरी लैहु बलैया (ज) ।
- ९२ ग्वालिनो तित तैं आई—ए तित तैं आई मैया (अ), ए तित तैं आई मैया (स) ।
- ९३ नाल जम लीजियै (क) ।
- ९४ सुनै—बहन (क), सुनै (अ) ; ताहि—कहो (क) ; कौन आशो . . . बतयो—मैया मैं गाररु किनि सुन्यो कही कि मोहि सिखायो (च), मैया सु ननिबयाय कही जत नंददुलारे (छ) ।
- ९५ परांचिनि तुम ग्वालि—तुम ग्वालनि परांच (च) (अ) ; चरी कोने कीए गाररु कोने मंत्र सिखाए (छ) ।
- १०६ गमो मुकरन को नाही—सांचरे कुंदर कन्हारै (अ) ।
- १०७ कुंदरि जीवंगी नाही—कुंदरि जीवन की नारै (अ), कुंदरि वचने की नाही (च) ।
- १०८ मन—मो (अ), मिन (च), मरि (छ) ।
- १०९ वृंदावन में सांचरे—तुम श्री वृंदावन में आगरे (च), मयूरा में हनि प्रवरै (ज) ।
- ११० मोहि राधे—मोहि कुंदरि (अ) ।
- १११ लीने—लीने (च) ।
- ११२ लखन—लखन (क) ।
- ११३ नारै—नारै (अ) (स) ।
- ११४ कुंद—मंत्र (अ) (क) (अ) ; निज—हरि (अ) (क) ।

- ८८ ग्वालिन . . . कैं—तखि गुपाल भगरन लगे (अ) (ख), देखि लगे बूझन लगे (छ) ।
- ८९ खही . . . आई—कौन गांव लों आई (ख), कौन नाम तैं आई (क) (क) ; ए तो नारि नैवारि हूं, मति बहिकैं लू माई (अ) ।
- ९० गोक हंसलौं कहौ (क) ।
- ९१ तेरी . . . बलाई—तेरी हौं लहु बलैया (अ) (ख), मैं तेरी लहु बलैया (ज) ।
- ९२ ग्वालिनो तित तैं आई—ए तित तैं आई मैया (अ), ए तित तैं आई मैया (ख) ।
- ९३ नाल जम लीजियै (क) ।
- ९४ गुनै—कहन (क), गुने (ख) ; ताहि—कहौ (क) ; कौन आइयो . . . बतयो—मैया मैं गारु किनि सुन्यो कही कि मोहि सिखायो (च), मैया सु ननिषदाय कही जब नंदहुनारे (छ) ।
- ९५ परांचिनि तुम ग्वालि—तुम ग्वालनि परांच (च) (ब) ; सरी कौने कीए गारु कौने मंत्र सिखाए (छ) ।
- १०६ गमो नुकरन की नाही—सांचरे कुंदर कन्हारै (अ) ।
- १०७ कुंदरि जीवंगी नाही—कुंदरि जीवन की नाई (अ), कुंदरि बचने की नाही (च) ।
- १०८ नन—नौ (ब), गिर (च), सरि (छ) ।
- १०९ बृंदावन में सांचरे—तुम श्री बृंदावन में आगरे (च), मयूर में हनि जवनरे (ज) ।
- ११० मोहि गये—मोह कुंदरि (ख) ।
- १११ नीने—नीने (च) ।
- ११२ लखन—लखन (क) ।
- ११३ लारै—लारै (ब) (ख) ।
- ११४ कुंभ—मैय (क) (क) (ब) ; निज—हरि (ख) (क) ।

- १६ घोर—घूरि (ट) (ठ) ।
 १७ विहसित—विह्वल (ल) (ग) (ङ) (ट) (ठ) ।
 १८ मार्यो—मठ्यो (न) (घ) (च) ।
 १९ जिनि जिय—जुम जिनि (क) (घ) (च) ।
 २० अलक—कमल (ट) (ठ) ।
 २१ धग्नी—धरती (ङ) ।
 २२ दयोपही—प्रमोदियो (न), प्रमोद की (छ) (ङ) ; बात
 बगार—बैत गुनाय (छ) (ठ) ।
 २३ बह नव कर—रूप नव उतहि (ट) (ठ) ; निर्विकार निज रूप
 मान अपने हिंद पेखी (च) ।
 २४ माहि—गहि (ट) (ठ) ।
 २५ बग्नत—गहन (क) (ग) (ङ) (छ) (ज) (ङ) ।
 २६ क्षुति, नानिका—सन प्रात में (ग) (छ) ; दिखाइ—दखाय
 (ट) (ठ) ।
 २७ बह नव सगुन—सरगुन नवे (न) (घ) (च) (ज) ।
 २८ हूँ—को (ङ), हीं (ट) (ठ) ।
 २९ को बन बन —बन बन को (क) (न) (ज) (ट) (ठ) ।
 ३० हूँ—हूँ (क) (घ) (ङ) (च), हूँ (ट) (ठ) ।
 ३१ नैं—नैं (क) (च) (छ) (ठ), नों (ट) ।
 ३२ गुन—गों (घ) (च) (ङ) ; अवतारि कैं—अवतार हूँ (घ)
 (च) (ङ), अवतार हूँ (ट) (ठ) ।
 ३४ पुर—पर (घ) (ग) (ङ), पद (घ) (ज) (ङ) ।
 ३५ लली—लाली (घ) (ठ), लयी (ट) ।
 ३६ गली—गाल (घ), गायी (ट), गायें (ठ) ।
 ३७ धरैं—धरि (क) (ग) (छ) (ट) (ठ) ।
 ३८ धरैं धरैं—धरैं धरु (ट) (ठ) ।

- १६ घोर—घुरि (ट) (ठ) ।
 १७ विद्वंसि—विह्वंस (क) (ग) (ङ) (ट) (ठ) ।
 १८ मार्यो—मठ्यो (क) (घ) (च) ।
 १९ जिनि जिय—जुन जिनि (क) (घ) (च) ।
 २० अन्त—कमल (ट) (ठ) ।
 २१ घग्गी—घरती (ङ) ।
 २२ प्रयोपही—प्रमोदियो (च), प्रमोद की (छ) (ङ) ; बात
 बगार—बैत गुनाय (छ) (ठ) ।
 २३ बह्य नव कर—रूप नव उनीहि (ट) (ठ) ; निर्विकार निज रूप
 जान अपने हिंद पेखी (च) ।
 २४ माहि—गहि (ट) (ठ) ।
 २५ बग्नत—गर्वन (क) (ग) (ङ) (छ) (ज) (ङ) ।
 २६ क्षुति, नामिका—सन प्रात में (ग) (छ) ; दिखाइ—कसाय
 (ट) (ठ) ।
 २७ बह नव सगुन—सरगुन गवे (च) (घ) (च) (ज) ।
 २८ हँ—हो (ङ), ही (ट) (ठ) ।
 २९ को वन वन—वन वन को (क) (च) (ज) (ट) (ठ) ।
 ३० हँ—है (क) (घ) (ङ) (च), है (ट) (ठ) ।
 ३१ नैं—नै (क) (च) (छ) (ठ), नों (ट) ।
 ३२ गुन—गो (घ) (च) (ज) ; अवतारि कै—अवतार है (घ)
 (च) (ज), अवतार हँ (ट) (ठ) ।
 ३३ कुर—कर (ङ) (ग) (ङ), कद (घ) (ज) (ङ) ।
 ३४ लखी—लखै (घ) (ठ), लखी (ट) ।
 ३५ गायी—गामे (च), गायी (ट), गायै (ठ) ।
 ३६ असे—असि (क) (ग) (छ) (ट) (ठ) ।
 ३७ नमं वंद—नमं वंद (ट) (ठ) ।

कात (ख) (घ) (च) (ज), तरुन अकार प्रमाण (ग) (ङ)
(ण); तेजमय—ते जामे (क) (ग) (घ) (च) (ङ) (ण),
मे जामे (ख), ते जमपुर (ज) ।

११७ दिव्य दृष्टि ही भले रूप यह देगी जाई (ग) (च) (छ) (ज) (झ) ।

११८ जब—जो (घ); हु—हूँ (ग) (छ); तामें—या में (ङ),
जामें (ठ) ।

११९ तैं—कानें (ट) (ठ) ।

१२० करम.... किये—करम करम कर ही किये (झ), करम करम ही
किये तैं (ट), कम कम कर्म सबहि किये (ठ) ।

१२१ हूँ—करि (क) (ख) (ङ) (च) (ज) (झ) ।

१२२ हूँ—ग्यों (ट) (ठ); कर्म.... आयें—कर्म ग्यों वंदन, आय
ये ये (ग) ।

१२३ आयें—आयें (क) (ख) (घ) (ङ); नखर हूँ—नहिं डेखर
(ट) (ठ) ।

१२४ तिन कीं—जिन की (ख) ।

१२५ ऐमें में—एक ममें (ग), येते ही में (ग) ।

१२६ बने बीरे अह—बनी बीरी अह (ग), बनीं बियरे अह (घ),
लने डर बियरे (ट) ।

१२७ गहूँ—गहि (ग) (च); तिन.... बात—कहत जू नाना
बात (ग), करम निनाहि संत बात (ट), बंदि नकूच कह बात (ठ) ।

१२८ बुझात—बुझात (ट) (ठ) ।

१२९ बहूत मर—बहीलाइति (क) (ग) (झ), बहूत भांति (ख)
(घ) (च) (ज) (ङ) ।

१३० मर ग्य—मर ग्य (ग) (च) (छ) (झ), परबन (ट) (ठ) ।

१३१ समरित जो मीन—देलातुर जो मीन (ज), गहिरें जल की मीन
(ट) (ठ) ।

कास (ख) (घ) (च) (ज), तरुण अकार प्रमाण (ग) (ङ)
(फ); तेजमय—ते जामें (क) (ग) (घ) (च) (ङ) (ण),
मे जामें (ख), ते जमपुर (ज) ।

११७ दिव्य दृष्टि ही भली रूप वह देगी जाई (ग) (च) (छ) (ज) (झ) ।

११८ जब—जो (घ); हु—हैं (ग) (छ); तामें—या में (ट),
जामें (ठ) ।

११९ तैं—कानें (ट) (ठ) ।

१२० करम.... किये—करम करम कर ही किये (झ), करम करम ही
किये में (ट), कम कम कर्म सबहि किये (ठ) ।

१२४ ह्यै—करि (क) (ख) (ट) (न) (ज) (झ) ।

१२५ ह्यै—ग्यों (ट) (ठ); कर्म.... आयें—कर्म ग्यों बंदन, आय
ये ये (न) ।

१२६ आयें—आयें (क) (ख) (घ) (ङ); नखर ह्यै—नहिं नखर
(ट) (ठ) ।

१२४ निन कीं—जिन को (ख) ।

१४५ ऐमें में—एक नमें (ग), येते ही में (ग) ।

१४६ बने बीरे अरु—बनी बीरी अरु (ग), बनीं बिबिरे अरु (घ),
बने उर बिबरे (ट) ।

१४७ कह्यै—कहि (ग) (च); निन.... वात—कहत जु नानी
वात (घ), कर्म निनहिं संग वात (ट), बंठि नकुच कह वात (ठ) ।

१४४ बुधान—बुधात (ट) (ठ) ।

१४४ बहूत गार—बोहीलादति (क) (ग) (झ), बहूत भांति (च)
(घ) (च) (ज) (ट) ।

१४८ नय नग—नय नय (ग) (च) (छ) (झ), नयन (ट) (ठ) ।

१४९ नगरीन जो मीन—नगरीन जो मीन (ज), नहिरे नग की मीन
(ट) (ठ) ।

- २४८ यह...बधू—हमि बोली ब्रजवासिनी (घ), ऐसे बोरी ब्रज वासिनी (भ), यह बोरी ब्रजवासिनी (ट) (ठ) ।
- २४९ निर्गुन भए अति के सगुन नकल जग गाहि (क) (ख) (ट) (ठ) ।
- २५० कूदरीनाथ—कूदरीदास (घ) (छ) (भ) ।
- २५१ जगत वा बोल को (क) (ख) (उ) ।
- २५२ कोटि जो खान है (ग) (च) (ज) ।
- २५३ मोहन...होहि—मोहन निर्गुन होइ गहे (ट), मोहन निर्गुन को गहे (ठ) ।
- २५४ गाँत—रहत (ग) (घ) (ट) (ठ) ।
- २५५ रोइ—रवित (ग), रोइ (ट) ।
- २५६ नैन...धारहि—अंग लै वन को धारनि (क), अंगु लोचन को धारनि (ख), सिंधु लै तन को धारनि (ट) (ठ) ।
- २५७ भुज वन अदला जाति कंचकी भूपन हारहि (ग) (च) (ज), बराननि उलटे गात कंचकी भूपन धारन (घ) ; बहुगुन—भूपन (ट) (ठ) ।
- २५८ प्रेम-प्रयोधि—प्रेम श्री वंश (क), अंग विद्य (ग) (घ) (ज) ; ऊपरी चने बहाइ—प्रार न कछु मुहाय (ग) (ज) ।
- २५९ हो कही—हो नो कहि (ट) ; की—सो (ठ) ; रोपि—रूप (क) (ख) (घ) (उ) ।
- २६० रे—रै (क) (ख) (ग) (च), रै (ठ) ।
- २६१ प्रेम-प्रयोधि—प्रेम पद पौ (ठ) ।
- २६२ गक—गन (छ) (भ) ।
- २६३ डर...वाय—डर मे परी हो वाय (ख), डर मे रखी व्याधि (ट), डर नव रखी उवाय (ठ) ; वाय—बाढ़ि (ग) (ज) (झ) ।
- २६४ कोल-माज—कोल मुज (घ) (ट) (ठ) ।

- २४८ गह...बधू—हमि बोली ब्रजवासिनी (घ), ऐसी बोरी ब्रज
वासिनी (भ), वह बोरी ब्रजवासिनी (ट) (ठ) ।
- २४९ निर्गुन भए अति के सगुन नकल जग माहि (क) (ख) (ट) (ठ) ।
- २५० कूदरीनाथ—कूदरीदास (ख) (छ) (भ) ।
- २५१ जगत का बोल को (क) (ख) (उ) ।
- २५२ कौटि जो ग्यान है (ग) (घ) (ज) ।
- २५३ मोहन...होहि—मोहन निर्गुन होइ गहे (ट), मोहन निर्गुन
को गहे (ठ) ।
- २५४ गाँत—कहत (ग) (घ) (ट) (ठ) ।
- २५५ राँदे—रवित (ग), राँडे (ट) ।
- २५६ नैन...धारहि—अंग लै बन की धारनि (क), अंगु लोचन
की धारनि (ख), सिधु लै तन की धारनि (ट) (ठ) ।
- २५७ भुज बन अदला जाति कंचकी भुजन हारहि (ग) (घ) (ज),
बसननि उलटे गात कंचकी भुजन धारन (घ) ; बहुगुन—
भुजन (ट) (ठ) ।
- २५८ प्रेम-पराधि—प्रेम औ बंध (क), अर विद (ग) (घ) (ज) ;
ऊपी चने बहाइ—प्रांर न कछ मुहाय (ग) (ज) ।
- २५९ हाँ कही—हाँ नो कहि (ट) ; की—सी (ठ) ; रोपि—रूप
(क) (ख) (घ) (उ) ।
- २६० है—है (क) (ख) (ग) (घ), हँ (ठ) ।
- २६१ प्रेम-पदवी—प्रेम पद पी (ठ) ।
- २६२ नर—नर (छ) (भ) ।
- २६३ उर...बाध—उर मे परी हो बाध (ख), उर मे रह्यो व्याधि
(ट), उर नर नयो उबाध (उ) ; बाध—बाढ़ि (ग) (ज)
(झ) ।
- २६४ बोल-बाज—बोल चुन (घ) (ट) (ठ) ।

- २५ चित्त—भेषत (क) (ख), जपत ही (ग) ।
- २७ छाजत—राजत (घ) ; हँ गई कछुक विवरन छीन तन यों छवि छायाँ (ग) ।
- ३० कन-कौकन . . . आहीं—कर कौगना द्रग जलकन हँ जाही (ग) ।
- ३१ टप टप . . . तें—टपक टपक छत्री नेनेन सों (क) टप टप, टप टप टपकि नैन सों (ख) ।
- ३२ दल तें भल—दल पर ते (क), दल तिन तें (घ) ।
- ३३ कवहुँक—कवहु (ग) ।
- ३४ पीय—कंत (ग) ।
- ३५ अवा-उर—अवा तन (ख), अवा जिम (घ) ।
- ३६ लाल—लाज (ग), लाच (घ) ।
- ३७ अव धी—दई अव (घ) ।
- ३८ हट—हट (ख) ।
- ४० नट—नट (क) ।
- ४१ निन—जिन (क) (ख); अज से—अजहूँ (क) ।
- ४६ तिय—नुक (घ) ।
- ४८ नागा—ककमनि (क) (ख) ।
- ४९ वात—नाज (ग) (घ) ।
- ५० दिया—पीय (ग) ।
- ५१ नाय-हाथ . . . तुम—नाय हाथ लै तुम ही (क) ।
- ५२ एती—इतनी (ग) (घ) ।
- ५३ साधुरी—छवि दुरी (ग), छवि घुरी (घ) ; चाहि कै . . .
चित्त—विप्र हँ रह्यो नकित चित (क) ।
- ५६ छवि—जिन (क) ।
- ५८ ममून फलन सों फूले फूलें मुर मून सेवें (क), अमृत फलन सों फलें फले मुर कर मन सेवें (ख) ।

- २५ चित्त—भंपत (क) (ख), जपत ही (ग) ।
- २७ छाजत—राजत (घ) ; हूँ गई कछुक विवरन छीन तन यों छवि छायाँ (ग) ।
- ३० कन-कोकन . . . आहीं—कर कँगना द्रग जलकन हूँ जाही (ग) ।
- ३१ टप टप . . . तें—टपक टपक छत्री नैनन सों (क) टप टप, टप टप टपकि नैन सों (ख) ।
- ३२ दल तें भल—दल पर ते (क), दल तिन तें (घ) ।
- ३३ कवहुँक—कवहू (ग) ।
- ३४ पीय—कंत (ग) ।
- ३५ अवा-उर—अवा तन (ख), अवा जिम (घ) ।
- ३६ लाल—लाज (ग), लाच (घ) ।
- ३७ अर धी—दई अर (घ) ।
- ३८ हट—हट (ख) ।
- ४० भट—भट (क) ।
- ४१ तिन—जिन (क) (ख); अज ते—अजहूँ (घ) ।
- ४६ सिय—नुक (घ) ।
- ४८ नागा—एकमनि (क) (ख) ।
- ४९ वात—नाज (ग) (घ) ।
- ५० दिया—वीय (ग) ।
- ५१ नाय-हाथ . . . तुम—नाय हाथ लै तुम ही (क) ।
- ५२ एली—रतनी (ग) (घ) ।
- ५३ माधुरी—छवि धुरी (ग), छवि धुरी (घ) ; चाहि कै . . . चित—विप्र हूँ रह्याँ कवित चित (क) ।
- ५६ छवि—जिन (क) ।
- ५८ मरुत फलन नी फूले फूले मुर मुर लेखें (क), अमृत फलन नी फलन करे मुर कर मन लेखें (ख) ।

- १२० भाये—भाय (ख) ; अमृत—अमी (ग) ।
- १२१ हों—हम (क) ; नाथ तुम भये—नाथ भये नाथ (ग) (घ) ।
- १२३ अब अनहित नाहित करघौ वरघौ त्रिभुवन मन सुंदर (ग) ।
- १२४ नित्य परम अभिराम स्याम सुख धाम पुरंदर (ग) ।
- १२५ भरे, वरे—भरै वरै (क), भरे सरे (ग) ।
- १२६ कौल—कूटि (क), कूट (ख) ; परे—धरे (ग), मरे (घ) ;
छिन ही....तंतर—छिन छिन परतंतर (ग), छिन छिनही
निरंतर (घ) ।
- १२७ पानिप—पानिय (ख) ; धोरे—डोरे (ग) (घ) ।
- १२८ हार—हरिहि (ख) ।
- १२९ मठ—मट (ख) ।
- १३० चट तैं मठ—चठ ते मठ (क), चट तैं मट (ख) ।
- १३१ करत....मरियै—मरियै लाज यहै तो (ग) ।
- १३२ वारत बृंदा बिदारन बल गोमाय यहै तो (ग) ।
- १३३ जू बलहि—निज मनस (ग), निज संस (घ) ; विचारी—विचारै
(ग) (घ) ।
- १३४ विहारी—जुठारै (ग) (घ) ।
- १३५ देखन याकीं—देखि तिया कीं (ख), निरखत याको (ग) (घ) ।
- १३६ तुम सब विधि लायक अछिन छिये निमुपाल छिया कीं (ख),
तुम तौ सब विधि लायक अछिन छुबी न छिया कीं (ग) ।
- १३७ सागर नगधर नंद कुवर मोहि करिही न दासी (क) ।
- १३८ पदि—पर (क) ; तन की—तन तिन (क), तन तून (घ) ;
तीं पर हरि पायक जरहों करहों तन तिन कामी (ग) ।
- १४० स्याज....कर—छुये सिमुपाल स्याल कर (क) ।
- १४१ तैं—तैं (ख) ।
- १४२ जानव—कहत (क) (ग) ; बान—हस्त (क) (घ) ।

- १२० भाये—भाय (ख) ; अमृत—अमी (ग) ।
- १२१ हों—हम (क) ; नाय तुम भये—नाय भये नाय (ग) (घ) ।
- १२३ अब अनहित नाहित करचौ वरचौ विनुवन मन सुंदर (ग) ।
- १२४ नित्य परम अभिराम स्याम सुख वाम पुरंदर (ग) ।
- १२५ भरे, वरे—भरै वरै (क), भरे सरे (ग) ।
- १२६ कौल—कूटि (क), कूट (ख) ; परे—धरे (ग), मरे (घ) ;
छिन ही....तंतर—छिन छिन परतंतर (ग), छिन छिनही
निरंतर (घ) ।
- १२७ पानिप—पानिय (ख) ; धोरे—डोरे (ग) (घ) ।
- १२८ हार—हरिहि (ख) ।
- १२९ मठ—मट (ख) ।
- १३० चट तैं मठ—चठ ते मठ (क), चट तैं मट (ख) ।
- १३१ करत....मरियै—मरियै लाज यहै तो (ग) ।
- १३२ वारत बृंदा विदारन बल गोमाय यहै तो (ग) ।
- १३३ जू बलहि—निज मनस (ग), निज संस (घ) ; विचारी—विचारै
(ग) (घ) ।
- १३४ विहारी—जुठारै (ग) (घ) ।
- १३५ देखन याकीं—देखि लिया कीं (ख), निरखत याको (ग) (घ) ।
- १३६ तुम सब विधि नायक अछिन छिपे मिनुपाल छिप्रा की (ख),
तुम ती सब विधि लावक अछिन छुवी न छिया की (ग) ।
- १३७ लागर नगधर नंद कुवर मोहि करिही न दासी (क) ।
- १३८ पदि—पर (क) ; तन की—तन तिन (क), तन तून (घ) ;
ती पर हनि पावक जरहों करहों तन तिन कानी (ग) ।
- १४० स्याल....कर—छुपे सिनुपाल स्याल कर (क) ।
- १४२ तैं—तै (ख) ।
- १४४ जन्त—रहत (क) (ग) ; बात—हसत (क) (ख) ।

- १८८ गहरी बरहै—आई बरहै (क), ये ही बरिहै (ख) ।
 १८९ परहै—परी है (क), जु परि है (ख) ।
 १९० परे—कर (ग); ओज उवारे—ओज उचारे (ख), ज्यों अंगारे (ग) ।
 १९१ उन—इन (क) (ख); वतार्या—वुलायी (क) ।
 १९२ उगन—उज्जल (क) ।
 १९३ मंदर—मंदिर (ख), मंडल (घ); कंदर घन ज्यों—कंकन नव घन (क), गगन में नभ घन (ख), किंकिनी नव घन (घ) ।
 १९४ सब—सो (क) (ख), सुर (घ) ।
 २१२ चलैं तिन सीं—भक तिन सों (ग), भक्ते तीन सीं (घ) ।
 २१४ वैन—वैन (क) (ख) ।
 २१५ अबनि....उनमानी—अब परें यों अनुमाने (ग) ।
 २१६ अपनी—अवनी (ग); जानी—जाने (ग) ।
 २१७ देखति छवि सीं छली अपन-वर आरत उलही (ख), ये सब छवि छल अपनी हरि को अर्पन उलही (घ) ।
 २२१ छवि राजत—भिलमिलत (ग), अक्षत छवि (घ) ।
 २२२ बटन—बदरि (ख); दमकत दामिनि अंकुर अरुन कमल में जैलें (ग) ।
 २२३ अवननि—छुटकी (क) (ख) ।
 २२४ दिये—लिये (क), लियें (ख) ।
 २२५ मुरझि—मुरसि (ख); उरझि उरेभा—उरसि उरेसा (ख) ।
 २२६ देभा—वेला (ख) ।
 २२७ छवि सों रयहि चलाइ आन रुकमिन जब आई (ग) ।
 २२८ बड़—बस (ख) ।
 २२९ बड़—पूय (ख), लूय (घ); लागे बज मारे—लारे बज-मारे (ग) ।

- १८८ गही बरहै—आई बरहै (क), ये ही बरिहै (ख) ।
 १८९ परहै—परी है (क), जु परि है (ख) ।
 १९० परं—कर (ग); ओज उवारे—ओज उचारे (ख), ज्यों अंगारे (ग) ।
 १९१ उन—इन (क) (ख); वतायी—बुलायी (क) ।
 १९२ ऊजन—उज्जल (क) ।
 १९३ मंदर—मंदिर (ख), मंडल (घ); कंदर घन ज्यों—कंकन नव घन (क), गगन में नभ घन (ख), किंकिनी नव घन (घ) ।
 १९४ सब—सो (क) (ख), सुर (घ) ।
 २१० चल तिन सों—भक तिन सों (ग), भूखे तीन सों (घ) ।
 २१४ वीन—वीन (क) (ख) ।
 २१५ अबनि....उनमानी—अव परें यों अनुमाने (ग) ।
 २१६ अपनी—अवनी (ग); जानी—जाने (ग) ।
 २१७ देखति छवि सों छली अपन-वर आरत उलही (ख), ये सब छवि छल अपनी हरि को अर्पन उलही (घ) ।
 २२१ छवि राजत—भिलमिलत (ग), अक्षत छवि (घ) ।
 २२२ वदन—वदरि (ख); दमकत दामिनि अंकुर अरुन कमल में जैसें (ग) ।
 २२३ अबननि—छुटकी (क) (ख) ।
 २२४ दिये—लिये (क), लियें (ख) ।
 २२५ मुरकि—मुरसि (ख); उरकि उरेका—उरसि उरेसा (ख) ।
 २२६ देभा—बेला (ख) ।
 २२७ छवि सों रखहि चलाइ आंत रुकमिन जब आई (ग) ।
 २२८ लड़—लम (ख) ।
 २२९ लू—लूय (ख), लूय (घ); लागे वज मारे—लारे वज-मारे (ग) ।

- ३२ जिन—तिन (ख) (ग) (छ) (ज) (झ), यह (क) (च) ।
- ४० तातं मैं—ताही ते (ख) (छ) (ज) (झ) ।
- ४१ वारुव—विरुथी (छ) (ज) (झ) ; तून—तन (ख) (छ) (ज) (झ) (ब) ।
- ४६ प्रभाउ—प्रभा (क) (ख) (घ) (च) ; परत न काल प्रभाव सदा सोभित हैं ते ते (ब) ।
- ४६ संत वसंत—संतत वसत (क) (च) ।
- ५१ ज्यों—जो (छ) (ज) (झ) ।
- ५२ भू—भू (छ) (ज) (झ) ; जगत—ज्योति (घ) ; तित—कित (ङ) ।
- ६५ अति सुही—सुही ज्यों (छ) (झ) ।
- ७० घर—घर (छ) (ज) (झ) (ङ) ।
- ७३ तट—नित (ख) (ङ) (ज) ।
- ७४ दीरि जनु—दूरि लीं (छ) (झ) ; मनि मंडित दोऊ तीर उठे छवि भरि अति लहरी (ङ), मणि मंदिर दोउ तीर उठत छवि अद्भुत भारी (ज) ।
- ७५ तहाँ इक मणिमय सिंह पीठ सोभित सुन्दर अति (छ) (ज) ।
- ८० रुचिर...जस—रुचिर निविड़ मध्य लागत उड़पति जस (छ), रुचिर निविड़ उर लागत पति जस (ज) ।
- ८५ आकांत—रुचि लिए (ज) ।
- ९० मयूर हँसि—मरुत बस (छ) (झ), मयूर हरि (ज) ।
- १०० बिहँसति—बिलसति (छ) (झ), बहसन (ज) ।
- १०३ अरुनिमा, वन मैं—अरुन वा वन मे (घ) (झ), अरुन नम वन मैं (छ) (झ), अरुन मनो वन व्याप (ज) ।
- ११० चतुर—नु घट (च) ; अधरासव—अधरा नुर (ङ), अधरा रन (ठ) ।

- ३२ जिन—तिन (ख) (ग) (छ) (ज) (झ), यह (क) (च) ।
 ४० नातं में—ताही ते (ख) (छ) (ज) (झ) ।
 ४१ वारुव—विरुघी (छ) (ज) (झ) ; तून—तन (ख) (छ)
 (ज) (झ) (ञ) ।
 ४६ प्रभाउ—प्रभा (क) (ख) (घ) (च) ; परत न काल प्रभाव
 सदा सोभित हैं ते ते (ञ) ।
 ४६ संत वसंत—संतत वसत (क) (च) ।
 ५१ ज्याँ—जो (छ) (ज) (झ) ।
 ५२ भू—भ्रू (छ) (ज) (झ) ; जगत—ज्योति (घ) ; तित—
 कित (ङ) ।
 ६५ अति मुही—मुही ज्याँ (छ) (झ) ।
 ७० घर—घर (छ) (ज) (झ) (ङ) ।
 ७३ तट—नित (ख) (ङ) (ज) ।
 ७४ दीरि जनु—दूरि लीं (छ) (झ) ; मनि मंडित दोऊ तीर उठै
 छवि भरि अति लहरी (ङ), मणि मंदिर दोउ तीर उठत छवि
 अद्भुत भारी (ज) ।
 ७५ तहाँ इक मणिमय सिंह पीठ सोभित सुन्दर अति (छ) (ज) ।
 ८० रुचिर . . . जस—रुचिर निविड़ मध्य लागत उड़पति जस (छ),
 रुचिर निविड़ उर लागत पति जस (ज) ।
 ८५ आक्रांत—रुचि लिए (ज) ।
 ९० मधुर हँसि—मरुत वस (छ) (झ), मधुर हरि (ज) ।
 १०० बिहँसति—बिलसति (छ) (झ), बहसन (ज) ।
 १०३ अरुनिमा, वन में—अरुन वा वन में (घ) (झ), अरुन नभ वन में
 (छ) (झ), अरुन मनो वन व्याप (ज) ।
 ११० चतुर—नु घट (च) ; अघरासव—अघरा नुर (ङ), अघरा
 रन (ठ) ।

- १८७ दुख के बोझ—दुख सीं दवि (छ) (ज) (ब); नै—लै (छ) (ज) (ब) ।
- १८६ कितहि—कत कीं (क), केतीक (ख), कतक (च) (छ) (ज) ।
- २०० घरमन की तुम धर्म भर्म फिर आगे को है (छ), घर में को तिय भरमें, घरमें या आगै कोहै (ब) ।
- २०३ नग खग और मृगन को कैसो धर्म रह्यो है (ज), नग, खग और मृगन हूँ नाहिन धरम रह्यो है (ब) ।
- २०४ छाने ह्वै रही पिया अब न कछु जात कह्यो है (छ) (ज) (ब) ।
- २०५ अरा—के (ख) (ज) ।
- २०८ लाल, नैन चंचल जु—चपल नेन मानो मीन (ख), नैन चपल मनु मधुप (ब), चपल नयन पिया मीन (ज), चपल-नैन ह्वै मीन (ब) ।
- २१४ कुदि परि—गिरि परि (ज), परि-परि (ब) ।
- २१७ प्रेम-पगे सुनि वचन, आँच-सी लगी आइ जिय (ब); लागी जिय—लगी तबहि हिय (ड) ।
- २१८ नव-नीत मीत नवनीत-सदृस—नवनीत मीत सुन्दर माँहन (छ) (ज) (ब) ।
- २२२ तन—नव (ख), है (छ) (ज), चित (भ) (ब) ।
- २२६ पुनि—छवि (ब); लुठति—गिरत (छ) (ज) ।
- २२७ गन—मन (ख) (छ) (ज) (ब) ।
- २२८ धन—संग (क) (ड) ।
- २२३ कुंज, छवि पुंजन—कुंज पुंजनि छवि (च) ।
- २२६ उत—त (क) (ख) (ग) (घ) (ङ) (च) ।
- २२६ तपटें—पूटें (ब) ।
- २४० गोद.... तपटें—गोद भरि-भरि मुख लूटें (छ) (ज) (ब) ।
- २४२ सुधावत—सुधा वर (छ) (ज) (ब) ।

- १८७ दुख के बोझ—दुख सीं दवि (छ) (ज) (ञ); नै—लै (छ) (ज) (ञ) ।
- १८९ कितहि—कत कौं (क), केतीक (ख), कतक (च) (छ) (ज) ।
- २०० घरमन की तुम धर्म भर्म फिर आगे को है (छ), घर में को तिय भरमैं, वरमैं या आगै कोहै (ञ) ।
- २०३ नग खग और मृगन को कैसी धर्म रह्यो है (ज), नग, खग और मृगन हूँ नाहिन धरम रह्यो है (ञ) ।
- २०४ छाने ह्वै रही पिया अब न कछु जात कह्यो है (छ) (ज) (ञ) ।
- २०५ अरा—के (ख) (ज) ।
- २०८ लाल, नैन चंचल जु—चपल नेन मानो मीन (ख), नैन चपल मनु मधुप (व), चपल नयन पिया मीन (ज), चपल-नैन ह्वै मीन (ञ) ।
- २१४ कुदि परि—गिरि परि (ज), परि-परि (ञ) ।
- २१७ प्रेम-पगे सुनि वचन, आँच-सी लगी आइ जिय (ञ); लागी जिय—लगी तवहि हिय (ङ) ।
- २१८ नव-नीत मीत नवनीत-सदृस—नवनीत मीत सुन्दर माँहन (छ) (ज) (ञ) ।
- २२२ तन—नव (ख), है (छ) (ज), चित (झ) (ञ) ।
- २२६ पुनि—छवि (ञ); लुठति—गिरत (छ) (ज) ।
- २२७ गन—मन (ख) (छ) (ज) (ञ) ।
- २२८ धन—संग (क) (ङ) ।
- २२३ कुंज, छवि पुंजन—कुंज पुंजनि छवि (च) ।
- २२६ उत्त—त (क) (ख) (ग) (घ) (ङ) (च) ।
- २२६ नपटै—पूटै (ञ) ।
- २४० गोद....दपटै—गोद भरि-भरि मुख लूटै (छ) (ज) (ञ) ।
- २४२ सुंघावत—नुधा वर (छ) (ज) (ञ) ।

३२६ भरघो—घस (ङ) (ञ) ।

३२७ कही—अही (ख) (घ), कहु (छ) ।

३२८ तिन में तिन के हिय की जानत जन उत्तर दीनों (ख), तिन में कोऊ तिनके हित की जिनि उत्तर दीनों (घ), तिन मधि हिय की जानि, कोऊ यह उत्तर दीन्हो (ञ) ।

३४१ माननि-तन—मानो नीतन (ख) ।

३४८ ज्यों, अति—तो कछु (ग) (घ) (ञ) ।

३५६ निहारी—ढटारी (ख), बिहारी (छ) (ज) (ञ) ।

३६० ये—यह (ख) ।

३६१ अस्त्र—शास्त्र (क) (ख) (च) ; हांसी-फांसी—हांसी हांसी (क) (ख) (च) (झ) (ठ) (ड) ।

३६२ मौल—मान (ड) ।

३६३ विष....अनल तैं—विष तैं, जल तैं, व्याल-अनल तैं (ञ) ।

३६५ जब....सुवन—जनु जसुधा सुत न (क) (च), जनु तुम जसोदा सुवन (ख) (ग), जसुदा सुत जनु तुम न (ज), जनु जसुधा तैं प्रगट (ञ) ।

३६६ विधि नैं—विबुध (ङ), विधना (छ) (ज) (ञ), विधिहि (ठ) ।

३६८ जी—को (ख) (घ) (ङ) (छ) (ज) ; मरिही—मारिही (क), मारि (छ) (ज) (ञ) ; करिही—करहु (ञ) ।

३७४ खचै—खेचि (घ) (ङ) ।

३८३ जिहि यह प्रेम सुधावर मोहन मुख देख्यो पिय (ज), जिन यह प्रेम-सुधावर-नुम्हरो-मुख निरख्यो पिय (ञ) ।

३८६ ती—को (ख) ।

३९० कयं—कूप (ङ), कर्म (ड) ।

३९८ उन्नक्त—जागहि (क) (च), जगति (ञ), उजगहि (ठ) ।

- ३२६ भरघो—बस (ङ) (ञ) ।
- ३२७ कही—ग्रही (ख) (घ), कहु (छ) ।
- ३२८ तिन में तिन के हिय की जानत ऊन उत्तर दीनी (ख), तिन में कोऊ तिनके हित की जिनि उत्तर दीनी (घ), तिन मधि हिय की जानि, कोऊ यह उत्तर दीन्ही (ञ) ।
- ३४१ मानिनि-तन—मानो नीतिन (ख) ।
- ३४२ ज्यों, अति—ती कछु (ग) (घ) (ञ) ।
- ३४६ निहारी—बटारी (ख), बिहारी (छ) (ज) (ञ) ।
- ३६० ये—यह (ख) ।
- ३६१ अस्य—शास्त्र (क) (ख) (च) ; हाँसी-फाँसी—हाँसी हाँसी (क) (ख) (च) (झ) (ठ) (ड) ।
- ३६२ मोल—मान (ङ) ।
- ३६३ बिष . . . अनल तैं—बिष तैं, जल तैं, व्याल-अनल तैं (ञ) ।
- ३६४ जब . . . सुवन—जनु जसुधा सुत न (क) (च), जनु तुम जसोदा सुवन (ख) (ग), जसुदा सुत जनु तुम न (ज), जनु जसुधा तैं प्रगट (ञ) ।
- ३६६ विधि नैं—बिबुध (ङ), विधना (छ) (ज) (ञ), विविहि (ठ) ।
- ३६८ जी—को (ख) (घ) (ङ) (छ) (ज) ; मरिही—मारिही (क), मारि (छ) (ज) (ञ) ; करिही—करहु (ञ) ।
- ३७४ खचै—खँचि (च) (ङ) ।
- ३८३ जिहि यह प्रेम सुधावर माँहन मुख देख्यो पिय (ज), जिन यह प्रेम-सुधावर-तुम्हरो-मुख निरख्यो पिय (ञ) ।
- ३८६ ती—को (ख) ।
- ३९० कृपें—कूप (ङ), कर्म (ङ) ।
- ३९८ उभयत—जागहि (क) (च), जगति (ञ), उजगहि (ठ) ।

- ४६० प्रतिबिम्ब चंद्र जग—बहु प्रतिबिम्ब बहु जस (ख), बहु प्रतिबिम्ब
बहु जस (छ) (ज), बहु प्रतिबिम्ब होइ जस (ज) ।
- ४६७ तार—ताल (ग) (छ) (ज) (ञ) ।
- ४६८ की—के (ज) ।
- ४७३ छविली—चपल (ज) ।
- ४७७ तिरप—तिरप (क) (च), निरपि (ख), चर (ङ); कोउ सखि . . .
बांधि—कोउ सखी उरप तिरप बांधति (घ), कोऊ सखी उरप
तिरप करि (ङ), कोउ सखी कर पकरत (ज), कोऊ सखि कर-
पकर जु (ञ); छविली—यों छविली (ज), या छवि सीं (ज) ।
- ४७८ मानों करतल फिरत देखि नट लटू होत पिय (छ) (ज) ।
- ४८० गावति . . . जस—अरु गावति पिय के जस (छ) (ज) (ञ) ।
- ४८१ तव—नव (क) (घ) (च) ।
- ४८२ बिलास—बिसाल (क) (च) ।
- ४८४ अवर . . . रहत—अवर तिहि वन रहत (ग), अवर तिहि छन
वनत (छ) (ज), जहँ के तहँ बनि रहत (ज) ।
- ४८५ नुर-रली—संग जुरली (ख), नुर लीन (घ), रस बली (ज),
नुर जुरली (ञ) ।
- ४८८ ई तँबोल—देत बोर (क) (च), देत बील (ख), बोर देत (ङ) ।
- ४८९ नृत्य—रीत (ख) (छ) (ज) (ञ) ।
- ४९० निगम—गवन (ख), रमण (घ), गमन (छ) (ज), गान (ञ) ।
- ४९६ बह निरतनि—बर निरतत (ग), मुरि निरतत (छ) (ज) (ञ),
कार्य . . . गति—कहि आर्य कार्य गति (च) ।
- ४९८ नैकुलता . . . बोलनि—ता ता थैई थैई बोलनि (ङ), मंजुल
ता थैई बोलनि (छ) (ज) (ञ) ।
- ४९९ कोउ उन तँ अति गावत नुर लय लेत नान नई (ज), कोउ गावत
नुर-रली लँ फनि नान नई नई (ञ) ।

- ४६० प्रतिविम्ब चंद्र जल—बहु प्रतिविम्ब बहु जल (ख), बहु प्रतिविम्ब
बहु जल (छ) (ज), बहु प्रतिविम्ब होइ जल (ब) ।
- ४६७ तार—ताल (ग) (छ) (ज) (ञ) ।
- ४६८ की—के (ञ) ।
- ४७३ छविली—चपल (ज) ।
- ४७७ तिरप—तिर्प (क) (च), निरपि (ख), चप (ङ); कोउ सखि . . .
बांधि—कोउ सखी उरप तिरप बांधति (घ), कोऊ सखी उरप
तिरप करि (ङ), कोउ सखी कर पकरत (ज), कोऊ सखि कर-
पकर जु (ञ); छविली—यों छविली (ज), या छवि ताँ (ञ) ।
- ४७८ मानों करतल फिरत देखि नट लटू होत पिय (छ) (ज) ।
- ४८० गावति . . . जस—अरु गावति पिय के जस (छ) (ज) (ञ) ।
- ४८१ तव—तब (क) (घ) (च) ।
- ४८२ दिनास—दिसाल (क) (च) ।
- ४८४ अवर . . . रहत—अवर तिहि बन रहत (ग), अवर तिहि छन
बनत (छ) (ज), जहँ के तहँ बनि रहत (ञ) ।
- ४८५ मुर-गली—संग जुगली (ख), मुर लीन (घ), रस बली (ज),
मुर जुगली (ञ) ।
- ४८८ ई तँबोल—देत बोर (क) (च), देत बील (ख), बोर देत (ङ) ।
- ४८९ नृत्य—रीत (ख) (छ) (ज) (ञ) ।
- ४९० निगम—गवन (ख), रमण (घ), गमन (छ) (ज), गान (ञ) ।
- ४९६ बह निरतनि—बर निरतत (ग), मुरि निरतत (छ) (ज) (ञ),
कार्य . . . गति—कहि आवँ कार्य गति (च) ।
- ४९८ मँजुलता . . . बोलनि—ता ता थैई थैई बोलनि (ङ), मँजुल
ता थैई बोलनि (छ) (ज) (ञ) ।
- ४९९ कोउ उत ते अति गावत मुर लय लेत नान नई (ज), कोउ गावत
मुर-लै-लौ लै कनि नान नई नई (ञ) ।

- ५६८ जग में जे मोहनी तिनकी मोहनी ब्रज ब्रह्म (घ), जगत-मोहिनी
जिती तिती ब्रज-तिय मोहनि सब (ज) ।
५७२ मानी—जानी (छ) (ज) (घ) ।
५८२ सो तनकहु नहि—नो न नेक हू (ङ) ।

सिद्धांत पंचाध्यायी

- ४ प्रभु की—प्रभुक (क) (ख), प्रभुहि (ग) ।
१३ पट . . . धरत—निर्गुन अर अवतार धर्म (घ) ।
१७ कहैं—कहै (क), कहे (ग) ; रहैं—रहै (क), रहे (ग) ।
१८ अपन निज—आप निज (घ) ।
१९ मोहिनी . . . मोहे—मोहनी मोह रूप धरि मोह्यी (घ) ।
२२ गिरि तैं गिरि—गिरि ती (घ) ; मूरि—पूरि (घ) ।
२४ करयी—कियी (ग) (घ) ।
२९ निरतास—निर्तान (ख), निर्जास (घ) ।
३० रखवारी—रस रीति (घ) ।
३० तिन में—तिन तन (घ) ।
३४ कीटांत—की जंत (ग), कीटादि (घ) ; सर्वांतरजामी—सब
अन्तर जामी (ग) (घ) ।
३६ करुना . . . नंदन—करुनानिधान प्रगट नंदनंदन (घ) ।
४० स्मृति—गन (ख) (घ) ।
४२ सब . . . भ्राजै—सब रजनी भ्राजै (घ) ।
४५ इक पैहिलेई गमन मन मुन्दरि घन मूरति हरि (क), इक पहली
जू मग्न मतहि मुंदर घन मूरति हरि (घ) ।
५१ ये—रहै (ख) (घ) ।
६३ बाइत—बाई (ख) (ग) ।

- ५६८ जग में जे मोहिनी तिनकी मोहनीं ब्रज बहूँ (घ), जगत-मोहिनी
जिती तिती ब्रज-तिय मोहनि सब (ज) ।
५७२ मानी—जानी (छ) (ज) (ञ) ।
५८२ तो तनकहु नहि—नो न नैंक हू (ङ) ।

सिद्धांत पंचाध्यायी

- ४ प्रभू की—प्रभुक (क) (ख), प्रभुहि (ग) ।
१३ पट....धरत—निर्गुन अर अवतार धर्म (घ) ।
१७ कहैं—कहै (क), कहे (ग) ; रहैं—रहै (क), रहे (ग) ।
१८ अपन निज—आप निज (घ) ।
१९ मोहिनी....मोहे—मोहनी मोह रूप धरि मोह्यी (घ) ।
२२ गिरि तैं गिरि—गिरि ती (घ) ; मूरि—पूरि (घ) ।
२४ करयी—कियी (ग) (घ) ।
२६ निरतास—निर्तान (ख), निर्जास (घ) ।
२८ रखवारी—रस रीति (घ) ।
३० तिन में—तिन तन (घ) ।
३४ कीटांत—की जंत (ग), कीटादि (घ) ; सर्वांतरजामी—सब
अन्तर जामी (ग) (घ) ।
३६ करुना....नंदन—करुनानिधान प्रगट नंदनंदन (घ) ।
४० स्मृति—गन (ख) (घ) ।
४२ सब....भ्राजै—सब रजनी भ्राजै (घ) ।
४५ एक पैहिलैंई गमन मन मुन्दरि घन मूरति हरि (क), एक पहली
जू गमन मतहि मुंदर घन मूरति हरि (घ) ।
६१ ये—रह (ख) (घ) ।
६३ दाइत—दाई (ख) (ग) ।

२२६ बहुरि का . . . ते—बहुरि का बहु कानन ते (ग), फिरि बहुरि कहा करते ते (घ) ।

दशम स्कंध

प्रथम अध्याय

- १ जो—ज्यों (क) (ख) (ग) ।
 ४ कही—कहि (क) (ख), कही (ग) ।
 १२ हों को—को हे (क) ।
 २५ कार्य—कारन (ङ) ।
 २६ कवि जान—जंजात (क) (ग) ।
 २७ भवत—भक्ति (क) (ख) ।
 ३० नृपन—नपनि (क) ; सो ईसान . . . जया—सोई सात कया हे जया (क) ।
 ३४ मो आश्रय इहि दशम स्कंध, प्रगटित मोचन लोचन अंध (ख) ।
 ४३ ईस्वरता . . . ताके—सो ईस्वरता फुरे न ताके (क) ।
 ५१ परीच्छन लह्यो—परीक्षक लह्यो (क) ।
 ७५ हमरे . . . देव—हमरे तो हैं हरि कुल देव (ख) ।
 ११६ इहि . . . कही—इहि विधि विविध वृषन सों कही (क) ।
 १२२ इस के स्थान पर 'ख' ने ये पंक्तियाँ दी हैं—
 नम्यक मास्य दिष्ट जे लहें, आत्म द्वे प्रकार ते कहें ।
 एक जीव एक भक्त आत्मा, जों नित पाइ पलोदत रमा ।
 १३० मय . . . गुन भरी—मय देव मय मय गुन भरी (ख) ।
 १३१ इति—इति (ख) (ग) ।
 १३३ कियान—कैकान (क) ।

२२६ बहुरि का . . . ते—बहुरि का बहु कानन ते (ग), फिरि बहुरि कहा करते ते (घ) ।

दशम स्कंध

प्रथम अध्याय

१ जो—ज्यों (क) (ख) (ग) ।

४ कही—कहि (क) (ख), कही (ग) ।

१२ हीं को—को हे (क) ।

२५ काज—कारन (ङ) ।

२६ कवि जान—जंजांन (क) (ग) ।

२७ भवन—भक्ति (क) (ख) ।

३० नृपन—नपनि (क) ; सो ईसान . . . जया—सोई सात कया हे जया (क) ।

३४ सो आश्रय इहि दशम स्कंध, प्रगटित मोचन लोचन ग्रंथ (ख) ।

४३ ईस्वरता . . . ताके—सो ईस्वरता फुरे न ताके (क) ।

५१ परीच्छन लही—परीक्षक लहो (क) ।

७५ हमरे . . . देव—हमरे तो हैं हरि कुल देव (ख) ।

११६ यहि . . . कही—इहि विधि विविध वृषन सों कही (क) ।

१२२ इस के स्थान पर 'ख' ने ये पंक्तियाँ दी हैं—

मन्यक वास्तव दिष्ट जे लहें, आत्म द्वे प्रकार ते कहें ।

एक जीव एक भक्त आनमा, जों नित पाइ पलोदत रमा ।

१३० मय . . . गुन भरी—मयं देव मय मय गुन भरी (ख) ।

१३१ दुति—द्वि (ख) (ग) ।

१३३ कियान—कैकान (क) ।

- ५६ जान—जानी (क) ।
 ६० जया . . . तिती—जया वकामुर हत है तिती (क) ।
 ६७ नै नटि—नै गुत (ग) ।
 ७४-७७ इन पंक्तियों के स्थान पर 'ख' में केवल दो पंक्तियाँ हैं—
 आनंद भरि अंबुद धिरि आए, फुई फूल वरपते सुहाए ।
 नै राहि मकयो न नेवक गेस, करि लियो फननि को छत्र सुदेन ।
 ७८ जल—जल (क), छवि (ग) ।

चतुर्थ अध्याय

- २ चंडिका—चंडिवे (घ) । इस दोहे के स्थान पर 'ख' ने ये पंक्तियाँ दी हैं—
 अब चतुर्थ अध्याय सुनि मित्र, जामें चंडी वचन विचित्रि ।
 सुनि के कंस महा डर डरिहैं, उठि कै प्रात वात विस्तरिहैं ।
 ७ उगटत—अबुटत (क), अपुरत (ख) ।
 ८ छविमई—गुन मई (क) ।
 १२ नीचन . . . गुमाउ—नीचनि के कंसों हृदभाव (क), नीचनि के कानों हृदभाव (ख) ।
 १७ इस के स्थान पर 'ख' ने ये पंक्तियाँ दी हैं—
 रे रे मंद कछू न विचारत, हम सी कृपननि कत कहू मारत ।
 उपजो है तुव मारत हारो, अरे निष्ट जिन करि जिय गारो ।
 २५ नीनक—सूनक (क) ।
 २६ जिनि . . . अनुराग—नीच न करो सिनुन के राग (ख) ।
 ३१ इस के पश्चात् 'ख' ने यह अनिश्चित सोंगठा दिया है—
 बुरो करे जो कोइ, साथ न तऊ मानें बुरो ।
 गुरो उजेरो हो, छार लगायें मुकुर जिम ॥
 ३२ परी वन—परी वन (घ) ।

- ५६ जानै—जानी (क) ।
 ६० जया . . . तिती—जया वकामुन हत है तिती (क) ।
 ६७ नै नटि—नै नुत (ग) ।
 ७४-७७ इन पंक्तियों के स्थान पर 'ख' में केवल दो पंक्तियाँ हैं—
 आनंद भरि अंबुद धिरि आए, फुई फूल वरपते सुहाए ।
 नै सहि नवयो न नैवक नैस, करि लियो फननि को छन सुदेन ।
 ७८ जन—नव (क), छवि (ग) ।

चतुर्थ अध्याय

- १ चंडिका—चंडिवे (घ) । इस दोहे के स्थान पर 'ख' ने ये पंक्तियाँ दी हैं—
 अब चतुर्थ अध्याय सुनि मित्र, जामें चंडी वचन विचित्रि ।
 सुनि के कंस महा डर डरिहैं, उठि कै प्रात वात विस्तरिहैं ।
 ७ उषटत—अवृटत (क), अपुरत (ख) ।
 ८ छविमई—गुन मई (क) ।
 १२ नीचन . . . गुभाउ—नीचनि के कंसों हृदभाव (क), नीचनि के कानों हृदभाव (ख) ।
 १७ इस के स्थान पर 'ख' ने ये पंक्तियाँ दी हैं—
 रे रे मंद कछू न विचारत, हम सी कृपननि कत कहू मारत ।
 उपजो है तुव मारत हारो, अरे निष्ट जिन करि जिय गारो ।
 २५ नीतक—सूतक (क) ।
 २६ जिनि . . . अतुराग—मोच न करो सिमुन के राग (ख) ।
 ३१ इन के परवान् 'ख' ने यह अनिरिखत सोरठा दिया है—
 बुरो फरे जो कोइ, राख न तऊ मानें बुरो ।
 बुरो उजेरो हो, छार लगायें मुकुर जिम ॥
 ३२ परी रंग—परी वन (घ) ।

इत म गग रागिनी गावत, नृत्तत नटी जटी छवि पावत ।
 इत मागध बंदी जन रहै, इत ए सूत पुराननि पडै ।
 तेनेई गुरखर बन्पनि फूडनि, डारत दिव्य दुकूल अमूलनि ।
 उपर्युक्त पद्यांग के बाद 'ग' ने पंक्ति ४४, ४५ देकर इस प्रकार
 पाठ रखा है—

ता दिन ब्रज छवि कहें वनें न, नवनि के ह्वै गए कंचन अंत ।
 पंक्ति ४१, ४२, नया ४३

नित पर चपल पताका चमकै, विनु धन जनु कि दामिनी दमकै ।
 जितौक ब्रज बछ बाछि गाई, कंचन माल सवनि पहिराई ।
 पंक्ति ५२

जदपि नित्य किशोर ब्रज, राजत अंबुज नैन ।
 प्रगट भये पुनि नंद घर, सबै वयस मुप दें ॥

पंक्ति ५४, ५६

सोवत रैन नंद अकुलाई, उठि कें प्रात पूत डिग जाई ।
 वदन उधारे छविहि निहारै, बार बार आपुनपी वारै ।

पंक्ति ५५, ५६

जनुमति के मुप की को कहै, बार ही बार वदन छवि चहै ।
 वृत्तिया तिथि भई देवकी, विधु दिपियै जिमि नंद ।
 पुन्यो नी जनुमति लसी, पूरन जहां ब्रजचंद ॥
 श्री नंदजू के प्रेम की उपमा कहत है—

रंक महानिधि पाइ, ज्यां रहै छतीपर लाय ।
 तेने नंद महर अद्वि, सुंदर मुत कों पाय ॥
 ज्या मनि उजियारें मणी, विहरत करत अतंद ।
 न्या मुत मुप कंदहि निरधि, विचरत ब्रज में चंद ॥

पंक्ति ५७ (उस के बाद 'ग' का पाठ मूल पाठ ने मिलता जुलता है ।)

६४ अन्त—गछ (क) (ग) ।

इत ए गग रागिनी गावत, नृत्तत नदी जटी छवि पावत ।
 इत मागध बंदी जन रहै, इत ए सूत पुराननि पढ़ै ।
 तेमै नै नुरघर बन्पनि फूलनि, डारत दिव्य दुकूल अमूलनि ।
 उपर्युक्त पद्यांग के बाद 'न' ने पंक्ति ४४, ४५ देकर इस प्रकार
 पाठ रखा है—

ता दिन ब्रज छवि कहें वन न, सवनि के ह्वै गए कंचन अंन ।
 पंक्ति ४१, ४२, नया ४३

तिन पर चपल पताका चमकै, विनु घन जनु कि दामिनी दमकै ।
 जितीक ब्रज बछ बाछि गाई, कंचन माल सवनि पहिराई ।
 पंक्ति ५२

जदगि नित्य किशोर ब्रज, राजत अंबुज नैन ।
 प्रगट भये पुनि नंद घर, सबै वयस सुप दें ॥
 पंक्ति ५४, ५६

नोवत रैन नंद अकुलाई, उठि कें प्रान पूत डिग जाई ।
 वदन उधारे छविहि निहारै, बार बार आपुनपी बारै ।
 पंक्ति ५५, ५३

जनुमति के मुष की को कहे, बार ही बार वदन छवि चहे ।
 वृत्तिया तिथि भई देवकी, विधु दिपियै जिमि नंद ।
 पुन्यो मी जनुमति लसी, पूरन जहां ब्रजचंद ॥
 श्री नंदजू के प्रेम की उपमा कहत है—

रंक महानिधि पाइ, ज्यों रहै छतीपर नाय ।
 तेनै नंद मह अहिर, सुंदर नुत को पाय ॥
 ज्यों मनि उजियारें मणी, विहरत करत अनंद ।
 न्यों नुत नुप कंदहि निरपि, विचरत ब्रज में चंद ॥

पंक्ति ५७ (उन के बाद 'न' का पाठ मूल पाठ ने मिलता जुलता है ।)

६४ अन्त—गछ (क) (ग) ।

सप्तम अध्याय

- २ अठ सप्तम अध्याय सुनि भिन्न, जामें अद्भुत बाल चरित्र (ख) ।
- ३ उसके स्थान पर 'ग' ने दो पंक्तियाँ दी हैं—
सकट विकट उच्चाटन करिहैं, तृणावर्त अथ डारिनि दरिहैं ।
सुनि कै यह पूतना चरित्र, बाल भाव रस सिंधु पवित्र ।
- ४ राजा—साजा (ग) ; मगन भयो नृप गदगद गरें, पुन शुक मुनि
सों विनती करें (ख) ।
- १४ चावल—चावरी (ख), चबौर (ग) ।
- १६ जब—तब (क) ; तब—कछु (क) ।
- २१ अभिचार—अविचार (ग) ।
- २३ तनक चरन ऊँचें उचकाई, उड गयो उड़नि में दयो रराई (ख) ।
- ३० कूट—कूल (ङ) ।
- ३७ तब . . . धरयो—तब धरनी धरनी पर धरयो (ख) ।
- ४२ कित—किन (ख) ।
- ५० डरपि घुरि—डरयो लपटि (ख) ।
- ७२ इन के स्थान पर 'ख' ने ये पंक्तियाँ दी हैं—
माया कियों कियों यह सपनों, कियों बुद्धि भ्रम है यह अपनों ।
बहुरि कहत यह सपना न होइ, नहि माया नहि छाया कोइ ।
- ७३ इन के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—
विद्वहि करे हरे संहरे, ऊर्न नाम लों पुनि विस्तरे ।

अष्टम अध्याय

- ११ इन के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—
अपनों कछु प्रयोजन आहि, श्री ब्रजराज कहति हैं ताहि ।
- २१ अद्भुत . . . धाम—पूरनकास सकल गुनधाम (ख) ।
- ३० बहुत कहा कहियै हो नंद, वै है तुम को परमानंद (ख) ।

सप्तम अध्याय

- २ अथ सप्तम अध्याय मुनि मित्र, जामें अद्भुत बाल चरित्र (ख) ।
- ३ इसको स्थान पर 'म' ने दो पंक्तियाँ दी हैं—
सकट विकट उच्चाटन करिहैं, तृणावर्त अथ डारिन दरिहैं ।
मुनि कै यह पूतना चरित्र, बाल भाव रस सिद्ध पवित्र ।
- ४ काजा—साजा (ग) ; सगन भयो नृप गदगद गरैं, पुन शुक मुनि
सों विनती करैं (ख) ।
- १४ चावल—चावरी (ख), चवॉर (ग) ।
- १६ जब—तब (क) ; तब—कछु (क) ।
- २१ अभिचार—अविचार (ग) ।
- २३ तनक चरन ऊँचें उचकाई, उड़ गयो उड़नि में दयो रराई (ख) ।
- ३० कूट—कूल (ङ) ।
- ३७ तब....धरयो—तब धरनी धरनी पर धरयो (ख) ।
- ४२ कित—किन (ख) ।
- ५० डरपि घुरि—डरयो लपटि (ख) ।
- ७२ इस के स्थान पर 'ख' ने ये पंक्तियाँ दी हैं—
माया कियों कियों यह नपनों, कियों बुद्धि भ्रम है यह अपनों ।
बहुरि कहत यह सपना न होइ, नहि माया नहि छाया कोइ ।
- ७३ इस के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—
विश्वहि करे हरे संहरे, ऊर्न नाम लों पुनि विस्तरे ।

अष्टम अध्याय

- ११ इस के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—
अपनों कछु प्रयोजन आहि, श्री ब्रजराज कहति हैं ताहि ।
- २५ अद्भुत....धाम—पूरनकाम सकल गुनधाम (ख) ।
- ३० बहुत कहा कहिये हो नंद, वै है तुम की परमानंद (ख) ।

६३ इन के बाद 'ख' ने दो अतिरिक्त पंक्तियाँ दी हैं—

अरे पूत पूतना निपातनि, तो नों इक कहि सकत न वातनि ।

रहत जु निपट धूरि में मन्यो, पूरव जनम सूकर में मन्यो ।

१०३ हित . . . मात—आन्याँ पकरि आपनीं तात (क), हित गो पिजी
जनोमति मात (ख) ।

१०४ अनियार्ह—अनुपाई (ख) ।

१०६ यह . . . मेरी—यह न झूठ बोलै बलि मेरी (ख) ।

१११ कहति तो इतँ लाइ धीं, देपीं रदन बदन बाइ धीं (ख) ।

११२-१२० 'व' ने इन पंक्तियों का पाठ इस प्रकार दिया है—

जगत मथन मधु मथन मुरारि, ठारि कै दीनों बदन पसारि ।

जनुमति जहां चितँ चकि रही, थिर चर ठंवर अंवर मही ।

पावक पवन चंद रवि तारक, सत रज तम गुन तिन के धारक ।

ज्योति चक्र जल तेज अनंत, इंद्रियगन मन मूरतिवंत ।

गन्ध स्पर्श रूप रस गंध, काल स्वभाव कर्म जिय बंधु ।

जीव बुद्धि अरु लिंग शरीर, महदादिक तत्त्वनि की भीर ।

पुनि तहां ब्रज अपनपे समेति, सांठ लियो सिनु कहु सिपि देति ।

चाहि चकित भई सब गुधि गई, कहति कि कहा आहि यह दई ।

नुपन कियो हरि देव की माया, मो मति भ्रमी किधों कछु छाया ।

११३ सरित—महित (क) ।

११६ तव—जय (क) ।

१२४ इनके बाद 'ख' में ये दो पंक्तियाँ हैं—

जाकी माया करि सब नचे, दरप अहं ममता मद मचे ।

अंती कूनति परी पग वेंरी, सो श्री कृष्ण होहु गति मेरी ।

१२६ इस के बाद 'ग' ने ये पंक्तियाँ दी हैं—

कहत कि हम ईश्वर जानवै, मुलभ है श्रुति मग पहिचावै ।

अँ परि हम नुन करि पादवै, अति दुरमल हसि हिये लाइवै ।

६३ इन के बाद 'ख' ने दो अतिरिक्त पंक्तियाँ दी हैं—

अरे भूत भूतना निपातनि, तो नों एक कहि सकत न वातनि ।

रहत जु निपट धूरि में सन्यो, पूरव जनम सूकर में मन्यो ।

१०३ हित . . . मात—आन्याँ पकरि आपनीं तात (क), हित गो पिजी
जमोमति मात (ख) ।

१०४ अनियार्थ—अनुपाई (ख) ।

१०६ यह . . . मेरी—यह न भूठ बोलै बनि मेरी (ख) ।

१११ कहति ती इतँ लाइ धीं, देपी रदन बदन बाइ धीं (ख) ।

११२-१२० 'घ' ने इन पंक्तियों का पाठ इस प्रकार दिया है—

जगत मथन मधु मथन मुरारि, डारि कैं दीनों बदन पसारि ।

जनुमति जहां चितै चकि रही, थिर चर ठंवर अंवर मही ।

पावक पवन चंद रवि तारक, सत रज तम गुन तिन के धारक ।

ज्योति चक्र जल तेज अनंत, इंद्रियगन मन मूरतिवंत ।

गन्ध स्पर्श रूप रस गंध, काल स्वभाव कर्म जिय बंधु ।

जीव बुद्धि अरु लिंग शरीर, महदादिक तत्त्वनि की भीर ।

पुनि तहां ब्रज अपनपे समेति, सांठ लियो सिमु कहु सिपि देति ।

चाहि चकित भई सब गुधि गई, कहति कि कहा चाहि यह दई ।

नुपन कियो हारि देव की माया, मो मति भ्रमी कियो कछु छाया ।

११३ सरित—नहित (क) ।

११६ तव—जय (क) ।

१२४ इनके बाद 'ख' में ये दो पंक्तियाँ हैं—

जाकी माया करि सब नचे, दरप अहं ममता मद मचे ।

अंती कूनति परी पग वेंरी, सो श्री कृष्ण होहु गति मेरी ।

१२६ इस के बाद 'ग' ने ये पंक्तियाँ दी हैं—

कहत कि हम ईश्वर जानवै, गुलब है श्रुति मग पहिचावै ।

अँ परि हम गुन करि पाइवै, अति दुरभल हसि हिये लाइवै ।

६८ नेत . . . बढ़ाई—गहो मधुनयन मयानी आई (क) ।

४० बिललाही—बिलखाही (ग) ।

४२ नु—नोड (क) ।

४८ नोई—नोरी (ख) ।

५१ उहै . . . आई—सोई जब पुरन नहि भई (क) (ङ) ।

५४ वरनु—वसन (क) ।

५७ अवसि—अव (क) ।

५८ आवै—पावै (क) ।

६० अन—अवसि (ख) (ग) ।

६१ रसना . . . नई—वत्सल रस रसनादिक नई (ख) ।

६२ इस के बाद 'ख' ने यह दोहा दिया है—

ज्ञान अगम निगमहि अगम, निपट अगम जम नेम ।

सब विधि दुरगम ब्रजेस नुत, नुगम एक ही प्रेम ॥

६४-६५

जदपि विधि शिव सब ही आत्मा, अवर वहै घर घरनी रमा ।

तिनहु कबहुं नाहिन चह्यो, जु सुप नंद की ललना लह्यो ।

(ख) ।

६७ कहैं मुखद हैं—कहूं मुख लहे (क), कह मुखद (ग) ।

७० गत—गति (ख) ; माया—माइक (क) ।

७५ छीजत इस देपहु तजि मीन, मृदुल मुकुर पर जिमि मुप पीन (ख) ।

७८ आपे—तपे (क), सापे (घ), नापे (ङ) ; जू—नु (ग) ।

८१ 'ग' ने इस अध्याय के अंत का दूसरा दोहा पहले दिया है तथा पहले के स्थान पर यह दोहा दिया है—

नंद नदम अध्याय को, उर धरि राखो प्रेनु ।

सहजहि उत्तम होइई, ज्यों तिन नेन फुलेन ॥

१८ नेत . . . बड़ा—गही मधुमयन मयानी आइ (क) ।

४० बिलनाही—बिलखाही (ग) ।

४२ नु—तोड (क) ।

४८ नोई—डोरी (ख) ।

५१ उहै . . . आई—सोई जब पूरन नहि भई (क) (ङ) ।

५४ बसनु—बसल (क) ।

५७ अवसि—अव (क) ।

५८ आवै—पावे (क) ।

६० अन—अवसि (ख) (ग) ।

६१ रसना . . . नई—वत्सल रस रसनादिक नई (ख) ।

६२ इस के बाद 'ख' ने यह दोहा दिया है—

ज्ञान अगम निगमहि अगम, निपट अगम जम नेम ।

सब विधि दुरगम ब्रजेस मुत्त, सुगम एक ही प्रेम ॥

६४-६५

जदपि विधि शिव सब ही आत्मा, अवरु बहै घर घरनी रमा ।

तिनहु कबहुं नाहिन चह्यो, जु सुप नंद की लगना लह्यो ।

(ख) ।

६७ कहैं मुखद हैं—कहूं मुख लहे (क), कह सुखदं (ग) ।

७० गत—गति (ख) ; माया—माइक (क) ।

७५ छीजत इम देपहु तजि मीन, मृदुल मुकुर पर जिमि मुप पीन (ख) ।

७८ आपे—लपे (क), लापे (घ), नाप (ङ) ; जू—नृ (ग) ।

८१ 'न' ने इस अध्याय के अंत का दूसरा दोहा पहले दिया है तथा

पहले के स्थान पर यह दोहा दिया है—

नंद नदम अध्याय को, उर धरि राखो घेनु ।

महदहि उत्तम होइई, ज्यों तिल नेल फुलेन ॥

- नाय्य परम अन्वह करयो, पायो दुलभ वरस रस भरयो ।
 दोले नलकृवर मणिशीव, अंजुलि जोरि नमित करि जीव ।
 ५३ वाणी तुव गुन कथन में रही, धवन कथा रस में निरवहीं (क) ।
 ५४-५५ इन के रयान पर 'क' में यह पंक्ति है—
 चरन कमल रस वस मन भीर, सपने हूं जित सूर्भ और ।
 ५६ प्रीतम—प्रिय तुम (ग) ; हमारी—हमारे (ख) ।
 ६३ डर—जग (ख) ।
 ६४ पुनि पाइ—चले नाय को माय नवाइ (ख) ।
 ६७ नम चले—गवने रगमगे (ख) ।
 ७१ कथित यह—यह कथा (ग) ।

एकादश अध्याय

- १-२ अत्र मुनि एकादश अध्याय, जामें श्री वृंदावन आय ।
 अवर जु अद्भुत अद्भुत केनि, भवन्ति परम अमी रस वेलि (ख) ।
 ४ अति—तहां (ख) (ग) ।
 ५ उस के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—
 बड़े अकाय दोऊ ऊपरे, धरनि ते जरनि सहित ऊपरे ।
 १० सहज—सबै (ग) ; नाचि—नाच (ख) (ग) ।
 २१ कयहूँक यहुरि—कयहूँ कहूँ (क) ; कहैं—करे (क) ।
 २२ गृहि दै—गृहियं (क) ।
 २४ कोउ वै—सहो कान्हू वै (ख) ; मोहि—नेकु (ख) ।
 २५ वज तिय—निज वज (क) (ग) ।
 २६ सिव की सर्वन—सिनु सर्वन सब (क) ।
 ५१ कहन लग्यो हित की सब बात, अब नौं परी आहि कुमरात (ख) ।
 इसे तथा पंक्ति ५० को 'ख' ने पंक्ति ४६ के पहलें दिया है ।
 ५३ करे—करै (ग) ; मुदि—गिरि (ग) ।

- नाय्य परम अनुग्रह करयो, पायो दुनभ वरस रस भरयो ।
 दोनै नलकुवर मणिरीव, अंजुलि जोरि नमित करि जीव ।
 ५३ वाणी तुव गुन कथन में रही, श्रवण कथा रस में निरवहीं (क) ।
 ५४-५५ रस के रयान पर 'क' में यह पंक्ति है—
 चरन कमल रस बस मन भीर, सपने हूं जिन सूर्भ श्रीर ।
 ५६ प्रीतम—प्रिय तुम (ग) ; हमारी—हमारे (ख) ।
 ६३ डर—जग (ख) ।
 ६४ पुनि . . . पाइ—चले नाथ को माय नवाइ (ख) ।
 ६७ नभ . . . चले—गवने रगमगे (ख) ।
 ७१ कथिन यह—यह कथा (ग) ।

एकादश अध्याय

- १-२ अब मुनि एकादश अध्याय, जामें श्री वृंदावन आय ।
 अवर जु अद्भुत अद्भुत केनि, भवतनि परम अमी रस बेलि (ख) ।
 ४ अति—तहां (ख) (ग) ।
 ५ उस के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—
 बड़े अकाय दोऊ कपरे, धरनि ते जरनि सहित ऊपरे ।
 १० सहज—सबै (ग) ; नाचि—नाच (ख) (ग) ।
 २१ कयहुँक यहुरि—कयहुँ कहूँ (क) ; कहैं—करे (क) ।
 २२ गृहि दै—गृहियं (क) ।
 २४ कोउ . . . वै—सहो कान्हू वै (ख) ; मोहि—नेकु (ख) ।
 २५ ब्रज तिय—निज ब्रज (क) (ग) ।
 २६ सिव की नवैन—सिनु नवैन सब (क) ।
 ५१ कहन लग्यो हित की सब बात, अब तौ परी आहि कुमरात (ख) ।
 रसे तथा पंक्ति ५० को 'ख' ने पंक्ति ५६ के पहले दिया है ।
 ५६ करे—करै (ग) ; मुदि—गिरि (ग) ।

१२० धिरि—पुनि (क) ।

द्वादश स्कंध

२-४

गिनि जेह बछ बालक कोटि, हरिहें हरि ताकी गल घोटि ।

उक दिन पुनि आनी हरि मन में, करिहें काल्ह कलेऊ वन में ।

प्रात काल उठि मोहन लाल, वेनु बजाइ बुलाए ग्वाव (ख) ।

७ कनक . . . नीके—कांवन धरि लए लागति नीके (क) ।

= इस के बाद 'ख' ने ये अतिरिक्त पंक्तियाँ दी हैं—

उज्जल उज्जल बछ सुहाए, मृदुल फटक के मनो वनाए ।

जिनके तन में बालक जिते, निज प्रतिविम विलोकत तिते ।

८ नंद . . . चले—वेनु बजावत गावत चले (ख) ।

१० नग . . . नाइक—जैसे नगनि के मधि मधि नाइक (ख) ।

११ इत—तहाँ (ग) ।

१५-२० 'ख' ने इन का पाठ इस प्रकार दिया है—

कैंक ग्वाल नाल डिग जाइ, आवत बैठे बगन खिजाइ ।

पंक्ति १६ [केइ मिलि—कैंइ शिमु ; कुहुकावत—पिजावत] ।

कैंइ मिलि कल कोकिल कुहुकावत, केइ नगनि छाया गहि थावत ।

पुनि पुनि तिनको चोंप दिवावति, हसति हसति बहुन्हीं फिरि आवति ।

पंक्ति १८

कहू दिवि नृत्तत मोर कियोर, तैसें ही नृत्तत ए चित चोर ।

पंक्ति २२, २१

छदि पुंजा गुंजा अति नाहे, ललित लालरी दुति तहाँ को है ।

जिनके खचिर हार गहि लावै, आनि नंद लालहि पहिरावै ।

पंक्ति २४, २५

इहि विधि बिहरत नरि अनुराग, श्री नृप बरनत तिनको भाग ।

इहि नृप प्रीति नहि अनुगरे, रहत है जदपि ब्रह्म नृप रहे ।

१२० चिदि—पुनि (क) ।

द्वादश स्कंध

२-४

गिनि जेहें बछ बालक कोटि, हरिहें हरि ताकी गल घोटि ।
एक दिन पुनि आनी हरि मन में, करिहें काल्ह कलेऊ वन में ।
प्रात काल उठि मोहन लाल, बेनु बजाइ बुलाए ग्लाव (ख) ।

७ कनका . . . नीके—कांधन धरि लए लागति नीके (क) ।

८ इस के बाद 'ख' ने ये अतिरिक्त पंक्तियाँ दी हैं—

उज्जल उज्जल बछ मुहाए, मृदुल फटक के मनो वनाए ।
जिनके तन में बालक जिते, निज प्रतिदिव बिलोकत तिते ।

९ नंद . . . चले—बेनु बजावत गावत चले (ख) ।

१० नग . . . नाइक—जैसे नगनि के मधि मधि नाइक (ख) ।

११ इत—तहाँ (ग) ।

१५-२८ 'ख' ने इन का पाठ इस प्रकार दिया है—

कंदक ग्वाल ताल डिग जाइ, आवत बैठे बगन खिजाइ ।
पंक्ति १६ [केई मिलि—कैइ धिमु ; कुहुकावत—पिजावत] ।
कैइ मिलि कल कोकिल कुहुकावत, कैइ खगनि छाया गहि धावत ।
पुनि पुनि तिनको चाँप दिवावति, हसति हननि बहुग्यों फिरि आवति ।
पंक्ति १८

कहूं दिधि नृत्तत मोर डिगोर, तमें ही नृत्तत ए चित चोर ।
पंक्ति २२, २१

अधि गुंजा गुंजा अति नांदे, जलित लालरी दुति तहाँ को है ।
तिनके खचिर हार गहि लावै, आनि नंद लालहि पहिरावै ।
पंक्ति २६, २५

इहि दिधि बिहृत ननि अनुनाग, श्री नुक वरनत तिनको भाग ।
इहि नुप पंथिन नहि अनुनरे, रहत है जदपि ब्रह्म नुप ररे ।

८० इस के स्थान पर 'ख' ने दो पंक्तियाँ दी हैं—

मुनि हरष स्तुति रस जगमगे, गंधर्वों गुन गावन लगे ।

निर्लज्ज अपछरा को छवि ननों, लटकनि फिरति दागिनी मनो ।

८१-८४ कोनाहन मुनि के गुर ओक तें, अज आए जु अपने लोक तें ।

नंद नंदन महिमा अवलोकि, विस्मय करि हिय लीनों रोकि ।

अजगठ चरम करम शुभ भरयो, सूख्यो वृंदावन में परयो ।

ब्रज के जिते ग्वाल बछ बाल, पेलत रहे तहां वह काल ।

८४ गह्वर—हंकरत (क) ।

८६ सो पीगंड वयस काँ पाइ, कह्यो तिन लरकनि ब्रज आइ (ख) ।

८६-८४ 'ग' ने इन के स्थान पर ये पंक्तियाँ ही दी हैं—

अरु यह जोति परम दुति सानी, हम देखी इन मांभ समानी ।

अहो मित्र कछू चित्र न आहि, श्री हरि की महिमा तन चाहि ।

मनो मई मूरति जी करै, रंचक आनि हिय में धरे ।

८२ गुनि....रह्यो—किन हूँ गह्यो किन हूँ नहि गह्यो (ग) ।

८३ चित्र—चित्त (ग), चित (ङ) ।

८६ इस के वाद 'ग' ने यह पंक्ति दी है—

अचरज नयो जु श्री शुक नावै, हरि साहस्य अघागुर पावै ।

८७ हरि—कं (ग) ; गूत कहत द्विज माँ रस डरयो, राजा गुनि अति

अचरज भरयो (ख) ।

८८-१०० यह कीमार वयस को करम, कीनों कमल नयन निज धरम ।

पुनि पीगंड वयस में आइ, कह्यो लरकनि यह वन को भाइ (ख) ।

१०५-१०७ इन के स्थान पर 'ग' ने दो पंक्तियाँ दी हैं—

अने जव पूछे मुनि नत्तम, परग भागवन उत्तम उत्तम ।

मुनिरि हरि चरित रस रगमगे, हिय डगमगे वृगनि जगमगे ।

१०८ नंद....भरि—नंद नेह भरि हेत करि (ग) ।

११२ ज्यों—ज्यों (ग) ।

८० इस के स्थान पर 'ख' ने दो पंक्तियाँ दी हैं—

मुनि हरण स्तुति रस जगमगे, गंधर्वों गुन गावन लगे ।

निर्जन अपहरा को छवि मनो, लटकनि फिरति दागिनी मनो ।

८१-८४ कोनाहन मुनि के गुर ओकतें, अज आए जु अपने लोक तें ।

नंद नंदन महिमा अवलोकि, विस्मय करि हिय लीनों रोकि ।

अजगर चरम करम शुभ भरघो, सूख्यो वृंदावन में परघो ।

ब्रज के जिते ग्वाल बल्ल बाल, पेलत रहे तहां बहु काल ।

८४ गह्वर—हंकरत (क) ।

८६ सो पीगंड दयस काँ पाइ, कहाँ तिन लरकनि ब्रज आइ (ख) ।

८६-८४ 'ख' ने इन के स्थान पर ये पंक्तियाँ ही दी हैं—

अरु यह जोति परम दुति सानी, हम देखी इन मांभ समानी ।

अहो मित्र कछू चित्र न आहि, श्री हरि की महिमा तन चाहि ।

मनो मई मूरति जाँ करै, रंचक आनि हिय में धरे ।

८२ मुनि....रह्यो—किन हूँ गह्यो किन हूँ नहि गह्यो (ग) ।

८३ चित्र—चित्त (ग), चित (ङ) ।

८६ इस के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—

अचरज नयो जु श्री शुक गार्व, हरि साक्ष्य अवागुर पावै ।

८७ हरि—कै (ग) ; मूत कहत द्विज माँ रस डरघो, राजा मुनि अति

अचरज भरघो (ख) ।

८८-१०० यह कोनाहर वयस को वयस, कीनों कमल नयन निज धरम ।

मुनि पीगंड दयस में आइ, कहाँ लरकनि यह वन की भाइ (ख) ।

१०५-१०७ इन के स्थान पर 'ख' ने दो पंक्तियाँ दी हैं—

अनें जब पूछे मुनि सत्तम, परम भागवत उत्तम उत्तम ।

मुगिरि हरि चरित रस रगमगे, हिय डगमगे दृगति जगमगे ।

१०८ नंद....सति—नंद नेह भरि हैन करि (ग) ।

११२ ज्यों—ज्यों (ग) ।

६० 'ग' ने इस के बाद यह पंक्ति दी है—

आप ही अपने वस्त्र निवेदि, लै गाए अपने परकनि घेरि ।

६२ बार....हैंसनि—परति न कही नेह की धूमनि (क) ।

७० कोई—जोई (ग) ।

७६ बखरे—बखरै (क), बछरी (ख) ।

८३ बल—बर (ख) ।

८५ हलवर सौं—बलवर सौं (क) ।

८६-८७ संकल्पन तब नीकें जान्यो, जब हसि हरि सब भेटु अपान्यो ।

दीख्यो वरग हरप भरि धायो, समाचार विधि लैन ही आयो ।

(ख) ।

९० इस के स्थान पर 'ख' में दो पंक्तियाँ हैं—

इत आवे पुनि उत कौं आवै, पचै विरंचि मरम नहीं पावै ।

पुनि अपने विधि देपनि गयो, पाछें अद्भुत कौतुक भयो ।

९४ निगवे चार—चहे विरंचि (ख) ।

९५ सीसनि ललित किरौट नु लोलें, कुंडल कनित कपोल विलोलें (ख) ।

९७ धरे—लसे (ख) ; आयुध....करे—निकर त्रिभाकर हुति
कहु हंस (ख) ।

१०० पुनि इक इक ब्रह्मांड के नाइक, सब नाइक नुभकरन नुभाइक (ख) ।

१०१-१०३ 'क' ने १०१ को छोड़ दिया है और अवशिष्ट पंक्तियों का
पाठ यों रक्खा है—

ब्रह्मादिक बिभूति जन जिती, अंड अंड प्रति दिवियत तिती ।

काल कर्म सहस्रादिक जिते, मूर्ति धरै उपासन तिते ।

१०४-१०५ 'ख' ने इन्हें इन प्रकार दिया है—

अनि अचिन्त दिवि विवि सुवि गई, उक नी हुती और भई नई ।

चकित भयो नु अकित अन भयो, हंस कौ अंस पकरि गई गयो ।

१११ दृग....चहै—दुष भनि दृग उधारि जो चहै (ख) ।

६० 'न' ने इत के बाद यह पंक्ति दी है—

आय ही अपने बर नितेनि, नै गण अपने परकनि घेरि ।

६२ बार...हैननि—परति न कही नेह की धमनि (क) ।

७० कौर्ड—जोई (ग) ।

७६ बखरे—बखरी (क), बछरी (ख) ।

८३ बल—बर (ख) ।

८५ हलधर नौ—बलधर नौ (क) ।

८६-८७ संकल्पन तब नीकें जान्यो, जब हसि हरि सब भेदु बपान्यो ।

वीत्यो वन्य हरष भरि आयो, समाचार विधि लैन ही आयो ।
(ख) ।

९० इस के स्थान पर 'न' में दो पंक्तियाँ हैं—

इत आवे पुनि उत कीं आवै, पचै विरंचि मरम नहीं पावै ।

पुनि अपने विधि देपनि गयो, पाछें अद्भुत कौतुक भयो ।

९४ निगवे चारु—चहे विरंचि (ख) ।

९५ सीसनि ललित किरीट नु लोलें, कुंडल कनित कपोल विलोलें (ख) ।

९७ धरे—लसे (ख) ; आयुध...करे—निकर विभाकर दुति
कहु हंस (ख) ।

१०० पुनि इक इक ब्रह्मांड के नाइक, सब नाइक नुभकरन नुभाइक (ख) ।

१०१-१०३ 'क' ने १०१ को छोड़ दिया है और अवशिष्ट पंक्तियों का
पाठ यों रक्खा है—

ब्रह्मादिक विभूति जग जिती, अंड अंड प्रति दिवियत तिती ।

काल कम महदादिक जिते, मूर्ति धरे उपासत तिते ।

१०४-१०५ 'ख' ने उन्हें इन प्रकार दिया है—

अति अचिन्त दिवि विधि मुधि गई, उक नी हुनी और भई नई ।

चकित भयो नु अकित अम भयो, हंस की अंस पकरि गई गयो ।

१११ दृग...चहै—दुष भनि दृग उधारि जो चहै (ख) ।

३५ नित्य—तिन के (ख) ; ननक—ताकी (ग) ।

३६ निहि—जिहि (क) ।

४१ ताने तुम्हरी कृपा जु आहि, बंछ्यो करित रयन दिन ताहि (ग) ।

४७ नैक न नलचाइ—चिनु अगत न जाइ (ख) ।

५६ राज—जो (ख), जन (ग) ; अग्यानी—अज्ञान (ख) ;
अभिगानी—अभिमान (ख) ।

६२ कहत . . . की—तह ही जैसे चिट्टी हाथ की (ग) ।

६४ ही—है (क) ।

७२ अब विशेष करि जन्म जु अपनो, कहत विरंचि नयो करि अपनो
(ख) ।

७६-७७ 'ख' ने इन के स्थान पर यह पंक्ति दी है—

तो नू नारायण गुत आहि, जल में जाहि चाहि लें ताहि ।

७७ तहां कहत विधि बुधि अग्याहि, मंदस्मित जुत आनन चाहि (क) ।

८० बहुरि नार—बहुरि नारि (क) ।

८२ जल में तुम्हरी यों मूरति आहि, हगत कहा हरि मो तन चाहि (क) ।

८३-८४ ताने हम ऐसे करि पाये, पानी में परिछिन्न बताये ।

तहां कहत अंबुज को तान, अहां तान अब मुनिये बात ।

८६ जल—राज (ग) ; कितक . . . ते—कहां ते मो ते (ख) ।

८८ तुम—मो (ख) ।

८९ की तुम्हें—कर उम्हें (ग) ; यह सब तुम्हरी माया नाथ, बहुत
अबक मुम्हें इहि नाथ (ख) ।

९१-९२ 'ख' ने पंक्ति ९२ को नहीं दिया है और ९१ का पाठ यों रक्खा
है—

जतनी हू की नहि विषयायो, हीं तुम हीं अब हीं योग्यायो ।

९६ इन के बाद 'ख' में यह अतिरिक्त पंक्ति है—

पैत बसत नद धन तन म्याम, सबति कैं उलनी तुनभी दाम ।

३५ नित्य—तिन के (ख) ; ननक—ताली (ग) ।

३६ निहि—जिहि (क) ।

४५ ताने तुम्हरी कृपा जु आहि, बंछयो करित रयन दिन ताहि (ख) ।

४७ नैक न नलचाइ—चिनु अगत न जाइ (ख) ।

५६ रज—जो (ख), जन (ग) ; अग्यानी—अज्ञान (ख) ;

अभिगानी—अभिमान (ख) ।

६२ कहन . . . की—तद् ही जैसं चिटी हाथ की (ग) ।

६४ ही—है (क) ।

७२ अब बिगोष करि जन्म जु अपनो, कहन विदंनि नयो करि अपनो (ख) ।

७६-७७ 'ख' ने इन के स्थान पर यह पंक्ति दी है—

तो नू नारायण गुत आहि, जल में जाहि चाहि लं ताहि ।

७७ तहां कहन विधि बुधि अग्याहि, मंदस्मिन जुन आनन चाहि (क) ।

८० बहुरि तार—बहुरि तारि (क) ।

८२ जल में तुम्हरी यों मूरति आहि, हगत कहा हरि मो तन चाहि (क) ।

८३-८४ ताने हम ऐसे करि पाये, पानी में परिछिन्न बताये ।

तहां कहत अंबुज को तान, अहो तान अब मुनिये बात ।

८६ जल—रज (ग) ; कितक . . . ते—कहां ते मो ते (ख) ।

८८ तुम—मो (ख) ।

८९ की गुनमें—कर उगमें (ग) ; यह सब तुम्हरी माया नाथ, बहुत अकक गुनमें इहि नाथ (ख) ।

९१-९२ 'ख' ने पंक्ति ९२ को नहीं दिया है और ९१ का पाठ यों रखा है—

उलनी हू की नहि विपरयो, हीं तुम हीं अब हीं योगयो ।

९६ इन के बाद 'ख' में यह अतिरिक्त पंक्ति है—

पीत वसन नर धन तन स्याम, सबनि कैं उलनी तुलसी वाम ।

७ लगी—नुग (उ) ; बन—उन (क) (घ) ; अवराधन—
आवरहन (घ), अवराहन (उ) ।

८-२४ इन पंक्तियों को 'क' ने छोड़ दिया है ।

९ बीच....कवन—तेंदुल बीच नु की (ख) ।

१० द्ये—दै (ग) (उ) ; वज—घर (ख) ।

११ ल्प—परम (ख) ; सब के—ल्प (ख) ।

१२ घनन....करं—इहि विधि गोचारन पर वरं (उ) ।

१३ वग्न—अंग (ग) (उ) ।

१४ नय—मे (ग) (उ) ।

२१ रंगन भरे—इम मन हरै (ख) ; बात....दरे—जनु द्रुम
आप में बातें करै (ख) ।

२८ नु रन—गुग्नुति (ग) ।

३६ निकरि—निकमि (उ) ; तुव—भुव (उ) ; कौ—के (ग) ।

४० जदपि....पाये—छिपे मनुज गति तुम लहि पाए (ग) ।

४४ कवहुं निरखि मराल नु चाल, तिन गंग खेलत लाल गुपाल (क) ।

४५ नंदकिलोर—चिन के चोर (क) ।

५३ सघन—जघन (क) ।

६२ जाइ—जान (क) ।

६६ भैया—मईया (क) ।

६८ तछिन—ता छिन (क) ।

७१ कानन—पठन (क) ।

७२ नियो—जियो (क) ।

७७ जैये—ज्वै (क), ज्यो (ख) ; भारयो—भारी (ग) ।

८३ गंडनि—मंडनि (ग) ।

८१ दृगन....निराने—वासन विन्ह नु ताप सिगने (ख) ।

८२ हैनदि—हमिनि (ख) ।

- ७ लगी—नुस (उ) ; बन—इन (क) (घ) ; अवरायन—
आवरहन (घ), अवरगहन (उ) ।
- ८-२४ इन पंक्तियों को 'क' ने छोड़ दिया है ।
- ९ बीच... कवन—तंदुल बीच नु की (ख) ।
- १० द्ये—दै (ग) (उ) ; व्रज—पर (ख) ।
- ११ क्य—परम (ख) ; सब के—हय (ख) ।
- १२ घनन... कर—इहि विधि गोचारन पर वरें (उ) ।
- १३ वरन—अंग (ग) (उ) ।
- १४ नय—ने (ग) (उ) ।
- २१ रंगन भरे—इम मन हरै (ख) ; बात... दरे—जनु ह्रम
आप में बातें करै (ख) ।
- २८ नु रन—गुरुनुति (ग) ।
- ३६ निकरि—निकमि (उ) ; तुव—भुव (उ) ; कौ—के (ग) ।
- ४० जदपि... पाये—छिपे मनुज गति तुम लहि पाए (ग) ।
- ४४ कबहुं निरखि मराल नु चाल, तिन गंग खेवत लाल गुपाल (क) ।
- ४५ नंदकिशोर—चिन के चोर (क) ।
- ५३ सपन—जघन (क) ।
- ६२ जाइ—जान (क) ।
- ६६ भैया—मईया (क) ।
- ६८ तछित—ता छिन (क) ।
- ७१ कानन—पठन (क) ।
- ७२ लिये—जिये (क) ।
- ७७ लैये—उर्वे (क), ऊँयो (ख) ; आरयो—भारी (ग) ।
- ८३ गंडनि—मंडित (ग) ।
- ८१ दृगन... निगने—आसन बिन्ह नु ताप सिगने (ख) ।
- ८२ हौननि—हौमिन (ख) ।

६४ पद कूटिनि में अहिफन जिने, भगन भए गणि डारत तिते (ख) ।

७४ भार—भाज (ख), भाड़ (क) ।

७५ जु दंड—निदंड (क) ।

७६ अमित अंडमय वेष तुम्हारी, ताकी भयो यह धारन हारी (ख) ।

८३-८४ तब तासों बोले बनमाली, रे रे विष जाली अहि काली ।

तू अब रगनक दीपहि जाहि, गण्ड के डर ते कीन डराहि (ख) ।

सप्तदश अध्याय

१ कहा—कीन (ख) ।

६ पर्वनि पर्वनि—सर्पनि पर्वनि (क) ।

१३ वन—पग (ख) ।

१५ ताता—साती (क), नांती (ख) ।

२३ राउ—नाय (क) ।

३०-३१ अद्भुत अद्भुत नव मनिमाल, अहि जुवतिन पूजे नंदलाल ।

बने जो तिहि छिन को छवि गनी, चंदहि ओप दई हैं मनीं (ख) ।

४१ तिहि—निन (क), नन (ग) ।

अष्टादश अध्याय

१ अष्टादश अध्याय की कथा, वरनि सुनाऊँ मो मति जथा (क) (ङ) ।

१० धूमरे—धूमरे (ङ) ।

१३ जैनी—ऐसी (ख) (ङ) ।

१४ सर—नय (ग) (घ) (ङ) ।

१४-१६ सरति में सरसीएह रस भरे, मधुकर निकरनि चंचल करे ।

कदिनन ने घन साग गुमार, ह्वै रछां दुदिन आकार ।

मीनल मंद गुगंध समीर, कही न परति अनि परिमल भीर ।

देकी कोकिल करि जु गावत, मुरपुर के गंधर्व रिझावत ।

(ख) ।

- ६४ फल कूटिनि में अहिफन जिते, भगन भए मणि टारत तिते (ख) ।
 ७४ भार—साज (ख), भांड (क) ।
 ७५ जु दंड—निदंड (क) ।
 ७६ प्रमित अंडमय वेप तुम्हारी, ताकी भयी यह धारन हारी (ख) ।
 ८३-८४ तब तासों बोले बनमाली, रे रे विष जाली अहि काली ।
 तू अब रगनक दीपहि जाहि, गरुड के डर ते कौन डराहि (ख) ।

सप्तदश अध्याय

- १ कहा—कौन (ख) ।
 ६ पर्वनि पर्वनि—सर्पनि पर्वनि (क) ।
 १३ वन—पग (ख) ।
 १५ ताती—साती (क), नांती (ख) ।
 २३ राउ—नाय (क) ।
 ३०-३१ अद्भुत अद्भुत नव मनिमाल, अहि जुवतिन पूजे नंदलाल ।
 बने जो तिहि छिन को छवि गनी, चंदहि ओप दई हैं मनीं (ख) ।
 ४१ तिहि—नित (क), नन (ग) ।

अष्टादश अध्याय

- १ अष्टादश अध्याय की कथा, वरनि सुताऊँ मो मति जथा (क) (ङ) ।
 १० धूमरे—धूमरे (ङ) ।
 १३ जैनी—ऐसी (ख) (ङ) ।
 १४ सर—नय (ग) (घ) (ङ) ।
 १४-१६ सरति में नरनीरह रस भरे, मधुकर निवारनि चंचल करे ।
 कदिलन ने बन साग तुमार, हँ रह्यां दुदिन आकार ।
 नीतल मंद मुगंध नगीर, कहीं न पगति अनि परिमल भीर ।
 देखी कोकिल करि जु गावत, मुरझ के गंधर्व रिझावन ।
 (ख) ।

- १० तयें—तयें (ग) ।
 ११ मुकी—मुक (ख), मुद्र (ग) ।
 २१ मुड़ी—मुड़ी ; मुड़ी—हरी (ग) ।
 ३० पग्गे पै निरगै—गरसे पै निग्गे (क) ।
 ३२ विप्र नु—विद्विप (ग) ।
 ३५ धुमड़नि—मंडल (ख) ।
 ४६ धरनि—धरनी (क) (ग) ; विवस—विखड़ (क) ।
 ४७ दंत—दंभ (ख) ।
 ५३ ऐतन—श्रीहनि (क) ।
 ६६ नहि निज—नाहिन (ख), नयन जु (ग) ।
 ७७ ह्वै—की (क) ।
 ८५ गगन—अगन (क) ।
 ८६ मन—यी (क) ।

एकविंश अध्याय

- = तरवर....जिते—तरवर सर के खग गन जिते (क) ।
 १० नुर—धुनि (ख) ; बजवन—बाजत (क) (ख) ।
 २१ नु—सों (क) ।
 २४ तिन....फरे—तिन फल प्रियतम दरसत फरे (ङ) ।
 २७ रागिनि—रागनी (ग) ।
 ४२ मधुन—मधुर (ग) ।
 ४६ निरखि निरखि—हरखि हरखि (ग) ।
 ५७ चिद—चग्नि (ख) ।
 ६१ कवरि—कवर (क) ।
 ७३ उमगत—धूमन (क), रूपत (ग) ; धूमन—ऊँधन (क) ।
 ७५ सुनि पुनि—पुनि पुनि (ख) ।

- १० तये—नये (ग) ।
 ११ मुदी—मुक्त (ख), मुद्र (ग) ।
 २१ मुदी—मुदी ; मुदी—दूरी (ग) ।
 ३० पग्ने पै निरग्ने—सरसे पै निग्ने (क) ।
 ३२ विप्र गु—विद्विष (ग) ।
 ३५ घुमइनि—मंडल (ख) ।
 ४३ घरनि—घरनी (क) (ग) ; विवस—विवद (क) ।
 ४५ दंत—दंभ (ख) ।
 ५३ ऐतन—श्रीहनि (क) ।
 ६६ नाहि निज—नाहिन (ख), नयन जु (ग) ।
 ७७ ह्वै—क्री (क) ।
 ८५ गगन—अगन (क) ।
 ८६ मन—यी (क) ।

एकविंश अध्याय

- ८ तरवर....जिते—तरवर सर के खग गन जिते (क) ।
 १० नुर—धुनि (ख) ; ब्रजवन—वाजत (क) (ख) ।
 २१ नु—नी (क) ।
 २४ तिन....करे—तिन फल प्रियतम दरसत करे (ङ) ।
 २७ रागिनि—रागनी (ग) ।
 ४२ मधुन—मधुर (ग) ।
 ४३ निरखि निरखि—हरखि हरखि (ग) ।
 ५७ चित्र—चग्नि (ख) ।
 ६१ कवरि—कवर (क) ।
 ७३ उमगत—धूमन (क), रूपत (ग) ; धूमन—ऊँधन (क) ।
 ७५ मुनि पुनि—पुनि पुनि (ख) ।

- २७ धरे—धारे (ग) ।
 ३२ ध्यान तैयै—धरत भई निज हिय में तैसे (ग) ।
 ३५ कहत—कहति (क) (ग) ।
 ३८ घाटि—निकट (क) ; कव—अव (क) ।
 ४६ ऊपर—उप रस (ग) ।
 ५२ ते ही—देही (क) ।
 ५३ हृद—दूरि (क) ।
 ५६ भरे, रहे—ररे भरे (क) ।
 ५६ समकंध—सम सरस (ग) ।
 ६७ यह सजनी—आये सजनी (क) ।
 ७६ बहुत विप्रिय—बहुत विग्य प्रिय (ग) ।
 ८२ ढार—दार (ग) ; सुत धार—सुति धार (ग) ।
 ८१ मुमुखन—मनुपन (ग) ।
 ८२ मुश्रूपन—स्वभूपन (क) ।
 ८६ च्याये—च्याने (क) ।
 १०५ हियी—हायी (क) ।
 १०६ महा अनिवारी—दयी जुद्ध छय अतल हमारी (क) ।
 १४३ भृंगन घरनी—भृंगनि तहां भृंगनि की घरनी (ग) ;
 वीन नी—वंसी (ग) ।
 १४५ कल—फल (ग) ।
 १५० अंग—रंग (क) ।

पदावली

- ५ डोलै—लोलै (क) ; बाँधति लोलै—बांधती डोलै (क) ।
 ६ मधिया—मनिग (ऊ) ।
 १४ गृह—जे (ऊ) ।

- २७ धरे—धारे (ग) ।
 ३२ ध्यान....तैने—धरत भई निज हिय में तैसे (ग) ।
 ३५ कहत—कहति (क) (ग) ।
 ३८ घाटि—निकट (क) ; कव—अव (क) ।
 ४६ ऊपर—उप रस (ग) ।
 ५२ ते ही—देही (क) ।
 ५३ हृद—दूरि (क) ।
 ५६ भरे, रहे—ररे भरे (क) ।
 ५६ समकंध—सम सरस (ग) ।
 ६७ यह सजनी—आये सजनी (क) ।
 ७६ बहुत विप्रिय—बहुत विंग्य प्रिय (ग) ।
 ८२ ढार—दार (ग) ; सुत धार—सुति धार (ग) ।
 ८१ मुमुखन—मनुपन (ग) ।
 ८२ नुश्रूपन—स्वभूपन (क) ।
 ८६ च्याये—च्याने (क) ।
 १०५ हियी—हायी (क) ।
 १०६ महा....अनिवारी—दयी जुद्ध छय अनल हमारी (क) ।
 १४३ भृंगन....घरनी—भृंगनि तहां भृंगनि की घरनी (ग) ;
 वीन नी—वंसी (ग) ।
 १४५ कल—फल (ग) ।
 १५० अंग—रंग (क) ।

पदावली

- ५ डोलै—डोले (क) ; बाँधति डोलै—बाँधती डोले (क) ।
 ६ नथिया—नतिग (ऊ) ।
 १४ गृह—जे (ऊ) ।

- १८३ परम अनंद—प्रेमानंद (ई) ।
 २०२ भरि लालै—भरि लाजे (ई); नहि—तव (ई) ।
 २२४ मूरति धरे अनंग—मुरत धरे राग रंग (ई) ।
 २३४ गति—गहि (क) ।
 २३६ धिरि—जुरि (अ) ।
 २३७ छेके हैं मदनगोपाल—रोके हैं सांवरे लाल (क) ।
 २४२ रस—रंग (अ) (आ) ।
 २४३ मति—गति (अ) ।
 २४४ सांवरे—माधुरी (अ), सांवरी (ई) ।
 २५४ लिये—ले (ई) (क) ।
 २५५ अंबुद—अंबर (ई) (क) ।
 २५७ प्रेम—लाल (ई) ।
 २५६ धनुवर—धुरंधर (अ), धनुर्द्धर (ई) ।
 २७० चित हू न परै चैन—चित हूं न परे चेन मुख हूं न आवे वेन (क) ।
 २७३ श्रवनमई री—लमिit मई री (ऊ) ।
 २८१ उपमा को—उपमा नाहि (ऊ), उपमा काहि (क) ।

- १८३ परम अनंद—प्रेमानंद (ई) ।
 २०२ भरि लालै—भरि लाजे (ई); नहि—तव (ई) ।
 २२४ मूरति धरे अनंग—मुरत धरे राग रंग (ई) ।
 २३४ गति—गहि (क) ।
 २३६ घिरि—जुरि (अ) ।
 २३७ छेके हैं मदनगोपाल—रोके हैं सांवरे लाल (क) ।
 २४२ रस—रंग (अ) (आ) ।
 २४३ मति—गति (अ) ।
 २४४ सांवरे—माधुरी (अ), सांवरी (ई) ।
 २५४ लिये—ले (ई) (क) ।
 २५५ अंबुद—अंबर (ई) (क) ।
 २५७ प्रेम—लाल (ई) ।
 २५६ धनुधर—धुरंधर (अ), धनुर्द्धर (ई) ।
 २७० चित हू न परै चैन—चित हूं न परे चैन मुख हूं न आवे वेन (क) ।
 २७३ श्रवनमई री—लमित मई री (ऊ) ।
 २८१ उपमा को—उपमा नाहि (ऊ), उपमा काहि (क) ।

प्रथम पंक्ति

पृष्ठ संख्या

आज मेरे धाम आए री नागर नंदकिशोर	४२८
आज सिंगार स्यामसुंदर की देखे ही बनि आवैं	३३१
आज हरी खेलन फाग बनी	३६४
आजु भूली सुरंग हिंडोरे प्यारी पिय के संग	४४०
आपन चलिये लालन कीजिये न लाज	४१६
आय क्यों न देखो लाल अपनी प्यारी की छवि	३७०
आयो आगम नरेश देश देश में आनंद भयो	३८२
आलस उनीदे नयन लाल तिहारे कहां तुम रैन बिताए	४३१
आली तेरी वदन चंद देखत, बस भए कुंजविहारी	४४६
आली री मंद मंद मुरली धुनि बाजत नृत्यत कुंवर कन्हैया	४३४
आली री सघन कुंज पुहुप पुंज उसीर की रावटी	४४७
आली री सामरी मूरति तैंरें जीय में बसति	४५१
आली श्रावन की पून्यो हरि हरियारी भूमि सोहत पिया संग	३८८
आवत ही यमुना भर पानी	४०८
आवरी आवरी उजरी पाग में मेल कैं बांध्यो मंजुल चोटा	४१४
ऊंनींदी आखें लागत प्यारी, कजरारी कोर बारी	४४२
उपरना बाही के जु रह्यो	४०२
उसीर महल में विराजे मंडल मध्य मोहन छाक खात	४०७
ऊसीर के मैहल व्याकु करत दोऊ भैया	४४६
ए आज अरुन अरुन डोरे दृगन लाल के लागत हैं अति भले	४०२
एक दिस बर ब्रज वाला एक दिस मोहन मदन गोपाला	३६६
ए बाल आवत डगर डगरी	४०५
एरी इन बांसुरिया माई मेरो सरबस चोरायो	४२८
एरी तेरी सेज की मुसक्यान मोहन मोह लीनो	४२८
ए री लखी निक्खसे मोहनलाल, खेलन ब्रज में फाग री	३३६

प्रथम पंक्ति

पृष्ठ संख्या

आज मेरे धाम आए री नागर नंदकिशोर	४२८
आज सिंगार स्यामसुंदर की देखे ही बनि आवैं	३३१
आज हरी खेलन फाग बनी	३६४
आजु भूली सुरंग हिंडोरे प्यारी पिय के संग	४४०
आपन चलिये लालन कीजिये न लाज	४१६
आय क्यों न देखो लाल अपनी प्यारी की छवि	३७०
आयो आगम नरेश देश देश में आनंद भयो	३८२
आलस उनीदे नयन लाल तिहारे कहां तुम रैन बिताए	४३१
आली तेरी बदन चंद देखत, बस भए कुंजबिहारी	४४६
आली री मंद मंद मुरली धुनि बाजत नृत्यत कुंवर कन्हैया	४३४
आली री सघन कुंज पुहुप पुंज उसीर की रावटी	४४७
आली री सामरी मूरति तैं जिय में बसति	४५१
आली श्रावन की पून्यो हरि हरियारी भूमि सोहत पिया संग	३८८
आवत ही यमुना भर पानी	४०८
आवरी बावरी उजरी पाग में मेल कैं बांध्यो मंजुल चोटा	४१४
ऊँनीदी आँखें लागत प्यारी, कजरारी कोर वारी	४४२
उपरना बाही के जु रह्यो	४०२
उसीर महल में विराजे मंडल मध्य मोहन छाक नात	४०७
ऊँनी के महल व्याक करत दोऊ भैया	४४६
ए आज अरुन अरुन डोरे दृगन लाल के लागत हैं अति भले	४०२
एक दिस वर ब्रज वाला एक दिस मोहन मदन गोपाला	३६६
ए बाल आवत डगर डगरी	४०५
एनी इन बांसुरिया साईं मेरो सरवस चोरायो	४२८
एरी तेरी सेज की मुसक्यान मोहन मोह लीनो	४२८
ए री सखी निकसे मोहनलाल, खेलन ब्रज में फाग री	३३६

प्रथम पंक्ति

पृष्ठ संख्या

गुलाबी कुंजन छवि छाई झुलत दोड़	३८६
गोकुल की पनिहारी पनियां भरत चलीं	४०५
गोवन धूरि में हरि आवत, कैसे नीके लागत मोर मुकट की ढरकन	४४६
घर नंदमहर के मिष ही मिष आवे गोकुल की नार ..	४१२
घुमड रहे वादर सगरी निशा के अहो महेरि लालें दीजे जगाय	३८१
घोरि घन मन मोहें सोहें भूमि हरियारी	४३८
चंचल ले चली री चितचोर	४३०
चंदन पहर नाव हरि बैठे संग वृषभान दुलारी हो ..	३७६
चंदन भवन मय करत व्याह परोस धरी हे कंचन थारी ..	३७६
चंदन सुगंध अंग लगाय आय मेरे ग्रह हमही मग जोवत लाल तिहारो हे	४१०
चंद्रमा नटवारी मानों सांझ समे वनतें व्रज आवत नृत्य करण ..	४११
चटकाव-री पावरी पगन, भगन पैहर निकसे नंदलाल पिआ ..	४४८
चटकीलो पट लपटानो कटि, बंसीवट जमुना के बट ठाडो नागर नट	३७०
चढ बढ बिडर गई अंग अंग मानवेली तेरें सयानी ..	४१८
चलिये कुंवर कान्हू सखी वेप कीजे	४२२
चलिहें भरत गिरिधरन लाल कों वनि वनि अनगन गोपी ..	४३६
चली हें कुंवरि राखे खेलन होरी । पंकज पराग भर लीनें हे भोरी	३६८
चहुं दीश टपकन लागी बुंदे	३८४
चांपत चरण मोहनलाल	४२१
चित्र सराहत चितवत मुर मुर गोपी बहुत सयानी ..	४०६
चिबुक कूप मध्य पिय मन पयो अवर सुधारस आस ..	४१४
चिरैया चुहचुहानी, सुनि चकई की वानी	३३१
छगन मगन द्वारे कन्हैया नेंकु उरे वों आउ रे लाला ..	३६६
छत्रीली राखे पूज लेनी गन गोर	३७८
छोटो सो कन्हैया एक मुरली मधुर छोटी	३६६

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ संख्या
गुलाबी कुंजन छवि छाई झुलत दोड	३८६
गोकुल की पनिहारी पनियां भरन चलीं	४०५
गोवन धूरि में हरि आवत, कैसे नीके लागत मोर मुकट की ढरकन	४४६
घर नंदमहर के मिष ही मिष आवे गोकुल की नार ..	४१२
घुमड रहे वादर सगरी निशा के अहो महेरि लालें दीजे जगाय	३८१
घोरि घन मन मोहें सोहें भूमि हरियारी	४३८
चंचल ले चली री चितचोर	४३०
चंदन पहर नाव हरि बैठे संग वृषभान दुलारी हो ..	३७६
चंदन भवन मध करत व्यास परोस घरी हे कंचन थारी ..	३७६
चंदन सुगंध अंग लगाय आय मेरे ग्रह हमही मग जोवत लाल तिहारो हे	४१०
चंद्रमा नटवारी मानों सांभ समे वनतें व्रज आवत नृत्य करण ..	४११
चटकाव-री पावरी पगन, भगन पैहर निकसे नंदलाल पिआ ..	४४८
चटकीलो पट लपटानो कटि, बंसीवट जमुना के त्रट ठाडो नागर नट	३७०
चढ बढ बिडर गई अंग अंग मानवेली तेरें सयानी ..	४१८
चलिये कुंवर कान्हू सखी वेप कीजे	४२२
चलिहें भरत गिरिधरन लाल कों वनि वनि अनगन गोपी ..	४३६
चली हें कुंवरि राखे खेलन होरी । पंकज पराग भर लीनें हे भोरी	३६८
चहुं दीश टपकन लागी बुंदे	३८४
चांपत चरण मोहनलाल	४२१
चित्र सराहत चितवत मुर मुर गोपी बहुत सयानी ..	४०६
चिवुक कूप मध्य पिय मन पयों अवर सुधारस आस ..	४१४
चिरंया चुहचुहानी, सुनि चकई की बानी	३३१
छगन मगन दारे कन्हैया नेकु उरे वों आउ रे लाला ..	३६६
छत्रीली राखे पूज लेनी गन गोर	३७८
छोटो सो कन्हैया एक मुरली मधुर छोटी	३६६

प्रथम पंक्ति

पृष्ठ संख्या

तुम कोन के बस खेलो हो रंगीले हो हो होरियां ..	३६०
तुम पहिलें तो देखो आय मानिनी की शोभा लाल ..	४१८
तू तो नेक कान दे सुंदर वांसुरी में बजावे तुव नाम ..	४२८
तू न मानन देत आली री मन तेरो मानवे को करत ..	४१६
तेरी भ्रांह के मरोरन तें ललित त्रीभंगी भये ..	४१५
तेरे री नव जोवन के अंग रंग सें लागत परम सुहाए ..	४१६
तेरे री मनावे तें मान नीको लागत	४१६
तेरें री वदन कमल पर नंद नंदन आली मुरली नाद करत गुंजार	४५१
दंपति पोढेई पोढे रसवतियां करन लागे दोउ नयना लाग गये	४२२
दंपति रस भरे भोजन करत लाडिली लाल	४०६
दान देउ ठहेरो इक ठैयां	३६८
दीपदान दै हटरी बैठे नंद बवा के साथ	३३४
दुलह गिरिधर लाल छवीलो दुलहिन राधा गोरी जू ..	३७४
दुलहे दुलहिन सुरंग हिंडोरे भूले प्रथम समागम अहो गठ जोरे ..	३८५
देखन देत न बैरिन पलकें।	४१२
देखी माई नंद नंदन रय ही विराजे	३८०
देखी देखी री नागर नट, निर्तत कालिंदी तट	३३३
दोरी दोरी आवत मोहि मनावत दाम खरच कछु मोल लई री	४२४
धन धन प्रभावती जिन जाई असी बेटी	४२६
धरे बांकी पाग बांकी चंद्रिका बांके बिहारीलाल	४११
धरें टेढी पाग टेढी चंद्रिका टेढे त्रीभंगी लाल	४११
नंद को लाल ब्रज पालने भूले	३६४
नंद गाम नीको लागत री	४०३
नंद भवन को भूषण माई	४०४
नंदराय जू के द्वारे भोरहि उठि पहाउ	४३१

प्रथम पंक्ति

पृष्ठ संख्या

तुम कोन के बस खेलो हो रंगीले हो हो होरियां ..	३६०
तुम पहिलें तो देखो आय मानिनी की शोभा लाल ..	४१८
तू तो नेक कान दे सुंदर बांसुरी में बजावे तुव नाम ..	४२८
तू न मानन देत आली री मन तेरो मानवे को करत ..	४१६
तेरी आंह के मरोरन तें ललित त्रीभंगी भये ..	४१५
तेरे री नव जीवन के अंग रंग सें लागत परम सुहाए ..	४१६
तेरे री मनावे तें मान नीको लागत	४१६
तेरें री वदन कमल पर नंद नंदन आली मुरली नाद करत गुंजार	४५१
दंपति पोढेई पोढे रसवतियां करन लागे दोउ नयना लाग गये	४२२
दंपति रस भरे भोजन करत लाडिली लाल	४०६
दान देउ ठहेरो इक ठैयां	३६८
दीपदान दै हटरी बैठे नंद ववा के साथ	३३४
दुलह गिरिधर लाल छवीलो दुलहिन राधा गोरी जू ..	३७४
दुलहे दुलहिन सुरंग हिंडोरे भूले प्रथम समागम अहो गठ जोरे ..	३८५
देखन देत न बैरिन पलकें।	४१२
देखी माई नंद नंदन रय ही विराजे	३८०
देखी देखी री नागर नट, निर्तत कालिंदी तट	३३३
दोरी दोरी आवत मोहि मनावत दाम खरच कछु मोल लई री	४२४
धन धन प्रभावती जिन जाई असी बेटी	४२६
धरे बांकी पाग बांकी चंद्रिका बांके बिहारीलाल	४११
धरें टेढी पाग टेढी चंद्रिका टेढे त्रीभंगी लाल	४११
नंद को लाल ब्रज पालने भूले	३६४
नंद गाम नीको लागत री	४०३
नंद भवन को भूषण माई	४०४
नंदराय जू के द्वारे भोरहि उठि पहाउ	४३१

प्रथम पंक्ति

पृष्ठ संख्या

प्रात समै श्री बल्लभ सुत की उठतहि रसना लीजै नाम ..	३४१
फुलन के मेहेल बने फुलन वितान तने	३७८
फुलन को मुकुट बन्यो फूलन को पिछोरा	३७७
फुलनसों वेनी गुही फुलन की अंगिया	३७८
फूलन की माला हाथ फूलि सब सखी साथ ..	४०१
बड़े खिरक में धूमरि खेलत	३७२
बवाई माई आज बवाई	३२८
बवाई री वाजत आज सुहाई श्री गोकुलराज के धाम ..	३६३
बन ठन कहां चले ऐसी को मन भाई सांवरे से कुंवर कन्हारि	४१३
बन तैं आवत गावत गीरी	३३२
बनी आज दवेत पाग लाल सिर चलो सखी देखन जाय ..	४१७
बरसाने की सीम खेलत रंग रह्यो हे	३६२
बरसाने ते दौरि नारि एक नंद भवन में आई जू ..	४३६
बराजोरी होरी मचावै री	४३३
बल वामन हो जग पावन करण	३८०
बाल गोपाल ललन कीं, मोद भरी जसुमति हुलरावति ..	३३१
बिलसत रंग महल रंग लाल	४२४
बृंदावन वंसी बट, कुंज जमुना के तट	३३३
बृंदावन रास रच्यो बनवारी	४३५
बैठी अटा मानों चंद छटा सी सोच करत दृग वारन बोरे ..	३८०
बेसर कोन की अति नीकी	४१६
बोली मदन गुपाल लाल सुनि मानिनी	४३२
ब्यारु करत भामते जिअके	४४७
ब्यारु करत बलराम स्वाम जैसी बटा स्वाम सुख स्वाम देखत मन	४४७
ब्रज में खेले री घमार मोहन प्यारो री नंद को	३६१

प्रथम पंक्ति

पृष्ठ संख्या

प्रातः समै श्री बल्लभ सुत कौ उठतहि रसना लीजै नाम ..	३४१
फूलन के मेहेल बने फूलन वितान तने	३७८
फूलन को मुकुट बन्यो फूलन को पिछोरा	३७७
फूलनसों वेनी गुही फूलन की अंगिया	३७८
फूलन की माला हाथ फूलि सब सखी साथ ..	४०१
बड़े खिरक में धूमरि खेलत	३७२
बवाई माई आज बवाई	३२८
बवाई री बाजत आज सुहाई श्री गोकुलराज के धाम ..	३६३
बन ठन कहां चले ऐसी को मन भाई सांवरे से कुंवर कन्हवाई	४१३
बन तैं आवत गावत गौरी	३३२
बनी आज श्वेत पाग लाल सिर चलो सखी देखन जाय ..	४१७
बरसाने की सीम खेलत रंग रह्यो हे	३६२
बरसाने ते दोरि नारि एक नंद भवन में आई जू ..	४३६
बराजोरी होरी मचावै री	४३३
बल वामन हो जग पावन करण	३८०
बाल गोपाल ललन कीं, मोद भरी जसुमति हुलरावति ..	३३१
बिलसत रंग महल रंग लाल	४२४
बृंदावन वंसी बट, कुंज जमुना के तट	३३३
बृंदावन रास रच्यो बनवारी	४३५
बेठी अटा मानों चंद छटा सी सोच करत दृग वारन वीरे ..	३८०
बेसर कोन की अति नीकी	४१६
बोली मदन गुपाल लाल सुनि मानिनी	४३२
ब्यारु करत भाँमते जिअके	४४७
ब्यारु करत बलराम स्याम जैसी घटा स्याम सुख स्याम देखत मन	४४७
ब्रज में खेले री घमार मोहन प्यारी री नंद को	३६१

प्रथम पंक्ति

पृष्ठ संख्या

यमुना तट भोजन करत गोपाल	४०७
यमुना पुलिन सु ग वृंदावन नवल लाल गोवर्द्धनवारी ..	४३०
यमुने यमुने यमुने जो गावो	४२६
यह विधि पार पोहोंच्यो पवन पूत दूत श्री रघुनाथ को ..	३६६
ये आछी तनक कनक की दोहनी, सोहनी गढाय दे री मैया ..	४१२
ये दाँऊ नागर ढोटा माई कोन गोप के वेटा ..	४०४
ये मन मान मेरो कह्यो काहे को रुसानी ..	४१८
योगी रे वसो तो वसो गोवर्द्धन नगर वसो तो मथुरा धाम ..	४२७
रंग भरी भूलति स्याम संग राधिका प्यारी ..	३३६
रंग भिनि ढाढनि अति रुचि सों चारु मंगलरा गावे हो ..	३६४
रंग मेढेल रंग राग तहां वेठे दूल्हे लाल तू चल चतुर रंगीली राधे	३८३
रंगीले हिंडोरे भूले रंग भरे अति	४४०
रच्यो खसखानों आज अति तामें राजे	४०६
रथ चढ़ि चलत श्री गिरधर लाल	४३७
राखी नंदलाल कर सोहे	३४०
राखी बांधत गर्ग श्याम कर	३८६
राजत रंग भिनी भामिनी सांवरे प्रीतम संग ..	३७०
राजे गिरिराज आज गाय गोप जाके तर ..	३७३
रावा वनी रंग भरी रंग होरी खेलें अपने प्रीतम के संग ..	३६८
राम कृष्ण कहिए निशि भोर	४२६
रास में रसिक दोऊ नांचत आनंद भरि	४३५
खरी मधुवन की मोहन संग निस दिन रहत खरी ..	४२५
रुचिर चित्रसारी सघन कुंज के मधि कुसुम रावटी राजे ..	४१७
रेन तो घटन्ती जाती सुनरी सयानी बातें ..	४२०
रेन रीभी हो प्यारे हरि को रास देख	३७१

प्रथम पंक्ति

पृष्ठ संख्या

यमुना तट भोजन करत गोपाल	४०७
यमुना पुलिन सु ग वृंदावन नवल लाल गोवर्द्धनचारी ..	४३०
यमुने यमुने यमुने जो गावो	४२६
यह विधि पार पोहोंच्यो पवन पूत दूत श्री रघुनाथ को ..	३६६
ये आछी तनक कनक की दोहनी, सोहनी गढाय दे री मैया ..	४१२
ये दोऊ नागर डोटा माई कोन गोप के वेटा ..	४०४
ये मन मान मेरो कह्यो काहे को रसानी ..	४१८
योगी रे वसो तो वसो गोवर्द्धन नगर वसो तो मथुरा धाम ..	४२७
रंग भरी भूलति स्याम संग राधिका प्यारी ..	३३६
रंग भिनि ढाढनि अति रुचि सों चारु मंगलरा गावे हो ..	३६४
रंग मेहेल रंग राग तहां वेठे दूल्हे लाल तू चल चतुर रंगीली राधे ..	३८३
रंगीले हिंडोरे भूले रंग भरे अति	४४०
रच्यो खसखानों आज अति तामें राजे	४०६
रथ चढि चलत श्री गिरधर लाल	४३७
राखी नंदलाल कर सोहे	३४०
राखी बांधत गर्ग श्याम कर	३८६
राजत रंग भिनी भामिनी सांवरे प्रीतम संग ..	३७०
राजे गिरिराज आज गाय गोप जाके तर ..	३७३
रावा वनी रंग भरी रंग होरी खेलें अपने प्रीतम के संग ..	३६८
राम कृष्ण कहिए निशि भोर	४२६
रास में रसिक दोऊ नांचत आनंद भरि	४३५
रखरी मधुवन की मोहन संग निस दिन रहत खरी ..	४२५
रुचिर चित्रसारी सघन कुंज के मधि कुसुम रावटी राजे ..	४१७
रेन तो घटन्ती जाती सुनरी सयानी वातें ..	४२०
रेन रीझी हो प्यारे हरि को रास देख	३७१

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ संख्या
सुरंग दुरंग होत पाग कुरंग लाल कैसें लोयन लोने ..	४१०
मैन दै बुलावी लाल, वैठी है—भरोखें वाल, वन ठन कें छिप री	४४८
स्याम अचानक आए सजनी, फिरि पाछें कहूँ भागे ..	४४१
स्याम सलूने गात हैं काहु को ढोटा	४१६
हटरी बैठे श्री ब्रजनाथ	३३४
हांके हटक हटक गाय ठठक ठठक रही	४१०
हिंडोरे भूले नवल लाल गिरिघारी	४४०
हिंडोरे माई भूलत गिरिवर लाल	३३५
हिंडोरें भूलत वंसी वाला	३८६
हों तो वार डारी तन मन धन लालन पर	४२५
हो हो होरी खेलै नंद कौ नवरंगी लाला	३३८
हो हो हो हो होरी बोलै, नंद-कुंवर ब्रज बीथिन डोलै ..	३३७



प्रथम पंक्ति

पृष्ठ संख्या

सुरंग दुरंग होत पाग कुरंग लाल कैसें लोयन लोने	..	४१०
मैन दै बुलावी लाल, वैठी है—भरोखें वाल, वन ठन कें छिप री		४४८
स्याम अचानक आए सजनी, फिरि पाछें कहूँ भागे	..	४४१
स्याम सलूने गात हैं काहु को डोटा	४१६
हटरी बैठे श्री ब्रजनाथ	३३४
हांके हटक हटक गाय ठठक ठठक रही	४१०
हिंडोरे भूले नवल लाल गिरिघारी	४४०
हिंडोरे माई भूलत गिरिवर लाल	३३५
हिंडोरें भूलत वंसी वाला	३८६
हों तो वार डारी तन मन धन लालन पर	४२५
हो हो होरी खेलै नंद की नवरंगी लाला	३३८
हो हो हो हो होरी बोलै, नंद-कुंवर ब्रज वीथिन डोलै	३३७



- २२६ मूड—शिव; राता—
रथक ।
- २३६ गैवर—श्रेष्ठ हाथी (गज
वर) ।
- २७७ भंगुर गति—बल खाती हुई
चाल; लटी—क्षीण, पतली ।
- २७६ धमिल—बैँधी चोटी ।
- ३१४ थोरै—निकट; टकटोरै—
टटोलती है ।
- ३१७ जारत की नहियाँ—जलाता
है कि नहीं ।
- ३२५ कुंभीपाक—एक नरक
विशेष ।
- ३७६ चोप—उत्साह ।
- १४६ हाँती कीय—दूर किया,
मिटाय़ा ।
- ३८२ सांति परी...नाह—यह
अच्छा ही हुआ कि तेरा
विवाह नहीं हुआ, नहीं तो
तू अपने पति को दुःख देती ।
- ३६३ तल्प—अध्या ।
- ४६६ कंडु—खुजली ।
- ५२३ असु—प्राण ।

अनेकार्थमंजरी

- ४१ गज-पुष्कर—हाथी की सूँड़ ।
- ६० बहिक्रम—आयु ।
- ६६ भगर-विद्या—हाथ की स-
फ़ाई, जादू ।
- ६६ द्विभुजस्फालन—दोनों हाथों
का संघर्ष, ताली ।

मानसंजरी नाममाला

- २ करुनार्नव—दया के सागर ।
- ७६ लुकग्रंजन—“वह कल्पित
ग्रंजन जिसके विषय में यह
प्रसिद्ध है कि इसके लगाने से
लगानेवाला अदृश्य हो जाता
है” (हिंदी-शब्दसागर) ।
- १०० उसींति सीं उठेंगि—तकिया
की टेक लगा कर ।
- ११८ मुहकुरि—कदाचित् आम
की चोपी ।
- १४ अरदास—प्रार्थना ।
- २२ चरवाई—चतुर, चालाक ।
- २३ लंगर—नटखट ।
- २५ अचपली—अत्यंत चंचल ।
- ४४ अरस-गरस—दर्शन ।
- ५४ व्हँक—वहँक कर, बेसुध हो
कर ।
- ६४ ही—थी ।

- २२६ मूड—शिव; राता—
रक्षक ।
२३६ गैवर—श्रेष्ठ हाथी (गज
वर) ।
२७७ भंगुर गति—बल खाती हुई
चाल; लटी—क्षीण, पतली ।
२७६ धमिल—बैँधी चोटी ।
३१४ घोरै—निकट; टकटोरै—
टटोलती है ।
३१७ जारत की नहियाँ—जलाता
है कि नहीं ।
३२५ कुंभीपाक—एक नरक
विशेष ।
३७६ चोप—उत्साह ।

मानमंजरी नाममाला

- २ करुनानव—दया के सागर ।
७६ लुकअंजन—"वह कल्पित
अंजन जिसके विषय में यह
प्रसिद्ध है कि इसके लगाने से
लगानेवाला अदृश्य हो जाता
है" (हिंदी-शब्दसागर) ।
१०० उरसि सों उठैंगि—तकिया
की टोक लगा कर ।
११८ मुहकरी—कदाचित् आम
की चोपी ।

- १४६ हाँती कीय—दूर किया,
मिटाय़ा ।
३८२ सांति परी...नाह—यह
अच्छा ही हुआ कि तेरा
विवाह नहीं हुआ, नहीं तो
तू अपने पति को दुःख देती ।
३६३ तल्प—अध्या ।
४६६ कंडु—खुजली ।
५२३ अमु—प्राण ।

अनेकार्थमंजरी

- ४१ गज-पुष्कर—हाथी की सूँड़ ।
६० बहिक्रम—आयु ।
६६ भगर-विद्या—हाथ की स-
फ़ाई, जादू ।
६६ द्विभुजस्फालन—दोनों हाथों
का संघर्ष, ताली ।

स्थामसगाई

- १४ अरदास—प्रार्थना ।
२२ चरवाई—चतुर, चालाक ।
२३ लंगर—नटखट ।
२५ अचपली—अत्यंत चंचल ।
४४ अरस-गरस—दर्शन ।
५४ ब्हैंक—बहैंक कर, बेमुव हो
कर ।
६४ ही—थी ।

- २२७ घातें—प्रहार, आक्षेप ।
 २३२ मसिहारे—काले ।
 २५३ हरि भाँति काँ—कृष्ण की
 रीति अथवा युक्तियों को ।
 २६५ वादि—व्यर्थ, निष्प्रयोजन ।
 २६६ नंथा—गिधा, पाठ ।
 ३२३ वाय—वाधा, रुकावट ।
 ३२८ अवसेसहि—शेष भाग को ।
 ३५२ जवाहि...मूठी—जब तक
 मनुष्य की मूठ बँधी रहती
 है अर्थात् जब तक वह वास्त-
 विकता से अनभिज्ञ रहता है ।

रुक्मिणी मंगल

- १८ अर सौं—हठपूर्वक ।
 ५२ काहू नाहि पतीजी—किसी
 का विश्वास न करना ।
 ६२ सुढार—सुंदर; चटा-गन—
 विद्यार्थियों के समूह ।
 ६७ अनुहारे—समान रंग-रूप
 वाले ।
 ६८ रोवत हैं वारे—सूर्य के डर
 से अंधकार भाग जाता है,
 भ्रमर उसी के छोटे छोटे
 चालक हैं जो उस के चले
 जाने के कारण रो रहे हैं ।

- ७१ अरकैं—टकराती हैं; अरक-
 किरन—सूर्य की किरणें ।
 ७३ जाल-रंध्र-मग...धुरवा—
 शृङ्खलाकाओं के भरोखों की
 जालियों के मार्ग से निकलता
 हुआ अगर लकड़ी का घुआँ
 जलपूर्ण मेघ के समान प्रतीत
 होता है ।
 ७५ वगर वगर—प्रत्येक महल के
 ऊपर; गुड़ी—पतंग ।
 ८७ छिप्र गति—शीघ्रतापूर्वक ।
 १०६ सचु—सुख ।
 १२६ कील—कीर, ग्रास; तंतर—
 लाचार, विवश (विशेष—
 कदाचित् इस शब्द का
 संबंध सं० 'तंत्र' से है) ।
 १२७ पानिप—ओप, कांति; धोरे
 —ध्वेत, उज्ज्वल ।
 १२८ ओरे—ओले ।
 १३२ गोमाय—शृगाल ।
 १३५ परेवा—कवूतर ।
 १३६ छिया—छोकरी, लड़की ।
 १४४ अरवर में—अत्यंत शीघ्रता
 करने के कारण, हड़बड़ी में ।
 १४८ दारु...जैसे—अरणी नामक
 काठ के बने हुए एक यंत्र

- २२७ घातें—प्रहार, आक्षेप ।
 २३२ मसिहारे—काले ।
 २५३ हरि भाँति कीं—कृष्ण की
 रीति अथवा युक्तियों को ।
 २६५ वादि—व्यर्थ, निष्प्रयोजन ।
 २६६ नया—शिक्षा, पाठ ।
 ३२३ बाध—बाधा, रुकावट ।
 ३२८ अवसेसहि—शेष भाग को ।
 ३५२ जयहि...मूठी—जब तक
 मनुष्य की मूठ बँधी रहती
 है अर्थात् जब तक वह वास्त-
 विकता से अनभिज्ञ रहता है ।

रुक्मिणी मंगल

- १८ अर सौं—हठपूर्वक ।
 ५२ काहू नाहि पतीजी—किसी
 का विश्वास न करना ।
 ६२ सुठार—सुंदर; चटांगन—
 विद्यार्थियों के समूह ।
 ६७ अनुहारे—समान रंग-रूप
 वाले ।
 ६८ रौबत हैं वारे—सूर्य के डर
 से अंधकार भाग जाता है,
 भ्रमर उसी के छोटे छोटे
 बालक हैं जो उस के चले
 जाने के कारण रो रहे हैं ।

- ७१ अरकैं—टकराती हैं; अरक-
 किरन—सूर्य की किरणें ।
 ७३ जाल-रंघ्र-मग...धुरवा—
 शृङ्खलाकाओं के शरोखों की
 जालियों के मार्ग से निकलता
 हुआ अगर लकड़ी का धुआँ
 जलपूर्ण मेघ के समान प्रतीत
 होता है ।
 ७५ बगर बगर—प्रत्येक महल के
 ऊपर; गुड़ी—पतंग ।
 ८७ छिप्र गति—शीघ्रतापूर्वक ।
 १०६ सचु—सुख ।
 १२६ कौल—कौर, आस; तंतर—
 लाचार, विवश (विशेष—
 कदाचित् इस शब्द का
 संबंध सं० 'तंत्र' से है) ।
 १२७ पानिप—ओप, कांति; धोरे
 —ज्वेत, उज्ज्वल ।
 १२८ ओरे—ओले ।
 १३२ गोमाय—शृगाल ।
 १३५ परेवा—कवूतर ।
 १३६ छिया—छोकरी, लड़की ।
 १४४ अरवर मैं—अत्यंत शीघ्रता
 करने के कारण, हड़बड़ी में ।
 १४८ दारु...जैसे—अरणी नामक
 काठ के बने हुए एक यंत्र

पत्तियों के बीच के रिक्त स्थान से) ।

१०६ वितन—कैला हुआ, विस्तृत;
वितान—शामियाना; तनाव
—शामियाने को खींचे रहने
वाली रस्सियाँ ।

१२३ पंचभौतिक तैं न्यारी—पंच
भूत (पृथ्वी, जल, तेज, वायु,
आकाश) द्वारा बने हुए
मनुष्यों के साधारण शरीर से
भिन्न ।

१२६ सच्ची—एकत्रित ।

१३५ चलीं डुकि—शीघ्रतापूर्वक
चलीं ।

१४० छवि-विलुलित—सुंदरता से
हिलती हुई ।

१५० उदर-दरी . . रखवारी—जब
परीक्षित अपनी मा उत्तरा
के गर्भ में थे तभी द्रोणा-
चार्य के पुत्र अश्वत्थामा
ने उन पर ब्रह्मास्त्र का
प्रहार किया था । उस
समय गर्भ के भीतर प्रवेश
कर के कृष्ण ने उन की

रक्षा की थी^१ ।

१६६ राका-मयंक—पूर्णिमा का
चंद्रमा ।

१६६ अनु—समीप ।

२०० घर . . है—स्त्रियों का
गृहस्थ धर्म भ्रम है (अ-
सत् ज्ञान है), तुम्हारे रूप
के सामने उस का कोई महत्त्व
नहीं है ।

२०४ ते रहे कौर तैं—वे एक
पंक्ति से (मंत्रमुग्ध की
भाँति) खड़े हुए हैं ।

२१८ नव-नीत . . हिय—नए प्राप्त
किए हुए मित्र का मक्खन
के तुल्य (कोमल) हृदय ।

२२६ भीर—समूह ।

२३३ धूँवरी—धुंधली ।

२६० छिलछिल—छिछला ।

२६५ पुट—हलका रंग ।

२७३ जाति—चमेली की जाति का
एक पुष्प । जूथिका—जूही
का पुष्प ।

^१दे० 'दशम स्कंध', अध्याय
१, पंक्ति ८३-८८ तथा 'श्रीमद्भू-
गवत', स्कंध १, अध्याय ८

- पत्तियों के बीच के रिक्त स्थान से) ।
- १०६ वित्तन—फैला हुआ, विस्तृत; वितान—शामियाना; तनाव—शामियाने को खींचे रहने वाली रस्सियाँ ।
- १२३ पंचभौतिक तैं न्यारी—पंच भूत (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश) द्वारा बने हुए मनुष्यों के साधारण शरीर से भिन्न ।
- १२६ सच्यी—एकत्रित ।
- १३५ चलीं दुकि—शीघ्रतापूर्वक चलीं ।
- १४० छवि-विलुलित—सुंदरता से हिलती हुई ।
- १५० उदर-दरी . . रखवारी—जब परीक्षित अपनी मा उत्तरा के गर्भ में थे तभी द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा ने उन पर ब्रह्मास्त्र का प्रहार किया था । उस समय गर्भ के भीतर प्रवेश कर के कृष्ण ने उन की रक्षा की थी^१ ।
- १६६ राका-मयंक—पूर्णिमा का चंद्रमा ।
- १६६ अनु—समीप ।
- २०० घर . . . हैं—स्त्रियों का गृहस्थ धर्म भ्रम है (असत् ज्ञान है), तुम्हारे रूप के सामने उस का कोई महत्त्व नहीं है ।
- २०४ ते रहे कौर तैं—वे एक पंक्ति से (मंत्रमुग्ध की भाँति) खड़े हुए हैं ।
- २१८ नव-नीत . . हिय—नए प्राप्त किए हुए मित्र का मक्खन के तुल्य (कोमल) हृदय ।
- २२६ भीर—समूह ।
- २३३ धूँवरी—धुंधली ।
- २६० छिलछिल—छिछला ।
- २६५ पुट—हलका रंग ।
- २७३ जाति—चमेली की जाति का एक पुष्प । जूथिका—जूही का पुष्प ।
-
- ^१दे० 'दशम स्कंध', अध्याय १, पंक्ति ८३-८८ तथा 'श्रीमद्भगवत्', स्कंध १, अध्याय ८

जिस समय वह रुकता है
उसे त्रिसम का मुख्य ताल
(सम) कहते हैं ।

४७७-७८ कोई सुंदर स्त्री किसी
सखी के हाथ (हथेली) पर
त्रिसम का ताल बांध कर
अथवा त्रिसम की गति से
नाचती है । उसे नाचता देख
कर ऐसा प्रतीत होता है मानों
हथेली पर लट्टू नाच रहा
हो; इस दृश्य को देख कर
कृष्ण लट्टू (मुग्ध) हो जाते
हैं ।

४८६ सुलफ—कदाचित् यह शब्द
'सुलप' (=सुंदर आलाप) का
विकृत रूप है ।

५१६ गोलक—आँख की पुतली ।

५३४ दगरी—मार्ग ।

५३८ व्रीडन—लज्जित करने
वाले ।

५३६ मरगजी-माल—गोंजी अथवा
मली हुई माला ।

५५६ भाँति—रीति ।

५८३ अविकारी—उपयुक्त पात्र ।

५८६ हरि-धर्म-बहिर्मुख—वैष्णव-
धर्म-विरोधी ।

सिद्धांत पंचाध्यायी

६ महाभूत—पंचतत्त्व (पृथ्वी,
जल, अग्नि, वायु, आकाश) ।

७ महत्त्व—जीवात्मा ।

१० वित्त्व-प्रभव—विश्व की
उत्पत्ति का कारण ।

१४ आश्रय—अवलंब, आधार;
अवधि-भूत—चरम उत्कर्ष
को प्राप्त ।

१८ निरोध—प्रतिबंध अथवा
नियंत्रण ।

२६ निरतास—इस शब्द का
भावार्थ सार या निचोड़
जान पड़ता है ।

२७ ननु—निश्चयपूर्वक ।

६० खेवा—संभवतः इस शब्द का
प्रयोग यहाँ 'समूह' के अर्थ
में हुआ है ।

६१ निदेसा—निर्देश, आज्ञा ।

७७ आत्मा-निष्ठ—आत्मा में
स्थित; आत्म-नामी—
आत्मा को जानने वाला ।

७८ अनावृत—जो ढँका न हो,
प्रत्यक्ष ।

८० निरवृत्ति-परा तं—मुक्ति-

जिस समय वह रुकता है
उसे त्रिसम का मुख्य ताल
(सम) कहते हैं ।

४७७-७८ कोई सुंदर स्त्री किसी
नखी के हाथ (हथेली) पर
त्रिसम का ताल बाँध कर
अथवा त्रिसम की गति से
नाचती है । उसे नाचता देख
कर ऐसा प्रतीत होता है मानों
हथेली पर लट्टू नाच रहा
हो; इस दृश्य को देख कर
कृष्ण लट्टू (मुग्ध) हो जाते
हैं ।

४८६ सुलप—कदाचित् यह शब्द
'सुलप' (=सुंदर आलाप) का
विकृत रूप है ।

५१६ गोलक—आँख की पुतली ।

५३४ दगरी—मार्ग ।

५३८ ब्रीड़न—लज्जित करने
वाले ।

५३९ मरगजी-माल—गोंजी अथवा
मली हुई माला ।

५५६ भांति—रीति ।

५८३ अविकारी—उपयुक्त पात्र ।

५८६ हरि-धर्म-बहिर्मुख—वैष्णव-
धर्म-विरोधी ।

सिद्धांत पंचाध्यायी

६ महाभूत—पंचतत्त्व (पृथ्वी,
जल, अग्नि, वायु, आकाश) ।

७ महत्तत्त्व—जीवात्मा ।

१० वित्त्व-प्रभव—विश्व की
उत्पत्ति का कारण ।

१४ आश्रय—अवलंब, आधार;
अवधि-भूत—चरम उत्कर्ष
को प्राप्त ।

१८ निरोध—प्रतिबंध अथवा
नियंत्रण ।

२६ निरतास—इस शब्द का
भावार्थ सार या निचोड़
जान पड़ता है ।

२७ ननु—निश्चयपूर्वक ।

६० खेवा—संभवतः इस शब्द का
प्रयोग यहाँ 'समूह' के अर्थ
में हुआ है ।

६१ निदेसा—निर्देश, आज्ञा ।

७७ आत्मा-निष्ठ—आत्मा में
स्थित; आत्म-नामी—
आत्मा को जानने वाला ।

७८ अनावृत—जो ढँका न हो,
प्रत्यक्ष ।

८० निरवृत्ति-परा तै—मुक्ति-

- कारण माना गया है श्री 'कारणसृष्टि' की संज्ञा दी गई है ।
- २५ विसर्ग—महत्तत्त्व आदि कारणों द्वारा उत्पन्न समस्त चराचर के स्थूल शरीर । इन्हें 'स्थूलसृष्टि' अथवा 'कार्यसृष्टि' कहा गया है ।
- २६ मर्जाद वितान—मर्यादा का विस्तार अथवा उत्कर्ष; 'थान'—अपनी अपनी मर्यादा का पालन करते हुए सूर्यादिक जिस उत्कर्ष अथवा श्रेष्ठता को प्राप्त करते हैं उस का नाम 'स्थान' है ।
- २७ समीचीन—यथार्थ; 'मन्त्र-तर' वृत्ति—मनु आदि के धर्माचरण में संलग्न होने का नाम ।
- ३० 'ईशान कया'—राजाओं का जीवनचरित ।
- ३१ निरांघ—दुष्ट राजाओं को परास्त कर के अपने वश में करना (विशेष—श्री कर्मचंद गुग्गलानी के अनुसार 'नि-रोध' शब्द का यह अर्थ श्रीधर स्वामी कृत है) ।
- ३६ अवर निरोध भेद—उपर्युक्त गुग्गलानी जी के अनुसार बल्लभाचार्य ने 'निरोध' शब्द का अर्थ दो प्रकार से किया है—(१) प्रपञ्च विस्मृतिपूर्वक भगवान् में भक्त की आसक्ति (२) आत्मविस्मृतिपूर्वक भगवान् की अपने भक्त में आसक्ति । आगे की पंक्तियों में कवि ने दोनों प्रकार के 'निरोध' का वर्णन किया है ।
- ६४ पितृहि न...दियी—यदु ययाति राजा के पुत्र थे । एक समय ययाति के पापा-चरण से क्रुद्ध हो कर शुक्रा-चार्य ने उन्हें श्राप दे कर तुरंत वृद्ध कर दिया किंतु क्रोध शांत होने पर वाद में उन्होंने ने यह भी कहा कि तुम किसी पुरुष की युवावस्था के साथ अपनी वृद्धावस्था बदल सकोगे । कामुक ययाति ने अपने पुत्र यदु से अपनी युवा-वस्था देने के लिए आग्रह किया किंतु उस ने ऐसा

कारण माना गया है और 'कारणसृष्टि' की संज्ञा दी गई है ।

२५. विसर्ग—महत्तत्त्व आदि कारणों द्वारा उत्पन्न समस्त चराचर के स्थूल शरीर । इन्हें 'स्थूलसृष्टि' अथवा 'कार्यसृष्टि' कहा गया है ।

२६. मर्जाद वितान—मर्यादा का विस्तार अथवा उत्कर्ष; 'थान'—अपनी अपनी मर्यादा का पालन करते हुए सूर्यादिक जिस उत्कर्ष अथवा श्रेष्ठता को प्राप्त करते हैं उस का नाम 'स्थान' है ।

२६. समीचीन—यथार्थ; 'मन्वन्तर' वृत्ति—मनु आदि के धर्माचरण में संलग्न होने का नाम ।

३०. 'ईशान क्या'—राजाओं का जीवनचरित ।

३१. निरोध—दुष्ट राजाओं को परास्त कर के अपने वश में करना (विशेष—श्री कर्मचंद गुग्गलानी के अनुसार 'निरोध' शब्द का यह अर्थ

श्रीधर स्वामी कृत है) ।

३६. अवर निरोध भेद—उपर्युक्त गुग्गलानी जी के अनुसार बल्लभाचार्य ने 'निरोध' शब्द का अर्थ दो प्रकार से किया है—(१) प्रपञ्च विस्मृतिपूर्वक भगवान् में भक्त की आसक्ति (२) आत्मविस्मृतिपूर्वक भगवान् की अपने भक्त में आसक्ति । आगे की पंक्तियों में कवि ने दोनों प्रकार के 'निरोध' का वर्णन किया है ।

६४. पितृहि न...दियी—यदु ययाति राजा के पुत्र थे । एक समय ययाति के पापाचरण से क्रुद्ध हो कर शुक्राचार्य ने उन्हें श्राप दे कर तुरंत वृद्ध कर दिया किंतु क्रोध शांत होने पर वाद में उन्होंने ने यह भी कहा कि तुम किसी पुरुष की युवावस्था के साथ अपनी वृद्धावस्था बदल सकोगे । कामुक ययाति ने अपने पुत्र यदु से अपनी युवावस्था देने के लिए आग्रह किया किंतु उस ने ऐसा

तृतीय अध्याय

- ५७ उपसंहरी—परित्याग करो ।
 ६७ लटि रही—लुभा रही ।
 ७० धूमि—चक्कर खा कर,
 व्याकुल हो कर ।

चतुर्थ अध्याय

- ३ रीर—कोलाहल ।
 १७ गारी—गर्व ।
 २३ ब्रम्हहा—ब्रह्महत्या करने
 वाला ।
 २५ सौनक—कसाई ।
 ३८ बलग्न करें—बक बक करते
 हैं, बातें मारते हैं ।
 ५२ वृकन—भेड़ियों को; अजन
 प्रति—बकरियों के समीप ।

सप्तम अध्याय

- २० बरहे—बेत सींचने वाली
 छोटी नाली ।
 २१ अभिचार—मंत्र आदि के
 प्रयोग द्वारा प्रेरित ।
 ३० कूट—पर्वत की चोटी ।
 ३६ साँकरी—संघट, कण्ट ।
 ४३ परी...धुकि—पृथ्वी पर
 गिर पड़ी ।

- ५० घुरि गयी—लिपट गया ।
 ५३ किरच किरच—टुकाड़े टुकाड़े
 होकर ।

अष्टम अध्याय

- १२ अतीन्द्रिय—इन्द्रियों के अनु-
 भव के परे, अगोचर ।
 ४० नाक-नथूली—नाक की छोटी
 नथ; भगूली—बच्चों के
 पहनने का ढीला कुरता ।
 ४१ जटित बधूली—सोने अथवा
 चाँदी में जड़ा हुआ छोटा
 बाघ का नाखून ।
 ६१ खरिक—पशुओं के रहने का
 स्थान, बाड़ा; खोरि—गली ।
 ६४ अरग अरग—चुपके चुपके ।
 ८६ लिलाई—लीला अथवा क्रीड़ा
 करता है ।

- १०१ माखन मो हारे—यह पाठ
 चित्य है ।
 १०३ हित-ईपनी—हित की प्रबल
 इच्छा रखने वाली ।

नवम अध्याय

- ११ पृथु—चोड़ी; विलुलित—
 हिलती हुई; कवरी—
 चोटी ।

तृतीय अव्याय

- ५७ उपसंहरी—परित्याग करो ।
 ६७ लटि रही—लुभा रही ।
 ७० घूमि—चक्कर खा कर,
 व्याकुल हो कर ।

चतुर्थ अध्याय

- ३ रीर—कोलाहल ।
 १७ गारी—गर्व ।
 २३ ब्रम्हहा—ब्रह्महत्या करने
 वाला ।
 २५ सोनक—कसाई ।
 ३८ बलग्न करें—बक बक करते
 हैं, बातें मारते हैं ।
 ५२ वृकन—भेड़ियों को; अजन
 प्रति—बकरियों के समीप ।

सप्तम अध्याय

- २० बरहे—खेत सींचने वाली
 छोटी नाली ।
 २१ अभिचार—मंत्र आदि के
 प्रयोग द्वारा प्रेरित ।
 ३० कूट—पर्वत की चोटी ।
 ३६ सांकरी—संकट, कष्ट ।
 ४३ परी...धुकि—पृथ्वी पर
 गिर पड़ी ।

- ५० घुरि गयी—लिपट गया ।
 ५३ किरच किरच—टुकड़े टुकड़े
 होकर ।

अष्टम अध्याय

- १२ अतीन्द्रिय—इन्द्रियों के अनु-
 भव के परे, अगोचर ।
 ४० नाक-नथूली—नाक की छोटी
 नथ; भगूली—बच्चों के
 पहनने का ढीला कुरता ।
 ४१ जटित बघूली—सोने अथवा
 चाँदी में जड़ा हुआ छोटा
 वाघ का नाखून ।
 ६१ खरिक—पशुओं के रहने का
 स्थान, बाड़ा; खोरि—गली ।
 ६४ अरग अरग—चुपके चुपके ।
 ८६ लिलाई—खीला अथवा क्रीड़ा
 करता है ।
 १०१ माखन मो हारे—यह पाठ
 चित्य है ।
 १०३ हित-ईपनी—हित की प्रबल
 इच्छा रखने वाली ।

नवम अध्याय

- ११ पृथु—चीड़ी; विलुलित—
 हिलती हुई; कवरी—
 चोटी ।

धूमता दिखाई देता है"
(हिंदी-शब्दसागर) ।

षोडश अध्याय

- ८ हृद—भील ।
१७ अमुना—इस मे ।
४८ वरियारी—बलवान ।
५१ माड़े—मैदे की बनी हुई
एक प्रकार की बहुत पतली
रोटी; ^१ भाँड़े—वरतन ।

सप्तदश अध्याय

- ६ दोर—धावा ।
१४ भिहरानी—टूट पड़ा; मधु-
रिपु-आसन—गरुड़ ।
२६ लेलिह—सर्प ।

अष्टादश अध्याय

- ३१ वीरी—गमूह, बल ।
४० टोल—मंडली ।

एकोनविंश अध्याय

- २० बगदी—बुढ़क चली ।

विंश अध्याय

- ३ प्रावृट—पावस, वर्षा ।
१६ उत्पथ—कुमार्ग ।
२१ बुढ़ी—राम की बुढ़िया, बीर-
बहूटी; लुढ़ी—लुढ़क चली;
उछलींथ्र—कुकुरमुत्ता ।
२७ ऊग्मी—तरंग, लहर ।
५४ बनीकस—बनवासी ।
५६ कचोर—कटोरा ।
६८ गतकल्मष—पाप रहित ।
८७ पुहुपवती—रजस्वला ।

एकविंश अध्याय

- ४५ भई . . . ईरति—मुनियों (के
हृदय) को आंदोलित अथवा
चंचल किया ।

द्वाविंश अध्याय

- २ दारिका—कन्याएँ ।
६ हविषा—साकल्य, जी तिल
आदि मिली हुई हवन की
सामग्री ।

^१ दे० श्रीमद्भागवत, १०-१६-
२४ पर श्रीधर स्वामी की टीका—
“मंडकपाकभाजनंतद्वत्” ।

धूमता दिखाई देता है”
(हिंदी-शब्दसागर) ।

षोडश अध्याय

- ८ हृद—भील ।
१७ अमुना—इस मे ।
४८ वरियारी—बलवान ।
५१ माड़े—मैदे की बनी हुई
एक प्रकार की बहुत पतली
रोटी; ^१ भाँड़े—वरतन ।

सप्तदश अध्याय

- ६ दार—धावा ।
१४ भिहरानी—टूट पड़ा; मधु-
रिपु-आसन—गरुड़ ।
२६ लेलिह—सर्प ।

अष्टादश अध्याय

- ३१ वीरी—गमूह, दल ।
४० टोल—मंडली ।

एकोनविंश अध्याय

- २० बगदी—बुढ़क चली ।

विंश अध्याय

- ३ प्रावृट—पावस, वर्षा ।
१६ उत्पथ—कुमार्ग ।
२१ बुड़ी—राम की बुढ़िया, वीर-
बहूटी; लुड़ी—लुढ़क चली;
उछलींथ्र—कुकुरमुत्ता ।
२७ ऊग्मी—तरंग, लहर ।
५४ बनीकस—बनवासी ।
५६ कचोर—कटोरा ।
६८ गतकल्मष—पाप रहित ।
८७ पुहुपवती—रजस्वला ।

एकविंश अध्याय

- ४५ भई . . . ईरति—मुनियों (के
हृदय) को आंदोलित अथवा
चंचल किया ।

द्वाविंश अध्याय

- २ दारिका—कन्याएँ ।
६ हविषा—साकल्य, जी तिल
आदि मिली हुई हवन की
सामग्री ।

^१ दे० श्रीमद्भागवत, १०-१६-
२४ पर श्रीधर स्वामी की टीका—
“मंडकपाकभाजनंतद्वत्” ।

चित्रित करती है ।

८४ गौरी—एक राग ।

१०७ उरुप तिरुप—नृत्य का एक भेद ।

१२० हस्तक—ताली ।

१२८ मड़हन—मुँडेरियों पर ।

१३२ हटरी—दिवाली के अवसर पर मिट्टी का बनाया हुआ एक छोटा सा मकान जो विशेष रूप से सजाया जाता है ।

१५१ रमकि रमकि—पेंग मार

कर ।

१८४ भुरकी—छिड़का हुआ ।

२३४ अनाघात—"संगीत के अंतर्गत ताल विशेष । वह विराम जो गायन में चार मात्राओं के बाद आता है और कभी कभी सम का काम देता है" (हिंदी-शब्द-सागर) ।

२८५ निस्तम—अंधकार रहित, उज्ज्वल ।

चित्रित करती है ।

कर ।

८४ गौरी—एक राग ।

१८४ भुरकी—छिड़का हुआ ।

१०७ उरप तिरप—नृत्य का एक भेद ।

२३४ अनाघात—“संगीत के अंतर्गत ताल विशेष । वह

१२० हस्तक—ताली ।

विराम जो गायन में चार

१२८ मड़हत—मुँडेरियों पर ।

मात्राओं के बाद आता है

१३२ हटरी—दिवाली के अवसर पर मिट्टी का बनाया हुआ एक छोटा सा मकान जो विशेष रूप से सजाया जाता है ।

और कभी कभी सम का काम देता है” (हिंदी-शब्द-सागर) ।

१५१ रमकि रमकि—पेंग मार

२८५ निस्तम—अंधकार रहित, उज्ज्वल ।